
सन्धान 4

जाहिठाम साहित्य मे कोनो आदर्श नहि हो, जतय पाठक विशेष उत्कर्षक आशा नहि राखथि, जतय लेखक उपेक्षापूर्वक लिखैत होथि, जतय थोड़ेक नीक लिखला पर वाहवाही भेटि जाय आ खराबो लिखला पर निन्दा करब आवश्यक नहि बूझल जाय, ओतय केवल अपना मन मे स्थित उन्नत आदर्श कें सदैव अपना समक्ष रखैत, सामान्य परिश्रम सँ सुलभ ख्याति पयबाक लोभ के दबबैत, अथक परिश्रम सँ, अप्रतिहत उद्यम सँ दुर्गम परिपूर्णताक रस्ता पर बढ़ब असाधारण गौरबक कार्य थिक।

—गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर

2000

मिथिला समाजक प्रगतिशील चेतनाक जरूरी पोथी

सन्धान

अंक 4 मैथिली कथा पर केन्द्रित जुलाई 2000

सम्पादक
अशोक
सी. 407, आफिसर्स फ्लैट
बेलीरोड, पटना

प्रकाशक
सम्प्रति
(जन चेतनाक सामाजिक-सांस्कृतिक अभियान)

प्रकाशन, संचालन एवं सम्पादन पूर्णत :
अवैतनिक / अव्यवसायिक
एहि अंकक मूल्य
मूल्य 150 रु0 मात्र

मुद्रक
मित्रम् प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स
भिखना पहाड़ी, नयाटोला, पटना-4
मुखपृष्ठक चित्र-पी. के. झा

284

मैथिली पोथी कीनि क' पढ़ू

किछु टटका प्रकाशन

वर्ष 4	अंक 4	सन्धान 4	जुलाई 2000

सम्पादकीय

विकास-सन्दर्भ

किछु मास पूर्व एकटा मैथिल भेटलाह। बैंक मे अधिकारी छथि। गप्पक क्रम मे कहलनि जे मैथिलीमे एखनो पचास वर्ष पहिलुके साहित्य लिखल जाइत अछि। ओहिठाम चारि समाङे रही। बुझू त' लूझि लेलियनि। हुनका पानि पियाब' पर विर्त्त। ओ कहैत रहलाह जे दुनिया कत' सँ कत' चल गेल अछि। सूचना तकनीक-इंटरनेट, बेबसाइटके जमाना अछि। मुदा मैथिली मे ई सभ कतहु नहि भेटत। हमरा सभ हुनका एहि बात पर गोलियौने रही जे पछिला तीन वर्ष मे कोन-कोन मैथिलीक पोथी अहाँ पढ़लहुँ अछि। ओ माटि पकड़ैबला नहि रहथि। कहलनि जे पढ़बाक काज कोन अछि। सभा-सोसाइटी मे जाइत छी। गोष्ठी सभ मे भाग लैत छी। लोक सभक गप्प सुनैत छी। हमरा बूझल अछि जे मैथिली मे पढ़बा जोगर किछु नहि अछि। अन्ततः ओ भेंट एकटा तनाओ मे समाप्त भेल रहय।

ओ भेंट मुदा मोनके एखनो छेकने अछि। होइए जे ओहि मैथिल कें मैथिलीक पाठक बनाबी। देखा सकी जे मैथिली मे पचास वर्ष पहिलुक साहित्य नहि लिखल जाइत अछि। किछु मित्र कहैत छथि जे व्यर्थ चिन्ता मे पड़ल छी। ओहि मैथिल कें मैथिलीक पाठक नहि बना सकैत छी। कहुना बनाइयो लेब त' ओ टिकताह नहि। कोनो ने कोनो लाथ लगाक' फेर हाथ झाड़ि लेताह। किछु आर नव गप्प सभ कह' लगताह। ई मृगतृष्णा छोड़ू। दोसर दुआरि देखू।

एहि बातक खोज सेहो अछि जे मैथिल पाठक कें सभ सँ प्रिय कोन रस छनि। पाठकक विकास केहेन भ' रहल अछि। कोन रस मे लटपटा क' हुनका राखल जा सकैए। किछु गोटा कहैत छथि जे शृंगार रस मे। मैथिल लोकनि अदौ सँ शृंगारिक छथि। किछु गोटा कहैत छथि जे हास्य रस मे। प्रो. हरिमोहन झा कें प्रमाण रूपमे उपस्थित करैत छथि। मुदा किछु गोटे एहनो छथि जे मैथिलकें सभ सँ प्रिय रस मे

निन्दा रसकेँ मानैत छथि । ताहू मे अपन निन्दा हो त' महोमहो । एहि अपनक परिधि मे अपन लोक, अपन समाज, क्षेत्र अर्थात् जत' कतहु मिथिला आ मैथिली हो । मैथिल हो । तकर जतं विन्यास सँ निन्दा करब । जत्ते मसल्ला-तेल-आमिल-मेरचाइ द' क' परसब मैथिल पाठक के तत्ते पसिन्न पड़तनि । ओ अही रस मे अहाँक सृजनात्मकता-कलात्मकताक लोहा मानि सकैत छथि । एताबता निन्दा जँ तेल मे चपचप अँचार जकाँ परसल जाय त' मैथिल पाठक केँ अहाँ तृप्त क' सकैत छी ।

किछु गोटे दोसरे बात कहैत छथि । ओ कहैत छथि जे निन्दा असगर किछु नहि क' सकैए । ओहि मे झगड़ा-रगड़ाक तीत-कसाय स्वाद मिज्झर करब जरूरी अछि । नीम-भाँटा, पटुआ साग, करैला आ मेंथी-मंगरैल खएनिहार मैथिलक चटकार मे झगड़ाहु व्यसन के नहि अनठा सकैत छी । तैं साहित्यमे झगड़ादन के गप्प, रगड़ा-रंगड़ीक वर्णन हरबे-हथियारक संग अवश्य रहय । हथियार माने बम-गोली नहि। बम-गोलीवला साहित्यके त' मैथिल पाठक लगले बम बजा देताह । एहिठाम त' बोली मे गोली हेबाक चाही । साँप मारल हुअए वा नहि मुदा लाठी सँ ठकठक अवश्य करैत रहू । नहि त' थोपड़ी बजबैत त' बाट पर जरूरे चलू । साप-कीड़ा ओहिना पड़ा जायत। मुदा सापो-कीड़ा आब गमि लेलक अछि । थोपड़ी सँ नहि पड़ाइये । मनुक्खक कथे कोन । एताबता झगड़ो-रगड़ाक गप्प खाली गप्पे रहय । खड़ त' अहाँ खड़खड़ा सकैत छो । ओहि सँ आगू बढ़बा मे कने धैर्य राखू । मतलब झगड़ो-रगड़ाक स्वाद मोने-मोन। वाह, खूब लड़ै जाइत छथि ! खूब लड़थु । हम त' बाँचल छी । हम त' तमशगीर छी । तमाशा देखब । हमरे भिड़ा देब एहन साहित्य सँ हम बाज अबैत छी बाबू।

किछु गोटे कहैत छथि जे पहिलुका रस सभसँ आब काज चल'बला नहि अछि। मैथिल लोकनि बदलि गेल छथि । जे पाठक हेताह से दुनिया देखने छथि । गाम छूटल छनि । स्वाद बदलल छनि । आब मेंथी-मंगरैल, पटुआ साग नहि खाइत छथि । रेडीमेड चलानी मसल्ला खाइत छथि । मेंथियो खाइत छथि त' काश्मीरी । तरकारियो खाइत छथि त' मिक्स्ड भेजीटेबुल । सोहारीक बदला तन्दूरी । मैगी आ चाउमिन । बटाटा बड़ा । उपमा-उत्तपम । पाव-भाजी । इटालियन सलाद, कोफ्ता । इंटर कान्टीनेन्टल डिशेज । हिनका लोकनिक जीह बदलि गेल छनि । तैं हिनका ओहने साहित्य चाही। ओहने कथा चाही । जाहि मे आर सभ किछु हो मुदा मिथिला नहि हो । बांगक गाछ, तनूफक फूलक कथे कोन तीरा-तग्गड़, अड़हुल धरि नहि हो । हुनका त' डेफोडिल, लिली, गोल्डमोहर, यूक्लिप्टस चाही । जाहि मे सुन्दरता त' हो मुदा सुगन्धि नहि हो। सुगन्धि सँ हिनका एलर्जी भ' गेल छनि । हिनका लेल कथा मे बजार संजा दिअनु

मुदा धोखा सँ कोनो विचारक प्रवेश नहि हुअय । जीवन ओहिना जंजाल भ' गेल छनि। विचार सुनितहिं भड़कि जाइत छथि जेना लाल कपड़ा देखिक' साँढ़ भड़कैए ।

किछु गोटे कहैत छथि जे अजुका पाठक नामक प्राणी लेल एहन साहित्यक निर्माण करू जाहिसँ हुनकर स्टेटस बढ़नि । दस गोटाके देखा सकथि जे देखू हम एहन चीज पढ़ै छी । एकदम इम्पोर्टेड माल । अपन सम्पूर्ण इतिहास सँ छुटकारा पाबि लिअ' । अपन संस्कृति के' यूज एण्ड थ्रो' बना लिअ' । अपन भूगोल के भूमण्डल मे बोरि लिअ'। सभटा आकार खतम क' दियौ । हवा-हवाइ भ' जाउ । हवा-हवाइ...।

एहि पाठक सभ सँ भेंटक बाद फेर मे पड़ि जायत कियो । ई हवा-हवाइ कोना भ' जायत । तखन रहि की जायत ? किछु बाँचलो रहि जायत की ? किछु बाँचल रहबाक की कोनो प्रयोजन नहि अछि ? ई त' आब अस्तित्वक प्रश्न भ' गेल । अस्मिता सँ लड़ाइ अस्तित्व पर आबि गेल । अस्तित्व रहत तखन ने अस्मिता । बाँचब तखन ने पहिचान-परिचिति । माटि रहत तखन ने मुरुत बनायब । तैं एहि वर्ग विशेषक हवा-हवाइ पाठकक मोह आब निर्ममतापूर्वक त्यागक चाही । सैह लगैए । जँ त्याग क' दैत छी त' एकटा वृहत्तर वर्ग सँ जुड़ि जेबाक सम्भावना बनैत अछि । ओहि वृहत्तरवर्ग सँ जे अस्तित्वक लड़ाइ लड़ि रहल अछि । ओकर अस्तित्वक लड़ाइ संग अपन अस्तित्वके एकाकार करबाक चेष्टा करी । एहि सँ लड़ाइ धरगर हेबाक सम्भावना बनि सकैत अछि । मुदा की ई एकाकार होयब सहज अछि ? अस्तित्व लेल संघर्षरत वर्ग के मैथिलीक पाठक बनाएब सहज अछि ? बूझैत छी जे एहि वर्ग केँ मैथिलीक पाठक बनौने बिना आब मैथिलीक अस्तित्व सेहो संकटग्रस्त अछि । तैं मैथिलीक अस्तित्व लेल सेहो एहि वर्ग सँ जुड़ब जरूरी । वृहत्तरवर्गक अस्तित्व संघर्ष आ मैथिलीक अस्तित्व संघर्ष एकमेत होयब जरूरी । ई होयत कोना ? मैथिली ओकरा अपन लागक चाही। ई लागक चाही जे मैथिली ओकर संघर्ष के बोल द' सकैत अछि । मैथिली मे ओ ताप ओ उष्मा आबक चाही । वृहत्तरवर्गक संवेदना सँ मैथिली साहित्यकेँ जुड़क चाही । की वर्चस्ववादी संस्कृति-साहित्य सँ से सम्भव अछि ? की लोक-संस्कृतिक महत्वपूर्ण अवदानके अनठौने से सम्भव होयत ? की लोकतान्त्रिक भेने बिना ओहि वर्ग सँ अपनाकेँ जोड़ि सकैत छी ? अर्थ शास्त्रक शब्दावली मे कही त' सकल घाटाक कारणे जमापूंजी खतम भ' रहल अछि । जमापूंजीक क्षरण भ' रहल अछि । या त' एहि संस्थाके बन्द क' देबाक चाही जाहिसँ घाटा आर नहि बढ़य अथवा एहिमे नवपूंजी जमा हेबाक चाही। नव-नव निवेश ताकल जेबाक चाही । जाहिसँ संस्थामे नव रक्तक संचार हो। नव लोकक संग जुड़ाव-लगाओ हो । लोक एकरा अपन घाटा-नफाक सौदा मानय।

जनैत छी जे किछु गोटे एहि घाटा-नफाक शब्दावली सँ भड़कि सकैत छथि। सांस्कृतिक क्षेत्रमे अनधिकार प्रवेश मानि अपन ठोर विजका सकैत छथि । मुदा एहन लोक ओहि वृहत्तरवर्गक जोड़बाक बात सँ सेहो परहेज करैत छथि। घाटा के घाटा नहि मानैत छथि । जमा पूंजीक क्षरण पर सेहो प्रश्नचिन्ह लगा सकैत छथि । मैथिली ओकरा अपन लागय तकरा प्रयास पर टंटा ठाढ़ क' सकैत छथि । हुनका लोकनिक लेल मैथिलीक प्रश्न अस्तित्वक प्रश्न नहि अछि । अस्मिताक प्रश्न दोकानक साइनवोर्ड सन अछि। माटि सँ जुड़ल रहबाक भ्रम पसारैत एहन लोक वास्तव मे हवा-हवाइ छथि । हमरा अथवा हमर सहकर्मी-सहधर्मीकेँ हिनका लोकनि केँ चीन्हि लेबाक चाही । सामूहिक उत्तरदायित्वक यैह तकाजा अछि ।

सामूहिक दायित्व इहो अछि जे अपन कथा-कविता-उपन्यासक भाषा मे लोक-संस्कार केँ जगजियार करी । ओकरा सरल-सुबोध, पारदर्शी बनाबी । अलंकरणक नाम पर ओहिमे विशिष्ट वर्गक सौन्दर्य-बोध के हॉवी नहि हुअ' दी । वृहत्तरवर्गक सौन्दर्य-बोधसँ भाषाके नव संस्कार दी । वृहत्तरवर्गक संघर्ष चेतना सँ ओहि मे उष्मा आ ताप आनी। माटि-पानि सँ जुड़बाक अर्थ भुरभुरी माटि आ जमकल-गन्हायल पानि सँ जुड़ब नहि होइ छै । जिनका एहि भुरभुरी माटि सँ महादेव बनेबाक छनि । एहि जमकल पानिके गंगाजल मानि बोतलमे बन्द करबाक छनि । से करथु अपन काज। मुदा से हमर अहाँक सहकर्मी-सहधर्मी नहि छथि । ई बात हमरा सभके फरीछ भ' जेबाक चाही ।

ई वृहत्तरवर्ग मिथिला समाज मे बसैत अछि । हमर माटि मिथिलेक माटि थिक। मुदा ई माटि आनोठामक माटि सँ जुड़ल अछि । हमर पानि मे आनो क्षेत्रक पानि आबि रहल अछि । हमर लोक आनोठाम रहि रहल छथि । ई सम्पूर्ण भारत कि सम्पूर्ण विश्व सँ हम जुड़ल छी । मिथिला समाज जुड़ल अछि । हम आब अपन फराक द्वीप बनाक' नहि रहि सकैत छी । आनठाम सँ बीया-बालि आनि सकैत छी । नव तकनीक आनि सकैत छी । नव आ उपयोगी विचार आनि सकैत छी । दृष्टि आनि सकैत छी । ई सभ बात उचित अछि । सार्थक अछि । मुदा आनल बिया-बालिके पहिने मिथिलाक माटि मे छीटि क' देख' पड़त। एहिठामक माटि मे जनमैत अछि की नहि ? जनमैत अछि त' उपयोगी अछि की नहि ? पर्यावरण के संतुलित रखबा मे समर्थ अछि कि नहि ? लोकक विकास लेल उपयुक्त अछि कि नहि ? वृहत्तरवर्गक एहि मे हित अछि कि नहि ? सामाजिक यथार्थक परिप्रेक्ष्य मे मनुक्खक विकास एहिसँ सम्भव अछि की नहि ? शोषित-दलित वर्ग के ई सबल बनबैत अछि की नहि ? जीवन एहिसँ सार्थक ओ सुन्दर बनैत अछि की नहि ? मिथिला समाजक एहि सँ विकास होइत

अछि की नहि ? आखिर ई विकास थिक की ? नव द्वारा पुरानक स्थान ग्रहण करब, उदित भ' रहल के अस्त भ' रहलक जगह लेबहि के विकास कहल जाइत अछि। ईहो कहल जाइत अछि जे नव, पुरानके पूर्णतया मेटा नहि दैत अछि, अपितु ओहिमे जे श्रेष्ठतम अछि ओकरा कायम रखैत अछि । वस्तुत: ओ श्रेष्ठतम के कायमे नहि रखैत अछि, ओकरा आत्मसात सेहो करैत अछि । ओकरा एक नव उच्चतर स्तर पर सेहो उठबैत अछि ।

कहि सकैत छी जे ई सभटा बात बिया-बालि अनबाक काल कोना बूझि जेबैक? तकनीक आ विचार आयात करैत काल कोना अनुमान क' सकब जे ई हमरा लेल उपयोगी अछि की नहि ? वृहत्तरवर्गक हित मे अछि की नहि ? एहि सँ समाजक विकास हैत की नहि ? एहि सभ प्रश्न पर एतबे टा कहि सकैत छी जे प्रथमत: अहाँ केवल आयात लेल उत्सुक छी । आनठामक चीज अहाँके चकविदोर लगौने अछि । अपना के जनने बिना, अपन माटि के चिन्हने बिना अहाँ विकासक लौल क' रहल छी । अहाँ अपन इतिहास के नहि जानि रहल छी अथवा इतिहासक सम्बन्ध मे एकटा निरर्थक भ्रम पोसने छी । अहाँके अपन समाजक आंशिक ज्ञान अछि । अहाँ जँ बजारक चकचकी मे पड़ि गेल छी त' किछु नहि कहबाक अछि । मुदा जँ अहाँ अपन खगता जनैत छी आ अपन डाँड़क सम्बन्ध मे अहाँके कोनो भ्रम नहि अछि त' अहाँ अपना लेल उपयोगीए चीज बेसाहब । अपन घर के कबाड़खाना नहि बना लेब । अपन माटिक उर्वरता नष्ट नहि क' लेब । विकासक नाम पर विनाश दिस नहि बढ़ब ।

हमरा लोकनिकेँ एकटा आर सुविधा अछि । पछुआएल इलाकाक लोक होयबाक कारणे आर्थिक कारण सँ दुनिया मे पसरल छी । दुनिया के देखि रहल छी। सभठामक विकास आ ओकर परिणाम के आकलन क' सकैत छी । विकसित क्षेत्रक अन्तर्द्वन्द्व, ओकर दुष्परिणाम, दुर्गति, मानवीयताक ह्रास, समाजक ताना-बानाके छिन्न-भिन्न होइत, व्यक्तिवादिताक पैशाचिक लीला सभके देखि-परखि सकैत छी। मुदा एहि सभके देखबाक लेल मिथिला समाजक यथार्थ के, वृहत्तरवर्गक कष्ट-दुखके ध्यान मे राख' पड़त । उचित विकास लेल मानदण्ड निर्धारणकाल मिथिलाके विशेषत: आ भारत वा विश्व के सामान्यत: दृष्टि मे त' राखहि पड़त । त' सहजहिं हमरा लोकनि अपन मिथिला समाजक आर्थिक-सामाजिक आ सांस्कृतिक विकास लेल उपयुक्त प्रविधि-चिन्तन जोहि सकैत छी । कार्य-योजना बना सकैत छी । प्रारूप प्रस्तुत क' सकैत छी । ई सभ फूट-फूट नहि समन्वित दृष्टि सँ सम्भव अछि । मुदा एहि लेल अपना भीतर परिवर्त्तन सेहो आनहि पड़त । सभसँ पहिने त' सैह जरूरी अछि ।

ई सभटा बात कहबाक अर्थ ई नहि लगाओल जेबाक चाही जे एखन धरि सभ किछु ऋणात्मके अछि। कोनो क्षेत्र मे धनात्मक स्थिति त' भेटिए सकैत अछि। ठाम-ठीम प्रकाश, प्रयास आ विकास त' स्पष्ट अछिए। ई बात सांस्कृतिक क्षेत्रमे सेहो देखल जा सकैत अछि। तत्काल सन्दर्भ त' सांस्कृतिके अछि। आक्रमणों सांस्कृतिक क्षेत्र पर समधानि क' चलि रहल अछि। गदौस सेहो एही क्षेत्र मे भरल अछि।

ओना कहि सकैत छी जे 'सन्धान'क एहि कथा केन्द्रित अंक मे बात के कत' सँ कत' ल' गेलहुँ। लेकिन सत्त पुछू त' कथे कहि रहल छलहुँ। कथे लेल बाजि रहल छलहुँ। स्वाभाविक रूप सँ बात चेतनाक धरातल पर चलब जरूरी अछि। किएक त' मामला सृजनक थिक। मुदा ई सभटा बात कोनो हमहींटा नहि कहि रहल छी। एहि सम्पूर्ण अंकमे विभिन्न विचारक, समालोचक, कथाकार कहि रहल छथि। हम त' खाली हुनके लोकनिक कहल बात के बूझू त' दोहरा रहल छी।

एहि अंकमे मैथिली कथाक इतिहास आ विकासक किछु तथ्य रखबाक प्रयास कयल गेल अछि। हमरा एहि मे कोनो भ्रम नहि अछि जे सम्पूर्ण प्रयास मैथिली कथाक विस्तार के देखैत एखनो छुछुन्ने अछि। मुदा मैथिली कथा आइ जाहि विन्दु पर ठाढ़ अछि ओत' होइत आलोड़न-विलोड़नक किछु वानगी त' प्रस्तुत भेले अछि। भीतर मे चलैत वैचारिक द्वन्द्वक किछु विन्दु सभकेँ फरिछएबाक दिशा त' देखाइए द' सकैत अछि।

मैथिली कथा मे अनेक परिवर्त्तन आयल अछि। परिवर्त्तन विभिन्न स्तर पर अछि। कथामे आयल परिवर्त्तन स्वभावत: कथाकार मे आयल परिवर्त्तनक सूचक थिक। कथा ओ कथाकार मे आयल परिवर्त्तन के समय ओ समाज मे आयल परिवर्त्तनक संग मैथिली कथाक विकास सँ सेहो जोड़ि क' देखल जेबाक चाही। ई काज मुदा मैथिली आलोचना फरिछा क' नहि क' सकल अछि। विकास देखबाक लेल नव के देख' पड़त ताहिमे ककरो सन्देह नहि हेतनि। विकासक सन्दर्भ मे जेना पूर्व मे कहने छलहुँ जे नव, पुरानके पूर्णतया मेटा नहि दैत अछि। अपितु ओहि मे जे श्रेष्ठ अछि तकरा कायम रखैत अछि। आत्मसात करैत ओकरा नव, उच्चतर स्तर पर उठबैत अछि। एहि दृष्टि सँ मैथिली कथाक विकास पर प्रकाश देबामे मैथिलीक आलोचक लोकनि मात्र परिश्रमक डरें समर्थ नहि भ' सकलाह अछि। जखन कि सन्दर्भ लेल डा. मेघन प्रसादक 'कथा-कोश' आइ मैथिलीके उपलब्ध छैक। दृष्टि सम्पन्न आलोचकक हमरा अभाव अछि से त' नहि कहल जा सकैए। मुदा हुनक संख्या अवश्य कम अछि। संगहि नव प्रतिभाक एहि क्षेत्रमे नहि आयब चिन्तनीय बनि गेल अछि। किछु हमर स्थापित कथाकारों केँ एहि बातक भ्रम भ' गेल छनि जे नव कथाकार हुनका सिंहासन सँ उतार' चाहैत छथि। हुनका एहि सोचमे परिवर्त्तन आनक चाहियनि। सभ एक दिन पुरान होइत अछि। बेटो एक दिन बाप होइत अछि। फेर ओकरो बेटा-बेटी होइत छैक। बाप जँ बेटा संग दियादी करय त' तकरा की कहल जेतैक? तैं हमर पुरान, स्थापित कथाकार केँ चाही जे ओ नव-नव कथाकार मे अपन विकास देखथि। आलोचक लोकनि ताकथि जे ओ श्रेष्ठ के अक्षुण्ण रखलक अछि की नहि। श्रेष्ठ के आत्मसात करैत ओकरा नव, उच्चतर स्तर पर उठौलक अछि की नहि? यदि नहि उठौलक अछि त' तकर की कारण अछि? की ओ श्रेष्ठ के नहि बूझि रहल अछि? अथवा ओकरा आत्मसात नहि क' पाबि रहल अछि। आलोचक लोकनि मैथिली कथाक इतिहास बहुत कहलनि। आब विकासक गप्प करथु। विकासक बाट फरीछ करथु। स्वभावत: एहि लेल हुनका पुरान मे जे श्रेष्ठ अछि तकरा बिना कोनो हिचकिचाहटि के स्पष्ट कह' पड़तनि। ठाम-ठीम कहबो केलनि अछि। ओना ई काज केवल आलोचकेक नहि अछि। कथाकारोक अछि। जे कथाकार अपन परम्पराक सार्थकता के नहि चीन्हि सकैत छथि। चीन्हि क' ओकरा आत्मसात नहि क' सकैत छथि। मैथिली कथा के नव, उच्चतर स्तर पर नहि उठा सकैत छथि अथवा एहि दिशा मे कोनो प्रयास नहि कर' चाहैत छथि ओ मैथिली कथाक विकास मे अपन योगदान नहि द' रहल छथि। एहिठाम ई बात कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिली कथाक विकास मे अग्रज कथाकारक योगदानकेँ बिसरल नहि जा सकैए। मैथिली कथाक विकासक पथ पर ओ लोकनि माइलस्टोन छथि। अद्यतन कथाक स्वर, भंगिमा, बोध, भाषा-शिल्प एहन कथाकारक ऋण सँ मुक्त नहि भ' सकैत अछि। सन्धानक एहि अंक मे आउ, आगू बढ़ैत मैथिली कथा-यात्राके देखी।

❖

वर्ष 1999क साहित्य अकादमी पुरस्कारक लेल साकेतानन्द केँ सन्धानक बधाइ। हुनकर कथा संग्रह 'गणनायक' के एहि पुरस्कार सँ सम्मानित कएल गेल अछि। संगहि विभारानीकेँ हुनक सन्धान मे प्रकाशित कथा 'रहथु साक्षी छठ घाट' केँ प्रसिद्ध 'कथा' पुरस्कार क लेल सेहो बधाइ। ओहि कथाक अंग्रेजी अनुवाद दिल्लीक महत्त्वपूर्ण संस्था 'कथा' द्वारा अन्य भाषाक विभिन्न कथाकारक कथाक संग प्रकाशित कएल गेल अछि। विभारानीक कथाक अनुवाद लेल श्री विद्यानन्द झा केँ तथा मैथिली मे प्रकाशन लेल 'सन्धान' के सेहो पुरस्कृत कएल गेल अछि। विद्यानन्द जी केँ बधाइ! साकेतानन्द, विभारानी ओ विद्यानन्द झा मैथिलीक पाठक लेल सुपरिचित छथि।

कथा

सुभाषचन्द्र यादव

असुरक्षित

ट्रेन सँ उतरि क' ओ स्टेशन मे टांगल घड़ी देखलक । पौने दू । ओ ठमकि क' सोचय लागल । की करय ? चलि जाय ? या राति एत्तहि बिता लिअय ? भरि रस्ता ओ अही गुनधुन मे पड़ल रहल आ अखनो छ-पाँच क' रहल अछि । स्टेशन सँ घरक बीस-पच्चीस मिनटक रस्ता ओकरा बड्ड भारी लागि रहल छलै । जाड़क एहि निसबद राति मे सड़क एकदम सुनसान हेतै । समय साल बड़ खराब छै । कखन की भ' जेतै तकर कोनो ठेकान नहि ।

ओना ओकरा लग तेहन किछु नहि रहै । पचास-साठि टा टाका, एगो दामी चद्दरि आ पिन्हनावला कपड़ा । लेकिन जँ ईहो सब छिना गेलै त' फेर ओ जल्दी कीनि नहि सकत । ओ स्टेशनक सिमटी वला ठरल बेंच पर बैसि गेल आ सोचय लागल।

परसू खन जाइतो काल ओ रातिए मे गेल रहय । जतय गेल रहय, ओतुक्का सीधा गाड़ी रातिए मे भेटै छै आ ओतय सँ साँझ मे चलि क' एतय अखन दू बजे राति मे पहुँचल अछि । जहिया जाइत रहय, तहिया साँझे सँ ओकर मन भारी रहै । मन मे अनेक तरहक आशंका आ भय समा गेल रहै । ट्रेन एक बजे राति मे रहै । एहि जड़काला मे एतेक राति कैं स्टेशन गेनाइ ओकरा पहाड़ बुझाइत रहै । ओना ओ जतेक बेर निकलैत अछि, ओकरा लगैत रहैत छैक भ' सकैत छै ई ओकर अंतिम यात्रा होइ ।

जाइत काल ओ बहुत चिंतित आ उद्विग्न रहय । घरक लोक ओकरा खा-पी क' थोड़े काल सूति रह' कहलकै । फेर बारह बजे उठत आ चल जायत । लेकिन ओ बुझइत रहय ओकरा निन्न नहि हेतै । जँ कदाचित निन्न पड़ियो गेल त' बारह बजे उठि जायत तकर कोन गारंटी ! आ जँ उठियो गेल त' सीड़क तर गरमा गेला पर बिछौन छोड़' मे कतेक आलस आ कष्ट हेतै ! मुदा ई सब बात कोनो तेहन बात नहि

रहै । ओकरा सब सँ बेसी चिंता एहि बातक रहै जे एतेक राति क' ओ जायत कोना? जाड़क एहि सुनसान राति मे असकरे स्टेशन जायब ओकरा भयावह बुझाइत रहै । एतेक राति क' ने रिक्शा भेटै छै, ने सड़क पर एक्को टा आदमी ।

ओ तय केलक जे आठे बजे निकलि जायत । स्टेशनक बगल वला हॉल मे आखिरी शो सिनेमा देखत आ ट्रेन पकड़ि लेत । हॉल मे जाड़ो सँ बचल रहत । घरक लोक ओकर एहि निर्णय सँ अचंभित भेल । पहिने कहियो ओ एना नहि कयने रहय। ओकर चिंता आ डर देखि क' घरक लोक विरोध नहि केलकै । ओ अपन निश्चित कयल कार्यक्रमक अनुसार घर सँ आठ बजे निकलि गेल । सितलहरी तेहन रहै जे एतेक सवेरे सबटा दोकान बन्न भ' गेल छलै । सड़क पर ओकरा दुइए टा आदमी भेटेलै । एकटा के भेदी दृष्टि सँ त' ओ डेराइयो गेल रहय । हॉल पर ओ सवा आठ बजे पहुँच गेल आ नौ बजे धरि टौआइत रहल । घर पर रहितय त' आराम करैत रहितय। हॉल पर बइसइयोक ठहार नहि रहै । ओ देबालक टेक लेने ठाढ़ रहल । आब ओकरा ट्रेन छुटबाक चिंता हुअय लगलै । खोन्चा वला, पान वला आ गेटकी सँ पता लगेलक सिनेमा कखन खतम हेतै; फिलिम लम्बा त' ने छै ?

शो टुटिते एक गोटय सँ टाइम पुछलक । सवा बारह । गाड़ी नहि छुटतै । तइयो ओ अपन चालि तेज केलक आ स्टेशन दिस जाइ वला रेला मे सन्हिया गेल । स्टेशन पहुँच क' ओकरा पता चललै गाड़ी बहुत लेट छै । दू सँ पहिने नहि खुलतै । ओ टिकट कटेलक आ सिमटी वला बेंच पर बइस क' प्रतीक्षा करय लागल । भरिसक इएह बेंच रहै, जइ पर अखन बइसल सोचि रहल अछि । आ सोचि की रहल अछि, परसुक्का बात मोन पाड़ि रहल अछि ।

सोचबाक लेल छइहो की ? गुंडा-बदमाशक डर । पहिने कोनो डर नहि रहै। ओ बहुत-बहुत राति क' कतय सँ कतय गेल अछि । निःशंक । बेधड़क । लेकिन आब राति क' निकलबाक साहस नहि होइत छै । अखबार मे रोज लूटपाट आ हत्याक समाचार पढ़ि-पढ़ि क' आ लोकक अनुभव सुनि-सुनि क' जी मे डर समा गेल छै।

ओ उधेड़-बुन मे पड़ल किछु तय नहि क' पाबि रहल अछि जे की करय घर चलि जाय कि स्टेशने पर भोर क' लिअय ? रिक्शा भरिसक्के भेटतै । भेटियो जेतै त' रिक्शावला कैं गुंडा की गुदानतै ! जँ रिक्शेवला गुंडा निकलि गेल, तखन ओ की करत ? आब ककरो पर भरोस नहि रहलै ।

ढील पड़ि गेल मफलर कैं ओ कसि क' लपेटलक आ चद्दरि सँ मूड़ी आ टांग कैं नीक जकाँ झाँपलक । मुदा एहि झाँप-तोप सँ जाड़ नहि भागलै । निफाह

प्लेटफार्म पर पछिया सट-सट लगै आ सौंसे शरीर कैं छेदने चल जाइत रहै । पोन ठरि क' पानि भ' गेल छलै । ओ छने-छन अपन आसन बदलि रहल छल । पछिला दू राति सँ ओ सूति नहि सकल आ ट्रेन मे झमारल गेल । थकनी आ जगरना मे और बेसी जाड़ होइ छै । घर चल जइतय त' सीड़क मे गरमा क' सूति रहितय ।

ओ विचारलक जे टहलि क' रिक्शा देख आबय । भेंटलै त' चल जायत । लेकिन रिक्शा पड़ाव पर कोइ कत्तहु नहि रहै । अभर मे एकटा रिक्शा लागल छलै। देखलक सीट पर एक गोटय घोकड़ी लगा क' पड़ल अछि । ओ एक-दू बेर हाक देलकै । मुदा ओ आदमी नहि उठलै । ओ फेर पेशोपेश मे पड़ि गेल । कनेक दूर पर एक आदमी असकरे चलल जाइत रहै । ओकरा पर नजरि पड़िते ओ झटकि क' विदा भेल जेना ओकरा पकड़ि लेत आ संग-संग घर धरि पहुँच जायत । ओ थोड़बे दूर झटकल गेल होयत कि ओकर चालि मंद पड़ि गेलै । कोनो जरूरी नहि जे ओ आदमी ओम्हरे जेतै, जेम्हर ओकरा गेनाइ छै । लेकिन कोनो अज्ञात प्रेरणावश ओ धीरे-धीरे बढ़ैत गेल । आगाँ जा क' एकटा मोड़ रहै । जखन ओ मोड़ पर घूमल आ हियासलक त' ओहि आदमी के दूर-दूर धरि कोनो पता नहि रहै । नहि जानि ओ आदमी कतय अलोपित भ' गेलै । कतहु नुकायल ओकर प्रतीक्षा त' ने क' रहल छै ! अचानक ओकर देह डर सँ सिहरि उठलै । ई डर बेसी काल टिकलै नहि । ओ कनेक और आगाँ बढ़ल त' ओकर कलेजा थिर हुअय लगलै ।

जाड़क पीयर मलिन इजोरिया पसरल छलै । भरिसक पछियाक कारणें कुहेस नहि रहै । स्टैण्ड मे लागल भोरका बस दूरे सँ देखा रहल छलै । अपराधक एकटा अड्डा ईहो रहै । एहिठाम कैक बेर कैक आदमी के सामान छिनायल रहै । स्टैण्डक घेरा लग पहुँचते ओकर आशंका बढ़ि गेलै । स्टैंड निर्जन आ सुनसान पड़ल छलै । राति क' ई जगह बड़ भयाओन लगैत रहै ।

स्टैण्ड सँ निकलि गेला पर ओकर डर कमि गेलै । लेकिन अखन ओ अदहे दूर आयल छल । बचलहा रस्ता बहुत दूर बुझाइत रहै । पुलिसो कतहु नहि छलै । सड़क कातक दोकान दौड़ी, घर-दुआर सब बंद रहै । एक्को टा कुकूरो नहि देखाइत रहै । जाड़ मे ओहो सब दुबकल होयत । नमडोरिया सड़क पर ओ असकरे चल जा रहल छल । कैक बेर अपनो जुत्ताक आवाज सुनि क' लगै क्यो पछुअयने आबि रहल अछि आ जी सन्न सिन रहि जाइ । खट-खुट सुनि क' छाती धड़कि उठै ।

ओकर घर अदहोक अदहा रहि गेल छलै । ओकरा भरोस भेल चल जाइत रहै जे आब ओ बचि गेल । आब किछु नहि हेतै । ओ सकुशल घर पहुँच जायत । ठीक

तखनं ओ आवाज सुनलक । आवाज पाछाँ सँ आयल छलै । क्यो किछु बाजल रहै। ओकर जी सनाक सिन उठलै । ओ पलटि क' ताकलक । मुदा क्यो देखेले नहि । ओकरा भेलै क्यो अपन घर मे किछु बाजल होयत । ओ बढ़ैत गेल ।

''के छी ?''–पाछाँ मे क्यो पुछलकै । ओ घूमि क' देखलक । एक आदमी ठाढ़ छलै । ओ कोनो जवाब नहि देलक आ बढ़ैत रहल ।

''अय के छिअय ? ठाढ़ रह ।''–ओकर एहि आदेश सँ ओ भयभीत भ' गेल आ अपन चालि तेज क' देलक । ओ आदमी अपराधी बुझा रहल छलै । अखन जँ ओ आदमी आबि क' ओकरा घेरि लै त' ओ कतबो चिचिआयत क्यो नहि एतै । आब राति-बिराति मुसीबत मे पड़ल लोकक लेल क्यो नहि निकलै छै । ओ दसे डेग आगू बढ़ल होयत कि पलटि क' ताकलक । ताकिते ओ आतंकित भ' उठल । ओ आदमी दौड़ल आबि रहल छलै ।

ओ भागल । ओ एहन स्थान, एहन लोकक खोज मे भागि रहल अछि जे ओकरा बचा सकतै ।

❑



कथा

महाप्रकाश

कैलेंडर

ओना कही तँ बात किछु नहि–एकटा कैलेंडरक रहैक । एक सँ एक कैलैडर, दिनांक कि चित्र बनैत अछि आ कतेक तँ महीना कि वर्ष समाप्त होयबा सँ पूर्वे फेका जाइत अछि । लोक ने दिनांक मोन राखि पाबैत अछि, ने चित्र वा फोटो...। मुदा कौखन किछु बात होइत अछि जे अपना मे एकटा दिनांक...एकटा चित्र बनि जाइत अछि।

असल मे सुमन सिंह डेरा मे आबिते बाजि उठल छल–सर फर्स्ट क्लास डेरा अछि...रूम सेहो हवादार अछि । ई भेल क्वार्टर । ओना त' सभ सुविधा एक संगे भेटब मोस्किल...तैयो...वाह...।

सच्चे...एकटा बड़का मोस्किल अछि लैट्रीनक...। चारि कट्ठाक पैघ प्लॉट। चारूकात नारियर के सघन गाछ । पश्चिम सँ एकटा ''मोल होल लैट्रीन'' खूनल रहैक। सेहो मकान–मालिक हुनके सभहिक सुविधा लेल खुनऔने छल । ओना तँ कहने छल जे...अहाँ सभ हमरे लैट्रीन व्यवहार करू...मकान जेना नारियरक गाछ सँ घेरायल आकर्षित करैत छल...तहिना लैट्रीनक अभाव उदास आ विरत करैत छल ।

चाह पीबैत कालधरि शहर मकान आ भाड़ाक मादे अनेक तरहक गप्प होइत रहल । ओना जयवर्द्धन बूझैत रहथि जे अपना बूते जे भेटल अछि से बहुत थिक.. .दूर सँ देखू तँ महल...लग आउ तँ मात्र परदा...।

सुमन उठैत बाजल–सर एहि घर लेल, असल मे अहाँ लेल एकटा एहेन वस्तु रखने छी जे...बूझू जे तकर असली आ बाजिब मालिक हमरा बूझने अहींटा भ' सकैत छी...हम ईहो कहि दैत छी जे अहाँ कतोक वर्ष धरि ओकरा अपना सँ अलग नहि राखि सकब...।

सुमन सिंह जाहि वस्तुक रहस्यमय आ विस्तार सँ चर्चा कयने छल तकरा देखबाक किंवा ल' अयबाक उत्सुकता आ इच्छा रहलाक बादो जयवर्द्धन कैं जीवन निर्वाहक

छोट–छोट चिन्ता आ व्यस्तता मे पलखति नहि भेलनि । बिसरियो जइतथि जेना आन कतोक रास इच्छा कामना आ आवश्यक बात हुनका सन लोक बिसरि जाइत अछि।

जेना अपना मे हेरायल, कि थाकल, कि घरक रस्ता मोन पाड़ैत घुमैत छलाह कि सुमन बीच रस्ता मे आबि टोकलकनि–''सर, अहूँ सरकारी आश्वासन जकाँ समय पर बिला' जाइत छी ।''

ओ मात्र हँसलाह । बाजि नहि सकलाह । गत भेंट-वार्त्ताक निहित अर्थ छल जे आबी आ ''वस्तु'' ल जाय–से हुनका मोन पड़लनि ।

सुमन सिंह हाथ पकड़ि अपना ओत' ल' गेल । ड्राइंगरूम मे सोफा पर प्राय: ठेलैत बाजल–सर...किछु भ' जाय...

सुमनक 'सरस-सलिल' लेल संकेत ओ बुझलनि किंतु ओ ट्यूब–लाइटक रोशनी मे जे...जेना देखलनि–ओहिसँ चौंकि गेलाह । देवाल पर एकटा प्राचीन दुनलिया बंदूक टांगल छल आ ओकर दहिनकात छल दक्षिणी कालीक एकटा पैघ 'ब्लोअप' । समस्त संस्कृति मे येह टा नांगट मौगी पसरल अछि जत' ककरो मूड़ी नहि उठैत अछि । जयवर्द्धन बजलाह...ई देखैत छी...?

–छाड़ू ने...राजपूतक घर छियै...कतेक विचित्र आ विशिष्ट वस्तु सभ देखबैक...सुमन बाजल–की...?''

–नहि, आब अखन नहि...रातुक नौ बजैत अछि...ओहिना अबेर भ' गेल अछि चित्त शांत नहि हो तँ पीबाक कोन आनंद...। जयवर्द्धन कहलनि ।

–दिल तोड़ने वाली बात ?

– नहि आश्वासन सँ जोड़'वला बात...। प्राय: दूओ गोटे हँसलाह ।

सुमन उठल आ आलमारी सँ एकटा रंगीन पत्रिका सन वस्तु हुनका थम्हा देलक। पहिने तँ हुनका भेलनि जे कोनो साप्ताहिक थिक...पाछां देखलनि जे कैलेंडर रहय–रूसी कैलेंडर--सेहो चारि सालक एक संग...।

–देखियौ... सुमन सिंह हाथ पर टांगक मुद्रामे उठौलक आ पात उनटाक' देखाब' लागल–निचला पात पर दिनांक आ उपरका पर फोटो...पहाड़ पर वर्फ...ग्लेसियर–उज्जर आ नील रंग...पानि नहि, मात्र उज्जर आ नील...ग्लैसियरक अनेक रूप पहाड़क अनेक मुद्रा...कतहु जएह रूप जमीन पर सैह आकाश मे ।

–सच्चे '...इंचौ नटिंग' अछि...वाह । हुनका मुंह सँ निकलनि ।

–''राखू ऐज ए' टोकेन ऑफ माइ रेस्पेक्ट एंड रिगार्ड' ।

कोठरी सँ निकलि अयलाह जयवर्द्धन । दुनूकात तेमहला, गलीमे, पछबा हवाक

दाब' आ आवाज तेज बूझना गेलनि । चैत मासक अंतिम इजोरिया ठंढ सँ प्राय, भीजल छल । गली पार करैत ओ सड़क पर आबिते डेग तेज क' देलनि ।

कैलेंडर पाबि ओ सच्चे प्रसन्न छलाह । सुमन सिंहक आदर आ स्नेह सेहो चीन्हबा मे अयलनि । मोन पड़लनि सदैव अपन कान्ह पर कैमराक थैला लटकौने, मन्नू भैया। एहिखन ओ रहितथि तँ कैलेंडर देखि कहितथि...अमुक तरहक कैमरा...अमुक-अमुक लेंस...जूम की टेली...फलां तरहक ''फिल्टर'' सँ कोना ''आबजेक्टक स्टेटमेंट बदलि जाइत अछि...।

कैलेंडरक फोटो कि मन्नू भैयाक फोटोग्राफीक ज्ञान कि प्राप्तिक उत्तेजना मे ओ हरफ चलल जाइत रहथि...कि बूझबा मे अयलनि जे क्यो हुनके हाक द' रहल अछि । ओ ठमकलाह । प्रोफेसर आर. एन. सिंह लग अबैत बजलाह-बड़ बेसुध रहैत छी...कातो करौटवला केँ देखल करियौ...फेर ओ अपन आदति सँ हँसलाह-''खूब पढ़ैत छी...कोन पत्रिका छी...?''पत्रिका नहि...कैलैंडर छी...दिने निकलल रही...'''जयवर्द्धन विलम' सँ अपन असमर्थता प्रकट कयलनि ।

किंतु हुनका दिस बिनु ध्यान देने प्रोफेसर सिंह बजलाह-अरे देखहुं दिअ'-आ हाथ आगां बढ़ा' देलनि । ओ कैलैंडर हुनका हाथ मे दैत अनिच्छुक रहलाह ।

प्रोफेसर सिंह इजोरिया राति मे सड़क पर ठाढ़ कैलैंडर पलटैत विस्मित होइत रहलाह । जयवर्द्धन कौखन प्रो. सिंहके देखैत आ क्षणहि कैलैंडर केँ । इजोरिया मे ''ग्लोसी पेपर''क कैलैंडर...नील आ उज्जर फोटोग्राफी...ठीके एकटा विशेष अर्थ द' रहलैक-ए ।

-अदभुत...विलक्षण...अहाँ ई ल'क' की करब...द'दिअ'हमरा...क'त' टांगब अहाँ...हमरा ओत' लोको देखतैक तँ कहतैक वाह ! प्रो. सिंह कैलैंडरक पात उनटाबैत बाजैत रहलाह ।

जयवर्द्धन के लगलनि ई कोनो प्रोफेसरक स्वर नहि, कोनो 'बूचर'क स्वर थिक। प्रो. सिंहक मंसा बूझि ओ अवाक रहि गेलाह । एहि स्थिति सँ बहराइत बजलाह-से त' किन्नहु नहि देब..! ई एकटा स्नेही व्यक्तिक उपहार थिक । ओ प्राय: झपटि लब्बाक प्रयास कयलनि । किन्तु अनेकानेक छात्र सभहिक बीच रहबाक अनुभव आ उम्र हुनकं रहनि ।

एतबहि मे डाक्टर के. के. झा अभरलाह-डाक्टर साहेब...अहाऽऽ जयवर्द्धनजी। कत रहै छी...दर्शनो नहि...

डाक्टर झा प्रोफेसर सिंहक पड़ोसी छथिन । अगले-बगल मे क्वार्टर छनि । दुहू गोटे एक दोसर केँ 'डॉक्टर साहेब'-ए कहिं सम्बोधित करैत छथि । कान्ह पर तौलिया रखने, एहिखन, भोजनोपरांत सड़क पर हवाखोरी लेल आबि गेल रहथि ।

प्रो. सिंह बजलाह-देखू...जयवर्द्धनजी कतेक सुन्दर कैलेंडर उपरौलनि अछि...।

-''देखू...'' बाजैत डा. झा हाथ बढ़ौलनि आ प्रो. सिंह हुनका हाथ मे कैलेंडर थम्हा देलथिन । अजगर सँ छूटल; गहूमन लग गेल-जयवर्द्धन के एहने सन लगलनि।

डाक्टर झा इजोरिया मे कैलेंडर पसारि देखैत बजलाह-सच्चे डाक्टर साहेब, फोटोग्राफक विषय-वस्तु विरल अछि...धन्य कही फोटोग्राफर केँ...वाह...रे..वा...यौ, जयवर्द्धन जी...अहाँ दोसर उपरा लेब...डा. झा जयवर्द्धनक प्राय: हाथ पकड़ैत बजलाह।

-''सर एकटा मित्र 'प्रेजेंट' कयलक अछि...नहि द' सकब'

-हुनका स्वर मे किंचित क्षोभ आ आक्रोशक मिश्रण रहनि ।

प्रो. झा, जयवर्द्धनक भाव, प्राय: बूझैत बजलाह-डॉक्टर साहेब...आउ, एक बेर पान भ' जाय...रोशनी मे कैलेंडर सेहो देखब...नीक सँ...'' ओ जयवर्द्धनक हाथ धयने रहलाह ।

विवशता आ शालीनताक बीच पीसाइत दुहू प्रोफेसरक व्यक्तित्व सँ आक्रांत जयवर्द्धन केँ डॉक्टर झाक आग्रह मानहिं पड़लनि ।

डॉ. झाक कोठली मे चारूकात मोट-मोट पोथीक टाल, देबाल पर साहित्यक महारथी सभहिक पैघ-पैघ फोटो आ टेबुल पर रंगीन टी.भी., एक दिस ऐतिहासिक होइत सोफा सेट आ मध्य मे एकटा पलंग । डॉ. झा स्वयं पलंग पर बैसैत कैलेंडर पसारलनि । आँखि पर चश्मा चढ़बैत बेटो केँ आदेश देलनि-अलका...तीन टा चाह बनाउ...आ पानक वासन दिअ ।'

विवश, जयवर्द्धन कटल गाछ जकाँ प्रो. सिंहक संग सोफा पर खसलाह । टी. भी. पर चलैत कोनो ऐतिहासिक सिरियल के बूझबाक प्रयास मे अनायास लागि गेलाह। प्रोफेसर झा बजलाह-हमरा सभ कमला-कोशी-बलानक लोक...पानि के तँ बूझि सकैत छी...वर्फ...ग्लेसियर आ पहाड़क...बोध किताबी अछि...आ ई कैलेंडर, बुझलहुँ डाक्टर साहेब...हिमनद आ हिम पहाड़क बोध...बूझू जे पकड़िक' दिमाग मे घुसा दैत अछि...।

-से ठीक कहलहुँ डॉक्टर साहेब-रूसी सभ होइतो अछि बड़ विशेष जेहने कर्मठ...तेहने कलाकार सभ...एकटा बड्ड पैघ कलाकार रहैक...देखू ने नाम बिसराइत

अछि...अरे...हिमालय पर बहुत रास...पेंटिंग बनौने अछि-प्रो. सिंह अपन विशाल खल्वाट माथ पर हाथ फेरैत रहलाह ।

जयवर्द्धनक इच्छा भेलनि बाजथि-''निकोलाई रोरिक । जे संभवत: देविकारानी सँ विवाह कयने रहथि'' किन्तु प्राय: ईर्ष्या, प्राय: क्षुब्धता सँ ग्रस्त भ' हुनका बाजल नहि गेलनि ।

परदा पकड़ि अलका, कोठली मे बैसल लोक के देखलनि आ पानक वासन पिताक सोझा मे राखि, उपस्थित जनकें सस्मित प्रणाम कयलनि । डाक्टर झा बेटी सँ बजलाह-'देखू केहेन कैलेंडर अछि...हिनकर छियनि...। अलका निमिष मात्र लेल जयवर्द्धन के देखलनि । जयवर्द्धन असंदर्भित बनल रहलाह । अलका कैलेंडर लेने गेलीह । प्रोफेसर सिंह रूसी कलाकारक नाम मोन पाड़ैत रहलाह ।

जयवर्द्धन अलका कें जनैत छथि । अलका बी. ए. कयलनि अछि । दुपहरियाक अशांत समय जयवर्द्धनक पत्नी लग बैसिक' कथा पीहानी गीत नाद मे बीतवैत छथि। एक दूपहरिया, कोनो अवकासक दिन, दोसर कोठली मे पड़ल-पड़ल ओ सुनने रहथि। चन्दा जनु उगु आजुक राति...। अलकाक बुद्धि आ स्वर संस्कारी बूझना गेलनि। मोन भेल रहनि जे उठी आ जा' क' सुनी...कोनो दोसर गीत । किन्तु ओ जनैत छलाह हुनका सन लोक लेल अलका कोनो गीत नहि गौतीह ।

किंतु एहिखन जयवर्द्धन के मोन पड़ैत छनि जयाबाबू । राजधानीक महत्वपूर्ण अंग्रेजी अखवारक महत्वपूर्ण संवाददाता रहथि ओ । मित्र लोक । एकटा दीर्घ अन्तराल पर भेटल छलाह । विगत के भेंट सँ अधिक स्वस्थ आ सुन्दर-आकर्षक पैंट शर्ट मे सज्जित । कुशल क्षेमक उपरान्त जयवर्द्धन बाजि उठल छलाह-कत' सियौलहुँ बहुत सुन्दर रंग आ फिटिंग अछि...भाइ आब की ई शर्ट हम अहाँके पहिर' देलहुँ...।

जयाबाबू चुप रहलाह, हाथक सामान रिक्शा पर रखलनि । दोकानदार कें पाइ देलाक उपरान्त जयवर्द्धन के किछु क्षण लेल देखैत रहलाह । अन्तत: बजलाह-की. ..खाली छी ? बजार मे कोनो काज ?'नहि कोनो काज नहि जयवर्द्धन उतारा देलनि। जयाबाबू रिक्शा पर वैसलाह । संकेत पाबि ओ सेहो रिक्सा पर बैसलाह । प्राय: एक किलोमीटरक दूरी जवदाह मौन मे बीतल । ओ नियांन लाईटक साइन बोर्ड पढ़ैत रहलाह। जयाबाबू मौन नहि तोड़लनि । अन्तत: जयवर्द्धन जिज्ञासा कयलनि-कत' चलि रहल छी अपना सभ...?

कतोक क्षणक उपरान्त जयाबाबू मौन तोड़लनि-की हम अहाँक नीक मित्र नहि...की हम अहाँक नजरि मे नीक पत्रकार नहि...की हम अहाँक नजरि मे एकटा नीक आदमी नहि...??? ओ जेना दुख सँ भरल छलाह ।

जयवर्द्धन के जेना ठकमुड़ी लागि गेलनि । एतेकरास प्रश्न...एहेन प्रश्नक कोनो कल्पना नहि रहनि । प्रश्नक प्रयोजन आ संगति बूझबा मे नहि अयलनि । अटकैत-अटकैत बजलाह-से..की...यू आर मेरी मच अ' रेस्पेक्टेट फ्रेंड''

''नहि, से त' अहाँ नहि बाजल छी...अहाँ हमर मित्र छी त' हमर नीक अहाँके सोहाइत किये नहि अछि...किये अहाँ हमर शर्ट ल' लेब ? हमरा देखि क' अहाँ-हमर मित्रक मुँह सँ ईर्ष्याक शब्द निकलय....से कोन नीक बात...प्रचण्ड वेग जेना कोनो बांध तोड़ने हो...।

-नहि भाइ...हमर अभिप्राय मात्र प्रशंसा छल । शर्ट लेबाक मंशा तँ कथमपि नहि । जयवर्द्धन स्पष्टीकरण देलनि ।

-हँ यौ...जँ अहाँक अभिप्राय मानियो ली तँ प्रशंसाक शब्द...भाषा कतेक खराप अछि...ह्राइ शुड आई एक्सपेक्ट सच अ' पूअर लैंग्वेज फ्राम अ' परशन लाईक यू.. तखन अहाँ मे आ आजुक राजनीतिज्ञ मे की अन्तर ? हम की...हमरा सन क्यो एकटा शर्ट की पैंट आजुक समय मे कोना सिआबैत अछि...तकर ज्ञान-अनुमान अहाँके कोना नहि अछि...? मित्र भ' क' अहाँ मित्रकें लूटब...ठकब...शीट...।

जयाबाबू कतेक देर धरि जानि की सभ बाजैत रहलाह । जयवर्द्धनक सुनबाक सामर्थ शून्य मे चलि गेलनि । रिक्शा शहर सँ बाहर मत्स्यगंधा परिसर मे मंदिरक सांझा रूकल । चौदह नदीक यात्रा जेना समाप्त भेल । जयवर्द्धन मंदिर सँ, किंचित भगवती सँ निरपेक्ष रहलाह । सांझ मे झील परिसर मे रंग विरंगक कपड़ा मे लोक हुनका लोक सँ अधिक रंगक थक्का जकाँ उधियाइत बूझबा मे अयलनि । ओ सभ अपना कँ झीलक कछेर मे एकटा उन्टल नाहक सोझा, ठाढ़ पौलनि । झील मे पानि ओरा' गेल अछि। पानि पर इजोरिया हुनका, कोनो अलवटाहि छौड़ीक वेसम्हार हंसी सन लगलनि । एक्को वेर मूड़ी उठा उपर आकाश दिस, चान दिस देखबाक इच्छा नहि भेलनि । जयाबाबू ओहिना चुप-शांत पैंटक जेब मे दहिना हाथ देलनि । जयवर्द्धन अकस्मात भय सँ काँपि गेलाह । आब...आब ओ पिस्तौल तानता...वा चक्कू....। हठात ओ उठलाह । जयाबाबू सिकरेटक डिब्बा निकाललनि आ लाइटर...। जयवर्द्धन के ओ साँझ स्मरण छनि । गेट पर रिक्सा ठाढ़ छल ।

अलका चाह राखि गेलीह । कैलेंडर नहि छल । प्रो. कं. के. झा आ प्रो. आर. एन. सिंह कैलेंडर चर्चा सँ आँगा यूनिवरसिटी मे वेतन वृद्धि बकाया राशिक गप्प मे बाझल चाह लैत रहलाह । जयवर्द्धन सोचलनि-की ओ अलका लेल कैलेंडर सप्रेम-सस्नेह छोड़ि देताह । की सोचताह प्रो. सिंह... कैलेन्डरक मादे बूझि क' सुमन

सिंहकेँ कहेन लागतनि ? नहि, कैलेंडर छोड़ल नहि जा सकैत अछि । जँ अलका नहि देलनि त' एक बेर तँ कहले जा' सकैत अछि । खाली पेट मे चाह पागल घोड़ा जकाँ दौड़ैत रहल ।

हठात् प्रो. सिंह जर्दा फॉकैत उठलाह–''भेल–आब विदा दिअ' डाक्टर साहेब' ओ प्रोफेसर झा के नमस्कार मे हाथ जोड़लनि–''आह...अहाँ अखन धरि चाह खतम नहि कयलहुँ अछि...?'

जयवर्द्धन उठलाह, पान-सुपाड़ी आ जर्दा तरातर मुँह म दलान । डाक्टर झा जांघ पर सँ तकिया हटबैत ठाढ़ भेलाह । जयवर्द्धनक पयर लोथ आ दिमाग कैलेंडरक सोच सँ भारी रहनि । डाक्टर झा आगाँ तकरा बाद डाक्टर सिंह आ तकरा पाछाँ सुस्त भेल जयवर्द्धन कोठरी सँ बहराइत गेलाह । नहुएँ नहुएँ बढ़ैत सभ सीढ़ी उतरलाह । अलका अयलीह जयवर्द्धनक हाथ मे कैलेंडर दैत घूमि गेलीह । डाक्टर सिंह हुनका एक नजरि देखलनि । किन्तु चुप रहलाह । कैलेंडर लैत जयवर्द्धन एना चलैत रहलाह जेना किछुओ महत्वपूर्ण घटित नहि भेल हो ।

ओ नेपाल मे रहि राजसाहीक दिन देखलनि अछि । ओ अपन देश मे आपात्कालक मानसिक दबाब सेहो भोगलनि अछि...कहेन जवदाह आ मारूख रहैक ओ दिन...। किछु-किछु एहने भयाक्रान्त । प्रोफेसर झाक कैम्पस पार करैत हुनका लगलनि जेना जनतंत्रक विशाल आ मुक्त कालखण्ड मे आबि गेल छी ।

सड़क पर अबिते बजलाह–''वेश आब प्रणाम...।'' एहि संक्षिप्त शब्दक संग ओ अपन क्वार्टर दिस त्वरित डेग बढ़ौलनि । प्राय: तीन फर्लांग पर हुनक क्वार्टर हेतनि मुदा गति स्फुतनिक के रहनि । पत्नी बाहर ओसाड़ पर कुर्सी पर बैसलि प्रतीक्षा मे स्वभाविक रूपें ओंघाइत रहथिन । ओ नहि टोकलनि । घर जा' प्राय: उच्च स्वरें बजलाह–सुनैत छी...एकटा कांटी आ हथौड़ा देब त'...। ओ कैलेंडर पसारने ठाढ़ रहलाह।

''आब राति के कत' कांटी खोजू आ हथौड़ा'' अनमनस्क भावें पत्नी आबि ठाढ़ि भेलीह ।

पत्नी के अकवकायल देखि पुन: बजलाह–एतेटा घर मे एकटा कांटी नहि खोजल अछि...हथौड़ो ने देखल अछि...?''–ओ डिब्बा-डिब्बी पसारि एकटा कांटी हे'र लेलनि।

आइ आबिते-आबिते की भेल'...एना कियै बाजैत छी... ''भनभनाइत पत्नी गेलीह आ कोयला फोड़बला हथौड़ा उठौने अयलीह । अपन पढ़वा-लिखबाक टेबुलक उपर, मांझ देबाल पर कांटी ठोकि कैलेंडर टांगि, कुर्सी पर बैसल जयवर्द्धन के लगैत छनि जे ओ एकटा विशाल दुर्ग ढाहि देलनि अछि ।



कथा

मन मोहन झा

खिस्सा

ओ आबि गेल छल। आफत आबि गेल छल । ई नित्यक क्रम छै । भोजनक बाद ओ हाजिर भ' जाइत अछि । बिनु खिस्सा सुनने जेना भोजन नहि पचैत हाइ। हम शुरू मे अनठबैत छिऐ । परतारबाक प्रयास करैत छिऐ । मुदा ओ रकटय लगैत अछि–'पापा खिस्सा।'

आइयो ओ नहि मानैत अछि । खिस्सा छोडि आर किछु सुनबा लेल तैयार नहि अछि । बच्चा कें पढ़ाइ मे जोतने रहबाक अभिभावकीय प्रवृत्ति देखबैत हम एक बेर कहबो कैलिऐ जे, निन्न नहि होइत अछि त पढ़बे करू ।' परंच ओ चट हमर बात कँ निरस्त करैत बाजल–'पढ़ाइ क' लेलिऐक।' 'अच्छा, हमरा पढ़य दिअ' । किंतु ओ पढ़य नहि दैत अछि । किताब बन्न करैत बजैत अछि–'पहिने खिस्सा कहू ।'

हम रोज कतेक खिस्सा गढ़ू ? सुनाओले खिस्सा मे कने हेर-फेर क' ओकरा फुसियबाक चाहैत छिऐ, किंतु ओ पकड़ि लैत अछि । संतुष्ट नहि होइत अछि । छिड़िआय लगैत अछि । आ हमरा सुनाबय पड़ैत अछि । नव खिस्सा नइँ सुनयबाक मोआविजा मे चारि-पाँच टा पुरना खिस्सा कहय पड़ैत अछि । नित्य यैह होइत छै ।

आइओ ओ जिद पकडि लैत अछि । हारि हम कहैत छिऐ–'बड़ दिक करै छी अहाँ...कोन खिस्सा कहू ?'

'कोनो ।' ओ उत्साहित भ' अबैत अछि ।

हम कने काल सोचैत छी आ तखन शुरू करैत छी–'एक दिन चऽख नामक गीदर भोजनक खोज मे नगर...।'

'नइँ–नइँ ।' ओ कान मूनि लैत अछि । 'दोसर।'

हम दोसर शुरू करैत छी–''एकटा नदीक तट पर जामुनक विशाल गाछ रहै।'...

'इहो सुनल अछि । घरियार बानर कैँ पीठ पर बेसा ल' जाइत छै।'

'सभ त अहाँक सुनले अछि । अच्छा, ई पंचतंत्रक खिस्सा सभ कोना बनलै सं बूझल अछि ?'

'नइँ ।

'एकटा प्रतापी, महादानी ओ खूब धनिक राजा छल ।'...

'राजा त धनिक होइते अछि ।' ओ टोकलक ।

'हँ, परंच ओकरा कथुक कमी नइँ रहै । ओकर तीन टा बेटा रहै जे अहीं सन महामूर्ख रहै ।' जानि-बूझिक' हम कचकचैलिऐ ।

'पप्पा !' ओ अगड़ाय लागल ।

'राजा बड़ दुखी रहैत छल । ओ मंत्री कैँ बजाए पुत्र सभक शिक्षा-दीक्षाक संबंध मे अपन चिंता प्रकट कयलक । राज्य मे अनेको शिक्षक छल मुदा तेहन एकोटा नहि जे ओकरा सभकैँ उचित शिक्षा दय सकय । अंत मे एकटा मंत्री आचार्य विष्णु शर्माक नाम सुझौलकै । हुनका बजबाय ओकर सभक शिक्षाक भार देल गेल । विष्णु शर्मा ओकर-सभक शिक्षा लेल बहुतेरास कथा गढ़लनि, जाहि द्वारा राजनीतिक ओ व्यवहार नीतिक ज्ञान देमय लगलथिन । खिस्सा सभ पाँच प्रकरण मे बाँटल छै, तैं नाम पड़लै पंचतंत्र। छवे मास मे ओ राजपुत्र सभ कैँ कुशल राजनीतिज्ञ बना देलथिन ।'

'राजनीतिज्ञ माने नेता ?'

'हँ, जे राज-पाठ ढंग सँ चला सकय ।'

ओ सोझे-सोझे खिस्सा पर आबय चाहैत छल, आ तैं व्यक्तिक्रम कैँ जल्दी पार करैत बाजल-'दोसर खिस्सा कहू ।'

'खिस्सा त सुनयबे कैलहुँ, आब की ?'

'नइँ-ई नइँ, नीक खिस्सा ।'

'नीक खिस्सा केहन होइत छै ? हमरा बुझा दिअ'।

'नइँ, अहाँकैँ अबैत अछि ।'

ओ मानयबला नइँ छल, तैं हम शुरू कैलिऐ-'एक बेर देवशर्मा नामक ब्राह्मण क ओहिठाम जाहि दिन पुत्रक जन्म भेलै ओही दिन ओहि घर मे एकटा सपनौर सेहो बच्चा देलकै । ब्राह्मणी बहुत दयालु स्वभावक छलै आ ओकरो अपने बेटा जकाँ पोसय लागल । ओ दुनू एक्के संग खेलाइत छल ।'...

'कोन दुनू ?'

'देवशर्माक पुत्र आ सपनौर क.....।'

'ओ ।'

'किंतु ब्राह्मण-पत्नी कैँ एहो शंका रहैत छल जे सपनौर ओकर बच्चा कैँ काटि ने लै ।'....

'सपनौर लोककैँ काटि लैत छे ?'

'हँ...एना नइँ कटैत छै, मुदा काटि त सकित छै । जेना बिलाइ ककरो काटि लै छै...।'

'अच्छा, तखन ?'

'एक दिन ब्राह्मणी बच्चा कैँ गाछक छाहरि मे सुता अपन पति कैँ देखय कहि पोखरि सँ पानि आनय चलि गेलि । देवशर्मा सेहो केम्हरो निकलि गेल । ताही समय एकटा साप बिल सँ बहरायल । सपनौर सोचलक जे हमर मित्र कैँ कतहु काटि ने लिअय । ओ साप पर टूटि पड़ल । घमासान लड़ाइ होमय लगलै । अंत मे सपनौर जीतल । सापक खुडी-खुंडीक' देलकै ।'

'सपनौर के त साप सँ दुश्मनी रहैत छै ने पापा ?

'हँ । सपनौरक मुँह मे शोणित लागल देखि ब्राह्मण-पत्नी कैँ भेलै जे अवश्य ई ओकर पुत्र कैँ काटि लेलकैक अछि आ भरल घैल सपनौर क देह पर बजारि देलकै। ओ बेचारा मरि गेल ।'

'तखन ?'

'तखन की ? ओ जखन देखलक जे ओकर बच्चा सकुशल सूतल अछि त अफसोच करय लागल ।'

'सपनौर त भलाइ कयने रहै ?'

'हँ, आजुक समय मे भलाइक येह परिणाम होइत छै ।' हम ओकरा दुनियादारीक ज्ञान कराबय चाहैत छलिऐ ।

ओ बिलमल छल । हमर गप्प ओकरा ओझरा देने रहै । किछु काल उधेड़-बुन मे पड़ल रहल ओ । आ तकराबाद बाजल-'एकटा आर ।'

'आब नहि, चारिटा भ' गेल ।'

'नइँ-नइँ । अहाँ झूठ-फूसिक खिस्सा सुना हमरा ठकैत छी ।'

'त साँच खिस्सा केहन होइत छै ?...अच्छा, सत्य-कथा सुनब ?'

'हँ ।'

'त सुनू, परंच ई अंतिम । एकराबाद दिक नइँ करब ।'

'ठीक छै । नीक हैत त नहि कहब ।'

'ठाकुर अंकल छथि ने...कहियो काल जे गाड़ी सँ अबैत छथि ।'

'हँ, जे दूटा फाइव-स्टार अनैत छथि।'

'हँ, से कतहु जाइत रहथि त रस्ता मे एकटा छौंड़ी 'लिफ्ट' मँगलकनि । ओ बैसा लेलथिन । आगाँ गेला पर ओ कहलकनि जे अपन मनीबैग हमरा द' दिअ' नहि त हम हल्ला क' देब ।'

'तखन की भेलै ?'

'होइते की ? ओ अपन मनीबैग द' ओकरा हटौलनि ।'

'से किऐक ?'

नइँ त ओ चिकरय लगितै जे ई हमरा संग बदमाशी क' रहल छथि ।'

'ठाकुर-अंकल त ओकरा पर दया कयलथिन ने ? तखन ओ ओना किऐक कयलकनि ?'

'जेना ओ ब्राह्मण-पत्नी सपनौर कें मारि देलकै, जे ओकर बच्चाक प्राण बंचौने रहै । नीक करबाक परिणाम आब अधलाह होमय लगलैक अछि । तें त आब एक्सीडेंट भेला पर लोक मरितो रहैत छै त केओ सहायता नहि करैत अछि जे अनेरे झंझटि मे फँसि जायब ।'

'कोना ?'

'एक्सीडेंट ई, सभ मे पुलिस-केस भ' जाइत छै ने ? पुलिस पूछताछ करैत अछि तें लोक बचबाक चाहैत अछि ।'

'तखन त 'गुड समेरिटन' नहि बनबाक चाही ?'

'नहि तेहन गप्प नइँ छै । ओहो अपन समय मे ठीक छल किंतु आब से युग नहि छै ।'...हम ओकरा ठीक सँ नइँ बुझा सकल रहिऐ, से हमरा लागल । मन पड़ल एक दिन ओ 'समेरिटन' क माने पुछने छल ।

ओ फेर बिलमि गेल । किछु नइँ बूझि पाबि रहल छल जेना । ओकर बाल-मन मे घोर अन्तर्द्वन्द्व चलि रहल छै, से हम गमलहुँ ।

'पापा, एकटा बढ़ियाँ ख़िस्सा सुनाउ...एक्कहि टा...प्लीज़ ।'

'नइँ, अहाँकें हम कहि देने छलहुँ, एकर बाद नहि ।'

'नइँ, हमहूँ कहि देने रही जे नीक हैत तखन नहि कहब । अच्छा एकर बाद नहि, प्रॉमिस ।'

'नहि, आब सूति रहू । भ' गेल अजुका ।'

'कहाँ एकोटा नीक भेलै ? ई कोनो खिस्सा छल ?'

'हमरा आब नहि अबैत अछि । जतबा अबैत छल से सुना देलहुँ ।'

'एहि सँ नीक त हमरे अबैत अछि । 'लेसन' मँहक सुनाउ ?'

'हँ सुनाउ ।' हम राहतक साँस लेलहुँ ।

ओ सुनबय लागल-'एक बेर क्राइस्ट दूटा 'अपोसल' संग जाइत रहथि ।

'अपोसल माने ?' कथा मध्य हम पढाइ सन्हियबाक प्रयास कंलिऐ ।

'फौलोअर, माने...।'

'चेला'-हम कहलिऐ ।

'हँ, रस्ता मे एगोटे कहलकनि जे हमरो अपना संग राखि लिअ' । चेला बना लिअ' । जीसस जनैत रहथि जे ओ पापी अछि तैयो संग राखि लेलथिन । ओ एकटा देश मे अयलाह जतय राजा बहुत बेसी बीमार छल । क्राइस्ट कें राजा कें बचयबाक मन भेलनि किऐक त ओ नीक लोक आ गरीबक सहायक छल । किंतु 'पैलेस'..

'राजमहल ।'

'हँ, पहुँचला पर ज्ञात भेलनि जे एखने राजा मरि गेलै । क्राइस्ट कहलथिन जे हमरा राजाक कोठरी मे एक बाल्टी पानि आ एकटा चक्कू संग कनेकाल एकसर छोड़ि दिअ ।'

'चक्कू किऐक ?'

'सुनू ने । हम की कहैत रही ?...हँ, क्राइस्टक चेला सभ बाहरे रहि गेल । दुनू त सूति गेल मुदा नवका चेलाकें उत्सुकता भेलै जे देखी भीतर की भ' रहल छै! ओ 'की होल'...बुझैत छिऐ न ? ओही सँ देखय लागल । जीसस शवकें चारि खंड मे काटि, पानि सँ नीक जकाँ धोक' फेर सीबि देलथिन...।'

'ओऽ, हमरा भेल जे नोन-हरदि सानिक' तरताह' हम खौंझयलिऐ ।

'नो पापा, छि: पापा...गंदा बात ।'...ओ रभसय लागल ।

'हँ, त आगू की भेलै ?'

'तकर बाद जीसस 'प्रेयर' क' 'क्रास' बनौलथिन आ मुर्दा जीबि उठलै ?'

'सत्ते ?' ओकर विश्वास कते पोख्ता छै से जाँच करय हम चाहलहुँ ।

'हँ , क्राइस्ट ओकरा जिआ देलथिन । राजा क्राइस्ट कें 'फीस्ट' देलक आ चलैत काल रस्ता लेल मारते रास केक देलकनि । चलैत-चलैत राति भ' गेलै त जंगल मे ओ लोकनि रूकि गेलाह ।

'जंगल मे नहि ठहरबाक चाहैत छलनि...तरह-तरहक जानवर जंगल मे रहैत छै।' हम थाहलिऐ ।

'जीसस कें जानवर सँ कोन डर ? हुनका संग त बाघ-सिंह पोसुआ भ' क' संग चलैत छलनि । जीसस...'

'अच्छा तखन ?'

'ओ सभ राजाक देल केक खाइत गेलाह आ जे उबरलै तकरा भोर लेल राखि देल गेल। राति मे नवका 'अपोसल' उठि सभटा केक खा गेलै आ भोर मे कहलकै जे 'वुल्फ' खा गेल।'

'जीसस त बूझि गेल हांइथिन जे हुराड़ बाहरी नहि ओकर आंतरिक लोभ रहै।'

'अहाँकेँ खिस्सा बूझल अछि ?' ओकर स्वर मे निराशाक उतार रहै।

'नइँ, हम एहिना अनुमान कैलहुँ। तखन ओ की कैलथिन ?'

ओ पुनः उत्साहित भ' सुनबय लागल–'जीसस ओहि 'लायर'...

'झुट्ठा।'

'झुट्ठा केँ भगा देलथिन। ओ दोसर देश चलि गेल जतय राजाक बेटी लगले मरल रहै।'...

'अहाँक खिस्सा नमरल जा रहल अछि। हमरा औंघी लागि रहल अछि। जल्दी करू।'

'भ' गेलै पापा। ओ राजा लग जा ओहिना कहलकै जे हमरा पानि आ चक्कू मँगा दिअ'। ओ जेना क्राइस्ट केँ करैत देखने छल तहिना शवकेँ चारि हीस मे काटि ओकरा पानि सँ धोक' सीबि देलकै। मुदा ओ नइँ जीलइ। जनैत छी किऐ ?'

'किऐ ?' हम पुछलिऐ।

'किऐक त ओ 'प्रेयर' आ 'क्रास' कैनाइ बिसरि गेल छल।'

हम सन्न रहि गेलहुँ। ओकर कन्वेंटी संस्कार ओकरा वास्तविक जीवन सँ दूर ल' जा रहल छलै, हम सोचलहुँ।

'राजा ओकरा मारबाक आदेश दीते रहै कि तखने जीसस आबि ओकरा बचा लेलथिन। ओ फेर तहिना क' मुर्दा केँ जिआ देलथिन।'

'अच्छा त एहि सँ की शिक्षा भेटैत छै ? हम प्रश्न कैलिऐ।

'यैह जे नीक लोकक भला होइत छै। झूठ नहि बजबाक चाही। लोभ नइँ करबाक चाही। हमरा दोसरक गलतीकेँ माफ क' देबाक चाही।' ओ परीक्षाक रटल उत्तर जकाँ एक साँस मे सुना गेल।

'अच्छा आब सूति रहू।' बत्ती मिझबैत हम कहलिऐ। भेल जे कहीं ओ फेर खिस्सा लेल जोर नइँ करय लागय।

दुनूक आगाँ अन्हार आ माथ मे घुरिआइत प्रश्न छल। निन्न ककरहुँ नइँ भ' रहल छल। हम बड़ीकाल धरि ओकर स्कूली शिक्षा मँहक आदर्श तथा व्यवहारिक जीवनक सत्यक बीच झुलैत रहल छलहुँ...भरिसक ओहो।



कथा

विनोद बिहारी लाल

राजाघर

मुंहाबज्जी बन्न रहै। चारिम दिन रहै तकर। एहि चारिये दिन मे रंजनाक प्राण औना गेल छलै आ ओ घर मे पसरल जवदाह चुप्पी केँ तोड़ि देलक–'आइ कखन अयबै ?'

मनोज, मुदा ओहिना तनल आ ऐंठल। ओकर उपेक्षा करैत ओ हीरो होन्डाकेँ हरहरौलकै आ सड़क पर उड़' लगलै।

रंजना ठकुआयलि फाटक लग ठाढ़ि, विखिन्न आ चिन्तित...कोना निमहतै एहन पुरूष सङ ! सोचैत-झखैत अन्यमनस्क सन फाटक बन्न कयलक आ घर घूमि आयलि। किछु छन गुनधुनायलि एम्हर-ओम्हर बुलैत रहलि, फेर बेडरूम सँ ऊनक गोला उठौलक आ घर सँ बहरा गेलि।

कतेक दिनक बाद धोनि फाटल रहै। अकास साफ रौद उगल रहै। रंजना सड़क पर आयलि। सड़कक दुनू भाग बहुत दूर धरि पसरल स्टाफ क्वार्टर। क्वार्टर सभक आगू छोटछीन लॉन। लॉनक रौदमे कपड़ा सुखबैत स्त्रिगण, क्रिकेट खेलाइत धीयापूता आ बैसल-पड़ल रौद तपैत बूढ़-पुरान। क्वार्टर नम्मर-तेरहक फाटक दिस बढ़लि ओ। ई क्वार्टर छियनि बड़ा बाबू ए. सी. झाक। सीतामढ़ी जिलाक कोनो गामक थिकाह झाजी एकेे माटिपानिक लोक। से, दुनू परिवार मे खूबे हेलमेल छै। पुरूष दुनू तँ कमसम, दुनूक पत्नी, मुदा सभ दिन भेंटघांट करिते छथिन। कहियो झाजीक पत्नी रंजनाक क्वार्टर तँ कहियो रंजना झाजीक क्वार्टर। से रंजना केँ अबैत देखि झाजीक पत्नी आवेश सँ बजौलखिन–''आउ...आउ...रंजू दाइ।'

दुनू, क्वार्टर सँ बाहर-लॉनक रौद मे बैसलीह आ गपसप करैत स्वेटर बुनैत रहलीह। सितलहरी सँ त्राण भेटल रहै लोक केँ। रौद उगल छलै कड़गर कतेक दिन पर, से ओहि प्रसंग उठल गप्प मुहल्लाक पानि आ बिजलीक संकट पर आबि गेलै। ओही

बीच झाजीक पत्नीक नजरि रंजनाक उघरल, बढ़ल पेट पर पड़लनि आ गप्प ओम्हरे मूड़ि गेलै ।

'कैयम मास छी रंजू दाइ ?''

'पाँचम छिये यै बहिनदाइ, आ देखथुन ने प्राण अवग्रह मे अखने अछि !'

'पहिल अनुभव छी ने ! मुँह पर झाइं देखाइ लागल अछि । देह पिरौंछ लगैए। खूब फल आ साग पात खाइ छी ने ! मनोज बाबू ध्यान बात रखिते हेता !'

झाजीक घरनी कहिक' रंजना दिस तकलखिन आ ओकर मुँह कैँ पढ़' लगलखिन। रंजना मौन । की जवाब देनि, नहि फुरयलै । गुमसुम बुनैत रहलि ।

'एकटा बात पुछै छी रंजना दाइ !' सहसा झाजीक पत्नीक स्वर रहस्यमय बनि गेलनि-'ऑफिस सँ कखन घुमै छथि अहाँक घरवला ?'

रंजना बुनिते कहलकनि-'लेट सँ अबै छथिन, बहिनदाइ ! कहियो आठ, कहियो नओ, कहियो दसो बाजि जाइ छनि !'

'से किए, पुछै नै छियनि ?'

'ऐ बीच काज बढ़ि गेल छनि । ऑफिसक बादो कयटा जरूरी फाइल तैयार कर' पड़ै छनि, अफसरक डेरा पर ।'

झाजीक पत्नीक चेहरा गंभीर भ' गेलनि-'रंजू, अहाँकेँ अपन छोट बहिन बुझै छी, तें कहै छी, मनोज बहन्ना बनबै छथि !'

रंजनाक हाथ ठमकि गेलै । उत्सुक आ शंकित आँखि झाजीक पत्नीक मुँह पर थिर ।

झाजीक पत्नी कनेक आगू घुसकि क' फुस-फुसाय लगलखिन-'अहाँ आर किछु नै बूझब दाइ ! हम जे सुनलौं से कहै छी, मनोज एकटा छौड़ीक पाछू लट्टू भेल छथि, तें लेट क' अबै छथि आइकाल्हि ।'

रंजनाक छाती धक् द' उठलै । दुनू आँखि पसरि क' बाहर निकलि अयलै। एकटा अमंगलक आशंका, दुश्चिन्ता सगर देहक शोणित सुखब' लगलै ।

'ई की कहै छथिन बहिनदाइ ! ई कत' सुनलखिनहें ?'

'यै, परसू गेल रही खबाड़ेजीक क्वार्टर, कुमहरकच आन' । ओत' आठ नम्मरक शर्माजी छथिन ने, तिनकर कनियाँ ई बजै छली । शर्माजी, मनोजेक विभाग मे छथिन। ओहि विभाग मे काज करै छै एकटा छौड़ी । ऊ छौंड़ी अपन सांइ कैँ छोड़ने छै । अलग डेरा ल' क' रहै छै आ आन पुरूष सभसँ रंग-रभस करै छै । मनोज ऑफिसक बाद ओकरे मे ओझरायल रहै छथि, कहाँदन !'

झाजीक पत्नीक कनफुसकी खतम होइत-होइत रंजनाक प्राण सुखा गेल रहै जेना। माथ सुन्न । पाथरक मुरूत जकाँ जड़ ओ सोझाँ शून्य मे कतहु तकैत रहलि ।

झाजीक घरनी बुझब' लगलखिन-'रंजूदाइ, मनोज सँ लड़ाइ-झगड़ नै शुरू क' लेब तुरत । अहाँ कोनो तेहन उपाय ताकू जाइ सँ ओइ चूड़िनक फान सँ छूटथि मनोज!'

रंजना गुमसुम, ओहिना पथरायल नजरियें कतहु ताकि रहलि छलि । अचानके मनोजक बदलल रूखिक सभटा रहस्य एके पल मे खुजि गेल रहै । आ तखन अयनाक सोझाँ नहि रहितो अपन चेहरा एकदम उसट्ठ, पीयर आ ताहि पर झांइक वीभत्स मकरजाल देखाइ लगलै । फेर भेलै, एहन, ई दैहिक स्थिति तँ हरेक स्त्रीक जीवन मे अबै छै जे बड़ शुभ, हर्ष आ गौरवक बूझल जाइ छै । मुदा मनोज...ओ नारी-देहक एहि परिवर्तन कैँ बड़ गर्हित, घृणित बुझैए ।

ओकर चित्त उखड़ि गेलै । दुनू कांटा कैँ ऊनक गोलामे घोपलक आ उठिक' ठाढ़ि भ' गेलि ।

'जाह ! विदा भ' गेलौं...किए ? बैसू ने !' झाजीक पत्नी हाथ ध' लेलखिन-'अखन कत' जायब ! अनेरो मोन नें खराब क' लिय' रंजना दाइ ! धीरे-धीरे सभ ठीक भ' जायत...बैसू !'

'नै बहिनदाइ ! फेर दोसर दिन अयबनि । अखन जाय देथु । मोन ठीके कोनादन भ' गेल ई सभ सुनिक' । कने सूतब तखन आब मोन ठीक हैत ।'

झाजीक पत्नी उठिक' फाटक धरि अयलखिन आ ओकरा मानसिक तनाओ सँ बचवाक आ धैर्य सँ, शान्ति सँ मनोज कैँ बुझयबाक सलाह दैत रहलखिन ।

बेडरूम मे आबि रंजना पलंग पर बैसि रहलि । बैसलि-बैसलि सोचैत आ धुआंइत-सुनगैत रहलि। टेबुल परक मनोजक मुस्किआइत फोटो पर नजरि गेलै तँ जीह कसाइन भ' गेलै । ओकर कीनल टीभी, भीसीपी, फ्रीज सभकैँ देखैत मोन घृणा सँ भर' लगलै । माथ दुखाय लगलै।

ओ पलंग पर पड़ि रहलि आ आंखि मूनि सुतवाक चेष्टा कर' लागलि । मुदा, भीतर तनतन करैत उद्विग्नता निन्नकैँ आँखिमे नहि आव' दैक । कछमछ-छटपट करैत ओकरा मोन पड़लै विवाहक बाद मनोजक दुलार-मलार...ओकर कतेको अविस्मरणीय मधुर छन आ हृदय उमड़ि गेलै । आँखि द' बरसबा लेल जोर मार' लगलै । तकरा दाँत पर दाँत कसि भितरे घोंटि गेलि । जी कड़ा भेलै...ओ किएक नोर बहाओति ? कोन पापक प्रायश्चित मे कानय ओं ? ओ तँ हरदम छलल गेलि अछि । ओकरा मोन पड़लै परसूक बात...मनोज बड़ी रातिक' आयल रहै । अबिते ओछौन पर चारि चितंग

पड़ि रहलै । रंजना टीभी पर समाचार देखै छलि । अचानक मनोज झनझना उठलै, 'बन्न करू टीभी । माथ फटैए दर्द सँ हमर । स्साला ! ऑफिस तहिना...डेरो पर शान्ति नै !' टीभी बन्न करैत तखन भेल छलै, मानसिक थकावटि छनि । माथापच्ची बेसिये भेल हेतनि ऑफिस मे । आब, मुदा बूझि रहल अछि, ओ केहन थकावटि रहै ।

विश्वासघाती !

हृदय फेर उमड़लै आ कतबो रोक' चाहलि, दू बून्न नोर दुनू गाल पर टघरिये गेलै । नोरायल आँखि मे स्मृतिक कतेको चित्र अबैत रहलै, मेटाइत रहलै । ओही मे एकटा चित्र अयलै ओहि छनक, जाहि मे ओकर भविष्यक रूपरेखा तय कयल गेल रहै । ओहि चित्र मे ओकर नैहरक दलान रहै । दलान पर बैसल बाबूजी, कका, पाहुन आ भैया । बाबूजी विमर्शक लेल परिजन कैं बजौने रहथिन । दूटा कथा उपस्थित कयने छलखिन पंजिकार । एकटा रामनगरक, दोसर कमलपुरक । रामनगरक लड़िका लेक्चरर आ कमलपुरक क्लर्क रहै । लेक्चरर ब'र तय कयल जाय कि क्लर्क, पहिने एही पर बहस भेल रहै । बेसी गोटे लेक्चरर ब'र कैं खारिज क' देलखिन, मुदा पाहुन ओही कथाक पक्षमे छलखिन । लड़िका नीक पढ़ल-लिखल छै । सुशील छै । नीक रिजल्ट होइत रहलैए । भविष्य बहुत उज्जवल छै । हुनक कहब छलनि । तकरा भैया कटलखिन, लड़िकाक पहिने वर्त्तमान देखियौ, पाहुन ! भविष्य के जनैए ? वर्तमान त' ई छै, कोनो लेक्चरर-प्रोफेसर कैं कहिया दरमाहा भेटतै, भेटतै त' कते परसेंट भेटतै तकरो निश्चितता नै छै. । पंजिकारो क्लर्के ब'रक पक्ष मे छलखिन । बेटीकैं अधिक सँ अधिक सुख-सुविधा जाइ घर मे भेटैक, लोक ततहि कथा स्थिर करैए पाहुन ! ओ कहलखिन, अइ दृष्टियें कमलपुरवला कथा कर्त्तव्य । लड़िका प्रगतिकर'वला छै। अपने लोकनि की द' सकबनि, आधुनिक सुख-सुविधाक सभ वस्तु दरमाहाक पाइ सँ ओ कीन चुकल छथि । पाहुन हुनक विचार सँ सहमत नहि रहथिन । हुनक कहब छलनि जे एतेक कीमती वस्तु सभ बेतनक पाइ सँ कोनो क्लर्क नै कीन सकैए । साफ छै, ई लड़िका चलता-पुरजा छै । घुसखोर हएत । मोगल जकाँ ऑफिस मे बेगरतुत सँ पाइ असुलैत हएत । ई नीक लोकक लच्छन त' नै छिऐ ! हुनक एहि कथन पर कका मुस्किआइत विनोद कयलखिन, नीक लोक त' आब पाहुन एहने लोक बूझल जाइए । पाइ कोना अयलै कि अबै छै, ई नै देखै छै लोक । लोक देखै छै कार आ बड़का बंगला आ तकरा पैघ आ नीक लोक बुझै छै । ओहि नीक लोकक माथ शान सँ तनल रहै छै । मुखमंडल दमकैत रहै छै गौरव सँ जे झड़'वला टेबुल ओकरा जिम्मा छै । ऑफिसक किरानी मे ओ विशिष्ट अछि । तकर पाहुन प्रतिवाद कयलखिन, ओहन

लोक अपना मनें जे सोचय कका, पीठ पाछू लोक थूक फेंकै छै । किन्तु, विद्वता आ सच्चरित्रताक सम्मान अखनो बूझ'वला करै छै । भलें अइ गुणवला लोकक देह पर फाटले कुरता किए ने होइ ! विचार घूमिक' फेर लेक्चरर ब'र दिस आबि गेल छलै, से भैया ओकर जड़ि उखाड़' लगलखिन । कहलखिन ओ, अहाँ रामनगरक लड़िका कैं उत्तम मानै छी ने पाहुन ! मुदा ओइ लड़िका सन लेक्चरर कैं दरभंगा मे देखै छिऐ, देह पर रोइयां नै । कोनो दोकानदार एकरा सभकैं उधारी देब' ले तैयार नै होइ छै। किरायाक मकान जोह'वला कैं मकान मालिक पहिने इएह पुछै छै, अहाँ परफेसरी त' नै करै छी ? बुझियौ, विद्वता आ सच्चरित्रताक की छै मूल्य ? पंजिकार गप्प कैं मोड़लखिन, सभ जन बैसल छी त' दुनूक माङो सुनि लिय' बाबूलोकनि ! लेक्चरर बाबूक माङ टाकाक नै छनि । लड़िकी पढ़लि हो, ई चाहै छथि । किन्तु किरानीबाबूक टाकाक माङ छनि । ओ डेढ़ लाख टाका गनौताह । बाबूजी आ भैया मनेमन विचार स्थिर क' चुकल रहथिन । कहलखिन, दुनू कथा मे कमलपुरक बऽर, एक नम्मरक हमरो बुझाइए पंजिकार । किन्तु, टाका ओते नै अछि आ ई कथा छोड़हुबला नै छी, तें टाकाक ब्योंत कर' पड़त । नै, त' एकटा कोला बेचि लेब । करब त' इएह कथा करब । बस, ओकर भाग्य लेख लिखा गेल रहै ओही दिन ।

बाबूजी हरखित भेल आङन आयल छलखिन आ ओकरा सुनाक' मायकैं कहने रहथिन, 'सुनै छी रंजूक माइ ! रंजना राजाघर जायति । रानी बनति । जमाय जे हेता तिनकर एक दिनक बाइली आमदनी हजार सँ दू हजारक छनि । पंजिकार कहै छलाह, टेबुल तेहन भेटल छनि जे नोट झहरैत रहै छनि ।'

मायक खुशीक सीमा नहि । ओकरो तँ ओहि समय खुशीये भेल छलै । छौ मास कोना ससरि गेलै, नहि बूझि पौने छलि । आब, मुदा बूझि रहल अछि, बीतल ओ सभ दिन, दिनक एक-एक पल कतेक फरेबी आ कपटी, केहन बंचक आ पाशविक रहै ।

ओकरा मोन पड़लै मनोजक एक रातिक पाशविकता...दस दिन भेल होयतै, ओहि राति ओ कोनो पार्टी सँ खूब पीबि क' आयल छलै । अबिते भुखायल भेड़िया जकाँ देह नोच' लगलै तँ ओकरा ठेलिक' रंजना फज्झति कयलकै, अहाँ मनुक्ख छी कि जानवर ? विचार नै अछि थोड़बो ? हम् कोन हालति मे छी, अहाँ जनै छी कि नै ?'

मनोजक बाँहि आ छाती फूटल चूड़ीक नोक सँ चिरा-चंछा गेल छलै । से ओकर आहत पशुत्व बोमछि उठलै, ''नै...हम केवल ई जनै छी, अहाँ हमरा योग्य नै छी त'

जाउ जहन्नुम मे, हमरा मतलब नै !' ओ भर्त्सना कयलकै, छी: ! कनियों लाज करू। लोक सुनत त' थूक फेकत।' किन्तु, मनोजक भितुरका हैवान ओहिना बमकैत रहलै–'आ हँ, हम नै देख' चाहै छी अखन कोनो बच्चा-खच्चा। काल्हि सोझे सिन्हा क्लिनिक जाउ आ 'एबार्सन' करवा लिय'।

सुनिक' मन-प्राणकेँ धक्का लगलै। ओहि राति ओकर नोर नहि थम्हल रहै। बड़ी राति धरि झहरैत रहल छलै। ओ आइ बूझि रहल अछि, तहिया सँ मनोज देरी सँ घर किएक घुरै छै ! अबै छै आ पलंग पर किएक बेहोस भ' जाइ छै।

कॉलबेल घनघनयलै तँ ओ चिहुंकलि, मनोज एतेक सकाले आइ ? किन्तु अगिले छन ज्ञान भेलै, फाटक पर मनोज नहि, दाइ ठाढ़ि हेतै।

उठिक' फाटक खोलि देलकै। दाइ अइंठ बर्तन-वासन समेटि भीतरक नल पर धोअ' लगलै। रंजना भीतर सँ ससरि क' पुन: फाटक लग आयलि। किछु काल ओहिना ओत' ठाढ़ि रहलि। फेर घूमि बरामदा पर आयलि आ टहलैत किचेन मे आबि ठाढ़ि भ' गेलि। घरकेँ धोइ-पोछिक' झलका देने छलै दाइ। खाना बनयबाक बेर रहै, मुदा किछु छूबाक कि करबाक इच्छा नहि भेलै। घूमि आयलि ओतहु सँ।

किछु कालक पछाति घंटी फेर बजलै तँ रंजनाक कोंढ़ अनेरो जोर-जोर सँ उधक' लगलै। तकरा नियंत्रित क' उठलि आ फाटक लग आयलि। मुदा फाटकक ओहि पार मनोज नहि, नूनू भाइ ठाढ़ छलखिन। रंजनाकेँ विस्मय भेलै, फेर खुशीक जोरगर आवेग उठलै आ चहक' लागलि, 'नूनू भैया, अहाँ ? अहाँ कोना चल अयलिऐ, यौ ?

नूनू भीतर अयलाह। रंजना पयर छूबिक' भीतर ल' गेलनि। ड्राइंग रूमक सोफा पर बैसौलकनि, फेर पुछलकनि, 'आब कहू ! एते राति क' अहाँ ? कत' सँ अयलिऐए ?'

'हय, आफिसक काज सँ आयल छी एत'। अयलौं त' सकाले, मुदा तोहर क्वार्टर ताक' मे गोटेक घंटा लागि गेल। क्वार्टरक नम्मरे बिसरि गेलौं।' नूनू कहलखिन, फेर पुछलखिन, 'आ पाहुन केँ नै देखै छियनि ?

रंजनाक सभ हुलास छने मे उड़ि गेलै। विषादक धोनि भीतर फेर सघन भ' गेलै। मोन भेलै, नूनू भाइक पयर पर माथ राखि मोन भरि कनैत रहय।

'कतहु गेलाहए की ?' नूनू आगू पुछलखिन 'नै, अहिना लेट क'अबै छथिन!' रंजनाक कंठ भरि अयलै। आवाज भरिया गेलै। भीतर, ह्रदय दरकि गेल छलै। बुझयलै

आंखि छलछला जेतै तँ झट उठि ठाढ़ि भ' गेलि, 'अहाँ बैसू भैया ! हम चाह लेने अबै छी।'

किछु कालक बाद घंटी फेर बजलै। रंजना कीचेन सँ ट्रे लेने बहराइत जा ड्राइंग रूम मे आबय, नूनू उठि क' फाटक ता खोलि देने रहथिन। फाटक लग खूब इजोत नहि रहै। नूनू, तैयो बहिनोइ केँ चीन्हि गेल छलाह। किन्तु-बहिनोइक मातल, भरिआयल आंखि सार केँ नहि चिन्हलकै। ओ कान ठाढ़ कयने भीतर ढुकलै आ टगैत-टुगैत नूनू दिस बढ़लै आ गरजलै, 'हरामीक पिल्ला ! के छियें तूं ? कोना घुसि अयलें अइ घर मे ?'

नूनू हतवाक्। बहिनोइक मुंहक गन्ह सँ नाक फड़कि उठलनि। जीह ओकिआय लगलनि। घोर आश्चर्य आ अविश्वास सँ पसरल हुनक आंखि अगिले छन बहिनोइक लटपटाइत डेगकेँ कोठरी दिस बढ़ैत देखलकनि। दोसरे छन ओम्हर बम फुटलै जेना आ ओकर छर्रा कान केँ, मन आ ह्रदय केँ चिर्री-चिर्री क' देलकनि, 'खचराही...रंडी. ..भोंसरी ! के छियौ ई ! बाज ! पहिलुका यार की भतार ?'

नूनूक शोणित जेना अंग-अंग मे जमि गेल रहनि। जड़वत् ठाढ़। अकल्पनीय दृश्य सँ फटैत आंखि रंजना केँ तमकि क' छड़ी उठबैत देखलकनि। तखन जेना चेतना फिरलनि।

ओ दौड़लाह आ छड़ी आ थापर सँ प्रहार करबा लेल सन्नद्ध बहिन आ बहिनोइ केँ कात क' बीच मे ठाढ़ भ' रहलाह। बौक बनल। की बाजथि, की कहथुन, नहि फुरयलनि। ओ देखलनि, रोष आ घृणाक प्रचंड आवेग सँ रंजनाक मुंह घाम सँ नहा गेल रहै। ओ हकमि रहलि छलि। हकमिते चिंकरलि, देखलौं ! देखि लिय' नूनू भैया अपन बहिनोइक असली रूप। सुनि लिय' ई एखन रंडीक ओहिठाम सँ आबि रहल छथि!'

नूनू ओहिना हतबुद्धि, ओहिना बौक बनल छलाह।

❑



वार्त्ता

मैथिली मे नारी पर साहित्य नहि लिखल गेल

मायानन्द मिश्र सँ रमण कुमार सिंहक भेंटवार्त्ता

['साहित्य मे विशेषतः कथा साहित्य मे अपन माटि-पानिक अभिव्यक्ति होमक चाही । कथाकार कें संस्कृति के आभ्यान्तरिकता ओ वाह्यरूप दुनू मे उचित संतुलन बना क' चल' पड़त । आ जखने ई संतुलन रहत तखने ओ भारतक मैथिली कथा कहा सकत ।'

मैथिलीक ख्यातनामा कथाकार मायानन्द मिश्र साहित्य, मंच, आन्दोलन सभसँ व्यापक रूपें जुड़ल रहलाह अछि । उपन्यास, कथा, कविता, गीत आदि अनेक विधामे लेखन कएनिहार माया बाबूक प्रिय विषय मिथिला आ मिथिलाक प्राचीन इतिहास ओ संस्कृति सेहो अछि । एहन व्यापक अध्येता, रचनाकार सँ युवा आ सम्भावना सँ भरल कवि-समीक्षक रमण कुमार सिंह अनेक महत्त्वपूर्ण आ मननयोग्य उत्तर एहि वार्त्ता मे प्राप्त केलनि अछि।]

रमण कुमार सिंह : मैथिली कथा साहित्यक वर्त्तमान स्थिति पर अपनेक विचार? अपन पीढ़ीक कथा आ तेकर बादक पीढ़ीक कथा पर अपनेक केहन विचार अछि ?

मायानन्द मिश्रः आजुक युग मीडिया ओ प्रकाशनक युग थिक । आधुनिक साहित्य एहि सँ प्रभावितो अछि तथा एहि सँ लेखन कें प्रेरणो-प्रोत्साहन भेंटैत अछि। मैथिली मे प्रकाशनक घोर संकट अछि । पुस्तक प्रकाशन तँ अंधकारमय अछिये 'भारती मंडन' कें छोड़ि समस्त मैथिली जगतक केन्द्रीय स्तर पर बहुप्रचारित ओ लोकप्रिय पत्रिका सेहो नहि अछि । 'आरंभ' अछि मुदा ओ प्रायः अनियतकालीन अछि । शेष पत्रक जा प्रचार प्रसार होब' लागैत अछि ता ओ बन्दे भ' जाइत अछि । (दिल्ली सँ प्रकाशित

'अंतिका' भरिसक तावत जगजिआर नहि भेल छल–सम्पादक) एहन स्थिति मे लेखन मे गतिरोध आबि जाइत अछि । आ तें समकालीन मैथिली कथा साहित्यक विकास संतोषजनक नहि बुझना जाइछ । विगत मे 'वैदेही', 'मिथिला दर्शन' ओ बाद मे 'मिथिला मिहिर' कथा-विकासक दिशा मे बहुत योगदान कयने अछि । एहन नियमित ओ बहुप्रचारित पत्र-पत्रिकाक अभाव सँ लेखन हतप्रभ ओ उदास अछि । तखन एहन अंधकारक स्थिति मे 'सगर राति दीप जरय' मे एकटा प्रकाश किरण देखबा मे अबैत अछि। नवीन कथाकार सभक कथा जगत मे प्रवेश भ' रहल अछि जे शुभलक्षण थिक किन्तु नवीन कथाकार लोकनि मे (किछु मे) उचित श्रमक किछु अभाव देखबा मे अबैत अछि । प्रतिभा, अध्ययन ओ अभ्यासक उचित संतुलन सँ नीक लेखन भ' सकैछ। समकालीन नवीन कथाकार लोकनि अन्य-अन्य भाषाक कथा साहित्य प्रायः कम पढ़ि रहलाह अछि, जाहि सँ दृष्टिक विकास नहि होइत अछि । पछिला युग मे ललित ओ राजकमल बहुत पढ़ैत छलाह, विशेषतः अंगरेजीक कथा साहित्य । किछु किछु हमहूँ पढ़ैत छलहुँ । एकर प्रभाव हिनका लोकनिक कथा-शिल्प मे अवश्य भेटत । दोसर हमरा लोकनि (ललित, राजकमल ओ मायानन्द मिश्र) एक्के कथा पर अनेक समयधरि सोची, गप्प करी परस्पर आ तखन दुइ-दुइ तीन-तीन बेर एक्के कथाकेँ लिखी आ तखने प्रकाशन मे जाय। लगैत अछि समकालीन नवीन कथाकार मे प्रतिभाक आधिक्य अछि तें अधिक श्रमक प्रयोजन नहि पड़ैत अछि! जेहो समकालीन मैथिली कथा परिमाण ओ परिणाम दुनू मे प्रर्याप्त संतोषजनक नहि अछि । तथापि जतबा साधन ओ सुविधा तथा स्थिति अछि ताहि मे निराशाक तेहन प्रयोजन नहि अछि । किछु नवीन कथाकार अतिसशक्त रूप मे आबि रहल छथि जे भविष्यक प्रति उत्साहिते करैत छथि। अस्तु ।

मैथिलीक किछु कथाकारक कहब छनि जे मैथिली कथाकेँ मिथिलेक माटि-पानिक गप्प कहबाक चाही । अपने एहि विचार सँ कत्तेक सहमत छी ? एहि माटि-पानिकेँ अहाँ कोन रूप मे रेखांकित करैत छी ?

अहाँक एहि प्रश्नक सम्बन्ध कथाक 'कथ्य' सँ अछि जे मूलतः साहित्यक आत्मा थिक। आ ई प्रश्न बीच-बीच मे अनेक बेर उठाओल गेल अछि। एहि प्रसंग हमर किछु स्पष्ट धारणा ओ मान्यता अछि । देखू साहित्यकेँ समाजक दर्पण कहल गेल अछि जँ ई सत्य तँ साहित्य मे समाजक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति व्यापक रूपें होइत अछि । स्वयं सांस्कृतिक

आभ्यान्तरिकता, जकर सम्बन्ध मानवीय मूल स्थायी भाव ओ संवेदना सँ अछि जाहि कारणे ओ सर्वदेशीय ओ सर्वकालिक अछि–ताहि मे कोनो परिवर्त्तन नहि होइत अछि। किन्तु (सांस्कृतिक) बाह्य रूपमे देशानुरूप ओ कालानुरूप परिवर्त्तन अबैत चल जाइत अछि। एहि कारणे साहित्य मे शाश्वत मूल्यबोध ओ युगीनताक नवीनता दूनू रहैत अछि। आ एहि कारणें विभिन्न देशीय (क्षेत्रीय) ओ भिन्न कालक साहित्य मे विभिन्नता रहैत अछि जे ओकर विशेषतो थिक, अनिवार्यतो थिक, स्वाभाविकतो थिक ओ विवशतो थिक।

विभिन्न महादेश जकाँ भारत राष्ट्रक एकटा संस्कृति अछि जे समग्र राष्ट्रीय स्तर पर एक अछि किन्तु से अछि आभ्यान्तरिकताक स्तर पर। अन्यथा बाह्यरूप मे एकहि राष्ट्र मे अनेक विभिन्नता ओ विशिष्टता अछि। साहित्य मे एहि दुनू स्वरूपक अभिव्यक्ति होइत अछि। आ तें समग्र भारतीय साहित्य (आन्तरिक स्तर पर) एक होइतहुँ अपन-अपन विभिन्नता ओ विशिष्टताक संग उपस्थिति अछि जाहि सँ ओ विभिन्न क्षेत्रीय स्तर पर चीन्हल जाइत अछि। यैह क्षेत्रीयता साहित्यकेँ प्रामाणिक सेहो बनबैछ आ स्वाभाविक रूपसँ विश्वसनीय सेहो बनबैत अछि।

एखन वैश्विक एकता ओ ग्लोबल विलेजक नारा जोर-सोर सँ देल जा रहल अछि जे 'बसुधैव कुटुम्बकम्' ओ विश्व शान्ति लेल अति आवश्यक। किन्तु ई नारा ताहि लेल नहि अछि। तकर प्रमाण थिक विभिन्न विकसित देश के युद्ध-सामग्रीक अखंडित रूप मे विपुल निर्माण ओ व्यापक व्यापार। ई थिक समकालीन विश्वक विरोधाभास। वस्तुत: ई दुनू नारा थिक नव सम्राज्यवादीक आर्थिक शोषण लेल प्रचारित आकर्षक भ्रमात्मक लोभनीय तर्कजाल।अस्तु। अहाँक मूलं प्रश्न पर अबैत छी। जँ एहि बात के मानि ली जे साहित्य मे 'भोगल' यथार्थक अभिव्यक्ति आवश्यक जे ओकरा विश्वसनीयता ,स्वाभविकता ,प्रमाणिकता ओ यथार्थता दैत अछि तँ ओहि मे क्षेत्रीयताक अभिव्यक्ति अति अनिवार्य। साहित्य मे विशेषत: कथा साहित्य मे अपन ''माटि-पानिक'' अभिव्यक्ति होमक चाही। कथाकार केँ संस्कृति के आभ्यान्तरिकता ओ वाह्यरूप दुनू मे उचित संतुलन बना क' चल' पड़त। आ जखने ई संतुलन रहत तखने ओ भारतक मैथिली कथा कहा सकत। सांस्कृतिक निजत्व सँ भारतीय कथा मे कोना भिन्नता अबैत अछि तकर एकटा उदाहरण देखल जा सकैछ। राजिन्दर सिंह बेदीक कथा 'गुलाम' ओ उषा प्रियम्बदाक 'वापसी' तथा मैथिली कथा 'चन्द्रबिन्दु'क कथावस्तु एक अछि। समकालीन भारतीय जीवनक कथा। किन्तु सांस्कृतिक भिन्नता सँ कथ्य ओ

कथन-भंगिमा कोना बदलि जाइछ से देखल जाय। 'गुलामक' वृद्ध सिख घरमे बेकार नहि बैसि सकैछ तै अवकाश प्राप्त होइतहुँ पुन:काजक खोज मे घर सँ चलि जाइछ। 'वापसी'क वृद्ध केँ घर मे क्यो सहन नहि क' पबैछ तै घर सँ चलि जाइछ। आ 'चन्द्र विन्दु' मे वृद्ध केँ दूनू बेटा अपना लग मे राख' चाहैछ। किन्तु वृद्ध स्वयं एडजस्ट नहि क' पबैछ तें चलि जाइछ। ई तीनू कथा एक्के भारतीय कथा होइतहुँ क्षेत्रीय सांस्कृतिक भिन्नताक कारणे भिन्न भिन्न क्षेत्रीय कथा थिक। एहेन अनेक उदाहरण देल, देखाओल जा सकैछ।

मैथिली कविता मे विविध आन्दोलन भेल (खाहे अधिकांश असफले रहल) मुदा मैथिली कथा साहित्य मे तेहन कोनो विविध तरहक आंदोलन नहि भेल। कियै ? जे आंदोलन (सगर राति दीप जरय) चलि रहल अछि तेकर सार्थकता आ प्रासंगिकता ?

देखू ,गतिशीलताक कारणे, जकर अनेक कारण अछि, समाज ओ बाह्य संस्कृति रूप मे त्वरित परिवर्त्तन अबैत अछि। ई स्थिति मध्यकाल मे नहि अपितु 19म शताब्दीक पश्चात प्राय: विश्व भरि मे भेल। किन्तु विशेष भेल वैज्ञानिक ओ आर्थिक विकासक कारणे इग्लैंण्डक समाज मे। आ तै अंगरेजीक रोमांटिक काव्यक पश्चात अनेक काव्यान्दोलनक जन्म भेल। कहल तं इहो जाइत अछि जे 20म शताब्द मे प्रति दस-बीस वर्ष पर ओहिठाम काव्यक स्वर मे परिवर्त्तन अबैत रहल अछि आ नवीन काव्यान्दोलनक जन्म होइत रहल अछि। हिंदी मे किछु एहि प्रभावक कारणे ओ किछु निज प्रयोजने छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद एवं नई कविताक रूपमे ठाढ़ भेल। काशी, इलाहाबाद, दिल्ली ओ कलकत्ता मे कतिपय कारणे अधिक गतिशीलता रहल तैं विभिन्न वैचारिकता ओ पाश्चात्य प्रभावक कारणे अनेक काव्यान्दोलन ठाढ़ भेल। मिथिलांचल मे गतिशीलता सेहो कम रहल तथा प्रभाव ग्रहणक प्रवृति सहो कम रहल, जे शुभलक्षणे थिक। मैथिलीक विशेषत: आधुनिक काव्य जगत मे प्रभाव ग्रहणक कारणे विभिन्न काव्यान्दोलन नहि ठाढ़ भेल। एहि ठाम 1930ई पश्चात मुख्य रूपें दूइये गोट काव्यान्दोलन रहल। एकटा संस्कारवादी काव्य रूप के आ दोसर 1958क स्वरगंधा तथा 1960 ई अभिव्यंजन-मिथिला मिहिर क कारणे 'नवीन काव्य' रूप केर ,जकरा अनेक नाम देल गेल आ जाहि मे समकालीन सामाजिक चेतनाक अभिव्यक्ति भेल अछि, जकर कथन भंगिमा सर्वथा अपरम्परागत ओ भिन्न अछि।

जहाँ धरि कथा साहित्य मे विभिन्न आन्दोलनक प्रश्न अछि से विश्वो कथा साहित्य मे कम्मे भेल । सामान्यत: विश्व भरिक विशेषत: भारतीय कथा साहित्य मे दूइये टा कथा धारा रहल । रोमांटिक कथा धारा- जाहि मे घटनाक विशेषता रहैत छल , दोसर यथार्थवादी कथा-धारा जाहि मे मनोविश्लेषणक प्रमुखता अछि । मैथिली कथा साहित्य मे अति यथार्थवादक प्रवेश नहिये जकाँ भेल । असम मे कथा साहित्य मे अनेक आन्दोलनक प्रयोजनो नहि अछि । जँ नाम ओ नारा देल जाइछ तँ ओ घोर प्रभाव ग्रहणक लोभाकर्षण थिक ।

स्मरणीय अछि जे 'सगर राति दीप जरय' कोनो कथा आंदोलन नहि अपितु लेखन विकासक प्रयास थिक, आ से विकास-प्रयास निरंतर चलैत रहक चाही ।

कथा मे विचारक दबाव कें अपने कोन रूप मे लैत छी ?

कोनो कथा हो वा कोनो रचना ओहि मे वैचारिकता तँ रहितेटा अछि अन्यथा ओ रचना असफले टा नहि अपितु उद्देश्यहीन सेहो भ' जायत । वैचारिके तं कोनो रचनाक कथ्यक निर्माण करैत अछि आ येह कथ्य रचनाक मेरुदण्ड बनैत अछि ।

की आजुक कथा मे जिनगीक कोमलता आ की सौन्दर्यक लेल कोनो जगह बाँचल अछि ?

जीवन आशा-निराशा: सुख-दुख आ उत्थान-पतनक समग्रताक नाम थिक ओ एकांगी नहि थिक । आ साहित्य मे समग्र जीवनक अभिव्यक्ति होइत अछि, आ ते जँ साहित्य मे जीवनक संघर्ष ओ कठोरताक अभिव्यक्ति होइत अछि तँ ओकर कोमलताक अभिव्यक्ति सेहो स्वत: भइये जाइत अछि । साहित्यक तँ अभिप्रेत थिक 'सत्यं शिवम् सुन्दरम्' ।

एकटा शिकाइत सुनबा मे अबैत अछि जे जाहि अनुपात मे जनसंख्या बढ़ल ताहि अनुपात मे पाठक नहि । अपितु पाठकक अनुपात मे निरंतर कमिये भेल जा रहल अछि , कियै ? की एहि लेल स्वयं रचनाकार आ की हुनक रचना उत्तरदायी नहि अछि ?

जनसंख्या विकासक संग ने शिक्षाक विकास भेल अछि आ ने आर्थिक विकास भेल अछि । गरीबी रेखा निरंतर ऊपर ऊठिक' उच्च मध्यवर्ग दिस आबि रहल अछि । समाजक सम्पत्ति असीमित जन समाज मे वितरित नहि भ' के एकटा सीमित वर्ग मे

जमा भ' रहल अछि । एहि वर्गकेँ साहित्यक प्रयोजन नहि अछि, ड्राईगरूम मे सजावटोक लेल नहि । शेष समाज भौतिक-मौलिक आवश्यकताक पूर्तिये मे अपस्यांत अछि । शिक्षाक अभाव अछिये । एहि अभावक प्रभाव विशेषत: प्रकाशन-वितरण प्रणाली पर पड़ि रहल अछि । दोसर दिस, लोकक जीवन संघर्षक कारणे व्यस्तता बढ़ि गेल अछि आ ताहि पर इलेक्ट्रानिक मीडियाक बचल खुचल समय पर भयानक आक्रमण । कुल मिलाक' पठनीयता घटिक' शून्य-स्थिति पर आबि गेल अछि जकर प्रभाव प्रकाशन वितरण आ अंततोगत्वा लेखन पर पड़ि रहल अछि । ई स्थिति प्राय: समस्त भारतीय भाषा साहित्यक अछि । मैथिलीक किछु विशेष अछि । मैथिलीक प्रकाशन संकट मैथिली लेखनकेँ अतिशय प्रभावित क' रहल अछि । वस्तुत: मैथिली लेखन विवश ओ असहाय भ' रहल अछि निरन्तर !

आइ मैथिली मे एहन कोनो रचना कियै नहि भ' पाबि रहल अछि जेकर अखिल भारतीय स्तर पर चर्चा हुअय ? जँ लिखाय रहल अछि तँ चर्चा कियैक नहि होइत अछि ? आन भारतीय भाषाक तुलना मे मैथिली कथाक मादे अपनेक विचार ?

देखू, जीवनक वैविध्य साहित्य मे वैविध्य अनैत अछि । जीवनक संघर्ष साहित्यकेँ प्रखर बनबैत अछि । एहि वैविध्य ओ संघर्ष लेल दक्षिण भारतीय जीवनकेँ बम्बई (मुम्बई), मद्रास, बंगलोर सन तथा बंगाल कें कलकत्ता एवं हिन्दी भाषी क्षेत्र कें दिल्ली, इलाहाबाद आदि सन नगर भेटल अछि। एहि सब क्षेत्रक साहित्यकार संघर्षशील रहलाह तथा दृष्टि वैविध्यपूर्ण रहल जकर प्रत्यक्ष प्रभाव एहि सब क्षेत्रक कथा साहित्य पर देखबा मे अबैत अछि । एहि सब दृष्टि मे मैथिली कथाकारक समक्ष संकट अधिक अछि। एहि कारणें मैथिली मे ग्रामीण परिवेशक कथाक अधिकता अछि। अवश्य किछु श्रेष्ठो कथा लीखल गेल अछि जकरा कोनो भारतीय भाषाक कथाक समक्ष ठाढ़ कयल जा सकैछ ।

एम्हर विश्व मे जे किछु वैचारिक बदलाव भेल अछि जेना उत्तर आधुनिकता, संरचनावाद, विखंडनवाद...आदि-आदिक कत्ते प्रभाव मैथिली कथा पर अछि ? जँ नहि अछि तँ कियैक ?

उत्तर आधुनिकता शब्द काल अवधारणाक नहि, अपितु आर्थिक रूपें नव साम्राज्यवादक स्थापन लेल विकासशील राष्ट्रक शोषण लेल देल गेल नारा थिक जे इतिहास ओ अतीतकेँ नकारबा लेल कहैत अछि । भारत विशेषत: मिथिलांचल मे से संभव नहि अछि । ओना एहि षडयंत्रक एकटा अन्य रूप उपभोक्ता संस्कृतिक रूपमे भारतीय समाज मे

प्रवेश क' रहल अछि। वस्तुत: उपभोक्ता संस्कृति संपन्न समाजक विकृति थिक । मिथिला सन विपन्न समाज मे एकर प्रवेश व्यापक रूपें नहि बुझाइछ । जँ से भेल तँ अवश्यं ओहन साहित्य लिखाओत ।

अहाँक लेखनक शुरूआत मे हरिमोहनबाबू सँ प्रभावित "भाँगक लोटा" संग्रह प्रकाशित भेल छल। मैथिली पाठकक एकटा पैघ समूह अखनो हरिमोहन बाबूक कथा शिल्पक विकासक जरूरति बुझैत छथि । तखन अहाँ अपन संग्रह 'भांगक लोटा' केँ खारिज करैत छी, से कियैक ?

प्रो. हरिमोहन बाबूक 'प्रणम्य देवता'क प्रचंड प्रभाव प्रतापें 49-50 ई. मे किछु हास्य कथा लिखने छलहुँ जे 51 ई. क 'भांगक लोटा' मे संकलित अछि । जाहि मे मौलिक प्रतिभाक अभाव निश्चंये अछि । किन्तु कालांतर मे सन् 80 ई. क आसपास किछु शुद्ध राजनीतिक जीवन पर शुद्ध व्यंग्य कथा लिखल जाहि मे प्रमुख अछि–एकटा चिनमा खेलियै रौ भैया, भैरव, अभिनन्दन, भये प्रकट कृपाला, दीन दयाला, कौशल्या हितकारी, जिंजीर, हर्रे लागय ने फिटकरी तथा आधार आदि । जकर कोनो संकलन अद्यावधि प्रकाशित नहि भ' सकल ।

पहिने हास्य व्यंग्यक कथा मैथिली मे बहुते लिखाइत छल । एहि प्रसंग मे हरिमोहन बाबू सदति मोन पड़ि जाइत छथि । अहूँ खूबे हास्य-व्यंग्यक कथा लिखने छी। आइ-काल्हि हास्य-व्यंग्यक कथा कहूँ तँ नहिये लिखाइत अछि, कियै ? की आइ जिनगी एत्तेक सोझ, सरल आ सुन्दर भ'गेल अछि कि ओकरा पर हँसल आ व्यंग्य नहि कयल जा सकैछ ? अथवा ई आजुक मैथिली कथाकारक सीमा अछि ? की कहय चाहब अहाँ ?

हास्य-व्यंग्य लेखन अपेक्षाकृत कठिन शिल्प विधान थिक । ई दृष्टि विशेष पर निर्भर अछि । आ तैं आधुनिक विभिन्न भारतीय भाषा मे हास्य-व्यंग्य लेखन सीमितो अछि, सानुपातिको अछि । अपितु मैथिली मे किछु अधिके लिखल गेल । गद्य मे हरिमोहन बाबू सँ रूपकान्त ठाकुर धरि आ पद्य मे कवीश्वर चन्द-सीताराम झा सँ श्री अमरजी-श्री भीमनाथ झा धरि ई विकास परम्परा सहजहि देखल जा सकैछ । निश्चित रूप सँ मैथिली मे व्यंग्य लेखनक अभाव नहि अछि ।

अहाँ अपन कथा गुरू शरतचन्द्र केँ मानैत छियनि । शरतचन्द्रीय भावुकताक

शिकार अहूँक कथा सभ भेल अछि । मुदा आजुक जिनगी मे शरतचन्द्रीय भावुकताक प्रासंगिकता क्षीण भ'रहल अछि । तखन अहाँ अपन कथाक कत्तेक प्रासंगिकता बुझैत छी ?

कोनो पूर्ववर्त्ती कथाकारक प्रशंसक होयब अथवा कथागुरू मानब तथा प्रभाव ग्रहण सर्वथा भिन्न बात थिक । हमर कथा साहित्य पर शरत प्रभावक विश्लेषण समीक्षक केर कार्य थिक, हमर नहि । किन्तु शरतचन्द्र मे मात्र भावुकता ताकब निश्चय दृष्टि दोष थिक । डा. धर्मवीर भारती ओहिना शरत बाबू ओ के. एम. मंशी केँ विश्व पंक्तिक लेखक नहि मानैत छथि। स्मरणीय अछि जे दूइ भिन्न युगीन साहित्यकार मे किछु शिल्पगत साम्य संभव अछि किन्तु वैचारिकता मे समानता असंभव अछि । एकटा गप्प आरो अछि, जीवन समग्रताक नाम थिक । ओ एकांगी नहि होइत अछि। आ साहित्य मे जीवनक अभिव्यक्ति होइत अछि । आ एहि दृष्टियें जखन हमर कथा कालरेत, हँसीक बजट, गाड़ीक पहिया, टूटैत कीलक जाँत, आगि मोम आ पाथर, रंग उड़ल मुरूत तथा धधा आदि पढ़ब, गंभीरता सँ पढ़ब तँ सभटा स्पष्ट भ' जायत । अखन हम अपनहि सँ अपन कथाक प्रसंग विशेष की कहू ?

अहाँक कथा सभ पढ़ैत काल बुझाइत अछि जे ई कथा सभ खाइत-पीबैत सुखी लोकक कथा थिक । भूखल-दुखल, नांगट-उघाड़ आ दलित पीड़ित लोकक कथा नहि । एहि मादे की कहय चाहब अहाँ ?

एहि प्रश्नक उत्तर, आशा करैत छी उपरोक्त कथा सभकेँ पुन: पढ़ला पर अवश्ये भेटि जायत ।

'टूटैत कीलक जांत' कथा पढ़ैत काल हमरा कथाक अंत मे नायिका आ ओकर छोट बहिनक बीच स्त्री-समलैंगिकताक अस्पष्ट संकेत बुझना गेल। की जहिया अहाँ ई कथा लिखने रही, मोन मे स्त्री-समलैंगिकताक विचार छल ?

'टूटैत कीलक जांत' के विषय पारिवारिक विपन्नता विशेषत: एहि विपन्नताक कारणे दाम्पत्य जीवनक विवशता-चित्रण थिक । लेखन काल मे स्त्री समलैंगिकताक अभिव्यक्ति अभिप्रेत नहि रहल होयत । अभिप्रेत छल सहोदरक स्नेहातुरताक अभिव्यक्ति। तखन समीक्षकक दृष्टिक विलक्षणताक प्रसंग लेखक की कहि सकैछ !

अहाँक कथा मे स्त्री-चरित्रक रूप वर्णन अनेक ठाम भेल अछि । आ सभ ठाम

प्रायः स्त्री रूप सँ सुन्नरिये अछि। चेहरा-मोहरा सँ कुरूप नहि, सामान्यो नहि। तकर कोनो विशेष कारण ?

कोनो कथा मे कथानकक प्रयोजने रूप-वर्णन होइत अछि। प्रायः हमरा ओहन कथाक लेखनक अवसर नहि भेटल जाहि मे नारीमनक सौन्दर्य नहि देखिकेँ मात्र दैहिक कुरूपताक वर्णन प्रयोजन हो। तथापि एतबा निश्चत जे सौन्दर्य दृष्टि-रूप केर विषय थिक।

अहाँक व्यक्तित्व मे जे सौम्यता अछि से कथो सभ मे अभिव्यक्त भेल अछि। अहाँ मंचीय जीवन सँ सेहो जुड़ल रहलहुँ। मंचीय जीवनक लयबद्धता तँ अहाँक भाषा मे अछि, मुदा अहाँक कथा मे सांगीतिकता आ सांस्कृतिकता क अभाव अछि–से कियैक ?

हमरा व्यक्तित्व मे सौम्यता अछि, से हमरा ज्ञात नहि छल, धन्यवाद। किन्तु विनय ओ शील रहय, तकर चेष्टा तँ रहितहि अछि। जँ अहाँक कथन सत्य जे हमर कथाक भाषा मे लयबद्धता रहैत अछि तखन तँ संगीतात्मकता सेहो अवश्ये रहक चाही। कारण स्वयं संगीतक जन्म लय सँ ओ ताल सँ होइत अछि। अहाँ समीक्षक छी। कोनो कृति मे किछु ताकि लेबा मे समर्थ छी, स्वाधीन छी।

मैथिली आलोचनाक केहन रूख रहल अछि कथा साहित्यक मादे ? की अहाँ एकटा कथाकारक हैसियत सँ मैथिली आलोचना सँ संतुष्ट छी.?

रचनात्मक साहित्यक अनुगामी थिक आलोचना साहित्य। दुनूक विकास परस्पर सम्बद्ध अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे आधुनिक मैथिली आलोचनाक विकास किछु विलम्ब सँ अवश्य भेल किन्तु सम्प्रति अनुपात असंतोषजनक नहि अछि। विशेषत: सन् 1960 ई. क पश्चात। सब साहित्य मे काव्य पर आलोचना अपेक्षाकृत अधिक होइत अछि। मुदा कथा साहित्य पर जतबा आलोचना भेल अछि संतोषप्रद अछि। मिथिला-मिहिरक पश्चात नियमित पत्र-पत्रिका कहाँ रहल जे आलोचनाक विकास होयत ?

कथा मे अन्तर्वस्तु (कथ्य) महत्वपूर्ण होइत छैक अथवा शिल्प ? दुनू मे सँ ककरा बेसी महत्वपूर्ण मानैत छी अहाँ ?

कहबाक प्रयोजन नहि जे कोनो कथा मे कथ्य आ कथन-भंगिमा वा शिल्प दुनू समान रूप सँ महत्वपूर्ण होइत अछि जहिना शरीर ओ आत्माक स्थिति अछि। एहि दुनू मे

'दृष्टिक' प्रयोजन अछि जे दुनूकेँ सूक्ष्मता दैत अछि जाहि सँ कोनो कला श्रेष्ठ बनैत अछि। आ श्रेष्ठ कला कृति निश्चित रूप सँ प्रतिभा, अध्ययन, ओ अभ्यास पर आश्रित अछि।

जखन बाबरी मस्जिद ढाहल गेल छल तँ हिन्दी आ किछु आनो भाषाक रचनाकार एकर प्रतिवाद मे सड़क पर उतरल छलाह। महाश्वेता देवी साहित्य आ सड़क दुनू मोर्चा पर आदिवासी लोकक लेल संघर्ष करैत रहलीह अछि। मैथिली रचनाकार मे प्रायः एहन प्रवृति नहिये भेटाइत अछि। खाहे कोनो तरहक राजनैतिक, सामाजिक वा आर्थिक मुद्दा हुअये मैथिली रचनाकार प्रायः घरे मे घुसकल रहलाह अछि। कियैक एक्कोटा महाश्वेता देवी मैथिली साहित्य मे आइ धरि नहि अभरल अछि ?

देखू, भारतीय समाज आदिकाल सँ सह अस्तित्व ओ सहिष्णुताक समाज थिक। ई उत्पाती जाति कहियो नहि रहल। हाल-हालधरि भारतीय मिश्रित समाज मे सौहार्द रहल अछि जकरा तोड़बाक प्रयास राजनीतिक लोक कयलक जे सकारण छल। किछु इतिहासकार एहि मे बसाते देलनि। स्थिति भयावह भेल। किन्तु एहि प्रसंगकेँ शान्त करबा सँ अधिक भड़काओल गेल अछि। बाबरी मस्जिदक यैह स्थिति अछि। एहि स्थितिक परिणाम जाहि क्षेत्र मे जेहन भेल ताहि क्षेत्र मे तेहन साहित्यक रचना भेल। किन्तु एतवा निश्चित जे एहन साहित्य ने गम्भीर भेल आने कालजयी। एहन साहित्य 'नारा' पर लीखल गेल सामान्य साहित्य थिक। मैथिली मे नारा पर साहित्य नहि लीखल गेल एकर अर्थ ई नहि जे सामाजिक सौहार्दक प्रयास नहि हो। आ से भेल अछि। विद्यापति स्वंय तेहन राजाक प्रशंसा कयने छथि। विद्यापतिये काल सँ मिथिलाक राष्ट्रीय भावना देखल जा सकैछ। आधुनिक काल मे मिथिलाक चम्पारणे सँ महात्मा गाँधी अपन अभियान प्रारंभ कयने छलाह। मिथिलांचल सभ दिन राष्ट्रीय भावना सँ ओतप्रोत रहल। कहियो मुड़ी नहि छिपलक। आ ताहि प्रसंगक गंभीर साहित्य सेहो प्राप्त अछि।

महाश्वेता देवी बंगला मे गम्भीर ओ श्रेष्ठ साहित्यक रचना कयने छथि। ओ आदिवासी जीवनक अभाव ओ दैन्य निकट सँ देखने छथि आ तैं एहि प्रसंगक साहित्योक रचना कयलनि अछि। मुदा जखन मात्र एहि प्रसंगक साहित्य लेखन टा सँ संतोष नहि भेलनि तँ सड़क पर सेहो उतरलीह जे हुनक वैचारिक प्रतिबद्धताक प्रति हार्दिक आस्थाक द्योतक थिक। वस्तुत: प्रत्येक लेखक मे अपन वैचारिकताक प्रति प्रतिबद्धताक आग्रह

रहैत अछि जकरा ओ अपन लेखन मे व्यक्त करैत चलैत अछि । मैथिलीक लेखक केँ आदिवासी जीवन केँ निकट सँ देखबाक अवसर भने नहि भेटल हो किन्तु मिथिला जीवन मे जे अभाव ओ संघर्ष अछि तकरा तँ ओ व्यक्त करिते रहलाह अछि । जकर परम्परा कवीश्वर चन्दे सँ प्रारंम्भ भ' जाइत अछि । मैथिलीक अधिकांश लेखक अपन अपन आजीविका सँ जुड़ल रहि लेखन कयलनि तैं ओ सड़क पर नहि उतरि सकलाह आ जे स्वाधीन छलाह ओ तँ सड़क पर उतरले छलाह, यथा-यात्री जी । तैं मैथिली लेखकक प्रति एहि प्रकारक दोषारोपण निराधार थिक ।

नव पीढ़ीक रचनाकार लेल अपने किछु कहय चाहब ?

समकालीन नवीन मैथिली कथाकार केँ अधिक अध्ययन अधिक अभ्यास ओ अधिक श्रमक प्रयोजन अछि । प्रतिभाक अभाव में तँ एहि क्षेत्र मे टिकबे कठिन अछि तथापि ओकरो विकास कयल जा सकैछ ।

अंतिम प्रश्न, मैथिली महासंघक माध्यमे अपने मैथिलीक विकास लेल आन्दोलन कयल मुदा ओ आन्दोलन कोन-कोन कारणें सफल नहिं भ' सकल ?

देखू, मैथिली महासंघक स्थापना हम 1983 ई. मे कयने छलहुँ जखन हमर मंच जीवनक उत्तर मध्यान्हकाल छल । 1958 ई. सँ मैथिली जगतक प्राय: समस्त विद्यापति-पर्व समारोही मंच पर जाय लागल छलहुँ जत' मंच संचालन ओ कविता पाठक संगहि मैथिली-आंदोलन ओ मैथिली जगतक गतिविधि पर भाषणक अवसर भेटैत छल जकर मूल बिन्दु छल संविधान मे मैथिलीक स्थान ओं साहित्य अकादमी मे मैथिलीक प्रवेश तथा लोक सेवा आयोग मे मैथिलीक स्वीकृति । दरभंगा मे सेठ गोविन्द दासक सुझावक अनुकूल संविधान सँ पूर्व साहित्य अकादमी मे मैथिली प्रवेश पर जोर देबाक रणनीति बनल । एहि प्रसंग 1963 ई. मे पं. जवाहर लाल नेहरूक समक्ष मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी लागल जाहि मे नवीन काव्य पाठक निमंत्रण डा. जयकान्त मिश्रक दिस सँ भेटल । पं. नेहरू प्रसन्न भेलाह, अकादमी मे मैथिलीक प्रवेश भेल । आब भाषणक बिन्दु भेल संविधान, लोक सेवा आयोग, शिक्षा, जन-जागरण ओ जन-संगठन आदि। एहि प्रसंग विभिन्न बिन्दु पर विभिन्न समय मे पोस्टकार्ड अभियान सेहो चलाओल गेल अथवा डा. जयकान्त मिश्रक चलाओल विभिन्न योजना मे सक्रिय रहलहुँ । एहि जन-संगठन ओ संयुक्त प्रयासक लेल मैथिली महासंघक स्थापना कयल जकर प्रयास एहि सँ पूर्वो बाबू साहेब चौधरी कलकत्ता मे तथा श्री भोगेन्द्र बाबू दिल्ली मे कयने छलाह जे स्थगित

भ' गेल छल । कतिपय कारणे पटनोक मैथिली महासंघक वैह नियति भेल । 1978-80 ई. सँ प्राचीन इतिहास-अध्ययन ओ लेखन दिस उन्मुख भ' गेल छलहुँ । तथापि समयाभाव रहितहुँ मैथिली आन्दोलन मे 1951 ई. सँ सक्रिय रहबाक कारणें मोन नहि मानय । आ तैं 1988 ई. मे साहित्य अकादमीक पुरस्कारक किछु पाइ लगाक' किछु बुलेटिन बहार करैत कटिहार सँ जयनगर धरिक यात्रा कयल ओं सन् 89 ई. मे लगभग चारि हजार मैथिली भाषी छात्रकेँ जमा कयल जे अतिप्रभावशाली ढंग सँ पटना मे प्रदर्शन कयलक तथा एक सवा घंटा धरि मैथिली आन्दोलनक इतिहास मे पहिल बेर हंगामादार ढंगे डाक बंगला चौककेँ जाम कयलक । जकर तात्कालिक परिणाम ई भेल जे मैट्रिक सँ मैथिलीक निष्कासनक जे सरकारी दुष्चक्र चलि रहल छल से रूकि गेल तथा 'प्लस टू' मे जे मैथिली शिक्षकक नियुक्ति नहि भ' रहल छल से भ' गेल । एहि आन्दोलन मे ओहो लोकनि सक्रिय रूपें संलग्न रहल छलाह, विशषत: पटना मे ।

एहि प्रकारें आदरणीय किरणजी, सुमनजी, डा. जयकान्त मिश्र, श्रीअमर जी, किसुन जी, बाबू साहेब चौधरी ओ श्री भोगेन्द्र बाबू आदि लोकनिक द्वारा समय-समय पर चलाओल गेल मैथिली आन्दोलनक क्रम मे यत्किंचित प्रयास क' क' अवश्ये हमरहु किछु संतोष भेल । मुदा पूर्ण संतोष ओहि दिन होयत जाहि दिन मिथिलांचलक समस्त मैथिली भाषी मैथिलीकेँ अपन मातृभाषा मानि बंगलादेशे जकाँ एकजुटता देखबैत संविधान मे प्रवेशक लेल कठिन संघर्ष करत ओ तकर फल प्राप्ति करत तथा बिहार मे मैथिलीक छीनल गेल अधिकारक वापसी होयत एवं लोक अपन संस्कृति केँ अपन अस्तित्वक मूल मानबा पर गर्वक अनुभव करत। अस्तु।

बहुत-बहुत धन्यवाद ओ आशीष जे अहाँ अयलहुँ आ किछु गप्प क' क' प्रसन्नता भेल । अहाँक लेखनक प्रति अनेक शुभकामना अछि ।

❑



वार्त्ता

मैथिली साहित्यक आलोचना मिथिलाकें पढ़िक' कयल जयबाक चाही

मोहन भारद्वाज सँ आशुतोष कुमार झाक भेंटवार्त्ता

['मिथिला जनपद कें स्मार्त ब्राह्मणक प्रभुता सम्पन्न देश कहल गेल अछि। ई विशेषण कहियो लाभकारी नहि छल, आजुक समय मे त' एकदम्मे नहि अछि। मुट्ठी भरि लोकक आचार-विचार आ सौख-सेहन्ता कोनो जनपदक खुशी आ सम्पन्नताक मापदण्ड नहि भ' सकैत अछि। एहि मापदण्ड के बदल' पड़त। कसौटी, ताक' पड़त। महाजनक तराजू आ बटखरा सँ संस्कृति आ साहित्यकें जाधरि तौलैत रहब ताधरि यैह हाल रहत।'

सहजता सँ साफ-साफ बात कह'बला दृष्टि-सम्पन्न समालोचक मोहन भारद्वाजक कथन सोचबा लेल विवश कैए टा दैत। चाहियो क' हुनका सँ असहमत होयब कठिन अछि। हुनका संग विभिन्न विषय पर विस्तार सँ अनुवादक, समीक्षक पत्रकार आशुतोष कुमार झा सार्थक ओ महत्त्वपूर्ण वार्त्ता केलनि अछि।]

आशुतोष कुमार झा : अहाँ पछिला तीस वर्ष सँ मैथिली साहित्यक सेवा मे समर्पित छी। विद्यार्थी जीवनक बाद अहाँ केन्द्र सरकारक सेवा मे आबि गेलहुँ। फेर मैथिलीक लेल एतेक समय कोना निकालि पबैत छी?

मोहन भारद्वाज: एहिठाम अहाँक जे पहिल वाक्य अछि ताहि सँ हम कनेक असहमति देखायब। जखन अहाँ कहैत छी जे मैथिली साहित्यक सेवा मे हम समर्पित छी तखन अहाँक मोन मे धार्मिक दृष्टिकोण रहैत अछि। हम माँ मैथिलीक सेवा नहि करैत छी। मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक आ भाषिक विकास कें ध्यान मे राखिक' साहित्यक माध्यम कें अपनओने छी। सामाजिक कार्यक अनेक रूप भ' सकैत अछि। साहित्य सेहो ओहि मे एक अछि। साहित्य रचना करबाक पाछाँ, हमरा जनैत, यैह सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण होयबाक चाही। हम एही दृष्टिकोण सँ प्रेरित-निर्देशित भ' क' साहित्यक कार्य मे लागल छी।

दोसर बात, विद्यार्थी जीवनक बाद हम सोझे केन्द्रीय सरकारक चाकरी मे नहि अयलहुँ। 1964 मे एम. ए. कयलहुँ। लगभग डेढ़-दू साल साहेबगंज कॉलेज मे प्राध्यापक छलहुँ। तखने ए. जी. ऑफिस मे स्थायी नौकरी भेटि गेल। तकराबाद कतहु कोनो नोकरीक प्रयासे नहि कंलहुँ। नोकरी करैत लेखन-कार्य सुविधा सँ कयल जा सकैत अछि। नोकरी मे जतक समय लगैत छैक ताहि सँ बेसी समय लेखन लेल अथवा लेखन सँ इतर कार्यक लेल बचैत छैक। मूल बात छैक इच्छा आ प्रवृत्ति। हम नोकरी एहि लेल करैत छी जे अपन आ परिवारक भरण-पोषण हो। हम लिखैत एहि लेल छी जे समाजक भरण-पोषण हो। दुनू मे कोनो विरोध नहि छैक। लेखन कार्य कने बेसी व्यापक छैक आ तैं बेसी उचित तथा महत्त्वपूर्ण सेहो छैक।

एहिठाम हम एक बात आओर कह' चाहब। किछु साहित्यकार एहन छथि जे लेखन आ सामाजिक कार्य कें परस्पर विरोधी मानैत छथि। चेतना समिति, साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादेमी अथवा अन्य कोनो सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था मे कार्य करब आ साहित्य लेखन करब परस्पर पूरक कार्य अछि। एक महार पर एक तरहक कार्य होइत छैक, दोसर महार पर दोसर तरहक। दुनू महारक काज कैएक' पोखरि कें उपयोगी आ आकर्षक बनाओल जा सकैत अछि। ई व्यक्तिक इच्छा आ सामर्थ्य पर निर्भर छैक जे ओ कतेक क्षेत्र मे कतेक गंभीरता सँ काज करैत सार्थक भ' सकत।

मैथिलीक सेवा एतेक पैघ स्तर पर करबाक संकल्प कोना लेलियैक? किएक त' विद्यार्थी अहाँ छलियैक राजनीति विज्ञानक। तकर तात्पर्य जे अहाँक लेल छात्र जीवन मे प्राथमिकता मैथिलीक नहि रहल होयत।

औपचारिक रूप मे हम ठीके राजनीति विज्ञानक छात्र रही। मुदा से प्राय: एकटा दुर्घटना छल। बी. ए. मे आनर्स लेबाक काल हमर किछु शुभचिन्तक लोकनि बाबू कें सुझाव देलखिन जे राजनीति विज्ञान पढ़ला सँ कमीशन मे सुविधा हेतनि, नीक नोकरी भेटतनि तें अगत्या हमरा राजनीति विज्ञान पढ़' पड़ल। ओना, हम छात्र रही साहित्यक-हिन्दी हमर एकटा विषय छल। साहित्यक प्रति अभिरुचि हमरा पैतृक गुणक रूप मे प्राप्त छल। सैह स्वभाव आ प्रवृत्ति आगाँ चलिक' प्रभावी भेल आ हम साहित्यक कार्य मे लगलहुँ।

ओना त' राजनीति कोन चीज मे नहि छैक। ताहू मे भाषा ओ साहित्यक क्षेत्र मे त' कने बेसिए छैक। किएक त' साहित्यक क्षेत्र मे सफलता भेटि गेलाक

बाद ख्याति एवं पाइ समान रूप सँ आब' लगैत छैक आ साहित्यक इतिहास मे नाम सुरक्षित भ' जाइत छैक से अलग। त' ई कहियौ जे मैथिली साहित्यक क्षेत्र मे राजनीति कतेक दूर तक प्रभावी छैक ?

एहिठाम फेर हम अहाँक प्रश्नक प्रसंग मे किछु कह' चाहब। 'राजनीति' शब्दक प्रयोग अहाँ प्रायः ओकर चालू अर्थ मे केलियैक अछि। एहि अर्थ मे राजनीति शब्दक अर्थ होइत छैक, प्रपंच आ स्वार्थ-सिद्धि। किन्तु वस्तुतः राजनीति ओ नहि छियैक। कोनो समस्याक निदान जखन सत्ताक माध्यम सँ ताकल जाय त' से राजनीति कहबैत छैक आ संवेदनाक माध्यम सँ ताकल जाय त' ओ होइत छैक साहित्य। तात्पर्य ई जे राजनीति हो वा साहित्य-ओ दुनू एकेठाम पहुँचबैत छैक। दुनूक एक्के उद्देश्य छैक-मनुष्यक खुशहाली, सामाजिक विकास। क्षुद्र व्यवहार, क्षुद्र आचार-विचार साहित्य मे हो अथवा सत्ता मे, ओ घृणित अछि, त्याज्य अछि। मैथिली साहित्य मे स्वार्थजन्य मतभेद बेसी प्रभावी छैक, सिद्धान्तमूलक दृष्टिकोण नहि।

वैचारिक मतभेद बेजाय बात नहि थिक। तर्क आ विवेक सँ कार्य करब अपराध नहि थिक। किंतु जखन हम तर्क आ विवेक पर, सिद्धान्त आ विचार पर, स्वार्थ आ गोत्रवाद केँ प्रभावी बना दैत छियैक त' से हानिकारक होइत छैक। मैथिली भाषा ब्राह्मणवादी अथवा अभिजनवादी स्वार्थबुद्धि सँ अभिशप्त रहल अछि। मैथिली साहित्य केँ सेहो एकर दंश 'भोग' पड़लैक अछि। आइयो भोगि रहल अछि।

साधारणतः रचनात्मक लेखन केनिहार केँ मान्यता बहुत आसानी सँ भेटि जाइत छैक। खासक 'मैथिली लेल त' ई बात कने बेसिए स्पष्ट होइत अछि-रचनाक स्तर चाहे जे हो। ताही दुआरे सम्भवतः एतय जे किओ मैथिली साहित्य सँ जुड़ल नामी लोक सभ छथि ओ रचनात्मक लेखन अर्थात् कथा, कविता इत्यादि सँ शुरू भ' जाइत छथि। ई रस्ता पकड़ला सँ हुनका सभ केँ साहित्यकार कहाब' मे त' सुविधा होइते छनि, महत्त्वपूर्ण पुरस्कार (ओकर संग-संग पुरस्कारक राशि!) पएबा मे सेहो सुविधा रहैत छनि। एहि संदर्भ मे हमर अपन अनुभव उल्लेखनीय अछि। हम जे शुरु-शुरु मे अनुवादक द्वारा मैथिली साहित्य सँ जुड़लहुँ त' मैथिलीक कैक टा अग्रणी विद्वान हमरा बुझौलनि जे जँ हम अनुवाद आ आलोचना करैत रहब त' मैथिली साहित्य मे उचित मान्यता भेटनाइ कठिन। त' भाइ, ई कहियौक जे अहाँ ई कठिन रस्ता किएक आ कोना चुनलहुँ आ' शुरु भ' गेलहुँ ? कखनो ई नहि बुझाइए जे तीन दशक सँ बेसिए समय धरि

आलोचनात्मक लेखन केलाक बादो ओ सभ नहि भेटि सकल अछि जे किछुए दिन मे रचनात्मक लेखन सँ प्राप्त भ' जाइत?

अहाँक एहि प्रश्न मे साहित्यक सामाजिक अवधारणा बाजि रहल अछि। साहित्य केँ आजुक मैथिल समाज कोन रूप मे ल' रहल छैक तकर एकटा प्रतीक थिक उक्त विचार अथवा अहाँक संग कयल गेल प्रश्नक घटना।

हम पहिने कहि चुकल छी जे साहित्य दिस हमर झुकाव स्वभाववश, पारिवारिक पृष्ठभूमिवश भेल। साहित्य पढ़ैत काल हमरा लागल जे साहित्यक भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण छैक। हम एहि कार्य मे लागि गेलहुँ। प्रारंभ हमहूँ कलहुँ कथा आ कविता लेखन सँ। विद्यार्थी जीवनक बाद हमर पहिल रचना जे छपल छल से एकटा कथा अछि 'धन कुसेसरा तैं ईहो' (वैदेही, 1965)। एहि कथाक बाद हम कथा आओर कविता दिस झुकलहुँ। किन्तु आलोचना हमरा बेसी प्रिय भेल। लगैत अछि, एकरो कारण प्रायः हमर पिता छलाह। ओ संस्कृत साहित्यक आलोचक रहथि। ओहि क्षेत्र मे बहुत किछु कार्य कयने छथि। हुनका संग रहैत संस्कृत साहित्यक विभिन्न विषय पर आलोचना-प्रत्यालोचना सुनबाक अवसर हमरा भेटय। ओहि सँ हमर आलोचना बुद्धि विकसित आ प्रभावित भेल। भरिसक येह कारण छल जे हम कविता, कथाकेँ गौण स्थान देलियैक आ' आलोचना प्राथमिकता मे आगाँ बढ़ि गेल। ओना, सूचनाक लेल हम कह' चाहब जे कविता, कथा हम एखनो लिखैत छी। समय अयला पर ओकर प्रकाशन हेतैक। जहाँधरि लेखन सँ अर्थ आ यश प्राप्तिक प्रश्न अछि से आनुषंगिक महत्वक वस्तु थिक आ हम एकरा ताही स्थान पर ओही रूप मे राख' चाहैत छी। ई बात नहि छैक जे पैसा अथवा यश भेटला पर हमरा खराब लगैत अछि। किन्तु साहित्य लेखनक ई उद्देश्य नहि हायबाक चाही। यश आ अर्थकेँ साहित्यक उद्देश्य संस्कृत साहित्यक काव्यशास्त्रीलोकनि मानने छथि, किन्तु ओ समय राज-दरबारक छलैक। आइयो सरकार आ टाटा-बिड़लाक पुरस्कार योजना राज दरबारक भूमिका मे ठाढ़ अछि। किछु गोटय ओकरे साहित्य लेखनक अभीष्ट बुझैत छथि। किन्तु, हमर स्पष्ट धारणा अछि जे एहन रचनाकार अथवा हुनक कृति कालजयी नहि होइत अछि। पानिक बुलबुला आ' पानिक लहरि बनबा मे फर्क छैक। पानिक बुलबुला ओ बनि सकैत छथि, समयक गति मे लहरि अनबाक सामर्थ्य हुनक रचना मे नहि होइत छनि। साहित्यक सार्थकता समय-सालक विकास-गति केँ त्वरा प्रदान करब थिक।

एहिठाम अहाँ एकटा आओर नीक प्रसंगक उल्लेख कयलहुँ अछि। आजुक समय मे

केवल मिथिला-वासिये नहि, सम्पूर्ण भारतवासी अथवा कही जे अखिल विश्वक लोक अनुवाद मे जीबि रहल अछि। भाषा, संस्कृति, आचार-विचार, सभक अनुवाद भ' रहल अछि । ई उचित आ आवश्यक अछि । जखन हम विश्व-बंधुत्वक गप्प करैत छी तखन अनुवादक आश्रय लेब हमरा लेल अनिवार्य भ' जाइत अछि । सार्वभौमिकताक संग क्षेत्रीयताक संवाद अनुवाद द्वारा भ' सकैत अछि । मैथिलक अथवा मनुष्यक एहि आवश्यकता कें जे नहि बुझैत छथि सैह अनुवाद कार्य कें गौण कहैत छथि ।

निश्चित रूप सँ अनुवाद कार्य आजुक स्थितिक स्वभाव आ आवश्यकता अछि । अनुवाद द्वारा मैथिलक, ओकर भाषा आ साहित्यक जतेक काज कयल जा सकैत अछि ततेक प्राय: मौलिक लेखनो द्वारा नहि । तें अनुवाद अहाँ अवश्य करू से हमर इच्छा आ कामना । यश आ अर्थ स्वत: अनस्यूत रूप मे प्राप्त होब'वला वस्तु अछि, तें ओहो भेटत से उम्मीद कयल जा सकैत अछि ।

ओना आब त' आलोचना कें सेहो रचनात्मक लेखनक मान्यता प्राप्त भ' गेल छैक, मुदा की कविता, कथा, उपन्यास लेखनक इच्छा नहि होइत अछि ?

जेना हम कहलहुँ जे हमरा दृष्टिकोण मे समाज आ' लोक अछि। हम देखि रहल छियैक जे एहनो रचनाकार छथि जनिक कविता, कथा आ उपन्यास द्वारा समाजक उपकारे नहि, अपकारो भ' रहल अछि । लोक भुतिया रहल अछि। कोनो वस्तु स्वत: महत्त्वपूर्ण नहि होइत छैक । महत्ता ओकर उपयोगिता आ सार्थकता मे निहित छैक। सोनाक गहना प्रिय वस्तु थिक, किन्तु सोनाक भाला बना क' मारल जाय त' मृत्यु सेहो भ' सकैत छैक । कविता, कथा ओ उपन्यास यदि विपथगामी बनाबय, सामाजिक विकास मे बाधक बनय त' ओहि सँ परहेज होयबाक चाही । यैह काज आ दायित्व आलोचकक छैक । आलोचना साहित्यक मर्म कें उद्घाटित करैत अछि, ओकर दिशा कें देखार करैत अछि । मिथिला जनपद कें स्मार्त ब्राह्मणक प्रभुता सम्पन्न देश कहल गेल अछि। ई विशेषण कहियो लाभकारी नहि छल, आजुक समय मे त' एकदम्मे नहि अछि । मुट्ठी भरि लोकक आचार-विचार आ सौख-सहन्ता कोनो जनपदक खुशी आ सम्पन्नताक मापदण्ड नहि भ' सकैत अछि ।

एहि मापदण्ड कें बदल' पड़त । कसौटी ताक' पड़त । महाजनक तराजू आ बटखरा सँ संस्कृति आ साहित्यकें जाधरि तौलैत रहब ताधरि यैह हाल रहत । आलोचनाक अभियान मे सम्मिलित भ' क' हमरा खुशी होइत अछि । हम एकरा नीक आ सही, आवश्यक आ समयोचित मानैत छी ।

रचनात्मक लेखनक गप्प शुरु भेल अछि त' भाइ, की अहाँ आजुक कथा लेखन सँ एक आलोचकक रूपमे अपनाकें संतुष्ट पबैत छी ? मैथिली कथा पर गृह-विरह (नॉस्टलजिया) सँ ग्रस्त रहबाक आरोप आइयो लगाओल जाइत अछि । की अहाँ सहमत छी ?

आजुक मैथिली कथा-लेखन उपलब्धि मे संतोषजनक नहि अछि। किन्तु ओकर दिशा आश्वस्तिजनक अवश्य छैक । ई बात सही अछि जे मैथिली कथाकार एखन धरि मिथिलाक साग आ तिलकोड़ मे, अयाची आ मंडन मे लटपटायल छथि । कहल जाइत अछि जे ई सभ मिथिलाक संस्कृतिक प्रतीक अछि । विचारणीय अछि जे मिथिलाक संस्कृति ककरा मानल जाय । अभिजनवादी जीवन-शैली आ ओकर कर्मकाण्ड हमरा संकीर्ण करैत रहल अछि । हम क्रमश: बन्द गलीक ओहि छोड़ पर पहुँचि गेलहुँ अछि जाहिठाम नॉस्टलजिया दुखद रोग जकाँ टीसैत अछि । अपन माटि-पानि आ सभ्यता-संस्कृति पर गौरव-बोध होयब अनुचित नहि, किन्तु ओ अपन हो तखन । कखनो क' एहन होइत छैक जे दोसरक देल वस्तु कें लोक अपन बूझय लगैत अछि । एहि विभ्रांति कें दूर करब आवश्यक । तें माटि-पानिक गप्प करब जतबे आवश्यक ततबे ईहो बूझब आवश्यक जे ई माटि-पानि ककर थिक । एहि माटि पर हम कत' छी। गाम ककरो आ बाँट करय बक्खो । दोसर बात, ई माटि-पानि, ई जनपद, विश्वक भू-भाग सँ जुड़ल अछि । अपना कें द्वीप बनाक' राखब हमरा सभक लेल घातक भेल अछि ।

आजुक मैथिली कथा मे विश्व-दृष्टि आबि रहल अछि । निश्चित रूप सँ ई नीक बात थिक आ एहि सँ मिथिलावासीक स्थिति आ समस्याकें व्यापक परिप्रेक्ष्य मे देखबाक अवसर त' भेटिते अछि, ओहि सँ लड़बाक आवश्यकताक अनुभव सेहो होइत अछि। मैथिलीक नवतूरक कथाकार मिथिला सँ बाहरक साहित्य आ साहित्येत्तर रचना सँ परिचित भेलाह अछि । हुनक दृष्टि व्यापक भेलनि अछि । आजुक कथा मे एकर प्रभाव देखल जा सकैत अछि ।

की अहाँकें लगैत अछि जे मैथिली मे आइयो आयास-प्रयास सँ कथा लिखल जाइत अछि ? कथा लेखनक क्षेत्र मे नैसर्गिक प्रतिभाशाली लेखकक अभाव अछि ? फलस्वरूप मैथिली कथा ने पाठक सँ जुड़ि पाबि रहल अछि आ ने आन भाषा-साहित्यक समानान्तर अपन कोनो पहिचान बना पाबि रहल अछि।

एहिठाम फेर साहित्यक प्रति समाजक अवधारणाक प्रश्न उठैत अछि। मैथिली मे कोनो भाषा जकाँ दू प्रकारक साहित्यकार छथि । यदि कथाक स्तर पर देखी त' ओतहु ई दुनू कोटि भेटि जायत । प्रथम कोटिक कथाकार ओ छथि जे स्वभाव आ प्रवृत्ति सँ साहित्य रचना करैत छथि । हुनक रचना एकटा वैचारिक तथा काल्पनिक सोचकेँ कथाक माध्यम सँ प्रस्तुत करैत अछि । दोसर प्रकारक कथाकार ओ छथि जिनका मे साहित्यबोध आ साहित्यरस नहि छनि । बात केँ स्पष्ट करैत कहि सकैत छी जे मैथिल छी, मैथिली भाषा बजैत छी त' मैथिलीक साहित्यकारो भइये सकैत छी ई धारणा गलत अछि। मैथिलीभाषी होयब आ' मैथिलीक साहित्यकार होयब दू वस्तु थिकैक से ओ नहि बुझैत छथि । एहने लोक कूथि क' साहित्य लेखन करैत छथि आ हुनक लेखन 'आयल पानि, गेल पानि, बाटे बिलायल पानि' भ' क' रहि जाइत छनि ।

हमर कहबाक ई अर्थ नहि अछि जे साहित्य-लेखन मे अभ्यास आ प्रशिक्षणक कोनो महत्त्व नहि छैक । किन्तु दुखक बात ई अछि जे आजुक अधिकांश रचनाकार जनमिते अपना केँ पाकल परोड़ बुझ' लगैत छथि आ अभ्यास तथा प्रशिक्षण केँ निरर्थक मानैत छथि। तखन यश आ' टाकाक अधीर महत्त्वाकांक्षा लेखन केँ घटिया बनबैत अछि, ओकर अकालमृत्युक कारण होइत अछि ।

एकटा दोसर स्थिति सेहो अछि । संवेदनशील होयबाक तथा ऊर्जामय बनल रहबाक अवधि होइत छैक । जहिना बाल्यावस्था मे संवेदनशीलता अथवा ऊर्जा कम होइत छैक तहिना बुढ़ारी मे सेहो क्षीण भ' जाइत छैक । मैथिलीक साहित्यकार जल्दी सेराइत छथि। हुनक उष्मा जल्दी समाप्त होइत छनि । साफ अछि जे मिझायल आगि सँ चूल्हि नहि पजारल जा सकैत अछि । एहने रचनाकार कूथि क' कथा लिखैत छथि । विधा-परिवर्त्तन द्वारा अपन जीवन्त होयबाक विज्ञापन भने करथु, किन्तु एक विधाक सेरायल पानि दोसर विधामे गरम लागत से संभव नहि छैक ।
ऊर्जावान बनल रहबाक लेल जीवन सँ, समय-साल सँ संपृक्त रहब आवश्यक होइत छैक । व्यक्तिवादी जीवन शैली पलायनवादी मनोवृत्तिक सूचक थिक आ पलायन लेखनक घोर शत्रु । लेखन, संबद्धता आ सरोकारक जीवन्त देन थिक । ई एकटा एहन तथ्य अछि जकरा बुझिए क' लेखनक सार्थकता पर विचार भ' सकैत अछि ।

मैथिली मे एहनो साहित्यकार भेल छथि जे दीर्घजीवी भेलाह । संगहि जीवनक अंतिम कालधरि लिखैत रहलाह । जेना हरिमोहन झा आ यात्री । की हिनका सभक अंतिम कालक लेखन सेरायल छलनि? की ई सभ कूथि क' लिखैत छलाह?

हम पहिनहि कहलहुँ अछि जे लेखनक अर्थ होइत छैक सामाजिक सरोकार । एहिमे सन्देह नहि जे हरिमोहन झा आ यात्री मैथिलीक महान रचनाकार छथि । एकर सभ सँ पैघ कारण अछि हुनका लोकनिक सामाजिक संपृक्ति । किन्तु दुनू रचनाकारक संपूर्ण लेखन केँ ध्यान मे राखल जाय त' स्थिति स्पष्ट भ' जायत । संयोगक बात अछि जे दुनू रचनाकार 1929 मे लेखन शुरु कयलनि । समाजक स्थिति आ समस्या के त' ओ सभ लेखनक विषय बनयबे कयलनि, ओहि मादे अपन विचार सेहो रखलनि। तात्पर्य ई जे हुनकालोकनिक लेखन यथार्थ आ इच्छाक समन्वय छल ।

हरिमोहन झाक सर्वोत्कृष्ट लेखन, हमरा जनैत, अछि– 'कन्यादान' आ 'खट्टरककाक तरंग' । एहि दुनू कृति मे हुनक सामाजिक संरोकार गहन रूप मे घुलल-मिलल अछि। किन्तु जीवनक अंतिम समय मे हरिमोहन झाक सामाजिक सरोकार कमि गेलनि । लगभग 1965 क बाद हुनक लेखन मे ओ उष्मा नहि रहलनि जे पहिने छलनि ।

प्राय: यैह कारण थिक जे हुनक आत्मकथा पढ़ला पर एक प्रकारकेँ झटका जकाँ लगैत अछि । हरिमोहन झाक लेखनीक जे सामर्थ्य, जे आकर्षण 'कन्यादान' आ 'खट्टरककाक तरंग' मे भेटैत अछि से हुनक 'जीवन यात्रा' मे नहि । ओना एकरो कारण एक प्रकारक सामाजिक दृष्टिकोणे छल । आत्मकथा लिखैत काल ओ सोच' लगथिन जे ई बात लिखबैक त' हुनका केहेन लगतनि । एहि मनोभावनाक परिणाम भेल जे ओ लिखलाहा केँ कपचैत गेलाह, बदलैत गेलाह आ तखन जे वस्तु सोझाँ आयल से हरिमोहन झाक नहि, हुनक बुढ़ारीक रचना बनि गेल ।

ठीक एकर विपरीत यात्री कहियो बूढ़ नहि भेलाह । सामाजिक सरोकार, वैचारिक ऊर्जा तथा लेखकीय तटस्थता हुनका मे अन्तधरि बनल रहलनि । ओ जीवनक अंतिमो समय मे सामाजिके नहि, पारिवारिक तथा आत्मगत विकृति केँ सेहो व्यंग्यक निशाना बनबैत रहलाह । लोक की कहत तकर परवाहि नहि कयलनि । बीमार आदमी केँ दवाइक स्वाद नहि पुछलनि । मैथिली लेखक-समुदाय मे यात्रीक महत्ता हुनक एही असाधारणता मे व्यक्त भेल अछि । हमर सभक समस्त रचनाकारक आदर्श 'यात्री' होइत छथि तँ से अपन एही जीवन्तता तथा सामाजिक दृष्टिकोणक कारणे ।

हम पूछ 'चाहब जे मैथिलीके आबास-प्रयास सँ रचनात्मक लेखन केनिहार सभसँ त्राण कोना भेटि सकैत छैक ? की अहाँ के नहि बुझाइत अछि जे ओ मैथिलीक सभ सँ पैघ अहित क' रहल छथि ?

बनौआ आ सौखिया साहित्यकार सँ मुक्ति कोना भेटत ताहि लेल चिन्ता करबाक कोनो प्रयोजन नहि छैक । समय सभ सँ पैघ कसौटी होइत छैक । वैह हुनक उपचार क' देतनि । किन्तु एकटा आओर तथ्य विचारणीय अछि । नीक आ अधलाह सापेक्ष शब्द थिक। रचनाकार सेहो पाठक होइत अछि । अधलाहो लेखक अक्षरक महत्त्व बुझैत अछि। तें ओकर तिरस्कार नहि होयबाक चाही । एक समय छल जखन अक्षरक तुलना महीस सँ कयल गेल छल–'काला अक्षर भैंस बराबर' । महीस बला मोट संवेदनाक जीव अक्षर-पुरुष कें मानल गेलैक । आइ स्थिति ई अछि जे अक्षर सँ लोक कें विरक्ति भ' रहल छैक । टी. वी. आ एहि प्रकारक उपकरण अक्षर-संसार कें रसातल मे पहुँचयबा पर बिर्त रहल अछि ।

एहि संघर्ष मे लेखन-कार्य मे विश्वास करयवला प्रत्येक व्यक्तिक योगदान महत्त्वपूर्ण छैक । ई बात अवश्य जे अक्षर जतेक मनगर आ' सार्थक हेतैक ततेक ओ प्रिय होयत। स्थायी होयत । तें आयास-प्रयास करबाक चाही, करयवलाक संभव हो त' सहयोगे करबाक चाही ।

मैथिलीक अग्रणी साहित्यकार सभ मे जे आलोचना कें अपन कार्यक्षेत्र बनौलनि अछि, हुनका लोकनिक बीच की अहाँ अपना कें असगर अनुभव करैत छी? आ भाइ, ई कहियौ जे मैथिली आलोचना आइ कत' ठाढ़ अछि ? पहिलुका आ आजुक आलोचक सभक 'टेम्परामेंट', विचार मे की अन्तर छैक ?

मैथिली आलोचनाक एकटा इतिहास छैक । ओना मैथिली मे अनुसंधान आ व्याख्याक काज करयवला पहिल रचनाकार छथि चन्दा झा । किन्तु ओ आजुक अर्थ मे आलोचक नहि छलाह । एहि दृष्टिकोण सँ मैथिलीक पहिल आलोचक छथि रमानाथ झा । किन्तु, रमानाथ झाक आलोचनाक सीमा छनि । ओ अंग्रेजीक विद्यार्थी भइयो क' संस्कृत मानसिकताक लोक छलाह । साहित्यक प्रति हुनक अवधारणा संस्कृत काव्यशास्त्रक पृष्ठभूमि मे पल्लवित भेलनि । मैथिली साहित्यक ओ जे व्याख्या आ विश्लेषण कयलनि तकर मुख्य कसौटी छल संस्कृत काव्यशास्त्र । यद्यपि हुनक समीक्षा पढ़ला पर लगैत अछि जे संस्कृत काव्यशास्त्रक कसौटी कें आधुनिक मैथिली साहित्यक व्याख्याक लेल ओ पर्याप्त नहि मानैत छलाह, तथापि ओहि सीमा सँ बाहर निकलबाक प्रयास ओ नहिये जकाँ कयलनि अछि ।

हुनका बाद अथवा हुनका संग दू व्यक्ति आओर एहन छथि जे मैथिली साहित्यकें बुझबाक

आँखि देलनि । ओ सभ छथि काञ्चीनाथ झा 'किरण' तथा रामकृष्ण झा 'किसुन'। ई सभ आलोचक नहि छलाह, किन्तु मैथिली आलोचनाक जे आधार हिनका सभक द्वारा प्रस्तुत भेल अछि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आ उपयोगी अछि । एकरा बाद अबैत छथि कुलानन्द मिश्र । मैथिली साहित्य जखन यात्रीक नेतृत्व मे वर्णवादी सँ वर्गवादी अवधारणा दिस अग्रसर भेल तखन ओकरा बुझबाक लेल तदनुरूप आलोचनाक आवश्यकता भेलैक । सोझ शब्द मे कही जे मैथिली साहित्य कें अर्थात् सर्जनात्मक साहित्य कें मार्क्सवादी आधार देलनि यात्री आ मैथिली आलोचना कें मार्क्सवादी आधार देनिहार छथि कुलानन्द मिश्र ।

एहि दृष्टिकोण सँ साहित्यकें देखबाक आ बुझबाक प्रयास किछु आओर साहित्यकार क' रहल छथि । जेना, हरेकृष्ण झा, सुकान्त सोम आदि । किन्तु आलोचक रूप मे हिनका लोकनिक छवि एखन धरि प्रशस्त नहि भेल अछि ।

जहाँ धरि हमर स्थिति अछि, हम साहित्यक अध्ययन मार्क्सवादी दृष्टिकोण सँ समाजशास्त्रीय कसौटी पर करैत छी । हमर इच्छा आ प्रयास रहैत अछि जे साहित्य मे समाज ताकल जाय तथा समाज मे साहित्यक सार्थकता निरूपित कयल जाय। एहि प्रयास मे हम कतेक दूर धरि सफल भेलहुँ अछि से पाठक कहताह ।

मैथिली आलोचक सभक संदर्भ मे हमर ई धारणा अछि जे ओ सभ लेखक सँ अपन व्यक्तिगत सम्बन्ध कें बेसी महत्त्व दैत छथिन। एना मे आलोचनाक की गति होइत रहल छैक ताहि सँ अहाँ नीक जकाँ परिचित छियैक ।...अहाँ के नहि लगैत अछि जे अधिकांश आलोचक आलोचना आ समीक्षा करबाक स्थान पर 'निर्णय' वा 'ओपीनियन' दैत छथिन । अपन टिप्पणीक समर्थन मे किछु कहनाइ आवश्यक नहि बुझैत छथिन । एकर अतिरिक्त कोनो कविता, कथा अथवा उपन्यासक आलोचना मे 'नीक', 'बड़ नीक', 'खराब', इत्यादि सँ आगाँ बढ़ब आवश्यक नहि बुझैत छथिन । एहि पर अहाँक विचार ।

एहिठाम मैथिलीक आलोचनाक इतिहास आ स्थिति पर फेर विचार करबाक आवश्यकता अछि । मैथिली मे दू प्रकारक आलोचक भेल छथि । एक कोटिक आलोचक मे छथि रमानाथ झा आ कुलानन्द मिश्र । दोसर कोटिक आलोचक मे ओ सभ छथि जिनका हम 'पदेन आलोचक' कहैत छी ।

मैथिलीक अध्यापक छी, छात्र केँ पढ़यबाक लेल साहित्यक व्याख्या करबाक अछि–इएह पाठ्य सामग्री आलोचना भ' जाइत अछि। एहन अध्यापक लेल आलोचना हुनक विवशता होइत छनि। तें ओ आरोपित आलोचक होइत छथि। कुशल शिक्षक होयब एक बात थिक आ कुशल समीक्षक होयब दोसर। सफल शिक्षक नीक आलोचको हो से भ' सकैत अछि, मुदा से होयबे करय ई आवश्यक नहि।

मैथिली मे एहन 'पदेन आलोचक' जखन साहित्य-संसार मे प्रवेश करैत छथि तखन 'नीक', 'बड़ नीक' सनक दूटप्पी मे कार्य चलायब हुनक विवशता भ' जाइत छनि। तात्पर्य ई जे आलोचक लेल अध्ययन अनिवार्य छैक। क्लासक पाठ्य सामग्री सँ अतिरिक्त विषयक अध्ययन करबाक जकरा इच्छा आ सामर्थ्य नहि रहतैक से नीक आलोचक नहि भ' सकैत अछि। तें 'हँ', 'हूँ' वला, 'नीक' 'बेजाय' वला मास्टरी-पाठ आलोचना बनि जाइत अछि।

कहबाक प्रयोजन नहि जे आलोचना संसार मे ई सभ जहिना प्रवेश कयलनि तहिना बाहरो भ' जेताह। समय हिनक उपचार क' देतनि।

एहिठाम एकटा बात दिस ध्यान देब आवश्यक अछि। रमानाथ झाक समय मे मैथिली साहित्य शिक्षण व्यवस्था मे प्रवेश क' रहल छल। तें रमानाथ झा शैक्षणिक आवश्यकता केँ ध्यान मे रखैत बहुत रास व्याख्या-विश्लेषण कयने छथि, पोथीक भूमिका लिखने छथि। शैक्षणिक आवश्यकताक सीमा मे रहियो क' साहित्यक छात्रोपयोगी पाठ्य-सामग्रीक ओ जे व्याख्या कयलनि से छात्र सँ इतर पाठकक लेल सेहो महत्त्वपूर्ण भेल।

हुनका बाद एहि प्रकारक व्यापक प्रयास अथवा प्रभावी प्रयास अध्यापक लोकनि नहि कयलनि अछि। अपवादस्वरूप प्रो. आनन्द मिश्र, रामदेव झा तथा भीमनाथ झा सदृश किछु अध्यापकक नाम लेल जा सकैत अछि। वस्तुतः ई सभ अपवादे छथि।

अहाँ अनेक कथा-संग्रहक सम्पादन कने छी। अहाँक पोथी 'अनवरत' आ सद्यः प्रकाशित 'एकल पाठ' मे मैथिली कथा पर अनेक निबन्ध अछि। कथा लेखनक अद्यतन प्रवृत्ति सभसँ अहाँ अवगत छी। मैथिलीक आठम आ नवम दशकक कथा मे जे आक्रामकता भेटैत अछि से आब सदीक अन्तिम दशक मे सेरायल सन नहि लगैत अछि? की एहि सेरायल आक्रामकताक संग नव सदी मे मैथिली कथाक प्रवेश मैथिली कथा-यात्रा केँ गन्तव्य दिस ल' जा सकत? एक मार्क्सवादी आलोचकक रूप मे की लगैत अछि अहाँके?

मैथिली कथा साहित्यक अपन इतिहास छैक। प्रारंभ मे भाववादी आ' प्राचीन सौन्दर्यवादी /सरणि पर कथा-रचना भेल। किरणजी आ हरिमोहन झा ओकरा सामाजिक आधार देलनि। हरिमोहन झाक बाद ललित, राजकमल, सोमदेव, मायानन्द आदि कथाकार एहि क्षेत्र मे अयलाह। छठम दशकक उत्तरार्द्ध सँ सातम दशकक अन्तधरि मैथिलीक साहित्यिक प्रतिभा कथाक क्षेत्र मे लहलहायल। किन्तु एहि कालक कथाकार स्थितिक उपस्थापन धरि सीमित रहि गेलाह।

तकरा बाद मैथिली कथाक विषय-वस्तु मे व्यापकता आयल। अभिजन सँ सबजन धरि ओ पहुँचल। भाषा सेहो भावुकताक झुल्ल उतारलक। ठोस जमीन परहक गप्प ठोस भाषा मे होमय लागल। किन्तु, कथाकारलोकनि एकटा कृत्रिम शालीनताक भीतर रहि क' स्थिति केँ देखबाक प्रयास कयलनि। स्वतन्त्र भारत मे जनमल कथाकार जखन बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, उत्पीरण आदि राक्षसी शक्तिक सम्मुखीन भेलाह तखन हुनक सोच आ भाषा मे परिवर्तन आयब स्वाभाविक भ' गेल। तें हुनक कथाक भाषा आक्रोश-मूलक अछि। हुनक कथाक विषय 'सिविल' नहि, फौजदारीबला अछि। कथा विकासक ई संक्रमणकाल नवम दशक धरि अबैत-अबैत प्रायः समाप्त भ' गेल।

कथाकारलोकनि ई बात बुझलनि जे स्थितिक दंश मिथिलाक लोक भोगि रहल अछि अवश्य, किन्तु ओहि स्थितिक कारण आ निदान मिथिला मे नहि छैक। क्षेत्रीय समस्या, व्यापक समस्याक स्थानीय अभिव्यक्ति थिक। 'स्थानीय भाषा मे कथा बनिक' ओ आबय से उचित आ आवश्यक। किन्तु ओकर स्थायी निदानक हेतु व्यापक कारण आ समाधानक दूरी धरि जायबो ततबे अनिवार्य अछि। मैथिली कथाकारक ई युगबोध हुनक कथाक स्वर मे परिवर्तन अनलकनि।

ठीक एही समय मे अर्थात् नवम् दशकक बितैत-बितैत विश्व मे एकटा आर दुर्घटना भेल। ओ छल सोवियत संघक विघटन। सोवियत-क्रांति कहियो विश्व भरिक साहित्यकार केँ प्रभावित कयने छल। सोवियत संघक विघटन सेहो साहित्यकारक चिन्तन-दिशा केँ बदलबाक जोरदार अभियान चलओलक। अधिकांश कथाकार एहि विघटनक अमरीकी व्याख्या सँ सहमत होइत अपन सोच बदलि लेलनि। हुनक लेखन छद्म केँ छोड़ि असली रूप मे देखार भेल।

ई परिवर्तन पूँजीवादी प्रचारक परिणाम छल। मैथिलीक मुख्य साहित्यधारा एहि सँ तरंगित अवश्य भेल, मुदा दिशाहीन नहि भेल। अधिकांश साहित्यकार अपन आचार-विचार पर, अध्ययन आ लेखन पर अडिग रहलाह। खुशीक बात ई भेल जे नव पीढ़ीक साहित्यकार अथवा कथाकार पूँजीवादी चक्रचालिक एहि अभियानकेँ गंभीरता सँ लेलनि आ ओकर उत्तर मे तेहने कथा-रचना ल' क' साझाँ अयलाह।

सामन्तवाद आ पूँजीवाद मे अन्तर छैक। सामन्तवाद सँ लड़बा लेल जाहि हथियारक उपयोग होइत छलैक तकर उपयोग आब नहि भ' सकैत छैक। जखन लड़ाइ उत्तर-आधुनिकतावाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद आदि शब्दावलीक हथियार ल' क' भ' रहल अछि तखन ओकर उत्तर मे ओहने अस्त्र ल' क' जायब आवश्यक छैक। यैह कारण छैक जे मैथिलीक कथाकार आब हल्लावला कथा नहि लिखैत छथि। तरबिठुआक जवाब केहुनिया मारि सँ दैत छथि।

स्पष्ट अछि जे आजुक कथा मे संवेदनाक स्तर पर गहिरै आयल अछि। संगहि, अपन प्रतिहिंसाक मुद्रा कें सेहो ओ अक्षुण्ण रखने अछि। तें वर्तमान दशकक कथा केँ 'सेरायल' कहब उचित नहि। ई ओतबे अथवा ओहू सँ बेसी जुझारू अछि जतेक पहिने छल। डिब्बा मे कंकड़-पाथर कम रहैत छैक त' आबाज बेसी होइत छैक। मुदा कंकड़-पाथर सँ डिब्बा भरि देल जाय आ तखन प्रहार कयल जाय त' आवाजो नहि हेतैक आ दुश्मनक कपारो फूटि जयतैक। आजुक कथाक यैह प्रवृत्ति अछि।

आधुनिक कथाक मुख्यधारा यैह अछि। तखन नदी मे छारनि रहितें छैक। नाला सेहो रहैत छैक। ओकरा धार नहि कहबैक। ओहि पर विचार नहि करब।

अहाँ कहैत छी जे आजुक मैथिली कथाक संवेदना-संसार व्यापक नहि, गहीर सेहो भेल अछि। अहाँ इहो कहैत छी जे सामाजिक चेतनाक कथा मैथिली मे बड़ कम लिखल गेल अछि। अपन दुनू मन्तव्य पर कथाक विकास दृष्टिसँ आर किछु कह' चाहब ? सामाजिक चेतनाक कथा कम लिखल जेबाक कारण की लगैत अछि अहाँके ?

आजुक कथाक मुख्य धारा पर जखन हम ध्यान दैत छी तखन ई एकदम स्पष्ट भ' जाइत अछि जे ओ पूँजीवाद आ पूँजीवादी हथकण्डाक विरोध मे ठाढ़ अछि। अपन समाजक संगोर करबाक आवश्यकताक अनुभव सेहो ओ करैत अछि। किन्तु खटक' वला बात तखन होइत अछि जखन एहन सन लगैत अछि जे कथाकार केँ सामाजिक

विकासक, सामाजिक संरचनाक ज्ञान संपूर्णता मे नहि छनि। ई बात नहि छैक जे आजुक कथाकार राजकमल चौधरी जकाँ किरणमाला ताकि रहल छथि। ईहो बात नहि छैक जे आजुक कथाकार कैँ अपन रचनाक काँचे रहि जयबाक आशंका छनि। हुनका अपन रचनाक शक्ति पर विश्वास छनि आ एही विश्वासक संग ओ प्रत्याक्रमण क' रहलाह अछि। आवश्यकता केवल एहि बातक अछि जे पुरान घर खसलाक बाद नव घरक रूपरेखाक संबंध मे हुनका फरिछायल ज्ञान होइन।

एहिबात कैँ कनेक दोसर तरहें सेहो हम कह' चाहब। साहित्य अथवा कथा मे दू टा वस्तु होइत छैक 'यथार्थ' आ 'इच्छा'। आजुक कथाकार यथार्थक उपस्थापन बहुत सफल रूप मे क' रहलाह अछि। साहित्यक शर्त्त पर अर्थात् संवेदनाक धरातल पर ई काज भ' रहल अछि। किन्तु हुनक इच्छा अर्थात् सामाजिक अवधारणा रचनाक संरचनाक अंग नहि बनि रहल अछि। से भेला पर कथा मे सामाजिक चेतना अबैत छैक, सामाजिक चेतनाक स्वर मुखर होइत छैक–एकर अभाव एखन हमरा भेटैत अछि। यैह कारण थिक जे नवतूरक अनेक कथाकारक कथा मे वर्णन अत्यन्त माँजल आ सटीक होइत अछि, मुदा अन्त धरि अबैत-अबैत ओ गड़बड़ा जाइत छथि। हुनक कथा मे तानी रहैत छनि, भरनी नहि। दुनूक तालमेल सँ कथा पूर्ण आ सार्थक होइत छैक।

भाइ, एकटा बात अहाँ सँ पूछ' चाहब। की अहाँके आलोचना करबा मे व्यक्तिगत सम्बन्ध कहियो बीच मे नहि आयल ? किएक त' रचनाकार एवं आलोचकक बीच मौन संघर्ष कोनो नव बात नहि अछि।

मैथिली क्षेत्रीय भाषा थिक। मैथिली जनपद बड़ छोट अछि। अधिकांश रचनाकार एक दोसरा सँ परिचित रहैत छथि। प्रारंभ मे व्यक्तिगत परिचय आलोचना लिखबा मे बाधक लागय। किन्तु आब परिचयक विस्तार भेलाक बादो ओ कोनो बाधा नहि दैत अछि। एकर कारण एक्कोटा अछि। हम व्यक्तिक नहि, व्यक्तिक प्रतिगामी क्रिया आ विचारक विरोधी छी।

एहि प्रसंग मे एकटा आओर बात हम स्पष्टतः कह' चाहब। हमर बहुत एहन मित्र छथि जिनका ई शिकायत छनि जे मित्र-शत्रु मे हम भेद नहि करैत छी। हमरा सभक स्नेह प्राप्त अछि। हम सभक सम्मान करैत छियनि। निश्चित रूप सँ ई सम्मान ओहि सकारात्मक पक्षक होइत छैक जकर हम खोज करैत छी, उत्खनन करैत छी। केहनो आदमी, कोनो वयसक लोक प्रगतिशील दृष्टिकोण सँ रचना क' सकैत अछि, करैत

अछि । हमर आलोचना मे वय अथवा व्यक्तिगत परिचय कतहु बाधक नहि भेल अछि। ओना, एहि सम्बन्ध मे पाठकक रूप मे अहीं सभ निर्णय क' सकैत छी ।

अहाँकेँ ई नहि लगैत अछि जे विशेष भाषा-साहित्यक उचित आलोचना करबा लेल अन्य भाषा ओ साहित्यक रचना तथा ओहि सभ मे कयल जा रहल आलोचनाक पर्याप्त जानकारी हो ? आ ताहि लेल 'एक्सटेंसिव' अध्ययन आवश्यक ?

आजुक साहित्यकारक लेल व्यापक अध्ययन अनिवार्य छैक । एक समय छलैक जखन स्वयंभू साहित्यकार होइत छलाह । आब से संभव नहि छैक । कवि-हृदय होयब फराक बात थिक आ कविता करब फराक बात । व्यक्ति कतबो सहृदय कियेक ने हो, ओ कवियो भ' जाय से आवश्यक नहि छैक । आलोचक लेल त' सहृदयताक संग-संग अध्ययन प्राथमिक आवश्यकता छैक । मुदा, अहाँक एकटा विचार सँ हम सहमत नहि छी । अन्य भाषाक आलोचना पढ़ब ओतेक आवश्यक नहि लगैत अछि जतेक अन्य अनुशासनक ज्ञान प्राप्त करब। साहित्यकार अथवा आलोचक लेल भूगोल, इतिहास आ समाज शास्त्र पढ़ब अनिवार्य छैक । हम देखनें छियनि जे यात्रीजी बुढ़ारी मे एटलस कीनिक' मैग्निफ़ाइंग ग्लास स' ओकर रेखा पढ़ैत रहैत छलाह । यदि हम मिथिलाक भूगोल, इतिहास आ समाज केँ नहि जनबैक त' हम मैथिली साहित्य जानिये नहि सकैत छी ।

मैथिलीक संग दुर्भाग्य रहलैक अछि जे एहि मे वाराणसी मे गति पाबयवला साहित्यकार बेसी भेलाह अछि । विभिन्न विषयक ज्ञान त' दूर रहय, साहित्योक ज्ञान हुनका नहि रहैत छनि । अधिकांश 'पदेन आलोचक' एहने होइत छथि । मिथिलाक प्रसिद्धि विद्वताक क्षेत्र मे एहि लेल अछि जे एहिठामक लोक विभिन्न विषयक ज्ञाता होइत छलाह । एहिठामक परीक्षा-पद्धति विशिष्टताकेँ महत्त्व नहि दैत छल । सर्वज्ञता मैथिल बुद्धिमत्ताक मापदण्ड छल । मैथिली साहित्य, विशेषत: आलोचना, एहि दृष्टिकोण स' अत्यन्त दयनीय स्थिति मे अछि । जाधरि एहि स्थिति मे परिवर्तन नहि होयत ताधरि आलोचनाक सम्यक् विकासो संभव नहि अछि ।

अपन लेखनक आरम्भिक काल मे अहाँ कोन आलोचक सँ सभसँ बेसी 'इन्सपायर्ड' भेल छलहुँ ? आइ हिन्दी आ अंग्रेजीक कोन-कोन आलोचक अहाँके प्रभावित करैत छथि ? मैथिलीक नवका आलोचक सभ मे किनका सभकेँ अग्रणी मानैत छियनि ?

जेना हम कहि चुकल छी, साहित्य मे आलोचना विधा दिस हमरा जे अभिरुचि भेल तकर कारण हमर पिता आ पित्ती छलाह । हुनका लोकनिक साहित्यिक कार्यकलाप, विचार-विमर्श हमरा आलोचक बनबा मे उत्प्रेरक भेल । जखन हम आलोचना विधा दिस उन्मुख भेलहुँ तखन कुलानन्द मिश्र हमर दृष्टि केँ मजलनि, ओकर दिशा निश्चित केलनि । तकराबाद स्वाध्याय मात्र हमर संबल बनल रहल अछि ।

हिन्दी अथवा अंग्रेजीक आलोचक के हम अपन गुरु नहि मानैत छी। ई बात सही छैक जे हम रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, निर्मला जैन तथा मैनेजर पाण्डेय लिखित आलोचना केँ पढ़ैत छी । किन्तु, दृष्टिकोण अथवा मान्यता सँ सहमति भिन्न बात थिक, ओहि सँ प्रभावित होयब भिन्न बात। मैथिली साहित्यक आलोचना मे ओ सभ बहुत सार्थक नहि छथि।

किरणजी ठीके कहने छथि जे मैथिली साहित्यके बुझबा लेल मैथिल आँखि चाही। कोनो सिद्धान्त आ दृष्टिकोण कतेक दूर तक हमर जनपद केँ आ ओकर साहित्य केँ प्रभावित कयलक अछि से देखब मैथिली आलोचनाक मुख्य काज छैक । लूकाच आ ग्राम्शी सन समाजशास्त्री सेहो क्षेत्र-विशेषक अध्ययन मे आंशिके रूप सँ मार्गदर्शक भ' सकैत छथि । तें हम कहब जे मैथिली साहित्यक आलोचना मिथिला केँ पढ़ि क' कयल जयबाक चाही ।

आ, अन्तिम प्रश्न । यद्यपि एकर उत्तर मे ककरो 'सब्जेक्टिव' भेनाइ स्वाभाविक छैक । किएक त' हरेक व्यक्तिक अपन व्यक्तिगत पसिन्न एवं नापसिन्न भ' सकैत छैक । कृपया ई कहियौक जे अहाँक दृष्टि मे कविवर विद्यापति सँ आइतक मैथिली साहित्यक पाँच टा सभसँ प्रतिभाशाली कवि के छथि ? तहिना पाँच-पाँच टा कथाकार, उपन्यासकार ककरा मानब अहाँ ?

प्रतिभाशाली आ भुसकौल रचनाकारक गप्प नहि हो, हम अपन प्रिय रचनाकारक नाम कहि सकैत छी । ओना, एहू मे किछु कठिनता अछि । छौ सै वर्षक अवधि आ ताहि अनुपात मे साहित्यकारक संख्या-एहिमे पाँच-दसटा केँ चूनब सरल नहि अछि । एकर अतिरिक्त हम मानैत छी जे एहि प्रकारक कोनो सूची व्यक्ति सापेक्ष होयत। एहिमे भिन्नता हेतैक । दृष्टिकोणक अन्तर नाम मे परिवर्त्तन-परिवर्द्धन क' देत । एहि सभ किन्तु-परन्तु

केँ ध्यान मे रखैत तत्काल स्मरण पथ मे आबयवला हमर प्रिय साहित्यकारमे छथि–विद्यापति, चन्दा झा, हरिमोहन झा, कांचीनाथ झा 'किरण', यात्री, राजकमल चौधरी, लिली रे, राधाकृष्ण, प्रभास कुमार चौधरी, बिनोद बिहारी लाल, कुलानन्द मिश्र, सुकान्त सोम, सुभाष चन्द्र यादव, हरेकृष्ण झा आदि ।

नवका पीढ़ीक रचनाकार मे विभूति आनन्द, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, तारानन्द वियोगी आ रमेश केँ पढ़ब हमरा नीक लगैत अछि । आनो रचनाकारक बहुत रचना नीक लागल अछि, तें मोनो अछि। मुदा बहुविधावादी लेखकक बेसी लेखन बिसरा जाइत अछि। एकरा रचनाक कमजोरी कही अथवा हमर सीमा-मुदा ई यथार्थ अछि। हमरा दृष्टि मे कथ्य महत्त्वपूर्ण हाइत अछि, तकरे हम प्रतीक्षा करैत छी, तकरे हम स्वागत करैत छी ।

धन्यवाद भाइ, चलैत-चलैत ई कहि दिअ' जे तत्काल अहाँ कोन काज मे हाथ लगौने छी ?

एखन हम विद्यापति गीतक अध्ययन क' रहल छी। अद्‌भुत विडम्बना अछि जे, हमरा जनैत, विद्यापति पर खास क' मैथिली मे कोनो काजे नहि भेल अछि । किन्तु किछु गोटे मानैत छथि जे विद्यापति पर आब की काज करब । एहि प्रसंग मे हमरा मोन पड़ैत अछि अपन मित्र पी. के. झाक एकटा संस्मरण । ओ कहलनि जे दरभंगा रेडियो स्टेशन मे कार्यक्रमक इच्छुक जतेक लोक आबथि ताहि मे नब्बे प्रतिशत विद्यापतिक संबंध मे रचना पाठ करयवला रहथि । एहिमे स्कूलक अदन्त विद्यार्थी सँ ल' क' सेवानिवृत्त गलित नखदन्त अध्यापक धरि रहथि । एतेक लोकप्रिय भेलाक बादो विद्यापति केँ जाहि उपेक्षा दृष्टि सँ देखल आ पढ़ल गेल अछि से अत्यन्त चिन्तनीय विषय थिक। कतेक लाजक बात थिक जे विद्यापतिक अन्य अनेक कृतिक प्रकाशनक तँ गप्पे कोन, संपूर्ण गीतक संग्रह एखनधरि नहि प्रकाशित भेल अछि । पोथी छपबे नहि कयल अछि, गीतक संग्रहे नहि आयल अछि तखन ओहि प्रसँग विचार की होयत ? एक दिस स्थिति ई अछि आ दोसर दिस हमर अध्यापक तथा मैथिली सेवी वरदपुत्र उद्‌ग्रीव भ' क' विद्यापतिक नाम-संकीर्तन क' रहल छथि । हमर उद्देश्य साहित्य संसारक मैथिली प्रेमी केँ एहि स्थिति सँ परिचित करायब अछि ।



कथा

विभूति आनन्द

डर

बस स्टैण्ड पर कार लागल अछि । हम कारक अगिला सीट पर बैसल छी। पछिला सीट पर सासु, आ हुनकर कोरा मे करीब पाँच बर्खक बेटा चन्दन बैसल अछि। दू लग्गी पूब हटिक' बस लागल छै । पत्नी ओहि मे आगू सँ एक सीट छोड़ि खिड़की लग बैसलि छथि ।

कारक एहि छोटछीन संसार मे बस फुजबाक प्रतीक्षा करैत हम सभ गप क' रहल छी । सासु अपन बेटी आ नातिक मादे भाँति-भाँतिक शंका आ कर्त्तव्यक बोध करा रहलि छथि । हम हुनकर गप सुनियो रहल छी आ घड़ी सेहो बेर-बेर देखि रहल छी । समय भ' गेल छै । सार महोदय आबि क' सूचना दैत छथि जे ड्राइवर आ कण्डक्टर एखन भोजन क' रहल अछि । हमरा तामस उठैत अछि । एहि देश मे क्यो समयक महत्त्व नहि बुझैत अछि ।

सासु कहैत छथि माधुरी पर ध्यान देबा लेल । पहिल बेर सासुर बस' जा रहलि अछि । देखैत-देखैत विवाहक पाँच बर्ख कोना बीति गेलै, नहि बुझयलै । एकदम बच्चा छै । कोनाक' जी टिकतै से नहि कहि !

हमरा भेल कहियनि–बच्चा नहि, बच्चावाली छथि आब । मुदा सासु सँ एहि तरहें उटपटांग कहब नहि रूचल । वएह हमर बातक व्याख्या कर' लगैत छथि जे बच्चा भेलै, से ओ की किछु बुझि सकलै ! सभ किछु सँ निश्चिंत रहलि । एकटा दूधक सरोकार रहितै, से छाती मे उतरबे नहि कयलै । शुरूहे मे गायक दूध धरा देलिऐ। हमरा फेर भेल कहियनि, जे दूध नहि उतरलनि आ कि 'फीगर' खराब भ' जइतनि तें माय बदला गाय-दूधक भरोस कयलनि ! मुदा इहो कहब उचित नहि लागल। संतान-विछोहक एहि घड़ी मे हाँसुक बियाह मे खुरपीक गीत भ' जाइत ।

फेर, हमरा अपने पर तामस होब' लागल। हम एना किएए अनेरो गपक चीड़-फाड़ करैत छी, आकि अपन अन्दर पैसल डरकेँ फुसिया रहल छी !

सहसा हमरा लागल जे चंदन नानी-कोरा सँ ससरि गेल । एना किए भेल ! हमरा आश्चर्य लागल ।

हमर नजरि सासु दिस चलि गेल । एकाएक हुनकर चेहराक रंग उतरि गेल रहनि। हम देखलहुँ, ओ चंदन केँ दुनू हाथेँ, एक प्रकार सँ घीचैत सन, समेटि अपन करेज मे साटि लेलनि । नाति सेहो तेहन आज्ञाकारी, तुरंत नानी मे एकाकार भ' गेल ।

करेज सँ नाति केँ सटने निस्पंद सासु लगभग पाँच मिनटक बाद आँखि फोललनि। हमर आँखि फेर हुनकर चेहरा पर ठमकल । आब जाक' लागल स्वाभाविक मुद्रा । अनेरो हम डेरा रहल छी जे बिनु नानीक चंदन कोना रहत । हमरा त' डर एहि लेल अधिक होयबाक चाहैत छल जे बिनु चंदनक सासु कोना क' रहि पओतीह !

हम अपन नजरि हटाक' बस दिस ल' जाइत छी । पहिने ड्राइवरक सीट पर। फेर अगिला एक पंक्ति छोड़ि दोसर पंक्तिक खिड़की लगक सीट पर । माधुरी खिड़की पर केहुनी अड़कौने छथि । तरहत्थी पर गाल समेत पूरा माथ अँटकल छनि । नजरि निस्सीम विस्तार मे फिफिया रहल छनि । मोने-मोने किछु जेना सोचि रहलि छथि। की सोचि रहलि होयतीह ? हम स्वयं सँ पुछैत छी । कनी काल प्रतीक्षा करैत छी। फेर कोनो निष्कर्ष नहि बहरा पबैत अछि । हमहूँ कोन मनुक्ख छी ! ने त' बेटाक मोनकेँ पढ़ि पबैत छी, आ ने पत्नीक मोनकेँ । एहि बेर अपना पर तामस कम, दया बेसी होइत अछि ।

मोन उबिया सन जाइत अछि । कार सँ बहराक' मोन हल्लुक क' लेबाक इच्छा रोप' चाहैत छी । गेट फोलबाक लेल हाथ सेहो बढ़बैत छी, कि तखने सार महोदय दू गिलास चाह लेने पहुँचि जाइत छथि–जाधरि बस फुजैए, चाह पीबि लिय' !' आ कहैत हाथ मे गिलास थम्हा देलनि । हम यंत्रवत् गिलास सासु दिस बढ़ा दैत छियनि। ओ 'अँऽऽ' कहैत अकचकाइत छथि । मुदा तुरंते प्रकृतस्थ होइत कने स्वीकार, कने अस्वीकारक मुद्रा मे संकोच प्रदर्शित करैत अंततः गिलास थाम्हि लैत छथि ।

हमरा मोन करैत अछि बाजी,–'केहन कलजुगाहि छथि ! जमाय-हाथक चाह कोना सोझा-सोझी पील जेतनि !' मुदा हम ने त' एहि मादे बेसी काल सोचि पओलहुँ आ ने वयह हमर मोन मे घुरिआइत बातक लेहाज क' सकलीह । ओ पहिल चुस्की लेलनि, कि दोसर गिलास सार महोदय हमर हाथ मे थम्हा देलनि । हम सासु दिस सँ हँटि सार दिस चलि अयलहुँ । मुदा सार नमरी उराँत । हमर शब्द कण्ठे मे अँटकल रहि गेल ।–'पहिने चाह पीब, तखन ने पान !' हम लज्जित भ' उठलहुँ । मोन कयलक जे कहियनि, 'खाली हमरे पर दया-दृष्टि अछि, आकि बहिन दिस सेहो अछि ! एना

जे एसगर छोड़ने छियनि, क्यो उचक्का अपन बुधियारी देखौलक त'...' मुदा से सभ कहब उचित नहि लागल । सोझाँ मे सासु छथि । कहलो नहि जायत सहजो ।

हमर ध्यान चंदन पर चलि गेल। ओ रंग-रंगक छिड़िआयल खेलौना केँ अपन छोट-छोट हाथ सँ समेटि रहल छल। नानी तकरा ममता भरल नजरि सँ देखि रहल छलथिन । सार महोदय केँ देखलहुँ, ठीके बसक खिड़की लग ठाढ़ भ' बहिन सँ किछु-किछु बतिया रहल छथि । हम घड़ी पर ध्यान देलहुँ । घंटा भरि लेट ! हमरा अकच्छ लाग' लगैत अछि । तामस फेर चढ़' लगैत अछि । कि तखने चंदनक चिंता ओहि पर चढ़ि अबैत अछि । हम डेराय लगैत छी । फेर चिन्ता घेर' लगैत अछि । कोना रहत ई गाम पर ! एक क्षण जे नानी बिना एत' नहि रहि पबैत अछि, से कोना दादा-दादी लग रहि सकत ! मानैत छी जे ओ सभ अपन दुलार सँ एकरा पटियाब' मे सफल भैयो जाथि, मुदा बसक ई तीन घंटाक यात्रा निर्विघ्न कोना कटत ? तात्कालिक चिंता सँ हम एकाएक बेचैन भ' उठैत छी । एम्हर बस फूजल आ ई शास्त्रीय संगीत आरम्भ क' देलक त' महाप्रलय भ' जायत । अथवा, बीच बाटे मे कतहु जिदिया गेल, तखन ? मारि-पीट करब सेहो उचित नहि होयत । करबो करब त' यात्रिये सभ 'हू-हू' क' छूटत । सभ एकरे पक्षधर भ' जायत । हम अनेरो मे बूड़ि बकलेल बनि जायब । माधुरी सेहो हमरे पर कन्हुअयतीह आ बेटाकेँ करेज मे सटबाक प्रदर्शन करतीह। बच्चाक रूदनकेँ शान्त करब बड़ मुश्किल भ' जायत हमरा लेल ।

हमरा आब ई तीन घंटाक यात्रा पहाड़ लाग' लगैत अछि । हमर जीवनक ई अग्नि-परीक्षा सिद्ध भ' रहल अछि । सोचैत छी, सार महोदय के कहियनि संग चलबाक लेल । फेर तुरंते विचार बदलि लैत छी । माधुरी सोचि सकैत छथि, जे ई केहन पुरूष छथि जे तीनो घंटा बहु-बेटाकेँ स्वतंत्र रूप सँ नहि सम्हारि सकैत छथि ! हमरा जनीजातिक नजरि मे खसब बर्दास्त नहि भेल । तखने सार महोदय पान ल' क' पहुँचि गेलाह। हमरा ठोर सँ अपन सोचल प्रस्ताव छिहुलैत-छिहुलैत अँटकि गेल । हम अपन मोनक एहि प्रस्तावित चोरकेँ सार-बहिनोइक मजाक सँ भगब' चाहलहुँ । कि तखने सासु कह' लगलीह, 'पाहुन, एकरा डाँट-डपट नहि करथिन । कोनो बात बुझाक' कहथिन, बुझि जेतनि । चिट्ठी लिखैत रहिहथि । रोज साँझ क' सूत' बेर मे फोन सँ गप करा दिहथि एकरा स' । हम एबनि भेंट कर'...'

हमरा लागल, आब ई बेसम्हार भ' रहल छथि । ई फालतूक भावना छनि। एहन कोन भेलै दरेग ! ठीके लोक कहैत छै, धिया-पुता केँ जँ बरबाद करबाक हो त' नाना-नानी लग छोड़ि दियौ । एतेक दिन धरि संतोष नहि भेलनि, आब जाइत-जाइत नाटक क'

रहलि छथि । हमरा आब ई समय काट' लगैत अछि । मुदा अपन ई स्थिति सासु लग प्रकट नहि होब' देब' चाहैत छी । की अनेरो कनीकाल लेल संबंध मे कटुता घोरल जाय । हम प्रकटतः सासुक बात सँ सहमति जनबैत छी-'ई किए चिंता करै छथिन ! सभ ठीक भ' जैतै । रोज चंदन गप करतनि फोन स' ।'

हम बजैत-बजैत रूकि जाइत छी । नानी आ नातिक ई अतिभावुकता हमरा कमजोर क' रहल अछि । हमरा अंदर डर घनीभूत भ' रहल अछि । हम आब जल्दी सँ जल्दी ई स्थान छोड़' चाहैत छी । बाट मे जे होयतै से देखल जयतै । आब जतेक विलम्ब भ' रहल अछि, हमरा लेल ठीक नहि भ' रहल अछि । हमरा आब माधुरी पर तामस उठैत अछि-केहन माय छथि, से नहि कहि ! अपन कोखिक जनमलक प्रति एते निरपेक्ष ! आ अपनो माय केहन भेलथिन जे मातृत्व-बोध करयबा मे सहयोग नहि कयलथिन । अपन बिसरल मातृत्वकेँ त' हरिया लेलनि, मुदा एहि अँकुरायल केँ खाद-पानि देब' सँ परहेज कयलथिन ।

हम मूड़ी बहारक' पीक फेकैत छी । चंदन अपन सभ खेलौना समेटि चुकल छल । समेटबाक क्रममे एकाध ससरि क' खसि सेहो रहल छलै । नानी एकरा सम्हारि क' द' रहलि छलथिन । हमरा एकटा अनचिन्हार सन रूप हिनका मे देखि पड़ि रहल छल । कतहु हेरायल...कखनो ढबकैत, कखनो बिहुँसैत, कखनो सहसा टूटि-टूटि सन जाइत...। बजैत छी, बजैत छी, चुप भ' जाइत छी । चुप छी, बाज' लगैत छी । ताहू बाजब मे कखनो-कखनो तारतम्य बैसाब' मे मुश्किल भ' जाइत अछि ।

हमर एहि चिंतन-क्रमकेँ चंदन भंग करैत अछि-'हम मम्मी जायब ।' हम चौंकि उठैत छी । फेर तुरते गेट फोलि दैत छिऐ आ सार केँ संकेत करैत छियनि जे एकरा बस मे द' अबियौ । चंदन अपन खेलौना सँ लंदफद नीचाँ उतरैत अछि । फेर, भीतरक सीट दिस तकैत अछि, जे एकोटा छूटल त' नहि ।

तखने पत्नीक संगी स्कूटर सँ पहुँचैत छथि । हमरा हिनका देखिते तामस उठि जाइत अछि । ई एना किए भ' जाइत अछि से नहि कहि । मुदा हिनका हम अपन पत्नी सँ गप-सप करैत देखि धधक' लगैत छी । हम पत्नी आ हिनका मादे की कहाँ सोच' लगैत छी । हम ई स्वीकार' लेल अपनाकेँ मना नहि पबैत छी जे कोनो स्त्रीक पुरूष-मित्र सेहो भ' सकैत छै । जँ भैयो सकैत होइ, त' होइ, मुदा हमर पत्नीक कोनो आन पुरूष मित्र होथि आ ओ तकरा सँ खुलिक' हँसथि-बतिआथि, टहलथि-बुलथि, हमर स्वीकार परिधि सँ बाहर अछि । मुदा तकर संग इहो एक दुर्बलता अछि हमरा मे जे तकर हम मुखर विरोधो नहि क' पबैत छी । एसगर मे पत्नी सँ लड़ि जरूर

सकैत छी, पौरूष-प्रदर्शन क' सकैत छी । अस्तु । नजरि मिलिते बाजि उठैत छी-'नमस्कार नमस्कार ! बहुत बिलम्ब भ' गेल । माधुरी कखन सँ ने बाट तकैत रहथि ।'

-'हँ, कनी एकटा काज मे बाझि गेल रही ।' ओ बजैत छथि ।

सहसा हमर नजरि चंदन पर चलि जाइत अछि । ओकर ध्यान खेलौना सँ हटि क' स्कूटर पर चलि गेल रहैत छै । ओ पछड़ैत स्कूटरक परिक्रमा कर' लगैत अछि। पत्नीक मित्र ओकरा दुलार सँ कोरा मे उठा लैत छथिन । हम निरन्तर ताहि पर ध्यान देने रहैत छी । ओ चंदन केँ चुम्मा लैत छथि । फेर जेबी सँ किछु टका बहार क' ओकरा जेबी मे ध' दैत छथिन । मुदा चंदनक नजरि स्कूटर पर टिकल रहैत छै । ओ स्कूटर देखैत-देखैत हुनका दिस घुमैत अछि-'मामाजी-मामाजी , ई स्कूटर अहाँके छोट भ' जायत ने, त' हमरा द' देब ! द' देब ने ?'

'हँ बेटू, जरूर द' देब !'-ओ उत्तर दैत छथिन । हमरा चंदनक ई अबोध इच्छा पर स्पर्श, एकाएक भीतर सँ भुलका दैत अछि । बालमनक सहज आ निर्मल बसात मे हम उड़िआय लगैत छी । मुदा चोट्टे हुनकर 'बेटू' शब्दक उच्चारण हमरा फेर सँ काट' लगैत अछि । तखने चन्दन बजैत अछि-'हम आब जाइ छी मम्मी लग ! छोट भ' जायत स्कूटर त' जरूर हमरा पठा देब ।'

दुनू बतिआइत बस दिस बिदा भ' जाइत छथि । तखने बस हॉर्न दैत छै । हम कार सँ बहरा जाइत छी । सार रिपोर्ट करैत छथि-'ड्राइवर-कण्डक्टर सिगरेट पी रहल अछि ! ई त' खलासी अपन करामात देखा रहल अछि । मुदा आब फुजबे करत ।'

हम सार सँ गप करैत बस दिस तकैत छी। अरे, ई की ! चंदन हमरा अपन हाथक संकेत सँ बजा रहल अछि । नीचा मे पत्नीक मित्र ठाढ़ छथि । हम स्वयं नहि जा क' सारकेँ पठबैत छियनि । ओ जाक' घुरि अबैत छथि । संगहि मित्र सेहो आबि जाइत छथिन-'माधुरी नहि, चंदन बजा रहल अछि । जल्दी सँ चलबा लेल !' आ दुनू ओकर नेनपना पर बिहुँसि दैत छथि । गाड़ी स्टार्ट भ' गेल छै । हमरा ओकर व्यवहार पर आश्चर्य आ चिंता भ' उठैत अछि ।

तखने बस जल्दी-जल्दी, फेर लम्बा हॉर्न दैत आगू मुँहें ससर' लगैत अछि । हम कार मे घुसि सासुकेँ प्रणाम करैत छियनि । ओहो बहरयबाक चेष्टा करैत छथि। हम हुनकर मनः स्थिति पढ़बाक प्रयास नहि करैत छी आ ने हुनका दिस तकैत छी। ओ अपन बेटी आ नातिक मादे किछु कहैत छथि । हम सुनि त' नहि पबैत छी साफ-साफ, मुदा चन्दनकेँ 'ल'क' बिसरायल डर फेर जागि जाइत अछि ।

आ ताही डेरायल अवस्था मे हम सार आ हुनकर मित्रकेँ 'नमस्कार' कहैत बस दिस दौगि पड़ैत छी । बस गति पकड़' लगैत अछि । हम छरपि क' चढ़ैत छी। खस' लगैत छी । मुदा खलासी सम्हारि लैत अछि । देखैत छी, बेटा चिकरि-चिकरि माँकेँ झिकझोरि रहल अछि–'मम्मी, पापा कहाँ ? पापा कहाँ मम्मी...?'

हमरा पर नजरि पड़ितै ओ चुप आ खुश भ' जाइत अछि । हम सीट पर आबि बैसि रहैत छी । मुदा माधुरी खिड़की सँ बाहर हेरायलि रहैत छथि । बेटा क्रमशः प्रसन्न होइत जाइत अछि । देखैत-देखैत खिड़कीक बाहर हाथ निकालबा मे सफल भ' जाइत अछि । हम देखैत छी, ओ हाथ हिला-हिला 'टाटा' क' रहल अछि आ नानी, मामा सभकेँ सान्त्वना सन किछु शब्द कहैत चिचिया रहल अछि ।

हम अकबका जाइत छी । हमरा किछु नहि फुराइत अछि । हम माधुरी दिस तकैत छी । ओ पाछू छुटैत जाइत पोखरि, गाछी, स्कूल, संगी-साथी, बाध-बोन, पशु-पक्षी–सभकेँ देखैत, मोने-मोन बतिआइत, हेराइत, नोराइत, सिहरैत रहैत छथि । हम चाहैत छी हिनका एखन नहि टोकियनि । जीबि लेब' दियनि अपना मे अपना संग । मुदा चंदनक ई परिवर्त्तन हमरा विचित्र रूपें उद्वेलित कर' लगैत अछि । हम उत्तेजना मे माधुरीक देह डोला चंदनक गतिविधि दिस ध्यान देबाक लेल कहैत छियनि। ओ पहिने त' निष्प्राण जकाँ हमरा दिस तकैत छथि, फेर अवसाद सँ भरल कण्ठ सँ बजैत छथि–'आखिर इहो त' पुरूखे छै ने !'

हमरा एकाएक लागल जे हमर समस्त सोचकेँ माधुरीक अंदरक नारी एके पांती मे कचरि क' राखि देलक । हमरा डर होब' लगैत अछि । चन्दन हँसि रहल अछि।



सन्धान-कथा-पुरस्कार योजना

सन्धान-2 एवं 3 मे घोषित सन्धान-कथा-पुरस्कार योजना मात्र तीन प्रतियोगी द्वारा अपन कथा पठबाक कारणे स्थगित कर' पड़ल । तीनटा पुरस्कार घोषित कयल गेल रहय । ई उचित नहि बुझना गेल जे तीनटा पुरस्कारक लेल तीनिए प्रतियोगी मे निर्णय कयल जाय ।

दुख अछि जे योजना सफल नहि भ' सकल ।

–सम्पादक

कथा

नीता झा

एषणा

–'दुर जो ! आइयो काल्हि कियो एत्ते जनमाबय । एक सँ दूटा बहुत भेलैक। बेटा रहय की बेटी । अहाँ कोन मोह मे पड़ल छी । ककरा मे कम खर्च लगैत छैक। दुनूकेँ पढ़ाउ । बेटीक बियाह मे लाखक लाख खर्च करू आ बेटाक नोकरी खातिर घूस मे रुपैया दिऔक । हमरा विचारें त' एकटा बच्चा बस्स । अपन देहो त' देखू। एक पर एक तीनू बेटी सुन्दर अछि, तखन चारिम बेटाक मोह मे देह गला रहल छी। जे होअए दू जान दू दिस नीके ना भ' जाय त' अपरेसन करा लेब । जमाइयो त' बेटे दाखिल होइत छैक । ने बेटा लग मे रहत, ने जमाय रहैत छैक । तखन तँ जे बेर पर काज दिअय, सैह बेटा ।'

–हँ यै, अपना बेटे अछि ने, तें गज्जै छी । वैह बेटी रहितय तखन बुझितहुँ। कहैले लोक ओहिना बाजि दैत छैक । करैक बेर मे असली देखल जाइत छैक ।'

–'अहाँ जे कही । लेकिन कुकुर-बिलाइ जकाँ जनमा क' की होयत ? के रहत लग मे जे आगाँ दिनक सुखक मोह करब ? कुकुरो-बिलाइक बच्चा अपन पयर पर ठाढ़ भ' क' दूर हटि जाइत छैक । मनुक्खोक बच्चा सैह करैत छैक । एकटा रहत त' कम खर्च होयत । जे करबै, ओही एकटा लेल । जमा करबै ओकरे लेल। ओकरे दुलार-मलार हेतैक, ओकरे पुछबै, ओकरे मन रखबै त' ओहो अहाँक मान-दान करत । अहाँक बेर मे पूछत । बखरा लेनिहार कियो नहि रहतै त' ओहो दोसरक भरोस पर नहि छोड़त । ओकरे देखबाक रहतैक, करबाक रहतैक, त' करबे करत । किएक ने करतैक ? एहनो कतहु होइत छैक ? अहाँ आइ जेहेन करब, काल्हि तेहने पयबो करब ने ?

–'यै, अहाँक बात सुनै मे ठीक बुझाइत अछि । नीक लगैत अछि । मुदा जमाना जे अगिलगुआ भ' गेल छैक । एना होइ तखन ने ? कहाँ एना होइत छैक ? आइ-काल्हि

तेहेन-तेहेन गप्प सुनैत छी जे मन अनेरे आशंकित-आतंकित रहैत अछि। घर-घर देखा एक्के लेखा। पप्पुआक किरदानी नहि सुनलियैक।'

—'एना नहि सोची। नीक सोचब त' नीके होयत। सभक अपन-अपन कर्म होइत छैक।

—'पप्पू माय कोन अधलाह कर्म कयलथिन। हुनका कोन दू-चारि टा छनि। हुनको त' एक्केटा। सेहो बेटे छनि। आँखिक पुतरी बना क' रखलथिन। छोट नेनाक नीनें माय सुतै जगै छै लेकिन ओ त' बेटाक जुआनी धरि ओकरे नीनें सुतलथिन आ जगलथिन। आब वैह बेटा दिनक चैन आ रातुक निन्न हरणक' लेलकनि अछि। एतेक दिन सुनिते रहियैक। अहाँ तँ ओहि महल्ला सँ चल अयलहुँ अइ महल्ला। हम अपन आँखिए तमाशा देखैत छियनि आ छगुन्ता मे पड़ल रहैत छी। पहिने बातकेँ नुका लेथिन। लेकिन एहन-ओहैन बात की छपै छै। आ ताहि मे मायक गञ्जन सेहो बेटाक हाथे।

—'छौंड़ाकेँ कोन भूत-तूत चढ़ैत छैक ? के छैक घर मे दोसर-तेसर ? अपने दुनू बेकती छैक आ माय छथिन। बालो-बच्चा त' एखन नहिये भेल छैक। कथूक कम्मी त' छैक नहि। रहै लेल घर छैक, किरायाक आमदनी छैक। बापक जमा कएल रुपैयाक मासे मास सूदि अबैत छैक आ बाप वला पेंशन छैहे। एकटा नोकरिये ने नहि छैक।'

—'नोकरी कत' सँ भेटतैक ? ताहि मे जेहेन बढ़ल-चढ़ल मन छैक, तेहेन नोकरी कत' पाओत। आँखि सँ हेठ नहि होअय तें एतहि रखलथिन। आँखिक अढ़ मे की करतैक, ताहि पर कन्ट्रोल नहि रहतनि, तें लगे रखलथिन। तइयो बहसि गेलैक। जहिया मन होइ तहिये स्कूल जाइ। बाप तमसाथिन त' माय बेटाक पक्ष ल' क' उठथिन। बेटाक सोंझे मे कहथिन जे एक दिन नहि गेलैक त' की हेतैक ? कने अहीं देखा दियौक। से हिस्सक बनले रहलैक। सिनेमा, बीड़ी, सिकरेट तँ स्कूले सँ करै, कओलेजिया भेलै त' पीबहु लगलै। माय, बाप से चोराक' पुरबथिन। बापकेँ सभ रिपोट आगाँ-पाछाँ भेटिये जाइन। कान मे किछु पड़नि, पत्नी के कहथिन तँ ओ कहनिहारे केँ गारि-सराप दिअ' लगथिन। कहथिन जे हुनकेँ बेटाकेँ देखिक' लोक जरैत छैक। हुनकर बेटाक धूआ कबजा देखल नहि जाइत छैक तें कहैत अछि। दोसर केँ कोन गर्ज छैक जे अनेरे हुनकर गारि-सराप सुनत। बाप भविष्य सुझबथिन त' हुनको एक चरण ल' लेथिन जे सरापै छी। बेटाक अहित सोचैत छी। बाप परहेजे करब श्रेयस्कर बुझलथिन। बाप बेटा मे छत्तीसक आंकड़ा भ' गेलनि। बाप बाहर त' बेटा घर। बाप घर त' बेटा बाहर। बापक सुतला पर घर आबय। केबाड़ खोलनिहारि माय।'

—'बियाहि देलथिन, सेहो त' गलतिये कयलथिन ने।'

—'बापक इच्छाक विरूद्ध माय बियाह करओलथिन। बापक विचार रहनि जे पहिने नोकरी-चाकरी करय। तखन बियाह। पत्नी कहय लगलथिन। कनियाँक भाग्ये कम्पीट करताह। पत्नीक जिद्दक आगाँ हुनका झुकय पड़लनि। छोट-मोट नोकरी हुनकर बेटा करतनि। लोक की कहतैक ? अफसरक बेटा अफसरे होयतैक। साधारण नोकरिहारा नहि। आइ. ए. एस. क तैयारीक नाम पर दिल्ली मे दू साल मौज-मस्ती कयलकनि। फेर वैह रामा वैह खटोलबा...। बेटाक अबंडपनी सँ तबाह बाप नोकरी सँ समय पर रिटायर भेलाह लेकिन जिनगी तबाही सँ जल्दीए मुक्ति द' देलकनि। असमये जिनगी सँ रिटायर भ' गेलाह। पपुआ खुलेआम बाजय जे नोकरी मे रहैत मरितथि त' एक बातो। रिटायर भ' क' मरबे कयला त' की। जिताजिनगी हमरा लेल किछु नहि कयलनि आ मुइनहुँ कोनो लाभ नहि।'

—'गे माय ! अँए यै कहेन भ' गेलै पपुआ ? कोना ई बात बाजल भेलै ? कोनो गत्र मे लाज नहि भेलै ? कियो आँखि मे आङर ध' क' देखा नै देलकै जे ई फुटानी कथी पर छौ ? बापक कमाइ पर ने ? बापेक अरजलहा अन्न बस्त्र दै छौ।'

—'ई सभ सुनिक' मायकेँ कनेक अखरलनि। लेकिन नेंना छै, बापक छाहरि माथ पर सँ उठि गेलै, से मन दग्ध छै, तें एना बाजल, से सभ सोचि मन केँ भरमा लेलनि। लेकिन दिनानुदिनुक झंझटि बढ़ल गेलैक। मासे मासक रुपैयाक आबाजाही बन्द भेला सँ काँइ-कट-कट बढ़' लगलैक। माय व्योंत क' चल' चाहथिन से पपुआ हुअ' नहि देलकनि। एमहर कपचथि त' ओमहर सँ झीक लनि।'

—'हँ यै, बहसल मन कहिया ककर काबू मे रहल छैक। दुर्मति घेरने छैक।'

—'सैह देखियौ, आब माइये सँ राड़ ठानय लागल। पहिने अपन स्कूटर मेन्टन करय, आब बापवला गाड़ियो छै। पुरबथुन माय। पहिने भरि-भरि आंजुर उझलथिन। आब मुट्ठी बन्द करथिन से मानतनि बेटा ? गंजन त' करबे करतनि। आ भइयो रहल छनि। अनबारी खोलथिन त' उचकि क' रुपैआ निकालि लनि। फेर चोरबय लगलनि। आब त' कुंजी छीन लै छनि। विरोध कयला पर धकिआ-मुकिया दै छनि। बेचारी कूही होइत रहैत छथि।'

—'पुतहु केहेन छनि ? नीक छनि ने ?'

—बेटा सँ नीक आन घरक बेटी पुतहुये छनि। सासुक वचन मे रहबाक कारणे ओकरो गञ्जन होइत छैक। कल्हुका बात त' नहि बुझने होयबैक ?'

—'नहि यै, की भेलै ? कहाँ बुझलियै ?'

–'आहि रे बा ! हे भगवान !! एहन बेटा सँ निपूत नीक । बांझ नीक ! कुंजी नहि दैत रहथिन से, तेना क' ठेललकनि से खसि पड़लै बुढ़िया । माथ त' फुटबे कयलै । डाँड़ आ पोन परक बिचला हड्डियो टूटि गेलै । अपरेसनक' कए सेट कएल गेल छैक । माथो मे टांका पड़लैक । माथक चोट सँ देखै छियैक जे आइ-काल्हि की सँ की भ' जाइत छैक । टुटलाहा हड्डी जुटतैक की बुढ़िया लोथे भेल पड़ल रहि जयतैक, भगवाने जानथिन । जाहि बेटाक बलें पपुआ माय कूदैत छलीह, घरबलाकेँ नहि गुदानलथिन, समाजक लोककेँ लोक क' क' नहि लगओलथिन, सैह पपुआ माथ-कपार फोड़िक' डाँड़ तोड़िक' बैसा देलकनि ।'



खिड़की

राजकमल चौधरी पर सामग्री

आइ सँ पन्द्रह वर्ष पूर्व मैथिली मे आ कि हिन्दी मे राजकमल पर काज करब कोनो शोधकर्त्ताक लेल कठिने नहि, असंभव जकाँ छल । मुदा आइ राजकमल चौधरीक मैथिली अथवा हिन्दीक साहित्य पर कोनहुँ शोधकर्त्ता केँ बेसी परेशान होयबाक प्रयोजन नहि ।

हेबनि मे सुभाष चन्द्र यादव द्वारा राजकमल पर हिन्दी मे लिखल मोनोग्राफक अतिरिक्त देवशंकर नवीन द्वारा कएल गेल कैकटा महत्त्वपूर्ण काज पाठकक सोंझा आयल अछि । 'राजकमल प्रकाशन' सँ राजकमल चौधरीक तेरहटा प्रतिनिधि कथाक संकलन-सम्पादनके बाद 'किताब घर' सँ नवीनक सम्पादन मे 'राजकमल चौधरी की चुनी हुई कहानियाँ' शीर्षक सँ राजकमलक 26 गोट कथा प्रकाशित भेल ।

अइ वर्ष भारतीय प्रकाशन संस्थान सँ देवशंकर नवीनक नव पोथी छपल अछि 'राजकमल चौधरी का रचनाकर्म' । ई पुस्तक राजकमल पर विभिन्न पत्र-पत्रिका मे छपल हिनकर मैथिली आ हिन्दीक आलोचनात्मक लेखक संकलन थिक । एखन टटका-टटकी पोथी देव शंकर नवीनक सम्पादन मे अभिरूचि प्रकाशन सँ आयल अछि–शव यात्रा के बाद देहशुद्धि' । ई पोथी राजकमल चौधरीक कवितत्तर आ कथत्तर विधाक संकलन थिक। कथा, कविता आ उपन्यासक अतिरिक्त आरो किछु राजकमल लिखने छथि, से बात बहुत कम गोटे जनैत छथि । अइ पोथीक महत्त्व एहि रूप मे विलक्षण अछि।

देवशंकर नवीनक माध्यम सँ जनसत्ता, आजकल आ इण्डिया टूडेक साहित्य विशेषांक मे राजकमलक अप्रकाशित कथा, कविता, चिट्ठी आदि सेहो आयल अछि।

–विपिन कु. झा, दिल्ली

कथा

शिवशंकर श्रीनिवास

धार नहि मजरलै

रुपनीके लगै जेना ओकर जीवन अकारथ भ' गेल छै । से अनुभव ओकरा अठारह वर्षक बाद भेल रहै । एतबे दिन ओकरा विधवा भेना सेहो भेलै ।

सतरह वर्षक रहय । आयल पानि, गेल पानि, बाटे विलायल पानि, तहिना बूझू बियाह भेलै आ विधवा भ' गेलि । विचित्र समय रहै ओ बियाहक वर्षो ने लागल रहै आ दोसर देहे से भ' गेलि छलि आकि ओहेन घटना घटि गेलै, बुझू उन्टन भ' गेलै ।

पतिक श्राद्धक बाद पित्ती लै ले आयल रहै । नैहर जाइत काल सासुके किछु बाजि नहि भेलै मुदा ससुर कहलकै–'की कहिय' बहुरिया । हमरा किछु मुँहे नहि अइ । हम आब कोना क' तोरा राखि सकब' ? मुदा, यैह जे कोखिक फूल जहिया कोर भर' तहिया एहि बुढ़बा-बुढ़ियाक ध्यान रखिह', ई डीह के मन रखिह' ।'

गप्प सुनि रुपनी सर्द भ' गेल रहय । ससुरक आँखिक नोरक टघार मे भीतरे-भीतर बहि गेल रहय । ओ दुनू बुढ़बा-बुढ़िया ओइ काल बच्चा सन लागल रहै आ एकरा कने काल लागल रहै जेना माय भ' गेल हुअए । तेहने ममता उमड़ि आयल रहै । मन मे भेल रहै जे नहि जाय नैहर, मुदा कोना, की बजैत ! नैहर गेलि ।

आश्चर्य लगलै रुपनीके, जे नैहर मे एकर दोसर देह देखि क्यो प्रसन्न नहि भेलै। माने जे ई बीच मे कोन काल आबि गेलै । एही कारणे एखन-कतौ 'सम्बन्ध' नहि भ' सकतै । बादो मे बच्चा रहने नीक 'लड़िका' नहि गछै छै । रुपनी नैहरक लोकक एहन व्यवहार सँ क्षुब्ध भ' गेल रहय ।

छौंड़ाक जन्म भेलै । बहुत गोटेक बच्चा-बुच्ची जन्म लैत रुपनी देखने रहय। धरती के एक हाथ उपर उठैत-बैसैत देखने रहय । मुदा एकरा बंटा भेलै त' धरती एकरत्ती सगबगेबो नहि केलै । ओहिकाल माय-बापक मुँह एकरा दैत्य-दंतान सन

लागल रहै । खिस्साक दैत्य दैतीन जकाँ आ चारूकातक लोक ओहने ओहि दैत्य नगरक प्राणी जकाँ । से अनुभव करैत रुपनीक मगज मे जेना इन्होर गड़कि आयल रहै । ककरो वोल नीक नहि लगै । माटि पाथर सन लाग' लगलै ।

रुपनी नहि रहि सकलि नैहर । नहि सुनि सकल ककरो गप्प । ससुर जिगेसा मे आयल रहै ओकरे संग सासुर चल गेलि ।

वेटा जखन टेल्हगर भेलै त' माय-बाप कते गोटे के पठलकै जे आबो आबह। ओना जिनगी कोना जेतै ? जत' तत' सभ एकर देह आ जुआनी के देखा देखा डरबै। दिन-दुनियाँक रंगढ़ंग बुझबै । मुदा रुपनी ककरो गप्प नहि सुनय । एक दिन बाप-पित्ती, भाइ सभ जुमिक' आयल रहै । बहुत तरहें बुझेलकै । कएकटा गाम मे नीक 'लड़िका' रहै तकरा विषय मे कहलकै । मुदा रुपनी किछु नहि सुनलकै। ओ जखन-जखन ककरो गप्प पर किछु सोचय, सोच' लागय त' बुढबा-बुढ़ियाक सुन्न आँखि एकर सोचक आगू ठाढ़ भ' जाइ । ई नहि सोचि सकय । आ से सभ हारि गेल । रुपनी नहि हारलि। ई 'सम्बन्ध' नहिए केलक । माय बाप बिगड़ि गेलै । नैहर छुटि गेलै । जे भेलै मुदा ई अटल रहलि ।

मुदा की भेलै अटल रहि क' । बुढ़बा-बुढ़िया मरि गेलै । तखन रहि गेल ई दुनू माय-पूत । बेटाक लेल की-की ने केलक । आब त' वैह अवलम्ब रहै । वैह सभ किछु । कोना नीक सँ रहत बच्चा तइ लेल घिरनी जकाँ नचैत रहलि, खटैत रहलि। कत्तौ ककरो खेत मे वा आंगन मे काज करैत रहै छलि । अपन मनोरथ सँ रामशरण बेटा के ओगंरैत रहै छलि । एही मे बीत गेलै, पन्द्रह वर्षक समय । तकरबाद जीवन मे तेहेन ने भूकंप अयलै जे एकर मातृ हृदय छहो-छित भ' क' फाटि गेलै । भेलै कि त' रामशरण मैट्रिक पास कयने रहय । आगू कोना पढ़त, कोना खर्च जुटतै से सोचैत रहय कि रामशरण बड़का अनर्थ क' देलकै । गामक पैघ लोकक बेटी संग निपत्ता भ' गेलै । तकरवाद बहुत बात भेलै । लोकोक नजरि एकरा पर बदलि गेल रहै । चारूकात वातावरण एकरा लेल काँट भ' गेल रहै । जीवन अबूह भ' गेलै, आँखिक आगू आकाश टंगा गेल रहै । कोना जीअत आब । लोकक चिन्ता नहि रहै, अपन चिन्ता रहै ।

पहिने कत्तौ रहय मनमे बेटा रहै । ओकर चिन्ता रहै । ओकर वेगरता छलै । कखन स्कूल सँ आयत ? कोना पनपिआइ करत । की ओकरा नीक लगतै । कोना नै रूसत कोना प्रसन्न रहत । ई सभ चिन्ता आब बेटाक किरदारी सँ जरि गेल छलै।

कांढ़ लग जेना सदतिकाल लहास उठैत रहै छलै । से कखनो काल जखन सुरता मे बौआइ छलि से कत' सँ कत' चल जाइ छलि के ज्ञानय ।

पहिने सासु-ससुरक भार छलै । बेटाक भार छलै । आ रुपनी जेना अपन उत्तरदायित्व मे ओंगठलि रहै छलि । जेना कोनो टाट मे लागल सोंगर टाट के खस' नहि दै छै आ सोंगरो टाटेक भार सहैत ठाढ़ रहै छै तहिना अनुभव करय रुपनी । माथ पर सँ भार हटि गेने जेना असहाय अनुभव कर' लागलि छलि । कखन खसि पड़त से के जानय ।

एहने मे एक दिन दुपहरिया के घरक ओसारा पर पडलि छलि । भादवक अन्त भ' रहल छलै । कखनो बसात वहै छलै, कखनो गुम्मी लाधि दै छलै । आकाश मे मेघ आबि झाँप-तोप क' रहल छलै । कखनो-कखनो बुनिया उठै छलै । ई अपना मे हरायलि छलि । अपन दिन द' सोचैत-सोचैत ओकरा अपन दादी मन पड़लै । आब ओहन करेजवाली कतौ नहि देखाइ छै । पुरुष एतेकटा माउग रहै । टकुआ तान देह कड़गर वोल । ककरो ताव सह' वाली नहि । पाँचटा बेटा आ पुतहु आ फेर नाति-नातिन। सभ मिलाक' अठतीस गोटेक आश्रम रहै । रोटिये पाक' लगै त' गोल लागि जाइ। भात लेल तीन बेर वासन चढ़ब' पड़ै । एहन आश्रम मे कतेक तरहक बातक संभावना छलै, किन्तु तकरा सभके थथमारि क' रखने छलि ।

से एक दिन थाकलि मन्हुआयलि बैसलि रहय । रुपनी ओइ समयमे बड़ छोट रहय मुदा रहय ठेकनगरि । ओइकाल आबिक' दादीक कोरामे बैसि गेलि । से देखैत रहय ओइ आंगनक ठकनीक माय । ओकरा मन्हुआयलि बुढ़ियाक कोर मे एना एकरा बैसब देखि नीक लगलै । अह्लाद सँ ओ हँस' लागलि ।

'की हँसै छह बहुरिया ? ई सभ एहिना सोहरल रहैए ।' दादी ठकनी मायके हँसैत देखि बजलै ।

'की करथिन काकी । ई सभ दीयामानक गप्प छियै ।'

'नइ बहुरिया, ई सभ काँकोड़ बना देलक ।'

दादीक गप्प पर ठकनी माय की कहितय, हँस' लागलि ।

'हँसै छह, हमरा होइए जँ भगवान चिड़ै बना दितथि त' उड़िक' कतहु चल जैतहुँ ।'

ई कोरा मे बैसलि कखनो दादीक मुँह तकै छलि, कखनो ठकनी मायक । दादी जखन चिड़ैवला गप्प कहलकै त' ई तराक द' दादी सँ पुछलकै-'दादी गय उड़ि क' कत' जइतही ?'

'ओत' जत' तोरा सभसँ भेंट नहि होइत ।'

'तखन गप्प ककरा सँ करितही ? दुलार ककरा करितही ?' ई दादीक मुँह पकड़ि पुछलकै ।

ठकनी माय गप्प सुनि एहि बेर जोर सँ हँस' लगलै आ हँसैत एकरा द' दादी के कहलकै–'देखथुन काकी, अइ छौंड़ीक बुद्धि ।'

'यैह सभ माया त' नहि छोड़ैए बहुरिया ।' कहैत दादी एकरा कोंढ मे साटि लेने रहे । आँखि सँ नोर टपटपाय लागल रहै । से आइयो एकरा एहिना मन छै । दादी कोंढ़ मे सटल ओ आनन्द आब कत' भेटतै ?

से रुपनीकेँ ओइखन मन पड़ि रहल छलै । सोचै छल जे दादी सन जीवन ओहेन भरल-पुरल परिवार एकरा सन अभागलिकेँ कोना होइतै । दादी भगवान के चिड़ै बनेबा द' कहि अपन मनके खेलबै छलि, ओ कतौ किए जाइत ? मुदा भगवान जँ भेटतै तँई ठीके चिड़ै बनेबा द' कहितइ आ ई ओत' उड़िक' जइतय जत' बहुत लोक गोंटिआयल भेटितय आ सभ एकरा मे सोहरि जइतय । अपन नेह सँ बान्हि रखितइ । ओ सभ लोक एकरा अपना सँ दूर कतौ ने जाय देतै । से सोचैत-सोचैत रुपनी अपन एकाकीपन मे बौआय लागल, ओहिमे हराय लागलि । मन कोनादन कर' लगलै । देह घामे नहा गेलै । बियनि हौंक' लागलि ।

मन पड़लै विराटनगरवला । एकर घरबलाक सङतुरिया । जखन कनियाँ भ' क'आयलि रहय त' ओ भौजी-भौजी अनघोल कयने रहै । ओही समय सँ ओ विराटनगर रहैत रहय । तें ई नाम कोना लैतै विराटबाबू कह' लागल रहै । वैह विराटबाबू मन पड़लै । ओ एखन विराटनगर सँ गाम आयल छलै । अपने अविवाहित अछि । ओत' असगरे रहैए । जखन कहियो अपन लोककेँ देखबाक इच्छा होइ छै त' एत' भाइ-भातिज के देख' चल अबैए, सेहो कहियोकाल । ओ कएक दिन एकरा देख' अयलैए । ओ गप्प-सप्प कहै छै । मुदा ओकर आँखि...।

तखने बुन्नी पड़' लागल रहै ओहि बुन्नी सँ बचबाक लेल एक हेंज मेना जेना एकचारी मे चुनमुन करैत आबि बुल' लागल रहै । चुन-मुन सुनि ई मूड़ी उठा क' तकलक । ओहिकाल एकटा मेना दोसर मेनाक देह के अपन लोल सँ हौआ रहल छलै। दोसर अपन देहकेँ ओरि देने छलि से असुआक' पाँखि पसारि नीचा मे ओंघरा गेल छलि । पानिक बुन्नीक सङ बसात सिहक' लागल छलै । रुपनीकेँ ओ बसात आ मेनाक ओ दृश्य दुनू नीक लागि रहल छलै । अपनो देह जेना कने-कने सगबगा रहल छलै । तखने ओहिकाल विराटबाबूक छड़गर देह आ चौड़गर छाती पर ध्यान भ'

अयलै...। मुदा तखने एकटा कारकौआ ओलतीक कने फराक क' ओन्हि क' राखल पथिया पर धब्ब द' बैसलै । मैनाक हेंज फर-फरा क' उड़ि गेलै । रुपनी उनटि क' कार कौआ दिस तकलक । मनमे भेलै जे जत' तत' आब कारे कौआ, देशी कौआ त' उपटि गेलै । नजरि गराक' देखलक । कोआक दुनू आँखि चमकि रहल छलै । मन मे भेलै कोना चांइ जकाँ करै छै ई जरलाहा । नहि नीक लगलै, उड़ा देलकै... हा...आ...। कौआ उड़ि उतरबाड़ी कातक करजानक ऊपर द' क' चकभारु दैत चल गेलै। ओम्हरे रुपनीक नजरि गेलै त' ओ देखलक जे केराक पातक अढ़मे दूटा कचबचिया बैसल छै । एक कचबचिया दोसर बचौन कचबचियाक चोंच लग अपन चोंच ल' गेलै। बचौन कचबचिया चूं-चूं करैत मुँह बाबि देलकै । लाल टुहटुह मुँहक फाड़ि झकझका उठलै । बड़की कचबचिया ओकर मुँह मे आहार भरि देलकै ।

से देखि रुपनीक कोंढ़ फरफरा उठलै । अपन बेटा मन पड़लै । कोना-कोना ओकरा पोसलक से मन पड़लै...आर बहुत रास बात आ कोंढ़ फाटि गेलै । आँखि बरिस' लगलै...से बड़ी कालधरि ओहिसँ भीजैत रहल ।

ककरो आहटि सँ चौंकलि रुपनी । धरफराक' उठि बैसलि । नुआ के माथ पर सरिएलक, आँचर ठीक कयलक । तखन ठीक सँ तकलक–हँ बिराटे बाबू छलै।

रुपनी उठिक' चटुआ बैस' देलकै आ पटिया के उठा मोड़ि टाट लगाक' ठाढ़ क' राखि देलकै आ कने फराक दुरूक्खा लग बैसलि । आइ जेना दुनूक मन मे बहुत किछु भ' रहल छलै । दुनू मे बड़ीकाल तक क्यो नहि बाजल; अन्तमे विराटे बाबू पुछलकै 'की हइ भौजी, तखन ?'

जेना स्थिर जलमे किछु हैरैत माछ स्थिर भेल रहैए आ जँ पानि मे किछु छपाक द' खसै छै त' चलमला उठैए तहिना चलमला उठल रुपनी से बूझि गेलै बिराट बाबू। पुछलकै, आ से एहि बेर ग'र करैत पुछलकै–

–'की सोचै छलह ।'

–'किछु ने' रुपनी फेर जेना चेहाइत बाजलि

–'एह ठकै छह ?'

–'नहि ।'

फेर दुनू गोटय चुप्प भ' गेल । दुनू गोटयक आँखि मिललै आ किछु चमकलै। दुनू गोटय कने लजायेल । बाजल धरि दुनू मे क्यो नहि । थोड़ेकालक बाद फेर विराटबाबू कहलकै–'की कहिय' भौजी, बियाह नहि कयलहुँ पहिने । ई नहि जनै छलियै जीवन एना असगर भ' जायत ? आब एकोरत्ती नीक नहि लगैए । हम आब हारि गेलहुँ ।'

रूपनींके एहि बेर खूब जोर सँ साँस लेना गेलै । आगू विराट बाबू कहलकै । 'तोहर जिनगी त' आर...।' रुपनी के तइयो ने बाजल भेलै । पुन: दुनू दिस चुप्पी । कनेकालक बाद रुपनी विराटबाबू दिस ताकै सन भेलै ।

–'तखन काल्हि गाम सँ विदा भ' जेबह'।' विराट बाबू कहलकै ।

–'काल्हिए ?'

–'हँ, काल्हिए, तोंहूँ चलह ने ।'

जेना बसातक सिहकी मे सिक्की कँपै छै तहिना भीतरे-भीतरे रुपनी काँपि उठल मुदा अपनाकेँ थीर करक प्रयास कयलक आ कहलकै–'अहाँ पुरूष छी विराट बाबू, अहाँके हमरा सँ नीक कनियाँ भेटि जायत ।'

–'तों कम नीक छह । तों जे हमर भ' जाह त' हमरा हैत हम तोरे लेल तपस्या करै छलहुँ । आ, तों बरदान मे भेटलह । तोरा मे जे छह ओ आर कहाँ कत्तौ भेटैए?' विराट बाबूक गप्प सँ रुपनी के भेलै जेना ओकर देहक नस-नस मे भूतही बलानक वेग आबि गेल होइक ।

–'की त'? काल्हि चलह ने ?' विराट बाबू जोर देलकै ।

–'हँ, असगर त' आब हमरो नहि रहल होइए ।'

–'सैह त' कहै छियह । चलह काल्हि ।'

–'कोना जायब ?'

–'किए ?'

–'लोक बुझत जेहने बेटा तेहने माय ।'

–'से किए ? तों कोनो नजायज करबह । नजायज त' हमहूँ ने कहियो कयलहुँ। विराट बाबूक एहि गप्प पर हँस' लागलि रुपनी । जेना हँसैत ओ लाजके झाड़ैत होअय मुदा से भेलै नहि । ओ लजाइते बाजलि–'कखन जायब ?

–'तीन बजे भोरहरिया मे जे ट्रेन छै । ओहि स' विदा भ' जायब । की ?'

–'नै, तखन नहि जायब ।' रुपनी दृढ़ता सँ बाजलि ।

–'किए ?' –विराट बाबू कारण बूझ' चाहलक ।

–'लोक बूझत जे भागिक' गेलए । जेना हमर बेटा केलक तेना हमहूँ करब? तखन की अधलाह, की नीक ?'

–'तखन ?'

–'दिन-देखार जायब । ठोकि-बजा क' जायब । समाज के बूझाक' जायब।'

–'तखन आठ बजे भोर मे ?'

–'ठीक छै ।'

एहि गप्प-सप्पक बाद कनेकाल बैसल रहल विराट बाबू । देखितियै त' ओहिना बैसल बुझाइत, मुदा भीतरे भीतरे ओ संसार रचि रहल छल । ओहि संसार मे मुदित मना पसरि रहल छल ।

थोड़ेकालक बाद उठल । उठिक' तुरन्ते बिदा नहि भेल, अपितु कनेकाल रुपनी दिस टुकुर-टुकुर तकैत रहल । रुपनी ओना तकैत विराट बाबू सँ पुछलकै,

–'की तकै छियै ?'

–'चिक्कनि माटिक झकझकी देखै छियै ।' कहैत विहुँसि उठल विराट बाबू। रुपनी के कनियाँ-मनियाँ जकाँ लाज भेलै ।

ओहिकाल ओकरा देखि अवश्य लगैत जे मरने धार मजरतै मुदा मरने धार मजरलै नहि । फेर पानि वैह पुरना बहान पकडि लेने छलै ।

जहिया कनियाँ भ' क' आयलि वर्षो ने लगलै विधवा भ' गेलि । बेटा भेलै मुदा प्रारम्भमे बेटा सँ बेसी चिन्ता बुढ़बा-बुढ़ियाक रहै । ओकरा लोकनिक उदास-उदास आँखि एकरा कोनो भाव दिस ससर' नहि देलकै । बुढ़बा-बुढ़ियाक मृत्युक बाद बेटाक पालब-पोसब रहै, भार चिन्ता रहै । आ एहि सभमे लागल रुपनीके देह धर्म कहियो ने जँतलकै । आब जखन बेटा भागि निपत्ता भ' गेलै तँ ग्लानि सँ जखन मुँह चुरू भेल किछु सोच' लागय त' सभ सँ बेसी जाहि कारणे जीवन अकारथ लगै ओहि कारण मे रहै जे माथ परहक भार एकदमे उठि गेल रहै । हल्लुक माथ जेना बसात मे उड़ियाइत रहै । असल मे एकर जीवन के भार उगहब हिस्सक भ' गेल रहै ।

विराट बाबू अइ सँ पहिने कएक दिन ने आयल रहै । ओ कहियो एकरा सँ हास्य-विनोद नहि करै । ओ अपन समस्या कहै, कोना ठीक सँ खायल-पीअल नहि होइ छै । दुखित भ' जाइए त' क्यो देखनिहार नहि आ ताहि स्थिति मे जीवन कोना अबूह भ' जाइ छै, यैह सभ कहै । जेना विराट बाबू कोनो अवलम्ब तकैत होइ । किन्तु से बात सभ सुनैत रुपनीके विराट बाबूक आँखिक रङ देखाइ । चौड़गर छाती देखय। झीकल देह देखय । ताहि सभ मे लगै जे मरने धार फेर सँ जीबि उठतै, मुदा से भेलै नहि । धार नहि मजरलै । आइ जखन विराट बाबू देह आ मनक गप्प क' क' गेलैए तखन आब एकरा ओकर दिक्कत-सिक्कत मन पड़ै छै । विचारैए जे कोना ओत' जायत त' अपन जानो पर ल' क' ओकर सङ रहि ओकर जीवन के सुखी बनायत । आ, से सोचैत-सोचैत बहुत दूर चल गेल । अपन कल्पनाक लोकमे एक-एकटाक' ख'र ओड़िआब' लागल । आ से सोचैत मग्न मना छल । तखने बाहर सँ फुदड़ाक बाबा

सोर पाड़लकै 'कनियाँ छ' हइ, कनियाँ ।' स्वर सँ ध्यान टुटलै । हड़बड़ाइत ठाढ़ि भेल । माथ परहक नूआ सरिएलक आ मरौत सन काढ़ैत बाहर आयलि फुदड़ा बाबाके देखि पुछलकै, ।

–'की कहै छथि ?'

–'बड़ कोनादन मे फँसि गेल छी, बहुरिया ।' फुदड़ा बाबा बहुत अपनत्वक स्वर मे कहलकै ।

–'की ?'

–'देख' ने हमर जेठकी बेटी भवानी नै अइ ओकरा नीमन गाय देने छलियै से त' तोरो बुझले छह । ओ बाछी तरे भेलैए । तीन लोटाके दूध होइ छै । आ ओ केहेन अइ त' अपने पाहुन सङ कलकत्ता चल गेल । आर घर मे क्यो छैके ने । गाय एत' पठा देलकए ।' फुदड़ा बाबा रुपनी के कहि गेलै ।

–'त' नीके ने कयलथिन ।' रुपनी किछु उत्तर देबा लेल देलकै ।

–'नीक की केलक हमरा बुढ़बा-बुढ़िया के पार लागत ? पहिने सँ जे अइ सैह ने पार लगैए ।'

–'त' की करथिन ।'

–'सैह ने । गाम मे आब काज केनिहार क्यो रहलै ।'

–'हँ से त'...'

–'बहुरिया, तोंही पोसिया ल' लैह । पाँच-छह हजार गायक दाम हेतै । तोरा तीने हजार मे दाम लगा देब' । कोनो विक्री होइ छै । हमरो आँखिक सामने गाय रहत। दूहैक भार-चिन्ता हमरा । तों डेबि लेबह । चिन्ता दूर कर' बेटी ।'

फूदड़ाक घर एकर घर सँ सटलै रहै । रुपनी ओम्हरे तकलक । बाछी दूरा पर कूदि रहल छलै । से बड़ नीकं लगलै ।

–'की सोचै छह । चलह ने ।' कहैत बुढ़बा विदा भेल । बेर-बेर गाय लग जाइत आ कूदैत फनैत नेरूकं देखि रुपनी तेना ने वात्सन्य सँ भरि गेल जे किछु बाजि नहि सकल । बुढ़बाक पाछू-पाछू विदा भेल । ओत' थैर पर जखन पहुँचल त' गाय एकरा देखि हुमड़ि उठलै । बुढ़िया सेहो आंगन सँ बाहर आबि गेल छलै । ओ गाय के हुमड़ैत देखि कहलकै, ।

–'गइ मइया, तोरा देखि गाय के भेलै जे हमरे भवानी छी ।' बुढ़बा घरबालीक गप्प पर हँस' लागल । रुपनी के सेहो हँसी लागि गेलै ।

आ तेना केलकै बुढ़बा-बुढ़िया जे गाय एकरा ओहिठाम आबि गेलै । बुढ़बा अपने सँ खुट्टा-टुट्टा गाड़ि गेलै ।

रुपनी कनेकाल गायके देखैत रहल आ टाट मे खोसल हाँसू घीचि बाड़ी मे घसबाहि कर' लागलि । कनेकाल मे पथिया भरि गेलै तँ साँझ सेहो भ' गेल छलै। आङन आबि घास रखलक । साँझ-बाती द' फेर गाय लग आयल आ बैसि क' घास खोआब' लागल । पाछू सँ बाछी पीठ चाट' लगलै । गुदगुदा उठलै देह, मुदा नीक सेहो लगलै । उनटि क' पाछू घूमलि । बाछी के दुलार' लागल । बाछीके दुलारैत बेटा मन पड़लै । बड़ बेग सँ उद्वेग गाढ़ भ' गेलै । ओइ उद्वेग के बाछीक दुलार मे टारैत रुपनी कान' लागलि । से चुप्प-चाप, मुँह सँ कानब बहरेलै नहि, मुदा आँखि सँ अविरल नोर बहि रहल छलै ।

भोर भेलै । कनियें सूर्य उपर उठल रहै । विराट बाबू आयल । ओ देखलक रुपनी के बैसल । रुपनी दुरूक्खा लग बैसलि नुआ मे चेफड़ी साटि रहल छल ।

ओ स्नेह सँ हड़बड़बैत कहलक–'चलह ने, चेफड़ी की सटै छह । ई सभ किछु ने लेबाक छैक । ओत' विराट नगरक बाजार मे राशि-राशिक नुआ छै ।'

कनेकाल चुप्प रहल विराट बाबू । ओ बुझै छल जे रुपनी हास्य करैत किछु कहतै, मुदा रुपनी जखन किछु नहि कहलकै त' विराट बाबू पुनः चरियेलकै–'तैयार होअ' । आठ बजे ट्रेन छै ।'

एहि बेर जोर सँ साँस लैत रुपनी ओकरा दिस ताकि कहलकै–

'विराट बाबू, अहाँ जाउ । हम त' साँझे बाछी तरे गाय ल' लेलियै ।'



लड़ाइक बात ललित आ राजकमल ढ़ुनूकें बूझल छनि, लड़ाइक जरूरतियो सँ ओ सभ सहमत छथि, मुदा लड़ाइ लेल युद्धभूमि मे उतरबाक गप्प ललितकें नहि अरघैत छनि आ राजकमल लड़बाक लूरि नहि जनैत छथि । अर्थचक्रक निर्ममता सँ ललितोक ढ़ुनिया प्रभावित छनि आ राजकमलोक मुदा राजकमलक पात्र सभमे एहि अघोषित युद्ध मे हिस्सेदार हेबाक पात्रता अधिक भेटैत अछि ।

—कुलानन्द मिश्र

कथा

शैलेन्द्र आनन्द

थोपड़ी

गोरकी कहू कि गुड़की । ओना नाम ओकर गोरकी छलै । मुदा लोक सभ ओकरा गुड़की कहय लगलै आ तहिया सँ ओ अपन नामक अनुरूप चलनाइ सेहो शुरू क' देलक । प्रारम्भ मे ओ जेना चलैत छल, ताहि रूप मे ओकरा गुड़कीक बदला हुड़की नाम देल जयतैक त' सटीक बैसतैक कारण ओ जखनि हुड़कि कए चलैत छल त' बाट चलैत लोककेँ ओकरा सँ टकरा जएवाक सम्भावना बनल रहैत छलै। ओना बादक स्थिति सँ गुड़की नाम उचित राखल गेलै । ओकर डॉड़ झूकि कए धनुषाकार भ' गेल छै । आब ओ अपन लाठीक सहायता सँ सड़क पर गुड़कैत चलैये।

गुड़की जहिया हमरा ओहिठाम काज करैत छल, हम बहुत छोट रही । यैह आठ-दस वर्षक छल हएब । ओहि समयक गुड़की आ आबक गुड़की मे अकास-पतालक अन्तर छै । दुनू काँख तर दूटा थैला लए इनार सँ पानि भरि, घेलची पर रखनिहारि गुड़की, लाठी पकड़ि गुड़कैत चलैत अछि। पाछू-पाछू टोलाक उकट्ठी छौंड़ा सभ थोपड़ी बजा कए ओकरा किचकिचबैत रहैत छै । ओ ओकरा सभ कए गारि सँ बीछि लैत छै । तेरहो पुरखाक उद्धार क' दैत छै । मुदा ओहि छौंड़ा सभ लेल धैनसन । ओकर गारिक कियो नोटिश नहि लैत छै । गुड़कीक सड़क पर चलब आ पाछू-पाछू छौंड़ा सभक थोपड़ी पाड़ब जेना पर्याय बनि गेलू छै ।

एक दिन अपन ओसारा पर बैसल, अखबार पढ़ि रहल छलौं । हमर ओसाराक किछुए आगू द' क' सड़क छै । एकाएक थोपड़ी पड़नाइ शुरू भए गेल । थोपड़ी सूनि ध्यान बँटा गेल । नजरि सड़क दिस चल गेल । गुड़की अपन लाठी खुटखुटबैत जा रहल छल आ छौंड़ा सभ पाछू सँ थोपड़ी बजा रहल छलै । गुड़की घूरल त' छौंड़ा सभ भागय लागल । ओ सभ भागियो रहल छल आ किछु दूरी बना थोपड़ी सेहो बजा रहल छल । गुड़कीक फतबा पढ़नाइ चालू भ' गेल रहै-टाटी पर कए द' एबौ ।

सरधुवा। मूड़ी मचरूवा । जनपिट्टा । बापक कर मे हगि देबौ । आ नहि जानि आर की-की । हम मूक दर्शक बनि सभ देखि रहल छलौं, सूनि रहल छलौं । एक मोन भेल जे छौंड़ा सभके हंटि-दबाड़ि दियै । मुदा फेर भेल जे आइ-कल्हिक छौंड़ा अपनहि लुत्ती-पतंग होइत अछि आ जँ हमर गप्प नहि मानय ? तखनि अनावश्यक क्रोध उठत। तें किछु नहि कहलियै । मुदा मोन अशान्त भ' गेल । एक दिस ओकर दारूण स्थिति केँ देखियै, आ दोसरा दिस ओहि उकट्ठी छौंड़ा सभक हेहरपना । गुड़की जखनि गारि पढ़ैत-पढ़ैत अपसियाँत भ' गेल आ गारि सुनैत सुनैत छौंड़ो सभक मोन भरि गेलै, तखनि गुड़की फेर लाठी खुटखुटबैत सड़क दिस बिदा भ' गेल ।

गुड़कीक परिवार मे दोसर कियो नहि छै । ओ एकटा खोपड़ी मे रहैत अछि। ओहि घरक चारूकात छोट छोट खरही आ करचीक टाट लागल रहैत छै । जाहि पर ओ पोरो आ झिंगुनीक लत्ती लतरौने रहैत अछि । साँझपरात बहुत यत्नपूर्वक ओकर देख-भाल करैत अछि । मुदा जखनहि कत्तौ टघरल आ कि पोरो खोंटा जाइत छै । झिंगुनीक बतिया तक सुरड़ा जाइत छै। ओ जखनि घर पर आएल त' उपद्रवी पार्टीये मे सँ कियो कहि देतै-''गुड़की मैयाँ। अहाँक तरकारी कियो पार केलक ।'' आ तखनि सँ शुरू भ' जाइत अछि गुड़कीक गारिक बरखा । पेट मे बज्जर खसलै । ठनका ठनकलै। मरकी उठलै । सराधबाली, बिटारिबाली सभ हमर उपद्रव केलकै । धांछिया, निराशी, दगधी सभ हमर झिंगुनी तोड़लकै-ई क्रम घंटा-घंटा भरि चलैत रहै छै । टोला-पड़ोसक लोक ठिठियाइत रहै छै । गुड़कीक कंठ जखनि दुखा जाइत छै, तखनहि ओकर टेप बंद होइ छै ।

गुड़की आब हवेली नहि अबैत अछि । ओकरा वृद्धाबस्थाक पेंशन भेटै छै । जकरा ओ सरकारी पेन्सिल कहै छै । एहि पेन्सिलक दिन मे ओहि टोलाक जनीजाति एकर खूब आगत-भागत करै छै । कियो ओकर चट्ट पड़ल केश मे नारियल तेल द' चिरनी सँ केश थकड़ि पाढ़ि सँ बान्हि ओकर केश विन्यास करैत अछि । त' कियो लिखसुरड़ी ल' ओकर लीख सुररि दैत छै । कियो छिपली साँठि आनि दैत छै । आ तखनि आगू-आगू लाठी खुटखुटबैत गुड़की आ अगल-बगल चलैत जनी-जातिक झुण्ड, कोनो चुनावक दृश्य उपस्थित करैत, पेन्सिल लेबाक लेल विदा होइये । एहि दिन कए थोपड़ी बजाबय बला उकट्ठी छौंड़ा डेराएल रहैये । कारण, गुड़की ओकरा सभके मारि नहि पबैत छलै आ' ई जनी-जाति सभ चोटिया दैत छै । ताहि डर सँ ओ सभ गुड़की सँ आकर्षित भ' सड़क तक अबैये जरूर, मुदा मोन मसोसि कए रहि जाइये। एहि दिन कए गुड़की रानी आ' ओ जनी-जाती सभ ओकर नौरिन रहैत छै । पेंशनक

परात वएह रामा, वएह खटोला। गुड़की एकसरि युद्ध लड़ैत, आ पाछू-पाछू थोपड़ी पाड़ैत उकट्ठी छौड़ाक झुण्ड । कियो हांट-दबाड़ केनिहार नहि । जखनि बहुत दिन धरि यैह हाल रहलै तखनि हमरा जिज्ञासा जागल । आखिर एना किएक भ' रहल छै। पेंशनक दिन जनी-जातिक तत्परता किएक बढ़ि जाइत छै, आ पराते किएक घटि जाइ छै ? ई प्रश्न हमरा बेर-बेर ओकरा सँ पुछबाक लेल बाध्य क' रहल छल ।

रविक दिन रहै । कोनो काज रहय नहि । एकटा पत्रिका ल' ओसारा पर पढ़ि रहल छलौं । एकाएक थोपड़ी शुरू भ' गेल । गुड़कीक उपस्थितिक द्योतक ई थोपड़ी, सड़क दिस तकबा लेल बेबस कए देलक । सड़क दिस तकलहुँ । अनुमान ठीक छल । गुड़की ठाढ़ि भ' छौंड़ा सभकेँ गरिया रहल छल—जनपिट्टा, टुनकीबा, फौतीबा' आ हमर मोन उद्विगन भ' रहल छल, ओकर परेशानी केँ देखि । माँक समय मे यैह गुड़की हमर सभक गार्जियन बनि गेल छल । एकर डर सँ कोनो संगतुरिया हमरा सभकेँ किछु नहि कहय । आ' से आइ अपना लेल लड़ि रहल अछि आ हम मूक दर्शक छियै । बहुत साहस जुटा, सड़क तक जाइ छी । छौंड़ा सभकेँ बिगड़ैत छियै । ओ सभ एक-एक कए ससुरि जाइये । गुड़की हमर मुँह दिस तकैत अछि आ बजैये—युग-युग जीबू बच्चा । की करबै, छौंड़ा सब शैतान छै । नङो-चङो क' कए राखि दैये । अहाँक हवेलीक बड़ नीमक खएने छी बच्चा । बूढ़ी बौआसीन अपन हाथ सँ छिपली साँठि कए दैत छलीह । ओ चल गेलीह । हवेलीक दाना-पानि उठि गेल । ओ लोक सभ फेर-फेर औतै एहि पिरथी पर बच्चा ? कहैत-कहैत ओकर आँखि नोरा गेलै । अपन विगत मे ओ हेरा गेल । एहि चुप्पीकेँ तोड़ैत हम गप्पकेँ आगू बढ़ौलहुँ—ऐं गे बुढ़िया! तोरा त' पेंशन भेटैत हेतौ । की करै छही ओहि रुपैया कए ? ओकर मुँह पर हँसीक एक टा रेखा उभरलै आ ओ बाजलि—मारू धोंछिया सभ कए । सभ ठकि लैये । बच्चा, हम त' ऊखरि भेलहुँ । कूटि-पीसि लेलक आ' ओंघरा देलक । मोन मे उठल शंकाक समाधान भ' गेल छल । हमरा पहिने एहि बस्तुक आभास लागि गेल रहय । अपन खसल सामाजिकता मोनकेँ बहुत बेसी आहत क' देलक । ओहि जनी-जाति पर बहुत बेसी आक्रोश भेल जे एहि निमूहधनकेँ उपयोग क' लेलाक बाद टिटकारी दए दैत छै । हम गुड़की कए बुझबैत कहलियै—जखनि ई बात बूझै छिही जे ओ सभ तोरा ठकै छौ, तऽ बेर-बेर रुपैया किएक द' दैत छिही । ओ फेर हँसलि आ' हँसिते बाजलि—बच्चा! हम अपने दैत छियै कि देना जाइये । कोनो धोछियां कए चिल्का बेराम रहै छै । कोनो सौतिन कए घरवला खरचा नहि पठौने रहै छै । ककरो बेटीक विदागरी रहै छै । आब अहीं कहू बच्चा जे एहना परिस्थिति मे हमरा लग रुपैया रहत आ समाजक

काज खगि जेतै ? अपना भगवान बाल-बच्चा नहि देलनि । समाजोक बाल-बच्चा हमरे बाल-बच्चा भेल ने । गुड़कीक चेहरा पर आब हँसी इजोरिया सन छलै । एहि शब्दक संग ओ भीतर सँ जुड़ाइत बुझाएल । ओ बजैत गेल । हमर कोन ठेकान । कखनि छी, कखनि नहि । पेट भरियें जाइये । मरि जाएब त' बएह धोंछिया सभ कनबो करत। ओकरे सभक घरबला डाहि-जारि सेहो देत । नहिं करताह त' समाज कंठ मोकतनि। गुड़की बजैत गेल । हम चुपचाप सुनैत रहलहुँ हमरा आत्मग्लानि भ' रहल छल । गुड़कीक सोचक सोझाँ हमर सोच बौन भ' गेल छल । छोट, एकदम छोट । मोन मे भेल जे समाजक लोक ओकरा छोटका लोक कोना कहैत छैक ? जेकर सोच पैघ ओ छोटका कोना हएत ? छोट लोक त' हम छी जकरा अपनहिटा सँ मतलब छै । गम्भीर वातावरण केँ हल्लुक करबाक लेल चौल जरूरी छै, ई मानि गप्पक संदर्भ बदलैत ओकरा सँ पुछलियै—एकटा बात आइ सत-सत कह जे छौंड़ा सभ थोपड़ी बजबै छौ त' एतेक गारि किएक पढ़ैत रहैत छिही ? गुड़की फेर हँसय लागल आ बाजलि-धूर जो बच्चा, अहूँ की ई पुछलहुँ । आइ टुनकीबा सभकेँ गारि नहि देबै त' काल्हि स' ओ थोड़बे थोपड़ी पाड़त ? हमरा ओकर एहि कथन पर बहुत आश्चर्य भेल । एकर मतलब ई भेल जे ओ चाहैयं जे छौंड़ा सभ ओहिना थोपड़ी बजबै आ' ओ गारि पढ़ै । हो न हो एहि थोपड़ीक कोनो रहस्य छैक । ई थोपड़ी किएक सुनय चाहैत अछि । कहलियै, गय, तों ठकै छैं हमरा । सत् सत् बात कहाँ कहै छैं । थोपड़ी तोरा किए नीक लगै छौ । कह ने । ताहि पर गुड़की हँसैत कहलक—अहाँ जखनि सत्-सत् गप्प कहैं लेल कहलौंहें त' अहाँकेँ कहि दैत छी । आ' ओ अपन खिस्सा कह' लागल। ''हमर बाउ, आठे बरख मे हमर बियाह करा देलकै । तेरह बरख पुरलो नहि रहय, तैखन सासुर बसय लगलियै गोरि-नारि रहबे करियै, सासु-ससुर सँ ल' समाज तोरिक लोककेँ खूब पसिन पड़लियै । मुदा देबा बाम भ' गेलै । पाँच बरिस धरि सभ बाट तकलकै । कतेक कोखिया गोहारि करौलकै, हमर आँचर नहि खुजलै । हारि-थाकि क' हमर सासु अपन बेटा कए दोसर चुमाओन करबा देलखिन । ओकरा (पतिकेँ) एकोरत्ती मोन नहि रहै, हमरा छोड़ि दोसर मौगी सँ चुमाओन करबाक । मुदा माय आ समाज कंठमोकि देलकै सम्बन्ध करबाक लेल । जहिया ओ समन्धक' दोसर मौगी के घरमे अनलक, हमर मोन फाटि गेल बच्चा । आ' पराते हम नैहर चल एलहुँ । एत' अहींक गाँकेँ टहल-टिकोरा क' दियनि आ' ओही स' हमर परवरिस चलय। एहेन अभगली दोसर नहि भेटत बच्चा। घुरती साल माय मरि गेल आ' तकर दू बरखक बाद बाउ । भाइ--बहिन मे एकसरि रही । डीह पर एकसरि रहि गेलहुँ । तीन बरख अहिना बीतल । चारिम बरख मे जा

कए, हमर घरबला दौगल आएल, विदागरी करयवाक लेल । सेहो ओहिना ? हमर सौतिन एकटा बभना सँ फंसि गेलै। बड़का लड़ाइ-झगड़ा भेलै। मौगिया उठल-पुठल आ हमर सासुवला सभटा गहना-गुड़िया समेटि निपत्ता भ' गेल । आब घरमे कोहराम मचल । सभ कहै जे बियाही पुतौह पाँच साल बसल, मुदा कोनो उक्का-धुक्का नहि उठलै । घरक सम्हारि लेने छल ओ । आँचर नहि खुजलै से त' ओकर दोख नहि। ओकरहि मनाकए ल' आनह । ताही पर मुन्हारि साँझ के हमर घरबला दौगल आएल। बौआसिन अपनहि हाथसँ छिपली साँठि कए देलखिन दालि भात, भट्टा कए भट्टबड़, तिलकोर तरल, आलू भूजिया, पापड़, एक छह दही। मनसा कए चकविदोर लागि गेलै खेनाइ देखि । खेला-पीलाक बाद ओ हमरा विदागरीक लेल मनबय लागल । बच्चा! हमरा त' पित्त लहरि गेल । तीन साल तक कियो खोज नहि कएलक आ' जखनि मौगीक अभाव भ' गेलै, तखनि हम; मोन पड़लियै । हम जी कए कड़ा क' लेलौं। कतबो मनौलनि, नहि मानलयनि । ताहि पर ओ रूसि रहल। पटिया ल' क' परती पर चल गेल । हमहूँ बौसे लेल नहि गेलयनि । ओ भरि राति तमाकू चुना-चुना कए खेलक आ' अन्हरगरे अपन गाम चल गेल । हम बयस गारि एतहि रहि गेलहुँ । से बच्चा, पाछूकाल वएह धोंछिया सभ थोपड़ी पाड़ि-पाड़ि चौल करय। हमर घरबलाक नकल करय । जे बीति गेलै से त' बीति गेलै । मुदा अपन घरवलाक तमाकू पर थोपड़ी पाड़ब बेर-बेर मोन पड़ैये । जखनि ई छौंड़ा सभ थोपड़ी पाड़य लगैये, बितलाहा दिनक सुमार भ' अबैये । वयस गारि कए रहि गेलियै कोनो कलंक नहि लगौलियै । मुदा बिसरियो कए ओकरा नहि बिसरि पबैत छियै ।'' आब गुड़कीक कंठ थरथरा रहल छलै । एकरबाद ओ किछु नहि बाजल । सोझे लाठी खुटखुटबैत सड़क दिस बिदा भ' गेल । ❑

प्रभास कुमार चौधरीक कथा 'इन्द्रधनुष' सँ

मोन फेर छोट भ' गेल । आकाश अखनो इन्द्रधनुष सभसँ भरल छैक। सभकेँ नोचिक' फेक' पड़तैक । मोन भेल जे अखने जे छौंड़ा हकक लड़ाइक गप्प कयलक अछि, दौड़िक' मड़बा पर जाय आ सतीनाथ झा केँ लात मारि क' ओंघरा दिअय। फेर ओइ मड़बा पर बान्हल मुट्ठी तानिक' ठाढ़ भ जाय आ आकाशमे लहराक' कहय- ई हमरा सभक हक के लड़ाइ हय...जीत हमरे होत...

कथा

प्रदीप बिहारी

देबाल

ओहि दिन अनचोके ओ हमरा बजारमे टोकलनि, ''की यौ छोटका हाथी । भेंट-घाँटक तँ कथे कोन ? हाटो-बजारमे टोका-चाली बन्न । किएक टोकब हाथी कतहु कुकुर-बिलाइ के मोजर देलकै-ए ?'

हमरा अचरज भेल । हुनक किछु शब्द बेधलक । तथापि हम सफाइ दैत कहलियनि, ''नहि, से गप नहि । पलखतिए ने भेटैए । धीया-पूता सभ सियान भ' रहल अछि, से बेसी दायित्व बढ़ा देलक-ए ।'' पुन: थम्हैत कहलियनि, ''हाथीक गार्जियन कतहु कुकुर-बिलाइ भेलैए ।''

''हँ ! पहिने ने चाची-चाची । आब चाचीकेँ देखनिहार-पुछनिहार केओ नहि।'' ओ बजलीह, ''बहुत गोटें तँ चलिए गेल । अहाँ छी । कहियो काल आचार्य जी भेटैत छथि-हाटे-बजारे । ओवर टाइम कमयबासँ पलखतियं ने रहैत छनि ।''

बजारमे बेसी गप्प करब हमरा नीक नहि लागि रहल छल । हाल-चाल पुछलियनि तँ वैह कहि देलनि, 'बाटे-घाटे की कहू हाल-चाल ? कोठरीमे बन्न औनाइत छी । कहियो आउ ने डेरा पर । निचैनसँ गप्प करब ।''

''असलमे अहूँ असगरुआ छी ।'' हम बचबाक प्रयास कयलहुँ, ''डेरा पर साँझे खन क' भेंट भ' सकैछ । आ ई समय होइत छैक तीमन-तरकारी कीन' बला...कतहु टहल''-बूल' बला ।''

हमरा गप्प पूरा कर' सँ पहिनहिं ओ फेर बजलीह, ''नहि बहार भ' पबैत छी। चाचाक ड्यूटीक ठेकाने ने रहैत छनि । फैक्ट्रीमे कोनो प्राब्लेम भ' जाइत छैक तँ कखनो बजा लैत छनि । जहिया सँ विदेशसँ ट्रेंड भ' क' अयलाह-ए...। कनेक चुप होइत पुन: बजलीह, ''छोड़ू एहि बात सभकेँ । नानू आ बिट्टू सभ आबि रहल छथि । तें थोड़ेक सर-समान कीन' अयलहुँ अछि ।''

नानू हुनक बेटीक घरैया नाम छनि आ बिट्टू बेटाक ।

बिदा होइत ओ कहलनि, 'चारिसँ सात धरि गनब तँ हमर फोन नम्मर भ' जायत। कहियो टुनटुनाउ आ आबि जाउ। ओना हमहूँ अहाँक घर देखबा ले' कतोक बेर सोचलहुँ मुदा की करी...असगरुआ लोक...।'

ओ किराना दोकानमे पैसि गेलीह ।

हमरा लागल जे किछु लोक असगरुआ होइ ए...किछु बनै-ए आ किछु बजैत रहै-ए ।

पनरह बर्खसँ हमर हुनक सरोकारी अछि । पनरह बर्खमे बहुत बदललीह अछि ओ । पहिने बेसी एक्टिव छलीह । परिवार, समाज आ रंगमंचमे । साहित्य पढ़बाक स'ख छलनि । पोथी संयोगि क' राखबाक आदति सेहो ।

जहिया हम हुनका अपन नाट्य संस्थासँ जोड़ने रहियनि ओहि समय हुनक बयस पैंतीसक लकझक रहल होयतनि । हम घोषणा कयने रही जे संस्थाक महिला कलाकार सभक अभिभावक होयतीह ओ । ताही पर ओ बाजलि छलीह, 'किएक तोहर गार्जियन नहि भ' सकैत छी ?'

आ सभ कलाकार हुनका ''चाची'' कह' लगलनि । किछुए दिनमे ओ पूरे टाउनशिपक मैथिल समाजक चाची भ' गेलीह । चाचीक सम्बोधनसँ एहि तरहें लोकप्रिय भेलीह जे हुनक मूल नाम 'जनक नन्दिनी' हेरा गेलैक लोकक स्मरणसँ ।

ई सम्बोधन हुनका थोड़ेक नीक आ थोड़ेक बेजाय सेहो लगलनि । एक दिन हमरा कहने रहथि, ''जे ने कर तों । जकर भाउजक बयसक होयबै सेहो चाचीये कहैए। कने थम्हैत पुनः बाजलि रहथि, 'आब तँ सभ टाउनशिपवाली चाची कह' लागलए।'

रंगमंचमे हुनका संग काज करैत हम देखने रही जे हुनक स्वभावमे थोड़ेक-थोड़ेक कालक लेल थोड़बे-थोड़बे कालमे परिवर्तन भ' जानि । खने भाउज सनक चंचलता. ..वात्सल्य...तँ खने पितियाइन सनक गंभीरता । हमहीं नहि, सभ कलाकार एहि बातकें अंगेजय ।

ओ कहियो मंच पर नहि अयलीह । कोनो नाटकमे पाट नहि कयलनि । सभ दिन नेपथ्यक ओरिआओन आ संगोरमे अपन योगदान देलनि । नेपथ्यक छोटोसँ छोट काज करबामे हुनका कोनो असुविधा-बोध नहि भेलनि कहियो ।

एकटा आयोजनमे साहित्यकारलोकनिक जुटान भेल रहनि । माया बाबू मंच संचालन करैत छलाह । जानि नहि कोन संदर्भमे ओ हमरा 'छोटका हाथी'क संबोधन देलनि । आ ताहि दिनसँ ओ हमरा ''छोटका हाथी'' कह' लगलीह ।

समयक पथार लगैत गेलैक । विविधता बढ़' लगलैक । लोक सभ स्थानान्तरणक कारणें छहोछित होम' लागल आ नाट्य संस्था मात्र लेटर पैड पर बँचि गेलैक । एसगरुआ भ' गेलीह ओ । एसगरुआ भ' गेलहुँ हम । सभ अपने मे व्यस्त । मगन ।

कहियो काल भेंट-घांट होअय तँ अतीतकें उनटाक' थोड़ेक चटैत छलीह ओ आ संतुष्ट भ' जाइत छलीह ।

एहि कालक्रममे अपन गृहस्थी बढ़ौलनि ओ । पहिने नानूक वियाह...फेर बिट्टूक. ..फेर ओकरा सभक धिया-पूताक सांगह...।

से ओहि दिनक हुनक भेंटक बाद हम अटकर लगाब' लागल रही जे कतेक दिन पर भेटलीह अछि ओ । हुनक नवका ऑफिसर्स फ्लैटमे प्रायः एक्के बेर गेल छी हम । दू बर्खसँ बेसीये भेल होयत ।

हुनका डेरा पर जयबाक नेयार कर' लगलहुँ हम ।

आ एक दिन हुनक फोनक घंटी टनटना क' जुमल रही हुनका डेरा पर । बड़ अह्लादसँ बैसौलनि । पति नहि छलखिन । ड्यूटी रहनि।

ओ भीतर गेली । पुनः आबि क' बैसलीह । हालचाल पुछलियनि– कह' लगलीह, 'की कहू ! आब स्वस्थ नहि रहैत छी । कतोक किसिमक बलाय छूबि लेने अछि। दू-दू बेर ऑपरेशन भेल-ए । दू बेर पेट खोलल गेल-ए । गॉल ब्लाडर आ बच्चादानी। दुनूक ऑपरेशन । तैयो भिसिण्ड भेल जाइ छी । देखै नहि छी, कोना बेडौल भेल जाइ-ए। तीन-तीन मास पर कलकत्ता जाय पड़ै-ए टेस्ट कराब''।

''किएक ? एहिठामक डाक्टर...।'' हम पुछलियनि ।

''कम्पनीक अस्पतालमे एक्कोटा नीक डाक्टर छै ?'' बजलीह ओ । जकर कतहु जोगार नहि बैसै छै से कम्पनीक डाक्टरी बला नौकरी करैए । नीक-नीक डाक्टर सभ तँ चलि गेलै एत सँ । प्राइवेट नर्सिंग होम चलबैत अछि । कम्पनीक डाक्टर कें हमरा देहमे कोनो ब्याधिये ने देखाइत छैक आ हम ढहैत देबाल बनल जा रहल छी।'

हम हुनका भरोस देलियनि, 'एना नहि सोची । ढहैत देबाल नहि छी अहाँ । अहाँ आधारशिला छियैक परिवारक ।'

''सैह कहि-कहि क' धकियबैत रहब ने ।'' बजलीह ओ, ''एक दिससँ घरबला तँ दोसर दिस सँ बेटा-पुतौहु आ धी-जमाय ।''

हमरा मोन भेल जे बेटा-पुतोहुक मादे पुछियनि । पुछियनि जे बिट्टू कत' छथि? नोकरी भेलनि कि नहि । पुतौहु कत' छथि ? एतेक सिद्दति उठबैत छथि, से संगहि किएक ने रहैत छथि ?'

हम एतबे पुछलियनि "'एखनि एसगरे छी...?''

हुनक आकृति पर उदासीन मुस्की पसरि गेलनि । बजलीह, ''एकटा नौरी अबै-ए। पुनः थम्हैत बजलीह, ''ई नौरी सभ सेहो माथ दुखा दैए । खाली चाहबे करियैक एकरा सभकेँ ।''

ओ रिमोटक एकटा बट्टम दबलनि आ भीतर चलि गेलीह । टी. वी. चल' लगलैक । फिल्मी अंताक्षरी चलैत रहैक । हम अपन नजरि हटौलहुँ । सेल्फ सभ दिस तकलहुँ । एकटा फ्रेममे तसलीमा नसरीनक फोटो मढ़ायल राखल छलैक ।

सेल्फकेँ आर लगसँ देखबाक मोन भेल हमरा । ताबत ओ एकटा बड़का बाटी लेने अयलीह । हम देखलहुँ । ओहिमे मेरचाइक खण्ड सभ छल । अे बजलीह, ''चाह पीब ?''

''नहि, नहि पीबैत छी ।''

''कॉफी ?''

''अहँ ।''

''किछु ठंढे ?''

''नहि किछु नहि ।'' हम बजलहुँ, ''एखनुक मौसममे किछु एहन छैक जे चाह-काफी ऐबाह भ' जाइत छैक आ ठंढा ठोंठ ध' लैत छैक ।

ओ रिमौटक बट्टम दाबिक' टी. वी. बन्न क' देलनि ।

ओ मुस्किअलीह । बजलीह, ''आब बयसक प्रभाव भेल जाइए ।'' तखने हुनका लगलनि जे किछु कोनादन तँ ने बाजि गेलीह-ए । ओ सुधारलनि, ''मुदा एखनि तँ अहाँकेँ सभ किछु पचक चाही । चालीस नहि ने टपलहुँ अछि...चालीस छुनहुँ ने होयब ।''

हम गप्प बदल' चाहने रही । अयबाक अपन मूल उद्देश्य दिस झीक' चाहलियनि, ''पोथी सभ पढैत छी ने...?''

हमर निशान सोझ नहि पड़ल जेना । ओ बजलीह, ''की पढ़ब पोथी ? की पढ़ब साहित्य आ कला ? चूल्हि, चालनि आ चिनुआरसँ पलखति कहाँ भेटैए ?'' मेरचाइ हाथमे लैत बजलीह, ''अचार बना रहल छी ।''

हम पुछलियनि, 'अनेरे ने ! घरमे रहत तँ मानल नहि जायत । आ खा लेब तँ बै' भ' जायत ।''

''अपना लेल थोड़े बनबैत छी ?''ओ बजलीह, ''नानूक बेटाक उपनयन छनि। ओकरे सांठ-पसारमे लागल छी । अपना सभमे तँ बुझिते छियै...सभ किछु मात्रिकेक ल' क' होयत । भाड़-दौड़...कपड़ा-लत्ता...सांठ-पसार...हींग-हरदी...सभ किछु । तखन ने पाग रहत मात्रिकक । नाम होयतैक मामाक...मामीक...नानाक...आ खटैत-खटैत मरओ नानी ।''

एहि बेर हमरा रहल नहि गेल। पूछि देलियनि, ''तँ बेटा-पुतौहुकेँ किएक ने बजा लैत छियनि । सम्हारि दितथि ।''

अपन तरंगित मोनकेँ दाबैत ओ बजलीह, ''हुनका सभकें दरभंगामे रहबाक लस्सा नहि छुटतनि । अपन मोन होयतनि, तँ पहुँनाइ कर' एत' अयताह । अहाँक चाचाकेँ कहैत छियनि तँ ओहो हमरे पर बरसै छथि ।'' कने थम्हैत पुनः बजलीह, ''ओना दरभंगोमे एकटा परिवार रहब जरूरीये छैक । घर अछि...। जा धरि नोकरी ताबते धरि ने ई कम्पनीक फ्लैट । तकर बाद तँ दरभंगे ने...।''

ओ किछु नुका लेलनि । कोनो बड़का बात पचा लेलनि । अलगट्ट ।

स्थिर होइत बजलीह ओ, ''हमहूँ अपने दुःखधनिया सुनबैत रहलहुँ अहाँकेँ । अपन हालचाल कहू । आब अहीं सभक हालचाल सँ हमरो सभक ने । हमरा सभक तँ समय बीतल ।''

हम अपन गतिविधिक संक्षिप्त सूचना दैत कहलियनि, ''के कहलक-ए जे अहाँक समय बीति गेलए । अहाँ मे एखन बहुत ऊर्जा बाँचल अछि ।''

ओ हमर बात काटलनि, ''फुसियेक भरोस नहि दिअ' ।''

हुनक आकृति पर गांभीर्यक रेख उभरि गेलनि । हम देखैत रही । मेरचाइक डांट तोड़ैत ओ बजलीह, ''घर-परिवार काट' दौगै-ए । छत भारी लगैए आब ।''

कनेकाल चुप्पी पसरल रहलैक । चुप्पीके हम अपन उद्देश्यसँ तोड़लहुँ । संदर्भ बदलब उचित लागल हमरा । पोथी हाथमे दैत कहलियनि, ''ई नव पोथी बहार भेलए।''

ओ हिलसैत पोथी लेलनि । मुख पृष्ठ देखलनि । बजलीह, ''अहाँक सम्पादनमे अछि ई पोथी, हमरा भेल अहाँक अपन लिखल...।''

पोथीक आमुखसँ क्षेपक धरि देखलनि । भीतर गेलीह । आबि क' पोथीक दाम हमरा देलनि । बजलीह, ''की पढ़ब पोथी ! पछिला मास नानू सपरिवार अयलीह। विचार रहैक जे ओ सभ एक मास रहतीह । हमहूँ सोचलहुँ जे कने सुविधा होयत। पोथीयो सभ पढ़ब । टहलब-बूलब । घर-दुआर सोहाओन लागत । नाति-नातिन सभ दलमलित करत घर-दुआरकेँ । मुदा...।''

''मुदा की...''हम पुछलियनि ।

''रमेश जे ने मुँह फुलोव्वलि कयलनि...अठाबज्जर कयलनि जे एको सप्ताह

नहि रह' देलखिन नानूकेँ । जानि नहि की बेजाय लगलनि । बड़ दुःख भेलनि अहाँक चाचाकेँ । ओहो हमरे डंटलनि जे अनेरे अपेक्षा रखैत छी...जखन अपने नहि तँ बेटी...की ? जहिये सिन्नुर पड़लनि तहिये आन भ' गेलीह...।''

एहि बेर ओ पचा नहि सकलीह । हम हुनक आकृतिकेँ निहारलहुँ । हुनक मोन बड़ हल्लुक लागल हमरा । घसबाहिन सभ माथ परक घासक बोझ पटकि दैछ आ तखन जे ओकर माथ हल्लुक लगैछ, तेहने हल्लुक ।

हम घुरबा लेल बिदा भेलहुँ । उठि क' ठाढ़ भेलहुँ । ओहो उठलीह । कहलनि, ''जाउ । मुदा अबैत रहब । अहाँकेँ अयने आइ बुझाइ-ए जे देबाल पर फेरसँ चून ढौड़ल गेलै-ए ।''

ओ सेल्फ लग गेलीह । सेल्फसँ तसलीमा नसरीनक फोटो बहार क' ओकरा चुम्मा लैत बजलीह, ''ई बड़ नीक लगैए हमरा ।''

कोठरी सँ बहार होयबा लेल ओ केबाड़ फोलैत हमरा कहलनि, ''फेर कोनो सांस्कृतिक अनुष्ठानक ओरिआओन करू ने ।'' ❑

कथा

रमेश

दखल

सन् 1971 मे शकील चटगाँव में छल । अप्पन देस मे । पूर्वी पाकिस्तानक बंगला-देश बनवाक खिस्सा शकीलोक परिवारक खिस्सा थिकइ । शकील मियाँ ओइ समय बीस वर्षक छल ।

हिन्द-महासागर मे अमेरिकी आ रूसी बेड़ाक हल्ला छलै । तरह-तरह के उकबा उड़ैत छलै आ भारत-पाकिस्तानक सेना कचबा-वध क' रहल छलै एक-दोसराके ।

एहने सन विषम समय मे चटगाँव मे पाकिस्तानी सेनाक जत्था अपन बूट धमधमाब' लागल छल । ओकर पूरा अङना मे एकदिन बूटे-बूट धमधमाय लागलै अनायास आ ओकर अब्बा के जव्बह क' देलकै बीच अङना मे । ओकर अम्मी दौड़लै त' राइफल सँ ढनमना देलकै । जमीन्दारक बन्दूक स' ढनमनैल सिल्ली जकाँ । ओकर बोदी (भौजी) केँ राइफल मे लागल छूरी सँ 'लाज' के चीरि क' नोन छीटि देने रहै पाकिस्तानी सैनिक । आ कुमारि बहिन के पहिने दिनारिष्टी बेइज्जति केने रहै सब मिलिक' आ तखन पत्ती सँ 'शरीर' बेरवाद क' देने रहै । –सुन्नत कर दो हरामजादियों का ! सैनिक सभ बाजल रहै–सब साली दोयम दर्जे की चीज है औरत ! आ दोसराके आङन ढुकि गेल रहै ।

तखन शकील मियाँ गोहाल स निकलि क' गोरे मियाँक संग लंक ल' क' भागल रहय भारतीय सीमा-चौकी दिस । ओकरा बंगलादेसी शरणार्थी बूझि भारतीय सैनिक सब सीमापार करा देने रहै आ ओ कए दिनक भूखल बारसोइ पहुँचल रहय अपना फूआ आ फुफ्फा के ओइठाँ–टी. टी. के गारि-मारि खाइत ।

शकील मियाँ के फूआ आ फुफ्फा सन् सैंतालिस मे हिन्दूस्ताने मे रहि गेल रहै आ कहियो काल 'खत' लिखै छलै ।

शकील के फूआ आ फुफ्फा के अब्बाजान त' ओकरा देखि क' सन्न भ' गेल

रहै आ पूरा परिवारक बेरवादीक खिस्सा सुनि क' त' ओकर फूआ के गसो आबि गेल रहै ।

फेर आस्ते-आस्ते सब बिसरवाक कोशिश कर' लागल । शकील कहियो चटगाँव नहिं जयवाक निर्णय क' लेलक आ से ओकर फूआ आ फुफ्फा कें नीके लगलै कारण एकटा सहारा शकील के रूप मे ओकरा भेटि गेल छलै । ओ सभ शकील के बँचाक' हिन्दूस्तान पठा देवाक लेल अल्ला के दोहाइ देलक । आ शकील के अपने बेटा जकाँ मान-दान करए लागल ।

जल्दीए शकीलमियाँ के कएटा संगी-साथी बनि गेलै बारसोइ मे-सुलेमानी, जमीलमियाँ, जफर आलम आदि-आदि...मुदा तैओ कहियो काल ओ अपन देश पूर्वी पाकिस्तान अर्थात् बंगला देसक स्मृति मे हेरा जाइत छल आ माय बहिन आ भाउजक चीत्कार सँ ओकर कान फाट' लगै छलै । पाकिस्तानी सैनिक के प्रति ओकरा मोंन मे घृणाक थूक भरि लोइया आबि जाइ छलै ।

एकदिन एहिना सुलेमानी ओकरा हँसी-मजाक मे पूछि देलकै-हे हौ शकील मियाँ ! तोरे खतना भेलह' बंगलादेश मे ?

आ शकील मियाँ लजा गेल । ओ तकलीफ आ दर्द के सागर मे डूब' लागल। ओकरा स्मृति मे गीतनाद आ ढोलक बाज' लागलै । ओकरा अपन जीवनक पाँचम-छठम बरस मे भेल दुर्घटना जेना टीस मार' लगलै । ओकरा कान मे अपन अब्बाजान के बात गनगनाय लगलै-तुमी ढ़ाका जाबो, ढाका ! जे ओ शकील के चुप करेबाक लेल कहने रहै । आ ओ बड्ड मोशकिल स' चुप्प भेल छल । आ तहिना मोसकिल स' ओकर छुछरी स' खून बहनाइ बन्द भेल छलै । ताहू स' वेशी मोसकिल स' ओकर घाव छूटल रहै ।

...से सुलेमानी आइ जखन खोंचाड़ि क' मोन पाड़ि देने रहै त' ओ 'दिल' स विचलित भ' गेल रहय ।

मुदा फेर जल्दीए शकील मियाँ बंगलादेशक बंगला बिसर' लागल आ बारसोइक मुसलमानी बोली मे-'तोरे-मोरे' बाजब सीखि लेनै छल । ओ चटगाँव के पानिक स्वाद बारसोइक कलाइन आ लौहयुक्त पानि मे लेब' लागल छल । हिन्दूस्तानो ओकरा अपने देश-दुनियाँ सन बुझाय लागल छलै कारण बंगलादेश त' हिन्दूस्ताने के एकटा काटल 'जिसिम' छलै ओकरा लेल । आस्ते-आस्ते जुआन भ' गेल शकील मियाँ । आब अपन फूआ आ फुफ्फा मे रमि गेल छल ओ । फुफ्फा के मुर्गा-मुर्गी, खोप-कबूतर, खैनी-बीड़ी, कोनियाँ-सूप, बीड़ीक दोकान-सब किछु मे रमि गेल छल ।

शकील मियाँ रमि गेल छल-फूआ के बेटी शबनम के नाक-नक्श, हथ-रेखा, 'शोखी-अदा' मे । शबनम के मदरसा के अलीफ बे-ते-से आ हरफी-मिलानी मे ।

मौलबी सैहैब जखन पानिक बुन्न सन डब-डब करैत शबनमक तेजी के प्रशंसा मे गप्प हाँक' लगैत छलाह, कि शकील मियाँके सपना मे शबनम के ओढ़नी उड़ियाय लगै छलै ।

गोर-नारि, छरहड़ कोपड़ सनक शरीरवाली शबनम आब किन्नहुँ पात खरड़ि क' अनवाक लेल तैयार नै होइ छलै । ओकर शरीरक बाढ़ि देखि क' एकदिन शबनम के अम्मीजान बजलै-तोरे शबनम के 'निकाह' के चिन्ता-फिकिर ना होइ हइ हो ? तै पर शबनम के अब्बाजान बजलै-हम कोइ काजी-हाजी नाहित अमीर छिऐ ? ने पंठान नाहति जब्बर छिऐ ने तुरूक नाहित बरियार जे लूटि-मारि कें ले अबै । या मौला गरीबनवाज !

अब्बा के नजरि झुकि जाइ छलै शबनम के देखि के जे अखनी चौदहम मे पैर रखने छलै । अम्मी ओढ़नी कीनि क' आनि देलकै । शबनम के जाइत मे जरूरी ने रहै, तैओ अब्बा बुर्का कीनि देलकै शरीर देखि क' । आ बंगलादेसक भँवरा शबनमके फुलाइत फूल आ उड़िआइत सुगन्धक मदहोशी मे मातल ओकर चारु भाग नाच' लागल। शकील कें दूधे टा बारयवला नियम बड्ड पसिन्न पड़लै तहिया !

ओ शबनम के गुरु मौलवी सैहैब के नजदीक बैस' लागल । ओ जनै छल जे मौलवी सैहेब शबनम के 'दिलोजान' स' मानैत छथिन आ ओकर पढ़ाइ-लिखाइ आ ज्ञान के मदरसा मे आ गामो मे बखान करैत रहैत छथिन ।

-शबनम त' कुरान के आयत पढ़ै हइ !

-शबनम पूछै हइ जे शिया-सुन्नी काहे खातिर बँट गेलै ?

-शबनम पूछै हइ जे की हइ चिश्ती आ की हइ सुहरबर्दी ?

-शबनम पूछै हइ जे मुसलमानी औरत के बुर्का काहे हइ जरूरी ?

-शबनम पूछै हइ जे सलीम चिश्ती आ अजमेर के ख्वाजा सैहैब के काहे एतना नाम हइ ?

-एतना निम्मन लड़िकी हइ शबनम कि उमेर से आगे बोलइ हइ हो शकील मियाँ !

आ शकील मियाँक मोन मदरसा के मौलवी सैहैबक मुँह सँ शबनम के ढाकीक-ढाकी प्रशंसा सुनि क' आर हिलोड़ लेब' लागय । शकील दिन-राति शबनम के सपना मे मोनक पाँखि लगाक' उड़य लागल छल । आब शबनम के निकाह के

चर्चा वारेआम भ' गेल छलै ।...कि एकदिन अनचोके मे बारसोइक सुधानी-नदी मे बंगाल के खाड़ी के चक्रवात आबि गेलै, अरब-सागर होइत ।

बात एना छलै जे अरब के जत्था-के-जत्था अमीर किशनगंज आयल रहै । बंगलादेशी शरणार्थी मे स' बाँदी' किनवाक लेल आ अरब ल' जेबाक लेल । 'बाँदी' के खरीद-बिक्री के होड़ लागि गेल छलै । शरणार्थी सब के सन्तान बेचवाक बहाना छलै–पेट आ पाकिस्तानी सैनिक द्वारा देल गेल दाग-धब्बा ।

शबनम के अब्बा बीड़ी ले' खैनी आ पत्ता लाबै लेल किशनगंज गेलै त' अहमद खान नामक एगो दलाल स' भेंट भेलै । ओ शबनम के देखने छलै, से ओकरा अब्बा मे सटि गेलै । आब अरब के शेख आ अमीर सबहक बहसल नजरि बंगलादेसी शरणार्थी स' भारतीय लड़िकी सब पर सेहो आबि गेल छलै । ओ सब ऊँच दाम पर कम उमेर के 'बाँदी' कीन' चाहैत छल । अहमद खान एखनधरि अमीर-उल-जद्दा के चारि गो 'बाँदी'क व्यवस्था क' चुकल छल आ कुवैत के अमीर के तीन गो बाँदीक । ओ सूडान के अमीर के गछने छल हिन्दूस्तानी-बाँदी । से शबनम के अब्बा के देखिते ओकरा नजरि मे शबनम के 'बदन' आ 'जिसिम' नाच' लागलै । ओ विचित्र तरहें शबनम के अब्बा के पाछू पड़ि गेल । ओ शबनम के रूप के नीक जकाँ भजाब' चाहै छल । ओ पचास हजारक लालच शबनम के अब्बाजान के देलकै आ कहलकै–मौका घर मे एलहइ रहमानी भाइ । बड़ा निम्मन से राखै हइ अमीर आउर ! ओतना सुख हमरा समाज मे बेटी के कहाँ से होइहे । अमीर के बीबी सब गोड़ दाबै हइ आ 'बाँदी' गोदीमें खेलाइ हइ । मैत चूक' रहमानी भाइ अइसन मौका । बाद मे पछतइव' त' हमरे ना बोलिहे !

रहमानी मियाँ के मोन हिलम-डोल करए लागल । आगू-पाछू, आगू-पाछू ।

ओकरा अदीना-बड़ी लेन पसिंजर पर बैसाक' अहमद खान कहलकै -गरीबी भगा ल' हो भैयां ! मौका मैत चूके के । शबनम हूआँ से एतना दौलत भेजत' कि नेहाल हो जेब' हो रहमानी भैया । अखनी एक-हफ्ता हइ अमीर अइ जग । तोरे भेजे के मन होत' त' शबनम के सुन्नत करे के होतइ । ओइसे ना ले जांइहे अरब के अमीर । सुन्नत के लागी पाँच हजार अलग से मिल जा हइ ।

रहमानी मियाँ ना-नुकर करए लागल ।

मुदा अहमद खान पाँच हजारक गड्डी रहमानी मियाँ के गोल-गल्लावला गंजीक जेबी मे ठूसि देलक । ता गाड़ी सीटी दैत खूजि गेल त' रहमानी मियाँ अकबका गेल।

ओकरा आँखि मे उमरि-उमरि क' 'लोर' आब' लागल आ कान मे शबनम चिचियाय लागलै–'अब्बाजान हौ अब्बाजान !'

रहमानी-मियाँ बारसोइ पहुँचल त' शबनम के अम्मी कोर्निस केलकै–सलाम वालेकुम !

मुदा रहमानी मियाँ–'वालेकुम सलाम'–कहि क' उतारा नहिं देलकै, त' शबनम अम्मी के मोन मे किछु ठेहकि गेलै । ता रहमानी मियाँ के सम्हरम नहिं रहि गेलै आ कना गेलै कोंढ फाटि क' ।

शबनम के अम्मीजान खोधि-खोधि क' पुछलकै त' बुझलाक बाद छाती पीट' लगलै हो अल्ला ! अल्ला हो ! दोसर दिन काजी आ मौलाना सुनलकै त' ओहने भाव व्यक्त केलकै-जेहेन छागर-पाठी किनला आ बेचला पर !

खाली शबनम के कुरान के आयत आ शरीयत पढ़ाब'वला मौलवी सैहेब–यां अल्ला परवर दिगार । हो मोहम्मद !–कहलकै आ गहींर अवसाद मे डूबि गेलै । मौलवी सैहैब ओहिना चुप भ' गेलाह जेना कुर्बानी के दिन पठ्ठा जिबह क' क' असली मुसलमान चुप भ' जाइए । मौलवी सैहैब के शबनमके मदरसा बोर्डवला रिजल्ट मोन पड़लनि आ 'आह' आँखि द' क' निकल' लगलनि । ओ सोचलनि कतेक नीक होइतै जे ओ शिक्षक आ शरीयत के जानकार नहिं होइतथि !

तकर परात भेने अहमद खान जुमि गेलै त' शबनम के अम्मी पछाड़ मारि-मारि कान' लागल–हम अरब ना भेजब बेटीकेँ । शबनम मकतब गेल छलै आ ओकरा स' ई बात सभ नुकाक' राखल गेल छलै जे कहीं हदास ने उड़ि जाइ ओकर !

अहमद खान अपना संग एकटा सुन्नत करयवाली आगरा-मेरठ के महिला के अनने छल । ओ बेचारी अपने वेगरते आन्हर भ' क' शबनम के अम्मीजान के बुझाब'-सुझाब' में अपस्याँत भेल छलै जे लड़िकी के सुन्नत ओतबे जरूरी हइ जतना लड़िका के खतना ! ई त' मजहब के बात हइ । तखने मरद मेहराह मे मेल रहै हइ।

जखन शबनम मकतब मे हदीस के अर्थ मौलवी सैहैब स' सीखै छल, ओकर चाची ओकरा बजाक' अड़ना अनलकै । दूरा पर चारि-पाँच गो चाची ढोलक बजा क' टोप-टहंकार स' गीत गाब' लगलै शबनम के देखिते देरी । शबनम जा किछु बूझे-बूझे, कोठली मे चारि-पाँच गो चाची जान मिलिक' ओकर सलवार खोलि देलकै आ सुन्नत करएवाली जुबेदा खातून के हाथ मे चमचम छूरी देखि क' शबनम थोड़ेक काल छटपटा क' फेर बेहोश भ' गेल । कि ता एक्कहि बेर ओकर जाँघ मुर्गी जकाँ छटपटयलैक आ 'शरीर' स' महानन्दाक बाढ़ि बह' लगलै । डाँड़क चीत्कार सुनिक' शकील मियाँ कोठली दिस दौड़ल त' जनानी सभ ओकरा दुरदुरा क' भगा देलकै ।

शबनम के किताब पर लाल-लाल छिटका मकतब आ हदीस-शरीयत के तालीम पर ठठा-ठठा क' हँसि रहल छल । शबनम के 'शरीर' पर रूइया साटल छलै आ ओ दू घंटा मुर्दा जकाँ बेहांस पड़ल छल । ओकर 'जिसिम' सुन्नत स' सुन्न भ' गेल छलै आ जिनगी मे 'उदासी' आबि गेल छलै । उदासी ओकर 'दिल' मे घर बना लेने छलै ।

तकरबाद एक सप्ताह के दवाइ निश्चित भेलै आ दवाइ सधिते 'सगाइ' निश्चित भेलै ।

मुदा सगाइ छेका दिन जखन अमीर-उल-जद्दा के ल' क' अहमदखान एलै त' शबनम कहाँ नुका रहलै, जे सगर बारसोइ मे कतहु भेटबे नहिं केलै ।

दू दिन अरब के अमीर रहलै आ पंचैती स' बारसोइ दलमलित भ' गेलै ।

रहमानी मियाँ कान' लगलै–एह जिल्लत के जिन्दगी सं मौत भला ! अहमद खान के अमीर-उल-जद्दा सैहैब बेइज्जति क' क' राखि देलकै । पानि उतारि देलकै।

अमीर-उल-जद्दा के दुख छलै जे जॉर्डन आ सूडान के अमीर दर्जनों 'बाँदी' ल' क' जेतै आ ओकर जँ यैह हाल रहलै त' पाइयो डूबतै आ दुइयो गो 'बाँदी' ल' क' नहि घूरत अपना देस त' देस मे कोन इज्जति रहि जेतै ?

रहमानी मियाँ के किछुपाइ खर्च भ' गेल छलै–से मौलवी सैहैब स' पैंच ल' क' ओ घुरा देलक अहमद खान के । अहमद खान अमीर सैहैब के ल' क' किशनगंज चलि गेलै–दोसर बाँदी के तलाश मे । जाइत काल अहमद खान पाँच-पाँच हाथ कूदैत गेल ।

रहमानी मियाँ एतेक बेइज्जति के अजमेर के ख्वाजा सैहैब के माला जपि-जपि क' बर्दाश्त केलक । शबनम के अम्मीजान कनी-कनी भीतरे-भीतरे खुशी आ कनी-कनी भीतरे-भीतर दु:खी छल । आब चिन्ता छलै त' बस एतबे जे शबनम भेटतै कत' ? कहाँ चलि गेलै ओ ?

बहुत ताक हेर भेलै बारसोइ मे । बहुत ताक-हेर भेलै कारण शकील मियाँ सेहो गैब छलै शबनम के संग । शकील के संग रहबाक कारणें रहमानी मियाँ कनेक निश्चिन्त छल ।

मुदा ओकर अम्मीजान के चिन्ता छलै जे शबनम कें घाओ सेहो एखन ठीक नै भेलैए ।

असल मे शबनम आ शकील एक राति एकटा पुलिया के बम्मा मे नुका क' रहल आ दोसर दिन दालकोला चलि गेल । तेसर दिन ओ दुनू रायगंज चलि गेल जत'

टहकैत घाव स' मोन बहटारबाक लेल शबनम के शकील मियाँ सिनेमा देखौलक आ रेलवे के मोसाफिरखाना मे बैसिए क' राति काटलक । एकदिन फेर रेलगाड़ी मे बिता क' जखन ओ सब बारसोइ पहुँचल त' टीशने पर, एतवारी, जे शबनम के संगी छलै, भेटि गेलै आ पूरा खीसा सुना देलकै ।

दुनू अपना घर आयल त' शबनम के अम्मीजान ओकरा छाती मे साटि लेलकै। सगर बारसोइके मोहल्ला-मोहल्ला उनटि क' आयल शबनम के देख' लेल ।

शबनम के अब्बा रहमानी मियाँ के बड़े बात कहलकै लोक । ओ बौक बनल रहलै आ अपन अन्दर मे कानैत रहलै । शकील अपन फूफी के सुनवैत छल जे ओ कोना-कोना शबनम के ओरियाक' ल' गेल आ अनलकै । शबनम के अम्मीजान शकील के पीठी ठोकि क' चाबस्सी आ आशीर्वाद देलक ।

मदरसा के मौलवी सैहैब शबनम के अब्बाजान के कहलकै । तोरे काहे के लोभ लालच हो गेल' हौ रहमानी भैया जे बच्ची कें बेचे खातिर राजी हो गेल' ? अपना देश मे शबनम के लायक लड़िका ना हइ की ?

आ शबनम के अब्बा मूड़ी गाड़ने रहल ।

एक हप्ता के बाद हल्ला भेलै जे पटना हवाइ-अड्डा पर अहमद खान, अमीर-उल-जद्दा आ सउदी के शेख अमानुल्लाह सात गो 'बाँदी' क संग गिरफ्तार भ' गेलै । तकर कारण ई भेलै जे लड़िकी सब ततेक ने कान' लगलै हवाइ जहाज पर चढ़बा काल जे 'बाँदी' किनवाक बात खुलि गेलै आ पबलिक हंगामा ठाढ़ क' देलकै । ई खबरि जखन अखबार मे छपल तँ सगर बारसोइ-किशनगंज खुशी मे झूमि उठल । 'बाँदी' सबहक बाप बेटीवला-भावना सँ दौड़ल पटना ।

से शबनम के कए मास बितलाक बादो जे ओ घटना सभ मोन पड़ै छै त' ओ सुन्न भ' जाइ छै । कहियो काल जखन ओ अयनाक सामने मे रहैए । ओकरा अपन रूप, विकृत शरीर, सुन्न जीवन आ अपन मजहब के ज्ञान पर सोचनामा लागि जाइ छै ।

ओकर अब्बाजान के उमेर त' ढरान पर छैहे, ओ टूटि सेहो गेल छै से जनैए शबनम । ओकर सम्बन्ध मे अम्मीजानक चिन्ता कोनो नुकायल नै छै शबनम स' । ओ बुर्का मे नुकायल मनाही के त' बुझिते अछि, शरीयत आ हदीसो के अर्थ बूझैए। ओकरा हदीस के कएठाम अर्थ नै लगै छै त' हंसी आ छगुन्ता उमर' लगै छै मोन मे। ओ जखन-जखन मौलवी सैहैब स' पढ़य बैसैत अछि, शादी, तलाक आ इद्दत शब्द सभ सुनि-सुनि गहींर अवसाद मे डूबि जाइत अछि । ओ अयना मे रहैए मुदा अयना

मे नहिं रहैए । ओ अङना मे रहैए मुदा अपना मे नहिं रहैए । ओ ओहिना झमा क' खसि पड़ैए कल्पना मे जेना मोरनी-मयूरनी नचैत-नचैत अपन सुखायल टाङ देखि क' खसि पड़ैए । जखन क' ओकरा अपन खण्डित 'शरीर' आ 'सुन्न' संवेदना के ध्यान अबै छै, ओ झूड़-झमान भ' क' खसि पड़ैए । ओ असगर मे टक-टक निघारिते रहि जाइए अपन क्षत-विक्षत 'शरीर' के आ अपन मनोलोक मे विक्खिन-विक्खिन गारि देब' लगैए-शेख-अमीर के अहमद खाँ आ सुन्नत करएवाली चण्डलनियाँ के । ओ विध-वाध आ ढोलक-गीत के गारि स' ओगारि दैए शबनम आ अपना टोला के चारु चाचीजान के जे ओकर हाथ-पयर छानि के ओकरा बेबस क' देने रहैक । नै त' वैहै छूरी छीनि क' ओ सुन्नत करएवाली चण्डालिनी के घोसिया दितै ओही ठाम ।

आह ! अब्बा हो अब्बा ! तोरे मुँह काहे ले' बन्द हो गेल' ओह घड़ी ओ अब्बा ।

ओह ! अम्मीजान हो अम्मीजान ! तू काहे ने मोरा ले के भाग गेल' बारसोइ से हो अम्मीजान !

शबनम अपना हृदय मे उठल अन्हड़-तूफान के नियंत्रित करबाक प्रयास कइये रहल छल कि ओकरा बुझेलै जेना एक जोड़ा आँखि आबि क' ओकर पीठ, चेहरा, गाल आ आँखि मे सटि गेल हो । ओ बजार स' रेलवे-लाइन ध' क' घुरि रहल छल। ओकरा भ्रम भेलै जे ई मरदाना आँखि कहू शकीले के ने होइ ! मुदा ओकरा भ्रम नै भेल छलै । ठीके मरदाना आँखि शकीले के छलै । आ ओकर बुर्का सिहरि गेल छलै।

शबनम के मोन पड़लै शकीलक सहारा । शकीलक संग दालकोला आ रायगंजक रेल के संगबे । बारसोइ के बम्मा मे बिताएल दिन आ राति । शकीलक लुंगी के बिछौना आ खपटा मे सुधानी के पानिए टा सहारा । अन्डरपेन्ट पहिरने शकील आ ओकर बाँहि के गेरूआ बना क' सूतलि शबनम । लटुआयल आ दर्द सँ कहरैत । सुधानीक पानि साँझ मे नुका क' अनैत आ खपटा मे छुच्छ पानिक संग शबनम के गोटी खुआबैत शकील जेना 'फरिश्ता' सन के बुझाइत छलै शबनम के । ओकरा आश्चर्य, लाज आ दर्दक बीच मे खुशी तखन भेल रहै भोर मे, जखन ओकरा शंका भेल रहै जे कहूँ शकील मियाँ ओकरा घावक पट्टी सुतले मे बदलि देने रहै आ ओ निन्दक बेहोसी मे नहि बुझने हो ई ब्रात ।

दुनू लाजक मुसुकी एक क्षण लेल मुसुकिआयल रहय आ रायगंज भागल रहय। शबनम के ठोर पटपटायल-शकील खोदा के बन्दा हइ ! ओह अमीरबा से हमरा

ईहे बचौलकै ।

मुदा ओ उदास भ' गेलै-शकील हमरा से तोरे कुच्छो ना मिलत' ।

हमर मजबूरी हइ शकील, मजबूरी ।

कि शकील हौले स' बजलै-शबनम ! ए शबनम !

-ऊँह ! ऊँह ! हे हो शकील मियाँ ! आँखि छोड़बहु कि नै हो ?

-नाञ बाबा ! छोड़बो टा नाञ आमी ! तुमी चोक्खो माल ! शकील बंगलादेसी भाषा मे बजलै ।

मुदा ठाँहि-पठाँहि शबनम ओहिना नकल करैत जवाब देकलै

-नाञ ! आमी माल टा नाञ । आमी भालो मानुष ! तू मखान के पत्ता से मुँह पोछलहू शकील मियाँ ?

शकील के मोन बढ़ि गेलै-तू अपने हाथ से पोछि दहू शबनम !

-ऊँह मर्दाबा ! भफैले हइ ! जूड़े मियाँ के माँड़ ने, खोजे मियाँ ताड़ी !

-शबनम कनेक आर चेकी चढ़ा देलकै ।

-तौबा-तौबा ! या अल्ला ! ताड़ी ना ! ताड़ी ना ! ओके स्काइवाटर बोलहू शबनम ! मगर ऊ गीत जे हइ दिलिप कुमार के-'राम और श्याम' के ! तोरे आबो हइ ?

तू है शाकी
मैं हूँ शराबी-शराबी...

आ शकील शबनम के पकड़ि-पकड़ि क' हीरो जकाँ गीत गाब' लागल...

तूने होठों से पिलाई, वो मजा है कि दुहाई
हर तरफ दिल के चमन में
फूल खिले हैं गुलाबी...गुलाबी...गुलाबी...

कि शबनम सेहो ध' लेलक...मैं हूँ शाकी......तू है....आ शकील-शबनम तेना ने दिलिप कुमार आ शायरा बानू बनि गेलै जे शबनम के अंग-अंग मे गुदगुदी लाग' लागलै । ओकरा भेलै जेना ओ बुर्का मे लटपटा गेल अछि आ शकील मसखरी करैत हावा बनिक' बुर्का उड़ाब' पर विर्त्त अछि ।

कि एक्कहि बेर शबनम सपना आ कल्पनाक बिचली गली सँ निच्छोह दौड़ैत जेना बड़ी-लाइन पर आबि गेल आ अपन बुर्का चर्र स' चीड़ि क' हवा मे उछालि

देलक आ बाजल–जो अमीर-उल-जद्दा के गरदनि के फंसरी लगा दहू । आ कफ्फन बनि जाहू ।

आ ओ खिलखिला क' रेलक पटरी पर दौड़ लागल जेना इसप्रेस टेन के डीजलवला इंजिन हो ।

शकील के आश्चर्य स' टकटकी लागि गेलै । बुर्का हटला स' शबनम के रूप के निखार ओकरा आँखि मे चकचोन्ही लगा देलकै ।

शबनम ओकर नयनसुख के भंग नै केलकै । ओ शकीलक गट्टा पकड़ि क' आ हावा पर उड़ि क' घर पहुँचल जेना शबनम एखन फारस के जादूगरनी हो आ शकील ओकर पिजड़ा के सूगा ।

मगर तुरत्ते शबनम ई सोचि क' सिहरि उठल जे शकील नाम के ई पंछी जखनी शबनम मे एगो पूरा-पूरी औरत के सुख खोंजे लागे, तब का होइहे हो अल्ला ?

शबनम अन्तर्वेदना आ आनन्दक हिलोर के संगमवला विचित्र दशा मे आबि गेल ।

मुदा ओ भविष्यक चिन्ता मे वर्त्तमानक सुख नहिं गमाब' चाहैत छल । ओ दार्जीलिंग मेलक इंजिन बनल पटरी पर उड़ैत रहल आ शकील के नयनसुख लुटाबैत रहल ।

मुदा शबनम के घर पहुँचबा स' पूर्वहिं ओकर संगी एतवारी ओकर अम्मीजान के सब किछु कहि चुकल छलै । ओ शबनम आ शकील के हवा पर उड़ैत देखने छल ।

शबनम के अम्मीजान गहींर सोचनामा मे पड़ि गेल छलै जे दुन्नू जुआन-जहान हइ ! कहीं ऊँच-नीच मे गोड़ पड़ गेलै त' कइसन उकबा उठ जेतै हो अल्ला ?. ओ दुनू के 'शादी' लेल शबनम के अम्बाजान के मान-मनौअलि करए लागल । ओ मदरसा के मौलवी साहैब के सेहो बजा लेने छल । दूध के सम्बन्ध नै रहलाक कारणे मौलबी सैहैब दुनू के शादी के सवाल पर होहकारी भरि देलकै । शबनम के अब्बाजान मानि गेलै ।

मगर ई रजामन्दी शबनम आ शकील के नै बूझल छलै । एक सप्ताह के बाद मुहूरत देखिक' शबनम के मास्टर जी उर्फ मदरसा के मौलवी साहैब कलमा पढ़ाक' शबनम आ शकील दुनू के रजामन्दी स' निकाह करा देलकै ।

चूड़ीवला हाथक थाप स' ढ़ोलक आ गीतनाद शबनम के घर के रमन-चमन स' गमका देने छलै ।

ओ सोहाग-रातिक त' कहले नहि जाय ।

ओ सभ सोहाग-राति मे सुतलै कहाँ ? भरि राति फदर-फदर फुदकिते रहि गेलै ।

ओइ राति एकटा अत्यंत अन्तरंग क्षण मे जखन दुनू हावा पर उड़िक' आसमान मे पहुँचैएवला छल कि शबनम आश्चर्यपूर्वक पुछलकै–ए शकील, तोरं खतना भेल हइ ?

शकील लाज आ अवसादक संगम पर आबि क' बजलै–हँ, तोरं सुन्नत नाहित! आ दुनू एक दोसरा मे अपस्याँत भ' क' कानय लगलै ।

शबनम बजलै–तोरे कुच्छो ना मिलत' हमरा से ।

शकील बजलै–अइसन ना बोले के ! हमरा आब कोन कमी हइ ?

आ दुनू एकटा नव दुनियाँ मे रमय लागल ।

मुदा दसे मिनटक बाद जखन प्रकृति आ पुरूष एकाकार भेल त' आनन्दक पातर आवरण मे नुकैल दर्द आ यंत्रणाक अन्तहीन उपभोग स' साक्षात्कार भेलै । शबनम के पाँच मिनटक छटपट्टी एतेक बेदम क' देलकै जे ओ पाँच जिनगी जकाँ पहाड़ बूझय लागल । ओ अप्स्यांत स' सोझे मुर्दा भ' गेल । ओ हदसि गेल ई सोचि क' जे ओकरा भरि जिनगी आब ई कष्ट अहिना भोगय पड़तै । आह !

एमहर शकीलो के मोने-मोन पछतावा, सहानुभूति, दया, आक्रोश, क्रोध आ विरोध-भाव एक-एक क' मोन हौड़य लगलै ।

ओ त' मरद छल ।

मुदा शबनम के कष्ट के त' पारावारें नहिं छल । शकील अपसोच के गहींर सागर मे समा गेल छल । ओ अपन खण्डित शरीरं के स्पर्श केलक । फेर शबनम के खण्डित शरीर के भाव-विह्वल भ' क' स्पर्श केलक आ बिदबिदाय लागल–हो अल्ला । कहाँ कुदरत के रेवाज आ कहाँ एह दुनियाँ के गलत रेवाज ।

तोबा करेके हो अल्ला ! तोबा करै के ।

ई रेवाज के कसाइपना ओके शबनम के शरीर बर्बाद क' देलकै । हौ मौला!

सीरिया के अल फहद
पैसा ईरान के
इन्डीया के छूरी, जुबैदा हिन्दूस्तान के
सुन्नत सुल्तान करे, नाम इस्लाम के
खतना बहन्ना हइ, मोंछ के शान के
कुदरत के काटै हइ, बहन्ना हइ कोरान के

ढाका के अम्मीजान, दीदीजान चटगाम के
'बोदी' बंगाल के शैतानी हइ शैतान के
शबनम के सुन्नत आखतना 'शकील' के
अल्ला हो खैर करे' पटपट अकील के
अल्ला हो खैर करे पटपट अकील के
हाय मालिक !

की औरत-मरद के कुदरत के मजा भोगेके अधिकार ना हइ ? शबनम के सुन्नत आरू मोरे खतना के घड़ी तू कहाँ रहलहुँ हो अल्ला ? तू त' बराबर के दर्जा देलहूँ मरद-मेहरारूके । मगर...मगर...दीदीजान आ शबनम मे कोन अन्तर हइ ?

पाकिस्तानी सैनिक आरू अमीर-उल-जद्दा मे
कोन अन्तर हइ हो मोहम्मद ?
कोन अन्तर हइ कुवैत के अमीर के दाँत
आरु आगरा के जुबैदा खातून के छुरी मे ?
हूआँ मोरे दीदीजान आरू बोदी के जिसिम !
हीयाँ मोरे शबनम-रानी के जिसिम !
हाय अल्ला । हाय अल्ला !
या रहीम ! या करीम !
या गरीब नवाज !
धिक्कार अइसन रीति-रेवाज के ।
हाय मेरी दुलहिनियाँ ! ई का तोरे-मोरे हो गेलै ? एक छूरी से दुनू हलाल!

शकील फेर भाव-विह्वल भ' क' शबनम के आनन्द प्रदेश मे मधुर-स्पर्श देलक त' शबनम कुनमुना क' बाजल-सो जा शकील मोरे ! सो जा ।...

मुदा शकील के निन्न कहाँ ?
ओ सोचय लागल-
अइ छूरी के जनम कहाँ होइ हइ ?
मक्का मे कि मदीना मे ? कहूँ ना ।
कोरान मे कि हदीस मे ? कहूँ ना, कहूँ ना ।
मौलाना के शरीयत मे
कि काजी-कुद्दूस के जेबी मे ?
अमीर-उल-जुमला के रंगमिजाजी मे ?

कि गाजी मे कि पाजी मे ?
तेसरा पमरिया के ''हाँजी' मे ?
इमाम के फरमान-बाजी में ?
कि मियाँजी के मरदानगीवला
मोंछ के मेहमान-बाजी मे ?
कहाँ होइहे बलेड आ छूरी के जनम ?

सीरिया के रजधानी दमिश्क मे कि शेख सुलेमान के खलीफागिरी मे ?
सूडान के छूरी के धार मेहरारू के जिसिमे पर काहे खातिर रोब जमाबे हइ? कसाइपना छूंरी मे ना होइ हइ हो भैया ! ओ त' जिव्वह करेवाला के सीना मे आ मोन मे होइ हइ !

शकील के टिमटिमाइत डिबिया के इजोत मे खाली सबाले-सवाल उड़ैत बुझेलै- जेना जंगला के रौदा मे धूरा उड़ैत स्पष्ट देखाइत हो । चारु बगल सवाले अभरैत हो जेना ! जेना साबिक युग मे शेख-सैय्यद के घर मे बाइस गौ बीबी गज-गज करैत हो आ छियासठि गो छौंड़ा खद-खद करैत हो !

तहिना सवाले-सवाल ।
ढाका के शेख-बाइस गो बीबी ! गज-गज ! गज-गज !
एकैस बीबी डेली इन्तजार मे !
आ अपना कहियो फुरसति नै ! की एम. सी, की इद्दत ?
या सलीम चिश्ती फतेहपुर सीकरीवला !
कतना सवाल ?
या ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती अजमेर शरीफवला !
कतना सवाल ? गज-गज ! गज-गज !
या परवरदिगार मोहम्मद ! जवाब कहाँ हइ ?

शकील के ठोर पटपटाइत रहलै । आँखि मुना गेलै । हाथ हेरा गेलै । शबनम मे शबनम के हेरैत-हेरैत ।

फेर भोर भेलै ।
फेर राति भेलै ।
फेर राति भेलै ।
फेर भोर भेलै ।
राति आ भोर !

भोर आ राति !

नोर आ ढ़ाढ़स !

आक्रोश आ सहानुभूति !

आनन्द आ पीड़ा !

कछमछी आ आकांक्षा !

सबसबीक सेहेन्ता !

गुदगुदीक सेहेन्ता !

यातना आ कामना !

कामना आ यंत्रणा !

होइत-हवाइत, होइत-हवाइत, तीन साल मे तीन गो घटना एक-शकील आ शबनम एक बेटा आ एक बेटीक माय-बाप बनि गेल । बेटाक नाम पड़लै-'आफताब' आ बेटीक नाम रखलक 'तबस्सुम सितारा' ।

दू-शबनम के अम्बाजान आ अम्मीजान के दम्मा, बीड़ी के धुआँ आ बुढ़ारीके कारणें अल्लामियाँ ऊपर बजा लेलकै ।

तीन-शकील बारसोइ टीशन पर दोकानदार बनि गेलै आ शबनम प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र आ संस्था सभ मे रम'लागल । ओ हाथबला सिलाइ-मिसिल पर कपड़ा सीबि-सीबि क' सेहो किछु पाइ कमाय लागल आ गामे-घर पर किछु कुमारि लड़िकी सबकेँ ट्यूशन सेहो करय लागल ।

मुदा शबनम के सुखक दिन त' रुइया जकाँ फन-फन उड़' लागल ।

आ आस्ते-आस्ते बारसोइ के शेख-सैय्यद, मौलवी-मौलाना सभके आँखि पर चढ़' लागल-

-कारण जे शबनम बुर्का छुबैत नहिं छल । सेन्टर पर जे भिनसर साँझ आबि क' पढ़बैत छल से बिना बुर्के के । ओकर पर्दा-विरोधी रूप के आर चर्चा मे आनि-आनि क' मौलवी साहैब सभ रसो लैत छलै आ लोक वेद मे अपना ढंगें बदनामो करैत छलै शबनम के ।

-कारण जे ओ मौगी-मेहराह भ' क' सेन्टर पर मास्टरनी के रूप मे पढ़ौनी करैत छल आ काजी साहैब के बेटा बेरोजगारी मे अबन्डपनी करैत छलै गली-कुच्ची मे से काजी साहेब के बरदाइस नै होइ छलै ।

-कारण जे शबनम जुम्मा के नमाज मे जाक' एक दिन नमाज अदा करय लागल जुमराती-महजिद मे-से महजिद मे हंगामा क' देलकै काजी सैहेब । ओ बजलै-कोरान

मे औरत के नमाज अदा करे के अधिकार ना हइ ।

शबनम जवाबी तीर फेकलकै-कोरान मे औरत-मरद बरोबर हइ । काजी मियाँ झूठो-फूसो के फतवा जारी करै हइ । निकालहू कोरान !

काजी मियाँ बजलै-औरत, मरद के मुट्ठी के चीज हइ । औरत के खुल्ला घूमे के छुट ना हइ । परदा-बुरका जरूरी हइ । महजिद मे औरत के आबे से महजिद नापाक हो जाइ हइ ।

शबनम बहस करय लगलै-मरदो के जनम औरते के पेट से होइहे । बुरका त' तुरूक युग मे मरद इजाद कर लेलकै औरत के इज्जति-आबरू मंगोल-तुरूक से बचावे खातिर । आरु बाद मे हथियार बन गेलै । ई त' अरब के गर्मी से बचे खातिर हूआँ के औरत लगावै हइ । इतिहास-भूगोल त' ईहे बोलै हइ ! ई बहस किछु काल चललै आ गोटा-गोटीक' लोक महजिद स' निकल' लगलै ।

मुदा शबनम हारि मान' वाली नै छलै ।

ओ बात के धेने छल-महजिद मे जुम्मा के नमाज अदा करे के छूट जनानीयो के हइ कुरान मे ।

काजी साहैब बजलै-आ हदीस के आयत मे से कहाँ हइ ?

शबनम के अपन मकतब के मौलवी साहेबक गप्प मोन पड़लै-हदीस असली ना हइ, असली कुराने हइ । तोरे शरीयत पढ़ल हइ ? तोरे कोकानियाँ के साटीपीकट जाली हइ, से हमरा मकतब के मौलवी साहैब से बूझल हइ । मोरा मदरसा-बोर्ड के साटीपीकट तोरा नाहति जाली ना हइ ।

सभ नमाजी टकर-टकर शबनम के उतरा-चौड़ी देखि रहल छल । भरिसक्के ककरो शबनम के मुँह खूजब नीक लागैत छल हेतै तत्खना ।

बड़ा महजिद के इमाम साहैब बजलै-अइसन त' कभी ना आ आरू कहीं ना होइहे जे जर-जनानी नमाज अता करै हइ कोनो महजिद मे ।

शबनम बजलै-तोरे मालूम ना हवे इमाम साहैब । हाजी बनबहू तब ना बुझबहू? मक्का, मदीना, काबा मे जनानी-मरद साथे-साथ नमाज अता करै हइ । हमरा टी. वी. मे देखल हइ !

बड़ा महजिद के इमाम साहैब चुप भ' गेलाह ।

काजी साहैब बजलै-ओ त' हज हइ हज ! हज के बाते कुच्छो आर हइ !

शबनम ताना-उतार बजलै-कुच्छो अलग ना हइ । नेमाज नेमाज हइ । ओ बारसोइ के होइ कि मदीना के । जुम्मा के होइ कि शबराती के । एक्के बात हइ !

सब सकदम भ' गेल ।

शबनम फेर बाजल–हो इमाम साहेब ! हमरा मजजिद मे नेमाज अदा ना करे देबह त' हम ना मानब तोरे मजहब के । तोरे की मुराद हइ जे हमें अल्ला मियाँ के नजर मे काफिर हो जइयै की ? बोलहु चचाजान ! हमरा ओहू मे कोई दिक्कत ना हइ ! महजिद मे चुई शब्द नै भ' रहल छल ।

शबनम फेरो चुप्पी तोड़लक–हमें दारूल हर्ब मे रह लेबै चचाजान ! तोरे दार-उल-इसलाम मे मोरा अधिकार ना मिलतै त' हम ना रहब चचाजान ।

सभ मौलवी-इमाम काजी के चेहरा फक भ' गेलै । शबनम के बुझेलै जेना ओकरा बहस स' पस्त हिम्मत भेल काजी जेना ओकरे जिसिम पर नजरि गड़ौने छै। शबनम के गीड़ै लेल लेरो चुऐत हो आ धरम के डरो लगैत हो ।

तावत महजिद करीब-करीब खाली भ' चुकल छलै । मुदा शबनम त' विचारिये क' आयल छल नमाज अता करवाक खातिर । से अन्ततः कइयेक शबनम जुमराती-महजिद स' बहार निकलल ।

मुदा अइ सब घटनाक भयावह पटाक्षेप जाहि उप-कथा मे भेल से एना अछि...

शबनम के मोहल्ला मे एकटा बच्चाक खतनियाँ-पावनि' अनायास भेलै जे शबनम बाद मे बुझलक । तथाकथित खतनियाँ-पावनिक मादे गीतहारि सभ जखन शबनम कें कहलकै त' ओ सिहरि उठल ।

ताही साँझ मे जखन शकील बारसोइ-टीशन पर स' दोकान बन्द क' क' घर आयल त' जाहि ताड़ीक उपहास करवाक लेल ओकरा 'स्काइ-वाटर' कहैत छल ताही ताड़ी सँ डक्क भेल सोझे शबनम के वयस्क-शिक्षा-केन्द्रे पर पहुँचल आ दोसरे तरहक नाटक करए लागल ।

मुदा से ओकर नाटक नहिं, वास्तविकता छलै से तुरंते शबनम बूझि गेल ।

असल मे ओइ बच्चाक खतना क' क' घूरल ओ कसाइ खतना-मास्टर टीशन पर दू-चारि गो लम्पट आ पुरान विचारक मरदाबा सबकें ल' कें शकील कें उनटा पुनटा बुझा देने छल आ ताड़ी पिया क' टंच क' देने छल । शकीलक मर्दानगी के काजी मियाँ के लम्पट-पुत्र ततेक ने ललकारलकै आ खतना-सुन्नत के माहात्म्य ततेक ने खतना-मास्टर बुझौलकै जे शकील सोझे कूद' लागल । ओना शकील सन लोक सँ ई आ एहेन आशा नहिं कयल जा सकैत छल तथापि, शकील मे ई परिवर्तन त' आबिए गेल छलै से देखि क' शबनम चौंकि गेल आ फिरीशान भ' गेल छलै । ओकरा

संभावित संकट के आशंका आ पूर्वाभास भ' रहल छलै आ एहि परिवर्त्तन पर हठात् विश्वासे नै भ' रहल छलै ।

शकील तुरंते सेन्टर परहक सभ औरत-मरद स' समर्थन करबा लेलक जे खतना आ सुन्नत मुसलमानी जीवन मे आवश्यक चीज छिऐ जे परंपरा स' भ' अयलैए । ओ शबनम के देवारि क' निर्देश देलक जे कल से तू बुरका पहन के सेन्टर पर गेल करहू।

शबनम के छगुन्ता लगलै जे-ईहे शकील मियाँ हइ जे बुरका के विरोध में कतना भाषण झाड़ै रहै आ रेलवे लाइन पर हावा मे उड़ै रहै ।

शबनम मुसकिया क' बाजल–कोई किम्मत पर हम तोरे ना चले देब' शौहर जी । तोरे होश आ जेत' भोर में तब तोरे से बात करबो । अखनी चलहू घर हो मियाँ जी ! तोरे ना मालूम हइ जे कुजरा-धुनियाँ मे बुर्का के बन्दिश ना हइ । ई त' हम अब्बाजान के दिल राखे खातिर ओढ़ लेली शुरू मे । मुदा शबनम जेना भीतर स' हहरि गेल छल ।

ओ सेन्टर पर स' अपन घर आबि गेल ।

मुदा शकील नहिं आयल । ओ टीशन पर दोकाने मे जाक' सूति रहल । मुदा अपन दुनू सन्तानक खतना आ सुन्नत करेबाक ओ घोषणा करैत गेल । लोक बुझलक जे निसाँ बाजि रहल छै, अपने नहिं ।

शबनम सगर राति जरैत दीप दिस टकटक तकैत काटि देलक आ काजी मियाँके 'साजिश' पर सोचैत रहल । ओकरा शकीलके मोहब्बतिवला बात सब मोन पड़ैत रहलै। ओ शकील के एक बेर 'कच्चा आशिक' आ एकबेर 'पक्का आशिक' मानैत रहल। ओकरा कान मे शकील मियाँक बात सब गनगनाइत रहलै–शबनम । ए शबनम ! तोरे वारी मे कटैया

तोरे 'दिल' लेबो बटैया ।

ए शबनम !

तू है शाकी

मैं हूँ शराबी शराबी....

आ शबनम अपन जीवन जकाँ कछमछाइत रहल सगर राति । ओकरा अपन आ शकील के खण्डित शरीर मोन पड़लै । शकीलके स्पर्श, आनन्द आ पीड़ा मोन पड़लै । ओ अपना अगल-बगल मे सूतल दुनू बच्चा के चेहरा हंसोथलक आ जरैत दीपक संग राति काटि देलक ।

भिनसर भेने शकील के फेर ओ सब एक लवनी ताड़ी चढ़ा देलक । शकील

के मूड बनि गेलै त' ओ दोसरो लवनी ढारि लेलक । शकील ताड़ी सँ टंच भ' क' अपना घर दिस झुमैत विदा भेल । ओकरा पाछाँ-पाछाँ पूरा मोहल्ला के धीयापुता आ लोकसभ आसमर्द करैत विदा भेल, जेना हाथीक पाछाँ धीयापुताक झुंण्ड थपड़ी पिटैत चलैए-

बोल हाथी बोल !
कुसियार देबौ बोल !
कि हाथी सूँढ़ उठा क' बजैए-बाँ !
आ बच्चा सभ उल्लसित भ' उठैए ।
तहिना शकील बें-बें आ बाँ-बाँ डिरिया रहल छल बापे-पूते ।

गीतगाइन आ ढ़ोलक संग भ' गेलै । खतना-मास्टर पूर्वहि सँ तैयार छल । मुन्नत करएवाली जुबैदा खातून के सेहो शकील खबरि द' देने छलै । ओ सभ आइ कालि्ह इलाका मे बौआइत-ढ़हनाइत रहै छलै-अपन बिजनिस लेल । से अङना म आसमर्द मचि गेलै ।

शबनम कं संझुका सेन्टर पर पढ़यवाली जनानी आ मरदाबा सभ तमा[illegible]क मोन स' थहाथहि क' रहल छलै ।

गीतगाइनि सब जहाँ कि फेरो वैह गीत टोप-टहंकार स' उठौलक कि शबनम नगीना फिलिम के श्रीदेवी जकाँ फेंच काढ़ि क' ठाढ़ भ' गेल । ओकर बेटा आफताब आ बेटी तबस्सुम सकदम छलै आ अपन अम्मीजान के पकड़ि क' ठाढ़ छलै । शबनम वामा हाथ स' दुनू के कसिक' पकड़ने छल आ दोसर हाथ फिरी रखने छल । दोसर हाथक आंगुरमे ओकर बड़का-बड़का बढ़ाओल नह बघनक्खा जकाँ चमकै छलै ।

शकील जहाँ कि बेटा के घिचवाक लेल बढ़ल कि शबनम दहाड़लक-खबरदार शकील मियाँ ! आइ तोरे शौहर ना बुझब' हम तोरे ताड़ी के झोंक मे अपन अम्मीजान, दीदी-जान आ 'बोदी' भूइल गेलह' । तोरे सबकुछ भुला गेल हइ । आज हम जान गेली जे इन्सान कइसे शैतान बन जाइहे । शैतान छूरी मे ना रहै हइ, इन्सान के मोन मे रहै हइ । आज अमीर-उल-जहा, अहमद खान आ तोरे मे कूनो फरक ना रहल'।

-चुप कर ! वेशी बकर-बकर ना करेके । मुँह के लगाम लगाहू शबनम ! -शकील देवारि क' बाजल ।

ओकर मुँह सँ निकलल ताड़ीक भभक सौंसे आङन पसरए लागल । ओ जोर लगाक' बाजल जे पुरान सिस्टम हइ, से सब मानै हइ ।

शबनम टोकलक-काहे ! तोरे अपना खतना के तकलीफ यादि नै हइ का ?

मोरे सुन्नत के तकलीफ कइसे भुला देल' शकील मियाँ ? तोरे हरामी सब शैतान सवार करा देले हइ देह पर । तोरे इलाज हमरा मालूम हइ हो शौहर जी । भाग सब अइ जग से...भाग...तमस्सा ना हइ अइ जग....तमाशबीन धीयापुता सभ भागल आ गीत-नाद बन्द भ' गेलै । जनानी सब शबनम के एहन रूप देखिक' गोटपगरा लाइन देब' लागल। सभ दाँत तर अङुरी देने छल जे शबनम कइसे अपना शौहर के संगे अइसन बोलै हइ आ पुरना रेवाज के नै मानै हइ ? शकील चिकरलक- का हौ काजी सैहैब ! औरत के एतना बोलेके अधिकार हइ ?

काजी-'नइ' मे मूड़ी हिलौलक आ दाढ़ी पर हाथ फेरलक । शबनम बाजल-निकालहुँ पाक कुरान आ शरीयत के किताब ! कहाँ लिखल हइ जे औरत मरद से छोटा हइ ? तोरे के बोलेलकौ हौ मौलाना मोरा अङना मे ? भागहू अइ जँग से । फुटहू । लाइन दहू शकील मियाँ के बन्दा ! भाड़ा के टट्टू !

शबनम फेरो खतना-मास्टर आ सुन्नत करएवाली जुबैदा खातून के लक्ष्य क' क' डपटलक-भाग नटिनियाँ, भाग अइ जंग स' । नै त' तोरे सुन्नत कर देबौ अइ बघनक्खा से ! ओ अपन बड़का-बड़का नह नचौलक ।

नहक प्रदर्शन लेल हाथ उठौला स' ओकर कपड़ा कनेक डाँड़ लग स' हटलै त' डाँड़ मे खोंसल छूरी देखा गेलै । जुबैदा खातून आ खतना-मास्टर डेरा गेलै । शबनम के 'गोस्सा' वला रूप देखि क' । लग मे ठाढ़ एतवारी के किला फतह' होइत देखिके खुशी भेलै । ता शकील मियाँ के मोन हदमदाय लगलै आ ओकरा वोमी होअ' लगलै- 'ओए ! ओए !' एतवारी नाक मुनिक' हँस' लगलै ।

शबनम एतवारी के इशारा केलकै एक बदना पानि शकील के देबाक लेल । मुदा अपने ओहिनाक-ओहिना रणक्षेत्र मे डटल रहलै ।

शकील मियाँक रद्द-बोकार सँ उठल भभक-लहरि सबहक नाक मुनबा देलकै। आङन किछ आर खाली भेलै ।

शकील मियाँ के वोमी स' पस्त देखि शबनम आर मौका पाबिक' बाज' लागल--हम तोरे तलाक दे देब' हो शकील प्यारे । मगर अगला पीढ़ी के जिनगी बर्वाद ना करे देब' । ई हमरे अब्बा आरू अम्मीजान के घर हइ । तोरे बंगलादेश ना हइ । कइसे बदल गेल' हो शकील मियाँ, तोरे लाज-शरम ना अइल' का ? तोरे मर्दानगी के भूत सवार हो गइल' ना ? मरदवला मोंछ-दाढ़ी फरके लागल तोरा ना ? सभे इन्तजाम, हदीस आरू शरीयत मरदे के लिखल हइ ना । जा भाग जा बारसोइ टीशन पर ताड़ीखाना मे । तोरे हम बीबी ना' आज से । तू मोरे शौहर ना आज से ।

शकील मियाँ कँ निसाँ आब कम भ' गेल छलै । ओ सोझे शबनम के पयर पर खसि पड़ल । ओ ताड़ी के 'तौबा' कर' लागल जे ओकर होश गुम्म क' देने रहै। बँचल-खुचल लोक देखलक जे शकील कानि-कानि क' शबनम स' माफी माँगि रहल छलै ।

शबनम कं हृदय में धक् द' दयाभावक संचार भेलै । ओकरा बुझेलै जेना शकील आ ओ रेलवे-लाइन पर अछि । ओ बुरका हावा मे उछालि देलक अछि आ शकील ओकर 'हुस्न' के निंघारि रहल अछि-जेना अस्सी कोस के पियासल मोसाफिर पानि के बदना दिस टकाटक निंघारि रहल हो ।

कि ता काजी मियाँ बजलै-स्साला, जनानी से माँफी माँगे हइ ! रे ऊ तोहर बीबी हउ, शौहर ना हउ ।

कि शबनम फेर एकबेर नह नचौलक । ओकरा आँखि सँ अगिनवान छिटक' लगलै ।

जोर-जोर स' चिचियाय आ बड़बड़ाय लागल-

तोरे नीयत, तोरे इमान
तोरे मोंछ, तोरे हुक्का-पान
तोरे मौलवी, तोरे मुल्ला
तोरे काजी, तोरे कठमुल्ला ।
तोरे हाजी, तोरे नमाजी
सब मोरा बेटी से छोटा हइ !
सब मोरे बेटा के निच्चाँ हइ !

काजी मियाँ आँखि तरेड़ि क' विदा भेलै ।

शबनम के बघनक्खा सन-सन नह रौद मे चमकि रहल छलै आ शकील लाजे आँखि गाड़ने जा रहल छलै ।

❑



कथा

तारानन्द वियोगी

पन्द्रह अगस्त सन्तानबे

तों हमरा बहुत तंग करै छह हीरा ! देखहक जे आइ फेर लेट भए गेलै । एना काज चलतह ? तहन तँ लगाए दहक धिया-पुताक मुँह मे जाबी-हीरा महतो अपनाकेँ अपने कहलनि ।

हम करियै तँ की करियै ? मोने सक्क मे नहि रहैए । सब कहैए जे बेकार के चिन्ता मे पड़ल छह, लेकिन हमरा कहाँ लागैए जे बेकार के चिन्ता छियै-हीरा महतो सोचलनि ।

नै रे भैया नै ! हारि तँ हम नहिये मानबहु । जे रस्ता छौ हमर, छोड़बौ नहि-हीरा अपनाकेँ अपने कहलनि ।

चारूकात रौद पसरि गेल रहै । महिसबार सभ महीस चराक' घुरि आयल रहय। हराठ गेनिहार सभक प्राय: अन्तिम दल बाध दिस प्रस्थान करै छल, कोंढ़ियाठे हरवाह सभ आब बचल होअए तँ होअए । ऐती-जैती तीनटा मैक्सी एखन धरि चौक पर सँ विदा भ' चुकल रहय । भोरुका बेर मे चौक पर चाह पिनहार लोक सभ आबिक' घुरि गेल रहय । मास्टर लोकनि साइकिल पर सवार अपन-अपन स्कूल लेल विदा होअय लागल रहथि । चौक मेन्टेन केनिहार गामक बेरोजगार जुबक लोकनि अपन-अपन स्थान ग्रहण क' लेने रहथि ।

हीरा महतो कँ आइ फेर देरी भ' गेल रहनि । अपन दोकान लग पहुँचलाह। तीन-चारि गोंटे मचान पर बैसल रहथि । सहरसा दिस जाइबला अनगौंआं मोसाफिर लोकनि छैलाह ।

हीरा महतो कठघरा खोललनि । सर-संमान बहार कयलनि । पानि भरि क' अनलथि, बरतन-बासन कँ धोलथि-पोछलथि आ स्टोब जराक' पानि चढ़ा देलखिन। औंटल दूध जे संग अनने छला तकरा दूधौटा मे ध' देलखिन । ई सभ काज मुदा बड़ा

अस्थिर-अस्थिर भेल । लागै छल जेना हीरा भीतरे-भीतर कोनो भारी गुनधुन मे पड़ल खौंत सहि रहल होथि आ ई सभटा काज जेना अपने, सहज गति मे मशीनी ढंग सँ पूरा भ' गेल हो ।

–सैह, ई हालति भए गेलै समाज के ? कोना बचतै देश ? के बचेतै ? समाजक मुँहपुरुख के भेलाह तँ बासदेव भगत ! हँ...अँ...अँ...–हीरा महतो अपना कँ अपने कहलनि आ एक बेर उदास हँसी हँसलाह ।

पहिल खेपक चाह तैयार भ' गेल छलै । मोसाफिर सभ जे बैसल छलाह से लोकनि चाह मँगलनि । हीरा हुनका सभकँ चाह देलखिन आ एक गिलास मे निकालि क' अपनहुँ पीब' लगलाह ।

'की हीरा ? खुजि गेलै दोकान ?'–हीरा देखलनि पं. भोलानाथ मिसर छलाह। पुरान गांधीवादी । हीरा सँ हुनका खूब अपेक्षितारय छलनि आ ओ एहि दोकानक नियमित गँहिकी छलाह ।

'हँ कका, आबियौ । बैसियौ ।'–हीरा बजलाह आ पंडितजी लेल चाह बहार करए लगलाह ।

पंडितजी मचानक एक कोन पर बैसि गेलाह । ओ प्राय: जलाश्रय दिस सँ घुरल छलाह । हुनक धोतीक निचला भाग मे मारितेरास चिड़चिड़ी लागल रहनि ।

पंडितजी कँ पाबि हीरा कने उत्साहित भ' गेल छलाह । ओ अप्पन लोकसन लागैत रहलखिनहें । ई बात भिन्न जे हीरा जहिया कहियो कोनो मुद्दा पर सीधा संघर्ष मे फानलाह अछि, सभ दिन पंडितजी कँ अपना संग अयबाक अनुरोध केलखिन अछि मुदा कहियो पंडितजी सीधा संघर्ष मे नहि उतरलाह । मुदा, ताहि सँ कहियो अन्तर नहि पड़लैक । हीरा सभ दिन एही निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे सीधा संघर्ष टा एकमात्र रस्ता नहि छिऐक, पंडितजीक जे बाट छनि सेहो अपना जगह पर ठीक अछि ।

हीराक नजरि पंडितजीक धोतीमे लागल चिड़चिड़ी पर पड़ल । ओ मुसिकियाइत बजलाह–'सैह एकरा देखियौ कका, चिड़चिड़ी-सन के वस्तु ! की औकाति छै ? लेकिन, मनुक्ख सनके बलशाली आदमी जँ एकरा दलल्क तँ तकरो नहि छांड़लक। भरि जानें बकुटि लेलक । की ?

पंडितजी हँस' लगलाह । कहलखिन–'गाँधीजी देशवासी के सभ सँ पैघ बात यैह ने कहलखिन हौ । ओ कहलखिन जे जे जतहि छह, निर्भय बनह । बड़ पैघ बात ई भेलै की ने ? देखहक हीरा, शोषक कतबो बलशाली होअए, लोक जँ ओकरा सँ डेरायब छोड़ि दिअय तँ प्रश्ने नहि छै जे ओ जीतत । भगवान जे ई दुनिया बनेलखिन

तँ सभकँ उचित-उचित हथियार देलखिन जे अपन-अपन रक्षा करह । से सबकँ छै। मुदा लोक भयभीत अछि तँ, अपने हथियार ओकरा अपने नहि देखार पड़ै छै ! की?

–'हँ कका, ठीके ।' हीरा बजलाह–'आब ई बात दोसर जे हथियार भगवान देलखिन आ कि लोक कँ अपने सँ तकर विकास करना छै ।'

पंडितजी मुसिकिएलाह–'हँ, हमरा-तोरा विचार मे एतबा तँ अन्तर रहले ताकय।'

हीराक दोकानक बामाकात गोलम्बर छै । पाखरिक विशाल गाछक चौबगली जवाहर लालक रोजगार योजनाक अन्तर्गत गोल चबूतरा बना देल गेलैए । चारि बरख बनना भेलैए । एहि बीच मे एक खेप तँ निर्माण भेल आ दू-दू खेप मरम्मति भ' चुकल अछि । ओ चबूतरा ताड़ीबाज, दारूबाज, गंजेरी, जुआरी सभक अतिरिक्त गामक बेरोजगार जुबक सभक आश्रय स्थल सेहो थिक ।

ओहि गोलंबर पर एखनहुँ गोट दसेक नौजबान सभक मर्जालस लागल रहैक। ताहि मजलिस मे एकाएक बड़ जोर हल्ला भेलैक । हल्ला सूनि पंडितजी उठिक' ठाढ़ भेलाह आ पाँच डेग आगाँ बढि देख' लगलाह जे की बात अछि ! कोनो बात नहि रहैक । नौजबान सभ गांजा पीबि रहल छल, तकरे निशांक आवेग मे थोड़ हँसी-मजाक भेल रहैक । पंडितजी आगां बढ़िक' नौजवान सभकँ देखलनि तँ ओहो सभ पंडितजी कँ देखि लेलक । नौजबान सभ पंडितजी कँ देखलक तँ पूरा शक्ति लगा क' मन्त्र उचारलक–

बम भटक, चिलम पटक
दम मारय पुबारि टोल
गांड़ि फाटय पछबारि टोल
हर हर महादेऽऽऽब...

पंडितजी चुपचाप घुरि अयलाह । चिलम-पार्टीक नौजवान सभ पुबारिटोलक छल आ पंडितजीक घर पछबारि टोल पड़ैत छलनि, कहब आवश्यक नहि ।

पंडितजी चुपचाप घुरि अयलाह । हीरा सभटा बात सुनिये रहल छलाह । हुनका लेल ई कोनो नब बात नहि रहनि । चौकक यैह संस्कृति छलैक, यैह सभ्यता । हीरा अनेक बेर एकर विश्लेषणो कयने रहथि आ निर्णय कयने रहथि जे वस्तुत: चौक सम्पूर्ण गामक सभ्यताक एक अइना मात्र छल । ओ एकाध बेर एहि प्रकारक नौजबान सभ सँ भिड़न्तो कयने रहथि । मुदा, हीराक हथियार बहुत पुरान छल । दुनाली बन्दूक सँ ए. के. 47 कँ मातु नहि देल जा सकैत छल । हीरा ओकरा सभकँ कहने रहथिन–'की यौ विद्यार्थी सभ ! यैह होइ ? एखन जीवन-निर्माणक समय अछि । माय-बाप आस

लगेने बैसल छथि । भारत माता कते सेहन्ता सँ अहाँ सभकेँ देखि रहल छथि । यैह होइ ?

हीरा अन्दाज कयने रहथि जे एतबा कहलाक बाद नौजबान सभ तर्क करत । चिलम पीबाक पक्ष मे अपन विचार देत । कहत जे ई नेता सभ आ ई लोकतंत्र नौजबान पीढ़ीकेँ असमसान-घाट पहुँचा देलकै-आब जीवन-निर्माणक कोन सवाल ? हीरा सोचने छलाह जे जुबक सभ एतबा बात कहत तँ हमहूँ अपन बात कहबै जे रे भाइ, निराश भेने तँ काज नहि चलतहु । अन्हरिया जँ बड़ जड़ि आएल छै तँ इजोतक ओरियान करी, तखन ने मर्द ? हीरा अन्दाज कयने रहथि जे अन्तत: एहि जुबक सभकेँ जीवनक दिस आ निर्माणक दिस आकृष्ट कइये लेताह ।

मुदा, हीरा केँ खूब नीक जकाँ मोन छनि । ओ नौजबान सभ कोनो तर्क, कोनो विचार नहि राखैलक रहय । ओ सभ गप-सपक भाषा मे कोनो उच्चारणे नहि कयने रहेय, ओ सभ जबाब देने रहय कोरसमय संगीतबद्ध पद्यमे-

बम भटक, चिलम पटक
दम मारय ब्राह्मण-पुत्र
गाँड़ि फाटय राड़-पुत्र
हर हर महादेऽऽऽब...

ओहि दिन हीरा महतो जेना घुरल छलाह तहिना पंडितजी चुपचाप घुरि अयलाह आ मचान पर बैसि रहलाह ।

गँहिकी सभ पाइ द' द' क' ससरि गेल रहय । सहरसा दिस जेबा लेल एकटा गाड़ी आबि गेल रहै । पाँच-छओ गोटे जल्दी सँ चाह माँगलकै । ओकरो सभकेँ यैह गाड़ी पकड़बाक रहैक । हीरा बिनु एक शब्द बजने गँहिकी सभके चाह पियौलनि आ पाइ लेलनि । दोकान तखन खाली भ' गेलै।

पंडितजी पुछलखिन-'हीरा, आइ-काल्हि तोरा बड़ उदासीन देखै छियह...'

हीरा गिलास साफ करैत रहथि । बजलाह-'हँ कका, हे यैह, बारहो बरनक अइठ धोइ छी, अहिना धोइत रहब । एना मे के उदासीन नहि हएत ?'

पंडितजी केँ ओ समुच्चा प्रसंग मोन पड़ि गेलनि । तीन दिन पहिनेक ओ प्रसंग। ओहि दिन साँझ मे हीरा हुनका सुनौने रहथिन । हीरा ओहि दिन बहुत दुखी रहथि। हीराक मुँहेठ पर दुखक गहनता देखिक' ओहि दिन पंडितजी हिसाब कर' लागल रहथि जे देसक आजादी दिन-गांधीजीक मुँहेठ पर प्राय: एहने पीड़ा रहल हेतनि । ओ हीराकेँ

सम्हारबाक बहुत कोशिश कयने रहथि । हनुमानकेँ जेना जामवन्त आत्मनिरीक्षण करबौने रहथिन, प्राय: सैह चेष्टा ओहि दिन पंडितजी कएने रहथि ।

-'कका, ओ खिस्सा अहाँकेँ मोन अछि ? सन सतहत्तरि मे जे हमर दोकान जरौने रहय । अहाँ तँ ओहि समय मे गाम मे नहि रहैत रही । ओही साल हम लखनउ सँ घूरल रही । लखनउ यूनिभरंसिटी मे सुनल-देखल बात सभ अतमा मे हिलकोर लैत रहय । देखबे केने रहियै जे इमरजैन्सी मे जनता के कत्ते सताएल गेल रहय । भारतमाता केँ कोना निखत्तर पहुँचाय देने रहय छिनरीभाइ देशभक्त सभ ! हमर बाप ओही साल मुइल छलाह । माय कहलक जे गामे आबि कए दोकान-दौरी करह । अइ गामकेँ ताधरि हम चिन्हैत नहि रहियै कका ! ओहि साल एलेक्शन जे भेल रहै, के ठाढ़ भेल रहथि अइठां सँ ?

-'हँ, नन्द किशोर पाठक ठाढ़ भेल रहथि-'पंडितजी कहलखिन-आ, से नन्द किशोर पाठक केहन जे ने हगबा जोग ने मुतबा जोग ।'

-'हँ, ठीक कहलिऐ कका ! आ वैह अइठां सँ जीतल रहय । किऐ यौ बाबू तँ ब्राह्मण छी । वाह रे जाति । समुच्चा ब्राह्मण समाज कांग्रेस दिस । आ पचपनिया जे रहय से तँ बुझियौ जे ब्राह्मणक पयर तरक ख'ढ़ रहय। सबटा भोंट छापि लेलकै।

-'तहिया बुझितो नै रहै लोक आ हिम्मतो नै रहै ।'-पंडितजी कहलखिन ।

-से बात असली नै कका । असली बात रहै जे लोक भिखमंगा रहय । उचित मजदूरी भेटै नहि तँ पेट नहि भरय । तखन तँ ब्राह्मणम् शरणम् । दिल्ली-पंजाब जहिया सँ लोक देखलक तहियाा सँ मुँह मे बोल होअए लागलै, माथ मे दिमाग...हँ तँ से खैर! हमर मोन नै मानलक । हम लखनउ युनिभरसिटीक हालति देखने छी कका ! जान दै ले लोक तैयार रहय । उचित बात लोक तते चिकरि क' बाजय जे अपकारी सब कोन दाबि दै । सब मामला मे देस आगू चलि आबैक । ई बात जे हएत से देसक हित मे हएत की नै हएत ? देशक कल्याण लेल जे उचित थिक, सैह टा एहि राज्य मे कि एहि जिला मे होना चाही । आ से बुझबै, द्वारिका मिसर मुख्यमंत्री नहीं बनथि, तकर आन्दोलन मे जँ पचीस-पचास क्रान्तिकारी जुबक केँ गोली खाय पड़नि तँ तकरा लेल तैयार लोक भेटै छल । कैकटा केँ तँ हम पुलिसक गोली सँ मरैत देखलिऐ यूनिभर-सिटी गेट पर । हम तँ चाह-दोकानक नोकर रही, हमर की औकाति ? लेकिन कका, पाँच-छओ टा शहीद सभक जुलूस मे हम घाट तक गेल छी । हमर मालिक बुझू जे तै ले हमरा आठ चौरिक मारि मारय...

हीरा महतो कने थम्हलाह ओ तुरते पहुँचल दूटा गँहिकी लेल चाहक पानि चढ़ा

देलखिन । स्टोभ पर दूध चढ़ल रहै, तकरा उतारि देलखिन ।

हीराक गप्पक आवेग उत्तर' लागल छल मुदा विधिवत समापन करब हुनका जरूरी बुझना गेलनि । ओ बजलाह-''सैह कहलहुँ कका, ताहू दिन मे अइ गांमे मे हम ठाढ़ भए गेल रहियै । ब्राह्मण लोकनि तँ हमर बात नहि सुनलनि; लेकिन सौंसे गामक पचपनिया कँ हम होश मे आनि देलियै ।' एतबा कहिक' हीरा चुप भेलाह।

'हँ, ठीके होशे मे आनि देलहक ।' पंडितजी बजलाह ।

'हँ अपना दिमाग सँ आदमी सोचए लागय, सैह ने होश भेलै ।'-हीरा कँ लागलनि जे पंडितजी केँ भाव पकड़ै मे किछु दिक्कति भ' रहलनि अछि, ओ स्पष्ट कयलनि।

ससपेन मे चीनी आ चाहपत्ती खसबैत हीरा फेर बजलाह-''आ तै गाम मे आइ हम भगौआ-पड़ौआ भए गेलहुँ । ओ लुच्चा बसदेबा कहलक जे लबर-लबर नै करह, बारहो बरनक अइंठ धोइत जीवन गेलहें, अहिना अपन चुपचाप खेपैत रहह । यैह होअए कका, यैह होअए ?'

हीरा महतो चुप भ' गेलाह । मुदा, हुनक मुँहेंठ एकदम विकृत आ ललौन रहनि। बड़का बिहाड़ि-पानि भीतर चलि रहल छलनि, जकर झांट बाहर मुखाकृति पर साफ खसैत देखार पड़ैत छल । बाजब तँ, मुदा सुनत के ? आ जँ क्यो सुनबे नहि करत तँ बाजब कथी ले-भीतरे-भीतरे मुदा जड़ैत-धधकैत रहब, खौलैत-खदकैत रहब-एहि पींड़ाक अनुभव कहियौ अहाँकेँ अछि ? उपर सँ मौन मुदा भीतर सँ मुखर छलाह हीरा महतो ।

हीरा जाहि प्रश्न सँ अपन बात समाप्त कएने रहथि, तकर कोनो जबाब बूढ़ आ रिटायर्ड गांधीवादी, हाइस्कूलक मास्टर पं. भोलानाथ मिसर लग नहि रहनि । पंडितजी चुपचाप मूड़ी निहुरा लेलनि आ प्रकृतिस्थ होयबाक चेष्टा कर' लगलाह । हीरा हुनको उद्विग्न क' देने रहथि । ओ बजलाह-'चलै छियह हीरा आब ! फेर सुँझुकी पहर भेंट हेतै ।'

'बड़ बेस ।'-हीरा उत्तर देलनि । ता, दुसधटोलीकें आठ-दस टा जुबक सभ दोकान पर पहुँचलै । सभ क्यो बेरा-बेरी कहलकै-'गोड़ लागै छियह हीरा कका !' हीरा सभक अभिवादन स्वीकार कयलनि । ओकरा सभक मेठ रहै पितम्बर पासवान। ओ बतेलकै जे जुबक सभ दिल्ली दिस चलै गेल अछि । की करतै ? गां मे कोनो काज-रोजगार नहि छै । वी. डी. ओ. जाधरि जेल नहि गेल रहय, ताधरि कोनो ने कोनो स्कीम चलैत रहय । मजूरी भेटि जाइक । मुदा, बी. डी. ओ. जेलो नहि जइतय तँ सेहो तँ नहि उचित। साला तिन-तिन हजार लोकक बुढ़बा पेंशन असगरे खाय जाइ!

एकरा सभक दिल्ली जेनाइ हीराकेँ नीक नहि लागलै । ओ बजलाह-''मियाँक दौड़ मस्जिदे तक सब दिन रहतै पितम्बर ?

पितम्बर बाजल-'उपाय की कका ?

-'दिल्ली-पंजाब तँ पूँजी छियै ने हो ? वैह जे कहबहक जे हमरा सभक जीवन छी, से तँ नहि ने छियै ? ओतय सँ कमा कए आनलह तँ आब अपन मातृभूमि केँ रोशन करह । जेना देखहक-तूँ जे दस टा जुबक छह, दसो मिलिक' सौंसे फटोरिया बाध मनहुंडा पर लए लैह । दसो मिलिक' ओतहि डेरा डालह आ सौंसे बाधक सामूहिक खेती करह । बोरिंग दहक । ट्रैक्टर लगाबहक । जेना ओतए खटै छह, तेना एतए खटहक। दिल्ली-पंजाब फीका भए जेतौ पितम्बर !'-हीरा कहलखिन आ प्रेरित-सम्मोहित करै लेल जेना थोड़े कालधरि पितम्बरक आँखि मे आँखि मिला कए तकैत रहलाह ।

'चाह दहक हीरा कका, आठ-दस गो ।'-पितम्बर बात बदलि देलक ।

हीरा मुदा रौ मे छलाह, ओ बजलाह-'नब्बे के एलेक्शन तोरा मोन छौ पितम्बर ? कोना दस-दस दिन हम सब घुरि कए घर नहिं आबी । कोनो गाम कोनो टोल नहि छोड़ने रहियै । अबधारि ललथि रहय ब्राह्मण सब जे जादब कँ जीतए नहि देना छै। लेकिन देखलहक रहय, सबटा दछिनाहा पहलमान सब कोने दाबने रहि गेलै । एक्को टा बूथ कैप्चर कए भेलै ? आ, ओ जे गौरी झा हमरा पर बम फेकने रहए पितम्बर मननपुर चौक पर, मोन छौ ने ओकरा पकड़ि कए तूँ सब कते मारि मारने रही ।'

पितम्बर सेहो आब अतीत के झलक पाबए लागल रहय । ओ बाजल-''हँ कका, एह, ओ तँ समैये जुलुम रहै....।'

-सभक जड़ि मे छै मर्दानगी । अपन मातृभूमि पर जै शान सँ रहबिही, दिल्ली-पंजाब मे से शान चलतौ ?'-हीरा असली बात पर आबि गेलाह ।

'अपन-अपन सांचै के बात छै ।' पितम्बर फेर कनछी काटि गेल ।

-'एना बात किए बदलि देलही ? हम की कोनो नजायज बात कहै छियौ ?-हीरा विचार-विनिमय के मूड मे छलाह ।

पितम्बर एहि बेर सक्कत भ' गेल । ओ बाजल-'हीरा कका, एकटा बात पुछियह? खराबो लागतह ?

-नै भाइ, खराब किए लागत ?

-तूँ-तँ गोली-बम खाए के जिताए देलहक जादब जीकेँ । सरकारो बनि गेलह। लेकिन बाजह, दुसधटोली मे एकटा इन्दिरा आवास बिना घूस के दियाए भेलह ? धनुकटोली मे ककरो एकटा बोरिंग भेटलै ? तोरा टोल मे रोड बनलह ? उचित बात

जँ कहियो कहलहक तँ मोजर देलकह जादबजी ? नेता भेल के तँ असरफी दास आ बसदेबा ! तूँ ही ने कहैत रहह हीरा कका जे बसदेबा पहिने मुंगेर लाइन मे पकेटमारी करैत रहय। आइ ओकर रूतबा देखहक। मुखमंत्री एतै तँ ककरा दजबज्जा पर शरबत पीतै ? तोरा दरबज्जा पर छह मुखमंत्री जोगर इन्तिजाम बात ? सेहो बसदेबे कँ छै ने हौ ? मर्दानगी के गप की कहै छहक हीरा कका ! भगवान जखन पेट देलखिनहें तँ कहुना लोक ओकरा भरै के जोगाड़ करबे करत। अइ मे मर्दानगी के कोन बात छै ?'–एक्के दम मे पितम्बर बहुतरास बात कहि गेलै। मुदा तुरन्ते ओकरा लागलै जे कदाचित ओ किछु बेसिये रूक्ख भ' गेल छल। ओ कहलक–'माफ करियहह हीरा कका ! तूँ हमरा सबहक माथ के मुकुट छिहक। लेकिन, उचित बात जँ बाजबहक तँ उचित बात सुनैयो ने पड़तह।'

हीरा भकोभन्न चुप्पी मे बन्न भ' गेलाह। खिस्सा फेर ओहीठाम आबिक' ठमकि गेल रहैक–ओही बसदेबा लग मे।

जुबक सभ ले चाह बनि गेल रहैक। ओ सभ चाह पिबिते रहय ताधरि मैक्सी स्टार्ट होअए लागलै। हबर-हबर सभ क्यो चाह खतम केलक। पितम्बर पैसा देलकै आ हीरा कें पयर छूबि प्रणाम कयलक। सभ जुबक बेरा-बेरी हीराकेँ प्रणाम कयलक। पितम्बर कहलकै–'चलै छियह हीरा कका, धिया-पूता कँ देखियहक।'

हीरा महतो कननमूँह भ' गेल छलाह। गाड़ी खुजि गेलै। हीरा महतो अपनाकेँ अपने कहलखिन–'यैह होइ छै। लोक बड़ा जतन सँ घर ठाढ़ करैए। मुदा पाँच बरख दस बरख मे घर ढहि जाइ छै। ठीक बात छियै। सभक एकटा औरदा होइ छै। मुदा ककरो अकाल मिर्त किए होइ छै ?'

एही चिन्ता-विचार मे हीरा महतो पड़ल रहलाह। एक्का-दुक्का गँहिकी आबय, तकरा ओ चाह पिया देथि। पाइ ल' लेथि, मुदा हृदय सँ आ मस्तिष्क सँ ओ कतहु आन ठाम छलाह। पछिला बीस बर्खक इतिहास मे ओ बौआ रहल छलाह। इतिहास जे छलै पछिला बीस बर्खक, से घनघोर जंगल बनि गेल छलैक। ओहि दिन मे जतन सँ रोपल पौध सभ आब बेतरतीब झांखड़ बनि गेल रहैक। औषधीय वनस्पति सभ सूखि क' काठ भ' गेल रहै आ बर-पीपर-पाखड़ि-सन वृक्ष सभ धरतीक सभटा उर्वरता सोंखि ल' रहल छल। हीरा महतो देखलनि जे छोटहन लता-गुल्म सभ कि तँ सुखा गेल छल अथवा पीयर-कपीस भेल सुखा जयबाक क्षण मे प्रवेशक' रहल छल। विशाल वृक्ष सभ अपन-अपन छाड़नि के रद्दी सँ सौंसे इतिहास कें कबाड़खाना बना देने रहैक। आ ताहि पर सँ, सभटा रस चूसि गेल तैयो सन्तोख नहि, हीरा पौलनि जे एकहक टा

विशाल वृक्ष दस-दस टा जड़ि नमरा क' धरती कें सोंखि लेबाक आकुलता मे अछि। छोटहन सँ जे विशाल बनि रहल छल, सेहो सभ नहुएँ-नहुएँ एही अभियान मे शामिल भ' गेल छल। आ रे बहिं, ई हमर देस थिक आ कि कोनो जंगल' हीरा अपनाकेँ अपने कहलनि।

ओहि बेर जे बड़का बाढ़ि एलै रहय हीरा,–हीरा महतो अपनाकेँ अपने कहैत रहलाह–आ रे बा, एहन बिपतिकाल नहि देखलौंहें। इन्दिरे गांधी के राज रहै ने ? जते छांटल शैतान सभ रहय सबटा आन-आन काज छोड़ि कए ब्लौक धए लेने रहय। बी. डी. ओ. कँ कहै जाइ हग तँ हगय, मूत तँ मूतय। मिनिस्टर जे रहय चौधरी जी, से तँ लागय जेना एकरे सभक बल पर मिनिस्टर अछि। पचपनियाँ सभक सभटा रिलीफ साला यैह सभ खाए जाइ। आ तों जे ठाढ़ भेलहक रहय हीरा पचपनियाँ दिस सँ, अन्हड़-बिहाड़ि आबि गेल रहै। नै ? आ ओ जे छिनरी भाइ दू जूत्ता मारलकौ रहय तोरा से तँ आरो कमाल कए गेलै। सौंसे परोपट्टा के पचपनियाँ तहिया एक भए गेल रहय। गुलामी के ओ अन्तिम दिन रहै। नै ? आइ कोइ कहतै जे ओहो समय अही गाम मे बीति चुकलैए !

आ ओ जे रहथि हीरा, गजेन्दर मंडल पचगछिया बला, ओहो खूब मदति केलथि रहय। हफ्ते-हफ्ते मीटिंग बैसय पचपनियाँ के। सौंसे परोपट्टा मे चेतना पसरि गेल रहै। पचपनियाँ के डीलर अलग, विभाग अलग, कोन लुच्चाक मजाल रहै जे एकटा बेहुसल बात कहि देतै ? बात-बात पर कलक्टर-एस. पी. कँ उतरए पड़ैक, बी. डी. ओ. के कोन मानि ? सभ कहौ तोरा नेताजी। नै ? लेकिन, नेता तों भेलहक कहिया? सभ दिन चाहक दोकान करैत रहलाह, बारहो बरनक अइंठ धोइत रहलह !!

फेर हीरा ओतहि पहुँचि गेलाह। मोन कचकि उठलनि। कचकले मोन सँ हीरा धरती पर उतरलाह तँ मोन पड़लनि जे दूध बला कँ आबक बेर भ' गेलैए। ओ दुधौंटा खाली कयलनि आ सस्पेन-डेकची-दुधौंटा कँ कल पर ल' जा क' मांज' लगलाह। आब बड़ीकाल धरि कोनो गाड़ीके आना-जाना नहि छै, चौक खाली भ' गेल अछि।

कोनो छोटछीन क्रिया अपन समानताक बहन्ना सँ पैघ-पैघ घटना सभकेँ स्मृति मे जगा दैत छैक। हीरा बासन मांज' लगलाह त' अनेरो एकान्ती मुस्की मुस्कियाब' लगलाह। अपनहिं के अपना सम्बोधित कर' लगलाह। जेना एहि बासन कें ओ मांजि रहलाहे तहिना एक दिन भीलो-तिरबेनी कँ नागेसर-टुनमा कँ, सीतो आ बसन्त कँ, धुर कत्ते कही, सौंसे पचपनिये के माँजने रहथि।

वाह जी, नेताजी, खूब केलह, मांजैत-मांजैत गतर-गतर के मैल छोड़ा देलहक–ओ

अपनाके अपने कहैत छथि । मुदा सभ चलि गेल । सभक सभ चलि गेल । मैदान एकदम खाली । हीरा केँ मोन पड़लनि-जाइतकाल पितम्बर कहने रहै-चलै छियह हीरा कका, धिया-पूताकँ देखियहक ।

'ठीके तँ बात छियै भाइ, हमहीं ने एकटा बचल छियै । एक माने मे अगर सोचहक तँ बसुदेबा कोनो अनचित बात नै कहने रहय । हमहूँ तँ ओकरा बड़ भारी बात कहने रहियै । हँ, उचित कहने रहियै से अलग बात, लेकिन रहै तँ भारियें ।' हीरा सोचैत रहथि ।

परसू साँझ खन हीराक दोकान पर नेता सभक रठान लागल रहैक । बजरंग दल के पाठकजी आ कांग्रेसक ठाकुरजी मे टक्कर सुरु भेल रहै । विषय रहै-अलकतरा घोटाला । मुदा तुरन्त चर्चा चारा-घोटाला धरि पहुँचि गेल रहै । तखन एहि मे वी. पी. पा. क सुनील झा आ राजद के वासदेब भगत सेहो शामिल भ' गेलाह । भाजपाक रामचन्द्र झा आ समताक धनुषधारी सिंह केँ चौक पहुँचबा मे आइ थोड़े विलम्ब भेल रहनि जरुर, मुदा चारा-घोटाला सुरू होइत-होइत, ओहो लोकनि जुमि गेल छलाह । धुरझार चल' लागल, धुआंधार । कखनो-कखनो तँ एहन होइक जे एक्के बेर पँच-पँचटा बीर अपन बहुमूल्य सिद्धान्त-वाक्य दाग' लगैत छलाह । ओ क्षण आसमान केँ फाड़ि दे बला क्षण होइत छलैक । चौक मुदा अभ्यस्त छल । चौक लेल धनि-सन । जनता-जनार्दन सभ अपन-अपन काज-रोजगार मे, अपन-अपन अमल मे लागल रहैत छलाह ।

चर्चा चलि रहल छल घमासान, हरेक नेता अधिक सँ अधिक अभिव्यक्त होयबाक अफरातफरी मे छलाह । मुदा, सभ कियो एतबा समय निकालि लेल करथि जे बीच मे एक बेर हीरा के पूछि लेल करथिन-'की हीरा, ठीक कहै छियै ने ?...की हीरा भाइ, तोहर की विचार ? हीरा कका, तूंही कहक जे ई बात छियै कि नै ?' हीरा एक तरहें विचार-गोष्ठीक केन्द्र मे छलाह, यद्यपि कि ककरो कहियो ओ मंगनी चाह नहि पियाबैत रहथिन ।

लागल जेना मण्डन-दल आ शंकराचार्य-दल मे तुमुल शास्त्रार्थ चलि रहल अछि। आ निर्णायक छथिन भारतीक अवतार हीरा महतो । ताहि तरहक प्रतिष्ठा हुनका देल जाइनि ।

प्रतिष्ठा हुनका बड़ भारी देल जाइनि, तकर कारण ई नहि जे चर्चाक अन्त मे ओ विजेता केँ माला पहिराक' श्रेष्ठ घोषित करै छलखिन, तकर कारण बरू ई जे ओ लगातार चुप्प रहै छलाह, एकदम गुम्म आ बड़ जरूरी भेल तँ हाँ हूँ' करैत छलाह।

चर्चा चलल छल ओहि दिन जर्बदस्त, मुदा पंडित लोकनिक कहल छनि जे दुनियाँ मे जतेक तरहक बल अछि, ओहिमे टाकाक बल सभ सँ जब्बर होइए । जितलाह

अन्तत: बासदेब भगत । सौंसे इलाका मे मशहूर छै जे बासदेव भगत पछिला पाँच साल मे पचास लाख टाका कमेलनि अछि । ओ सभकँ निरूतर क' देलखिन । एक तरहें बुझू जे सभ कियो गछि लेलनि जे चारा घोटाला जे छल से बहुत कारण सँ उचित बात छल । आ ई जे भेल अछि से कोनो गलत नहि भेल अछि ।

बस, यैह क्षण छल जखन हीराक देह मे आगि लागि गेल रहनि । आगि मात्र मुहावरे टा मे लागल होइक, से बात नहि । हीरा एकदम होश मे अनुभव कएने रहथि जे हुनका देह मे आगि लागि गेल छनि आ ओ धू-धू क' जरि रहलाह अछि ।

भयावह प्रतिहिंसाक आवेग मे ओ बुमकारा छोड़ने रहथि-'रे बसदेबाऽऽऽ...' एतबे बाजि क' ओ रेघा देने रहथि । विस्फारित आँखि रहनि-आगि मे धह-धह करैत आँखि एकाग्र बासदेब भगत पर टिकल । निचला ठोर समुच्चा ओ दाँत तर मे दाबने रहथि आ दांत किचने छलाह । सभ क्यो चकित रहि गेल रहथि । बासदेब भगत कँ सेहो आश्चर्य लागल रहै जे ई हीरा कका तँ हुनका ओहू दिन मे बासदेब छोड़ि क' बसदेबा नहि कहियो कहने रहथि, जाहि दिन मे ई हुनकर चेला छलखिन ।

प्रतिहिंसाक आगि मे जरैत हीरा महतो बाजल छलाह 'रे निर्लज्जा, एतबो सरम कर !...जे कुकर्म करै छैं से करैत रह, लेकिन एना समाज मे नै कहियै जे कुकर्मे करब ठीक छियै । एतबो रहम कर बहिँ...'

ओ रे, बा ! ई त' बड़ भारी बात भेलै । करोड़पति आ एम. एल. ए. होइ लेल अग्रसर बासदेब भगत केँ फूकि देने रहनि-आऽऽरे राम, एना तँ कोइ एस. पी. कलक्टरो ओकरा नहि कहि सकै छै । ओ क्रोध मे उठिक' ठाढ़ भ' गेल रहथि । आ हीरा महतोक मुँह लग हाथ ल' जा क' कहने रहथि-'ऐ हीरा कका, जबान सम्हारि कए बात करह । कोन बेटीचोद के कोठीक चाउर हम निकालि कए लए आनलियैहें हौ ? कहि त' दिअए अइ गामक कोइ आदमी ? बिना परमान के बात नहि बाजल करह।'

-'परमान ? हँ, रे बाबू, परमान तँ तोरे टा हिरदय जानैत हेतौ ।' हीरा महतो आस्ते सँ बजलाह ।

बासदेव भगत मुदा, जेना हीराक बाते नहि सुनने होथि, घृणा आ क्रोधक पूर्ववत् आवेग मे बजलाह,

'आदमी के अपन औकात देखिक' बात करना चाही । खाइ ले' बार नै बोल बड़ भारी हौ ? बारहो बरनक अइंठ धांइ छह, अहिना, धांइत जिनगी बिततह । आ सुनि लैह, बेसी लब-लब करबह तँ जी पकड़ि कए घीचि लेबह ।

एही सभ तरहक दू-चारिटा आरो सूक्ति आ लोकोक्तिक प्रयोग ओ प्राय: कयने हेताह, से तकर स्मरण सोगक कारण हीरा के नहि छनि, आ क्रोधक कारण बासदेबो के नहि ।

क्रमश: उचित-अनचित के ओझरा सोझरा लेने रहथि हीरा । उचिल जे छैक से रहबे करतैक । जे कहलियै से उचित रहैक । बसदेबो अपना हिसाबे ठीके कहलक। मुदा बसदेबा हमर लोक नहि रहल आब । हमहूँ ओकर लोक नहि छियै !–हीरा महतो सोचैत छथि । आब हुनकर मुखाकृत्ति बदलि रहल छलनि । बात एकटा बासदेव भगतक नहि छै । बात बढ़ैत धर्मोहि के छै ।

एक मानें में देखहक त' लड़ाइ जारी छै । असल में संत्त छै खाली लड़ाइ । लड़ाइ मे सोग की उदासी की ? नै रे भैया नै । हारि तँ हम नहिये मानबहु । जे रस्ता छौ हमर, छोड़बौ नहि ।–हीरा अपना के अपनहि कहलनि ।

उठिक' ठाढ़ भेलाह । बरतन-बासन माँजब खतम भ' गेल रहनि । मोन पड़लनि जे दूधबला कैँ तँ आइ ओ मना क' देलखिन अछि । साँझ मे तँ आइ दोकान बन्द रहतै । ई बात अपन सन्दर्भक संग मोन पड़िते हीराक नस मे उत्साहक सुरसुरी पसरि गेलनि । केहेन जुलुम बात ! हीरा भरि दिन ई बात कोना बिसरल रहलाह ? उचित बात तँ नहि बिसरबाक चाही । हीरा महतो के आब सभटा फरीच्छ भ' रहल छलनि।

हीरा दोकान बन्न क' तुरन्त आंगन जायब उचित बुझलनि । धिया-पूता फूच्ची-शीशी जमा क' सकतै की नहि ! दूटा केराक गाछ सेहो काटबाक अछि । गेटो बनाए देबै । दीप जरए आइ भारतमाता के नाम पर । बन्दे मातरम् ! हीरा अपना के अपने कहलनि–नै रे भैया नै । हारि त' हम नहिये मानबहु । जे रस्ता छौ हमर छौड़बौ नहि ।' बरतन-बासन माँजब चलिते रहत । अईठ-कुइठ साफ होइते रहतै ।'

लगभग दौड़ैत सन हीरा आंगन घुरलाह । उत्साह सँ कनकन करैत । फुच्ची-शीशी ताकल गेल । बाती बनल । तेल पड़ल । केराक थम्ह काटल गेल । गेट सजल । बाँसक बत्ती जहाँ-तहाँ बान्हल गेल । आ ताहि पर डिबिया जराओल गेल । धिया-पूता आनन्द मे छल । सौंसे टोलक नेना-भुटका जुमि गेलै। मुक्त आलाप पसरए लागल। हीरा परम प्रसन्न छलाह । हुनक मोनक उदासीनता जेना झरकि-झरकि धरती पर खस' लागल–एनमेन फतिंगा जकाँ ।

पं. भोलानाथ मिसर देखलनि जे सौंसे गामक भकोभन्न अन्हरियाक बीच हीरा महतोक दलान जगमगा रहलनि अछि । दलान पर गेलाह । पुछलखिन–की हीरा, ई की हौ ?

–आइ स्वर्णजयन्ती दिवस छियै कका । तकरे परब मना रहल छी। दीप जराक' राखब जरूरी छै । नै ? आत्मविश्वास सँ हीरा कहलथिन । तखने दुनू गोटे देखलनि नेना-भुटका कोनो मिझाइत दीपके फेर सँ जरेबाक प्रयास क' रहल छल । दीप जरि गेल । एहिमे पितम्बर पासवानक बेटाकेँ अगुआ बनल देखि हीराक हृदय जुड़ा गेलनि।



कथा

देवशंकर नवीन

गति

जगत झा हमरा गामक बिलाड़ि छथि आ हमर गाम थिक सुंगठी । जगत झा हमरा गामक रखबार छथि अर्थात् बिलाड़ि सुंगठी जोगैए । जगत झाक परदादा हाथी पोसने छलाह । गामक मुखिया-सरपंच किछु नहि छलाह, मुदा सौंसे गामक आपद-विपदमे ठाढ़ रहैं छलखिन । गामक लोक मानि-मोजर दै छलनि । ओहि परिवारक धाख छलैक गाममे । हुनकर बेटा थोड़ेक भ्रष्ट भेलाह । अगिला पीढ़ी कनेक आओर, ताहिसँ आगू अबैत-अबैत जगत झाक बापक चला चलती अएलनि । ओ भ' गेलाह स्वार्थी, अय्याशी आ दुराचारी । गामक लोक खानदानी असरिक कारण विरोध नहि करनि मुदा मोने मोन कुनमुनाएल रहैत छल ।

जगत झा कॉलेज धरि पढ़ि अएलाह । हाथी पहिनहि बिका गेल छलैक । बखारी उजड़ि गेल छलैक । जमीन जाल कमि गेलैक, बिका गेलैक, हिनकर दियाद-बाद मजूरी कर' लागल । दिल्ली-पंजाब ध' लेलक । समय बदललै । काजुल भरि पेट खाए लागल । धोधिकेर स्थानान्तरण भ' गेल । आ जगत झाक खानदानक असरि कम होअए लागल । जगत झा साकांक्ष भेलाह । पुंरना प्रभाव कोना आपस होएत...! आब तँ गामक रारो-रोहियाकेँ टाका गनए आबि गेल छैक...! जगत झा चिन्तित भेलाह । हुनका एकटा बाट सुझलनि । ओ एकटा बिलाड़ि पांसलथि ।

बिलाड़ि घरेलू जानवर होइए । बिलाड़िसँ लोककेँ बड़ नफा होइ छै । घरमे मूसकेँ नहि आबए देत । मूस बड़ शैतान होइए । जड़ि कोरि कए समृद्धिक गाछ खसा देत । बिलाड़िक डरें, मूस नहि आओत । तें जगत झा बिलाड़ि पोसलनि । जगत झाकेँ बूझल छलनि जे बिलाड़ि अलच्छ जानवर होइत अछि । कुकूर प्रार्थना करैत अछि जे घरमे सभ सुखी सम्पन्न हो । मुदा बिलाड़ि प्रार्थना करैत अछि जे घरक सभ किओ आन्हर भ' जाए । बिलाड़िक पेट कखनहुँ नहि भरैत अछि । जगत झाक घरमे ई बिलाड़ि

अपन सभ अविवेकक संग छल । मुदा ओ बिलाड़िए हिनकर गुरु छल । बिलाड़ि, अर्थात् पोसनिहारक शत्रु ! बिलाड़ि पोसनिहारक थाड़ीक दूध-माछ ओकरा थाड़ीक आहार नहि चोराओत तँ कत' जाएत...? जगत झा अइ बिलाड़िसँ सभ किछु सिखलनि। राजनीतिक भ' गेलाह । श्रमिक आ निम्नजातीय जनताक पक्षमे बाजए लगलाह । बड़का-बड़का दार्शनिक बातक जाल फेंकि कए गाम कए फांसि लेलनि । मुखिया भ' गेलाह ।

हमरा गामक नाम थिक मोहनपुर । छोटे टा गाम अछि । भूमिहार आ डोमक अलावा हमरा गाममे सब जाति अछि । सामाजिक लोकाचार मे तँ भूमिहारक कोनो प्रयोजन नहि पड़ैत छैक, मुदा डोमक बिना तँ काज नहि चलए । उपनयन हो अथवा श्राद्ध डोम नहि रहत तँ संस्कार संपन्न नहि होएत ।...से डोम अबैए हमरा गाममे चन्द्रायणसँ। ओतहि तीन चारि घर डोम अछि । हमर गाम भिखो डोमक हिस्सा मे छैक । भिखो डोम ताड़ी बड़ पीबै अछि । एकबेर कहांदन ताड़ीक उधार चुकबै लेल दुसैयां पासी बड़ तंग केलकै तँ पाँच सय टाका मे भिखो दू बरखक लेल हमर गाम बन्हकी लगा देने रहए । अर्थात् ओइ दू बरख मे जे मरनी-हरनी भेल, तकर दान दछिना सभटा ओइ महाजनक भेल । दू बरखक बाद भिखो एकटा सूगर बेचि कए हमर गाम आपस लेलक। अर्थात् हमरा गामक औकाति एकटा सुगरक दाम सँ आपस आबि गेल ।

अही गाममे मनोहर धानुक छल । बड़ कमासुत । बड़ ईमानदार । सौंसे गामक बाभन-रैजपुत लेल मनोहर मुहलगुआ छल । यद्यपि मनोहर के बेटाक उमेरक बाभन रैजपुत ओकरा 'मनोहरा' कहै । सम्मानजनक संबोधन कहिओ नहि सुनलक ओ । मुदा तकर मलाल कहियों नहि भेलैक ओकरा । समांग आ विचार-दुनूसँ खूब सम्पन्न छल। अपमानक बोधसँ ओ दूर छल । अइ सब चिन्ता फिकिर मे कहिओ रहबो नहि कएल। भरि देह कमाए, भरिपेट खाए, भरि खाट सूतए...। तइ मनोहरकेँ एकटा चान सन बेटी जनमि गेलै । बेटी ततेक सुन्नरि छलै, जे मनोहरक टोल-टापरक लोककेँ ओकर नामे नहि सुझै । जनी-जाती कहै–छौंड़ीक सकल-सूरैत केहन बड़का लोकक धीया-पूता सन भेलैए । रार-रोहियाक घर मे जनमि कए की करतै...? आब एकर की नाम रखतै? ...अइ गामक बाभन रैजपुतक धीया-पुताक नाम तँ बड़ दीब छैक, तेहने कोनो नाम राखि दै जाउ !

मनोहर प्रसन्नतासँ फूलल तँ अवस्स छल । मुदा जनीजातिक मन्तव्य पर तमस गेल–ई बँहि ! मौगी-मेहर सर्वनाश करत । कोनो बड़का लोकक बात बच्चाक नाम रखै जेबही । पता लगतै, तँ भकसी झोंकि देतौ ! सुन हमर बात ! एकर नाम 'चनरमा'

राख । देखै छिही चनरमे सन झलकै छै । जनीजातिकँ नाम स्वीकार्य भेलै । सब अपने मे बाजल–पुरूखक दिमाग सत्ते बड़ी टा होइ छै !

जेना 'मनोहर' सँ मनोहरा भेल, तहिना 'चनरमा' सँ चनिया भ' गेल । चनरमा बढ़ए लागल । चलए लागल, दौड़ए लागल, देखए लागल, बूझए लागल, सोचए लागल, लजाए लागल...माने वय: संधि ओकर आबि गेलै । आब ओ दौड़ि कए नहि चलैए, तें ठेसि कए नहिएं खसत, से आवश्यक नहि । एते टाक गाममे एते रास राहु छैक, एकटा चनरमा कतए नुकाएत ? बाभन रैजपुतक गछ मे लोक कहै–छिनरी सांइक छौंड़ी, एतेक सुन्नरि कोना भ' गेलै हौ ?...एकर माइ तँ छिनारि रहबे करै । ई निश्चिते कोनो बाभन रैजपुतक जनमल थिक । एकरा पर नजरि राखब आवश्यक थिक । भोग लगएबाक व्यवस्था कएल जाए ।...राहु सब तैनात भ' गेल । चनरमा नुकाएल फिरए । मलाह सब जाल फेकए, माछ पिछड़ि जाए ।· मुदा कते दिन ! खांइछ महक लोरहा कतए जाएत ? खस्सीक माइक खरजितिया की ? सुंगठीक भोग बिलाड़िकेँ लागि जाए, तकर व्यवस्था होइत रहल । बिलाड़ि सफल नहि भ' सकल । बिलाड़ि चौकस भ' गेल। चनरमा जतबे सुन्नरि छल, ततबे चलाकि । पढ़ितए-लिखितए तँ निश्चित नों करितए। सज्जनो कम नहि छल, मुदा गामक राहुक नजरि ओकरा ठोकि बजाकए बुरोक बना देलकै । गामक अधेरो लोक सभकेँ ठांइ-पठांइ जवाब दै । माइ बाप कहबो करै–गे छौंड़ी, तोरा एकोरत्ती लाज विचार नहि होइ छौ ? बापक दाखिल छथुन मालिक, तिनका मुंह लागल जवाब कोना दै छिही ?

चनरमा कहै, तों आओर नहि बुझबहक अइ बभनाक नेत । ई बाप जकाँ करितै तँ एकरा गोर नहि लगितिअइक ! एकर खानदाने मारल छै । एकरा पोतीक उमेरक छिअइ हम । आ बाट घाट देखैए तँ कुकुर जकाँ पछोड़ ध' लैए । एकर बेटोके इएह हाल छै । ई आओर तँ खपड़ी सँ चानि तोड़ै जुकुर छै ।

मनोहरकेँ चेत भेलैक । बेटी पर भरोस भेलैक । ताकि हेरिकए ओ बेटीक बियाहक' देलक । चनरमा सासुर गेल। मास-दू मास रहल आ सांइकेँ डेनिअएने मोहनपुर आबि गेल । बापक डीह पर एकटा दूचारी चढ़बौलक आ रहए लागल । सांइकेँ कहलक–हे है, तोहर गाम छिअह बकौर आ हमर गाम छी मोहनपुर । बकौर मे तोरा घड़डी छोड़ि कए आर कोनो संपति तँ नञि छह ! हमरहुँ बापकेँ एतए कोनो संपति नहि अछि । बाभन रैजपुतक गाममे छोटका जातिक जनानाक नेत-धरम बचब कठिन होइ छै । बकौरो मे तँ दुनू बेकैत बोइने कए कए खाएब ने, तँ एतहि खा, एतहि कमाब' । तों तँ पुरुख छह, तोहरकेँ की बिगाड़ि लेतह । मुदा हम तँ जनाना छी । तोरा गामक राक्षस सभकेँ

तँ चिन्हैं नहि छिअह । अइ गामक तँ सभटा कुकूर हमरा चीन्हल अछि । ...एतै रह', दुनू बेकैत भिरि देह कमाएब, भरि पेट खाएब । एतुक्का बाट-घाट, कांट-कूस, खाधि-पोखरि, कुकूर-बिलाड़ि, मनुक्ख-राक्षस चीन्हल अछि । हूसै कं अवसर कम भेटत ।....की विचार....?

बकौर बलाकेँ बकौर लागि गेलै । ओ सोचलक-लोक कहै छै, मौगी जातिकेँ बुधि नहि होइ छै । मौगीकेँ नाक नहि हो तँ ओ गुँह खाए । मुदा एकरा देखि कए के कहतै ! आरे छिनरीक भाइ ! ई मौगी तँ बड़का-बड़काक कान काटै छै ! ठीके कहैए ई, रहि जाइ छी...। फेर सोचए-बाप माइकेँ छोड़ि कए बौह संगे रहि जाएब, उचित होएत ? सासुरमे बांइन करब शोभा देत ?

फेर सोचए-किऐ नंहि शोभा देत ? ई शोभा की होइत अछि ?

मारे उठा-पटक आ सांच विचारक पश्चात बकौर बलाक दिमाग निर्णय देलकै आ ओ मोहनपुरमे रहबाक लेल तैयार भ' गेल । दुनू कमाए-खटाए लागल । खाए-पीबए लागल । गाम आ गामक लोक अपना गतिएं चल' लागल । जगत झा परेशान छलाह। गाम अपना गतिएं किऐक चलत ? बिलाड़ि तँ चाहत, जे लोक आन्हर भ' जाए आ हम ओकरा थाड़ीक ग्रास गीड़ ली । जगत झा बिलाड़ि जकाँ जमीन खोखरए लगलाह।

चनरमा आब अपन नाम 'चनिए' बुझैत अछि । चनरमा' नाम बिसरि गेल । लुद-लुद चारिटा बेटी जनमलै । साले-साल परसौती होइत गेल । चारिए बरखमे हहरि गेल, भखरि गेल । परसौतीक बेथा आ बुतातक अभाव कोनो आसान बात थिकै?

मुदा जगत झा व्यस्त छलाह । हुनका चनियाक दुख धन्धासँ कोन मतलब छलनि। हुनका अनिलो सिंह सँ कोनो मतलब नहि छलनि । मतलब रहनि । मात्र अइसं, जे ई गामक शान्ति, सुस्थिर नहि रहए । गामकेँ हरदम हमर प्रयोजन बनल रहैक ।'

तरबन्नीसँ ताड़ी पीबि कए अबैत अनिल सिंहकेँ देखिकए जगत झाक आंखि चमकि उठलनि । ठकनी बुढिया जकाँ पासा फेकलनि-अनिल हौ, चनिया तोहर पैसा देलकह की नहि ? ओकर सांइ आइ-काल्हि चिमनी पर नगद कमाइत अछि । तसील लेह । नहि तँ डूबि जंतह ।....

भ' गेल, राकसकेँ नोत...

अनिल सिंहक बाप रेलवे मे टी. टी. अछि । मारे बटी तसीलै अछि । बेटा गाममे ताड़ी पीबि कए टर्र रहैत अछि । जगत झाकेँ गामक लोकक सम्पन्नतासँ पेटमे रांग उखड़ि जाइत छनि । मुदा अनिल सिंह सन बेटा जँ गौआंकेँ हो, तँ नीक लगै छनि । ओकरा बलें ओ गामकेँ कखनौ ओझरा सकै छथि ।...

अनिल सिंह सोझे चनियाक आंगन आएल आ बाजल-गै चनिबाँ ! कहांदन सांइ आब चिमनी पर कमाइ छौ । तहूँ आब तँ खूबे छिरहारा खेलाइ छैं । हमर पैसा किऐ नहि दै छें ?

चनियां बाजल-हे हौ ! बेसी चपरसि कए नंइ बाज' । निशां पीने छ' तए जा अपन माइ-बहिन लग निशां देखब' गए । भला लोक जकां गप कर' । तोहर पन्द्रह टाका छह, जहिया हाथ पर हैत तहिआ पहुँचा देब' । कोनो बैंकक खजाना नंहि देने छह । जा चुपचाप । निशां पीकए एना अनका घर दुआरि मे बौखाएल नंहि फिर'।

अनिल सिंहकेँ निशां चढ़ले रहै । जातिक अहंकार, पाइक अहंकार, निशांक अहंकार, जवानीक अहंकार...चनिया पर टूटि पड़ल-गै छुतहरनियाँ ! रार-रोहिया भ' कए तों बड़का लोक संग लबर-लबर बजबें ? आइ तोरा हम नुआ खोलिकए नांगट नंहि कएलहुँ त' हमर नाम नंहि...।

ता बकौर बला चिमनी पर सँ आंगन आएल । भरि दिनक पिताएल मोन रहै। डेढ़िया पर सँ आंगनक जे दृश्य देखलक, ताहिसँ ओकर तरबाक लहरि मगज पर चढ़ि गेलै । दुनू बेकैत मिलिकए अनिल सिंहकेँ खूब कूटलक । अनिल सिंह जान बचाकए पड़ाएल...। चनिया दुनू बेकैत प्रसन्न भेल ।

मुदा प्रसन्नता बेसी काल नहिं रहलै । चारिए पलक बाद अनिल सिंह अपन दियाद बाद संग आएल आ चनिया दुनू बेकैत के ओकर बाल-बच्चाकेँ माल-जाल जकां डेगा कए चल गेल । किओ आहा कहनिहार नहिं भेलै । पड़ोसिया सब हुलकी मारए नहिं अएलै...। चनिया सभ तुर कुहरैत रहल...। जगत झाकेँ समाद पहुंचल । गामक मुखिया छथि । बिलाड़िक भागें सीक टूटल ।

आब नव खेल शुरूह भ' गेल । जगत झा दूत पठाकए बकौर बलाकेँ बजबौलनि आ मंत्र देलनि-बकौर बला ! अंगना ढूकि कए, ककरो बौह-बेटीक संग अत्याचार केनाइ बड़ भारी अपराध छिअइक आ ताहि पर लोठीसँ मारि-पीट सेहो भेलह अछि। धीया-पूताकेँ संहो चोट लगलह अछि । चारू त' बेटिए छियह । छोटकी तँ ओहुना लटुआएल रहै छह। कंठ दाबिदहक आ भोरे अन्हारे दुनू बेकैत चल जा सहरसा। एस. पी. एखन छोटका जाति छिअइ । छोटका जातिकेँ बड़ फंभर करै छै ।...चल जा। अइ सार रैजपुत्तेकेँ सिखा दहक जे अत्याचार कएने की भा पड़ै छै...।

बकौर बलाकेँ दिबगियान खुजि गेलै । सोचलक-इएह छिअइ पढ़ै-गुनै के नफा। गाममे पढ़ल-लिखल आ बुझनुक मुखिया हो तं गरीब-गुरबाकेँ बल भेटै छैक ।...बकौर बला आंगन आएल, बौहकेँ सब बात कहलक आ भोरे अन्हारे एस. पी. क ओतए जएबाक

तैयारी करए लागल । तेख-तामस ओकरा भीतर सुखाएल चेरा जकाँ धधकि रहल छलै...। चनिया बड्ड रोकलकै-हौ बकौर बला ! अइ बाभन-रैजपुतक फेरीमे नहि पड़'। हौं ई सब राक्षस छिअइ, राक्षस ! सांझ खुन हमरा आउरकेँ मूंग जकाँ डेंगा कए चल जाइ गेल । आइ पापी पर किओ थूक नहि फेकलकै आ हमरा आउरकेँ बुधि सिखबेए। तां सुध लोक छह। एकरा सभक चकरचालि तों नहि बुझबहक। हो, पुलिसक आतए नहि जा । अइ गामक हम बेटी छिअइ, एकरा आआरकेँ हमर कोनो मोह माया नहि भलै तँ ओइ पुलिसबाके के हंते हौ ? एकटा मौगिए ने ! अइ जगत झाकेँ तों नहि चिन्हबहक हौ ! ई तँ दोसरक कपार पर बेल फोड़िकए अपने खाइ छै...।

मुदा बकौरबला नहि मानलकै । एस. पी. लग चनियाकेँ जाइए पड़लै । बकौर बला ई सोचि कए गेल रहए जे जहिना पल झपकैत जगत झा कहलनि अछि, तहिना पल झपकैत एस. पी. हमरा अदारि कए लए जाएत आ एहन मोकदमा हनि कए लिखत जे अनिल सिंहकेँ फांसी लटका देल जेतै । छोटका जातिक राज छिअइ । मुख्यमंत्री धरि छोटका जाति छिअइ । अही बेर मोहनपुर गामक बाभन रैजपुतकेँ सिच्छा भेटि जेतै । मुदा कतोक पूछ-ताछक पश्चात् एस. पी. सँ भेंटो नहि भेलै । दुनू बेकैत आपस चलल । कहल गेलै-जे ई मोकदमा पहिने थानामे लिखाबए पड़त' । तोहर घरबालीकेँ बयान दिअ' पड़तै । डाक्टरसँ सर्टिफिकेट लेबए पड़त' । चोटके आरेपके सर्टिफिकेट बनबा कए थानामे रपट लिखबाब' आ ओ डायरी एतए पहुंचाब'। हजार-दू हजार के खर्चा पड़त' । मुदा काज भ' जेत' ।

चनिया पुलिससँ शिक्षा पाबि कए घुरल, तँ ओकरा होइ जे फूसि बाजिक' कोना मोकदमा करत ? हजार-दू-हजार कत' सँ आनत ? ओ बिना किछु बजने भुकने बेटीकें उठाकए पांखुर पर लेलक आ चलि पड़ल । बकौर बला आनि मे जरि रहल छल। नभट्ट के डाक्टरसँ साकिटपिकिट बनबाएब आ ओतहि थानामे रपट लिखाएब...। ओ सोचि रहल छल । ओकरा होइ छलै जे जगत झा नीक लोक छै । कहबै त' टाका-पैसाक सेहो इंतजाम क'देत ।

दुनू बेकैत बेपरीत भेल गाम दिश पड़ायल । बाटमे बकौर बला किछु पुछै तँ ओ बजबे नहि करए । तीन घंटा पैरे चललाक बाद नभट्टा घुरल। आंतए सँ आब गाम डेढ़ कोस छल । चौक पर सुस्तएबा लेल चनिया बैसि रहल । मुदा बकौर बला सोचलक एतए सँ दहिन कात थाना, बाम कात डाक्टरक बासा । तीके ठाम बैसल अछि । ता देखलक जगत झा पानक दोकान पर पान खा रहलाह अछि । बकौर बला सहटि कए लग गेल आ सब बात सुनाएब शुरूह कलक...।

चनिया देखि गेल । ओ दौड़ल आ बकौर बलाक चुड़की पकड़िकए पाछू घिचलक-अरे रछच्छा । तोरा आबो आंखि नहि खुजलौ...।

चनियाक चिकरब चालुए छल । जगत झा लग जा कए बजलाह--रे अभगला। तों सब रार छिही ने । चालियो रारे बला रहतो । कहने रहियौ जे अइ बेटीक कंठ दाबि दही आ पुलिस लग जा कए कही जे अनिल सिंहक लाठीसँ एकर प्राण चल गेलै । पुलिसकेँ तँ सबूत चाही ।...

जगत झा समझबिते छल आ कि चनियाकेँ खतरा बुझएलै । ओ सब किछु छोड़िकए दौड़ल आ बेटीकेँ भरि पांजकए उठौलक आ गाम दिस पड़ायल।

बकौर बलाकेँ फेर बुझएलै, हम अनेरबा मोह मायामे रही । हमरा दुनूक अकबाल रहल त' फेर जनमा लेब । कोनो की बेटा छिअइ । जँ अइसँ हमर कंस मजगुत हैत, तँ मारिए दै छिअइ । खेहारि कए पकड़बाक चाही चनियाकेँ...आब ओ घुमि कए दड़बड़ दितए कि ता देखलक...

अनिल सिंह हड़बड़ाएल सन अएलै आ कहलकै-जगत कका। गबाहो सब आबि गेलै आ दरोगो जी बैसि गेल छथिन । चलहक ने ।...

आ जुलुम भ' गेल । भ' ई गेल जे अइ अन्तरालक कोनो बात ककरो लेल गोपनीय नहि रहि सकल । जगत झाक दुनू बगल ठाढ़ बकौरबला आ अनिल सिंह एक दोसरा के देखलक आ बिलाड़ि के चीन्हि गेल । एहि ज्ञान सँ दुनूक आँखि मे खून भरि गेल । सभ काज जेना एकहि संगे भ' गेल रहय। जाबत बिलाड़ि बात बूझय बकौरबला आ अनिल सिंहक चारि टा हाथ बिलाड़िक गरदनि नापि लेलक...। लोक सभ दौड़ल त' जगत झा जमीन पर छलाह । मुदा आब जमीन नहि खाखरि सकै छलाह...।



कथा

केदार कानन

हिस्सक

एखन नीक जकाँ पह नहि फाटल छलैक । कुहेसल भिनसरवा अपन अंतिम चरण मे कँपैत छल । तखने काकी उठलीह । उठबाक मन एकदमसँ नहि होइत छलनि। ओ सोचलीह जे राति रातिये रहि जइतैक सब दिन लेल अथवा ओ चैन सँ सूतले रहि जइतथि सब दिन लेल, कतेक नीक होइतैक । मुदा काकीक ई अनर्गल सोच एकटा फूसि भ' क' हुनका फुसिया जाइनि ।

प्रतिदिन भिनसर होइत छलैक आ ओ अन्हरोखे उठि कए सबसँ पहिने गाय-माल बहार करथि । बरतन-बासन आ बाढ़नि उठबैत भोर भ' जाइत छलनि । चूल्हि नीपैत चाह पीबाक इच्छा व्यग्र कए दैत छलनि । चाहक एहन अभ्यास सँ परेशान रहथि काकी। खेनाइ भेटय वा नहि, चाह दैत जइयनु आ काज करबैत जइयनु काकी सँ ।

मुदा बड़की कनियाँकेँ चाहक कोनो दर्द नहि बूझल छनि । ओ थारी भरि खा धरि लेतीह, चाहक कोनो इच्छा हुनका नहि होइत छलनि । तें काकीक चाहक निसां सँ हुनका कोन लेब देब ? कहियो, कखनो मोन होइत छलनि तँ बना क' आगाँ मे द' अबैत छलथिन ।

' काकी किछु बाजि नहि पबैत छलीह । अपना बिनु पाइक लोक छलीह । बिनु पाइक लोक माने पाथर, माने देवाल, माने काठ । आ पुतोहु आबि गेलाक बाद तँ बेटा सेहो आने भ' गेल छलनि ।

काकी एकबेर उतरबरिया घर दिस तकलनि । बरुआरी वाली कनियाँ आइ एखनधरि नहि उठल छलीह । आइकाल्हि दू माससँ बरुआरीवाली कनियाँ भोरका चाह द' जाइत छनि ।

काकी अपन चाहबला गिलासकेँ चिक्कन सँ माँजि क' बाहर बला चौकी पर औन्हि क' राखि देलनि । भनसा घरक ताखा पर डिब्बा-डिब्बी टोहय लगली । चीनी

आ पत्तीक डिब्बा कतहु नहि भेटलनि हुनका । भनसा घरक कंबाड़ लगपच छैक । बड़की कनियाँ कुकूर-बिलाड़िक डरें चाहोक सामान अपने घरमे राखि दैत छथिन रातिमे। काकी इच्छा रखितो कहियो चाह नहि बना पबैत छथि । कनियाँ अबेरकँ उठैत छथिन। हुनका ठंढा नहि बरदाश्त होइत छनि ।

नेहरि मे भिनसरबे उठि क' गोबर-करसी करयबाली, जाँत-ढेकी कूटय बाली कनियाँ सासुर अबिते फुलकुम्मरि बनि गेल रहथि । कहियो जँ उठइयो चाहैत छलीह तँ देह सँ सटल पति डपटि दैत छलथिन–अखन कतय जाइत छी ? ठंढा मारत तँ हम दबाइ-तबाइ नहि करायब... । आ अपन पतिक स्नेह सँ ओतप्रोत फटकार मे लटपटा कए ओ फेर सीड़क मे अपन मूड़ी घोंसिया लैत छली ।

बाहर मे काकी बाढ़नि सँ आँगन बहारैत छली, तकर आवाज हुनका अपन सीड़क तरमे बंद कान मे नहि जाइत छलनि । जखन रौद चार पर खसि पड़ैत छल, बड़की कनियाँ उठथि । थोड़क काल अठरैत-मठरैत चौकी पर बैसथि । कुरूड़-आचमन होइत छल आ तरकारीक चंगेरा, हांसूक संग चौकी पर रखा जाइत छल ।

नहुँए-नहुँए आलू छीलैत बड़की कनियाँ अपन देहिक दुर्बलताक वर्णन इतियौत-पितियौत ननदि-दियादिनी लग आरंभ क' देथि । काकी चाहक प्रत्याशा मे बैसल रहथि । पहिने तरकारी काटल जायत, तकर बाद चाहक कोनो बात । पहिने चाह बना क' चूल्हि मिझायल नहि जायत । एक्कहि बेर सब काज हेतैक । पहिने चाह बनत आ तुरन्ते लोहियो चढ़त । ता काकी बाट तकैत रहथु ।

तंग भ' गेल छथि काकी चाहक हिस्सक सँ । एहि चाह लेल कतेको अपमान सहय पड़ैत छनि हुनका । मुदा देह आ मोन कोनो एक वस्तु मे लबझाबय चाहैत अछि। खयबाक मोन नहि होइत छनि । चाह जेना एकटा अनमना होइनि । एम्हर तँ गुल करबाक आदति सेहो लागि गेलनि... । ई एकटा आर मोसकिल ।

काकी एक बेर फेर उतरबरिया घर दिस तकलनि । बरुआरि वाली उठती तँ चाहक गिलास भरि देती । बोली-स्वभाव जेहन होउक मुदा बनबैत छथि बड्ड सुन्दर। मुदा बरुआरी वाली कनियाँ एहि दू मास सँ कियेक देबय लगलीह हुनका चाह? ई बात काकीकेँ आइ बुझबा मे अयलनि ।

एही दू-तीन कप चाह लेल तँ हुनक मझिली पुतोहु, जे सरकारी कर्मचारीक पत्नी छलीह, घरमे बिरड़ो उठा देने रहथि । ओ काकीक हाथमे चाहक गिलास देखिते बताहि भ' जाइत छली । हुनका होइत छलनि जे हुनकर पाँच हजारी पतिक सभटा पाइ काकीक चाहे पर होम भ' जाइत छनि ।

कतेक षड्यंत्र, धूर्त्तता आ उपराग दए कए ओ अपन पतिक बदली आन ठाम करबा लेलनि । हुनक एक्कहि टा वाक्य काकीकेँ सदति काल मोन पड़ैत रहैत छनि–'एक आदमीक चाह पर चारि सय टाका खर्च होइत छैक । हमरा नहि रग अछि... हमरा दूटा बेटी अछि कपार पर । चाहक एतेक खर्च हम नहि उठा सकबनि...।'

तखनेसँ मझिली कनियाँ बड़की कनियाँक प्रतिद्वन्दी भ'गेल छलीह । कनियाँ सब बेसी काल प्रतिद्वन्दिये होइत छथि एक दोसराक । हुनकर ई वक्तव्य सुनि बड़की कनियाँकेँ छिछरी-पटिया उठि गेलनि । ओहीकाल सासुक प्रति हुनका कथित दायित्वक बोध भेलनि आ ओहो जोर सँ बाजल छली–'अहाँ नहि देखबै तँ हम की मरि गेल छी ? जेना रहबै सासुकेँ तेना रखबै ।'

काकीकेँ अपन दुब्बर भेल पीठ पर एकटा भरोसक अनुभव भेल छलनि । ओ उतरबरिया ओसार पर ठाढ़ एहि दुनू दियादिनीक वाक्‌युद्धक प्रकरण देखैत छली । बरुआरीवाली कनियाँक भौंहु-ठोर चमकि रहल छलनि निरन्तर ।

बड़की कनियाँ हुनका फूटलो आँखि नहि सोहाबैत छलनि । हुनकर चलब, हुनकर बाजब सभ किछु जेना हुनक रोइयाँ जरा दैत रहनि । ओ ओहि ओसार पर फुसफुसा उठली–'देखबौ, देखबौ । एक कप चाह लेल तँ बेकल होइ छौ सासु आ दाबी करैत छें...।'

मुदा रच्छ भेल जे ओ अपने कहलनि आ अपने सुनलनि । जँ बड़की कनियाँक कान मे ई संवाद गेल रहैत तँ हड़कम्प मचि जाइत । दुनू दिससँ तेहन घमासान होइतैक जे काकीक दम फड़फड़ा जइतनि । एहि दुनू दियादिनीक वाक्युद्ध आ हस्त-कलाक प्रदर्शन सँ काकी तीन लग्गा दूरे रहय चाहैत छथि ।

बरुआरीवाली कनियाँ सँ हुनका अप्रत्यक्ष भय जकाँ होइत छलनि । एहि बातकेँ ओ स्वीकार नहि करैत छथिन मुदा बात धरि सत्य थिक । एक तँ बरुआरी वालीक व्यक्तित्वो तेहने डेराओन छनि । साइते कखनो हँसैत छथि । काकी परिस्थिति मे संतुलन रखबाक लेल सदिखन हुनक उचित-अनुचित मे प्रतिरोध नहि करथि । एहि सँ ई होइत छल जे काकी पर ओ बेसीकाल प्रसन्न रहैत छली । मझिली कनियाँकेँ देखा-देखी कहियो काल आध कप चाह पठा देथि काकी लेल । मुदा झाड़लो बोली कम नहि कहथि ओ काकीकेँ । छोटो-छोट बात पर ओ झिड़कि दैत छली । अपनाकेँ सब सँ पैघ उचितवक्ता आ शुद्ध आत्माक बूझथि बरुआरी वाली । उचित बुझबय मे सासु, पितिया सासु किनको लेहाज हुनका नहि रहनि ।

काकी ओहि नमहर परिवारक पैघ काकी छलथिन । बरुआरी वालीक पतिक अप्पन काकी । मुदा मानसिक स्तर पर सम्बन्धक डोरिकेँ ओ जुमा क' बहुत दूर, फेंकि देने छली । तें एक आध कप चाह अथवा एक बाटी तरकारी जँ ओ काकीकेँ देत छली आ तकर घुमौआ नहि भेटला पर कतेको उलहन-उपराग भेटि जाइत रहनि काकी केँ।

काकी केँ बरुआरी वालीक असभ्य-उद्दण्ड व्यवहारसँ कोनो अन्तर नहि पड़ैत छलनि । हुनकर तँ अपनो दुनू पुतोहु तेहने छलनि । काकीक स्वभाव मे आब विचित्र स्थिरता आबि गेल छलनि । कोनो प्रकारक सृजन, कोनो तरहक सोचबाक शक्ति जेना भोतिआ गेल होनि । अगबे ढाकीक ढाकी दया, सहानुभूति आ करूणा आनो-आन लेल अपना मे भरने रहथि ।

एहि बीच बरुआरीवाली कनियाँ दू मास धरि अकस्माते बीमार भ' गेली । घरमे छोट-छोट बेटा-बेटी रहनि । भानस-भात केनिहार क्यो नहि । मोनक हाथें बेबस काकीकेँ देखल पार नहि लगलनि । जान-प्राण द' क' हुनक सेवा मे लागि गेलीह । भानस-भात कयनाइ, बाल-बच्चाकेँ स्कूल पठौनाइ सँ ल' क' बरुआरीवालीकेँ जाँतब-पीचब धरि काकीक दैनिक चर्या भ' गेलनि । एहि लेल कतेको गंजन सुनथि अपन पुतोहु सँ । मुदा काकी कहथि एतबे–'जे हमरा की ? जेहने अहाँ थिकहुँ, तेहने ओ...।'

हुनक पुतोहु एहन वाक्यक भीतर मे नुकायल पीड़ा आ व्यंग्यकेँ नहि बूझि सकथि। नहि बूझैत छथि तँ नहि बूझथि । काकीकेँ एहि सँ कोनो अंतर नहि पड़ैत छलनि ।

बरुआरीवाली जखन स्वस्थ भ' क' ओछाइन पर सँ उठली तँ हुनक आँखि झुकल छलनि । एतेक तँ अपनो सासु नहि कयने छलनि कहियो । कृतज्ञता सँ लगैत छलनि जे ओ झुकल जाइत छथि । हुनका सन गौरबाहि स्त्रीक एहन व्यवहार सँ काकी स्वयं थकमकायल रहथि, अचंभित रहथि–'जे होइ, भगवान सभकेँ मति देथुन हे दिनकर दीनानाथ !' काकी गोसांइ घर नीपैत एतबे प्रार्थना करथि ।

आ ताहि दिन सँ भोरका चाह काकीकेँ ओम्हर सँ भेटय लगलनि । भोरे-भोरे काकी सभ काज कय गायक घरमे जमा भेल खढ़-पुआरक, घासक धोकड़ा ओलि ओहिमे आगि लगा देथि । धुआंइत-धुआंइत आगि तपैत रहथि, ओहने धुआइनि अपन जिनगीक सीयनि खोलैत रहथि आ तखने चाह हुनका भेटि जाइत छलनि ।

एहि दू मास सँ चाहक कोनो चिन्ता नहि छलनि । बड़की कनियाँ देरी सँ उठथु अथवा भोरहरिये । चूल्हि पजारथु वा नहि, हुनका परबाहि नहि । काकीक रोम-रोम बरुआरी वालीकेँ आशीषैत छलनि ।

भोरे-भोरे हाड़ कंपबैत एहि जाड़मे चाहंटा हुनक संगी थिकनि । 'जीबथु बरुआरीवाली !' सदिखन ओ बजैत रहैत छलीह ।

मुदा आइ की भ' गेलनि ?

ओ घूर लग सँ हटि क' ससरैत उतरबरिया ओसार दिस दाबले पयरें बढ़लीह। बरुआरी वालीक भनसाघर खुजल रहनि, आँचो पजरल रहनि आ अदहनो सनसनाइत रहनि ।

काकीकेँ आइ आन तरहक स्थिति बूझि पड़लनि। ओ बिनु किछु बजने भनसाघरक फट्टक लग ठाढ़ि भ' गेली । माय-बेटी दुनू फट्टक दिस पीठ अड़ौने चाउर बीछैत छली ।

दस बरखक बेटी मायकेँ टोकलकै–'गै, आइ काकीकेँ चाह नहि देलही ?'

–'तकर चिन्ता तोरे छौक ? चल उठ, डोलमे पानि आन ।' बरुआरीवाली बेटी दिस आँखि गुराड़ि जवाब देलखिन ।

बेटी सर्द भ' गेलि ।

बरुआरीवाली अदहन मे चाउर दैत बजलीह–'आइ दू मास पूरि गेलैक । आब सभ दिन हम की ठीका लेने छियनि ? हुनको पुतोहु तँ दूध लैत छनि...।'

काकी पयर दाबि ओतय सँ हटि गेलीह । चाह पीबाक इच्छा कखन ने समाप्त भ' गेल रहनि । छाती धक-धक करय लगलनि । बरुआरीवाली कनियाँ ई नहि बूझि जाथि जे काकी हुनकर गप नुकाकए सुनैत छली ।

नहुँए-नहुँए आबिकेँ फेर घूर लग बैसि गेलीह । थोकड़ा सँ खूब धूआँ उठि रहल छलैक । काकी अपन आँखि मीड़ैत ओतहि बैसले रहलीह, जेना पयर धरती मे सटि गेल होनि । माँझ आँगन मे चौकी पर चाहक माँजल गिलास एखनो औन्हले राखले छलैक ।



वार्त्ता

मिथिलाक सामाजिक विकासक क्रम 'छिनमस्ता' भ' चुकल अछि

धूमकेतु सँ अशोकक अन्तरंग वार्त्ता

['हम मानैत छी जे लेखकक व्यक्तित्त्व कोनो तरहें झूस नञि बनि जाइत छैक, आ ने लेखक कोनो विशिष्ट प्राणी बनि जाइत अछि । रचना मे अन्ततः लेखन दर्शने प्रष्फुटित होइत अछि । एकरा एना क', कही, जे जीवन जीबैत-भोगैत त' सभ अछि। रचनाकार जीवन रचितो अछि । यैह रचबाक प्रक्रिया हमरा जनैत हुनक विशेषाधिकार सेहो छनि । रचना मे निर्वैयक्तिकताके दर्शनक स्तर पर त' बूझल जा सकैत अछि । मुदा ततबे धरि जाहि सँ मूर्ति लसि धरय ।'

लस्सा सन सटि जाइबला शब्द-शिल्पी कथाकार धूमकेतुक चिन्तक-व्यक्तित्व एहि वार्ता मे जेना उभरिक' आयल अछि, से सभ किछु के खारिज कर'बला अथवा गौरवे-आन्हर मानसिकताकें समुचित दृष्टि द' सकैत अछि ।]

अशोक : भाइ, मैथिलीक अहाँ लोकप्रिय आ प्रतिष्ठित कथाकार छी । पहिने 'अगुरवान' त' हेबनि मे 'छठिपरमेसरी' कथा अहाँक ख्यातिके अकास ठेका देलक अछि । अगुरवान सँ छठिपरमेसरी धरिक कथा यात्रा मे केहेन अनुभव करैत छी अहाँ ?

धूमकेतु : 'अगुरवान' सँ 'छठिपरमेसरी'–बात छुटैए । एकटा कथा आएल छल 'दीदी'। प्राय: उन्नैस सए बावन के चतुर गृहस्थकेँ ध्यान आबि गेल छलनि जे दीदी के दायभाग मेँ वंचित शुरुहे मे क' लेब उचित हेतनि । 'अगुरवान' दोसर कड़ी मानल जा सकैत अछि आ 'छठिपरमेसरी' एक दृष्टिएँ तेसर कड़ी। ई हम मात्र कथा संरचनाक दृष्टिएँ टा नहि, एकटा सोसियोलॉजिकल दृष्टिएँ सेहो कहि रहल छी ।

भाइ, अहाँ मानैत छी जे स्वभोगित खिस्सा सभ सँ प्रामाणिक थिक । अपन कथा-यात्रा मे एहि प्रामाणिकताक निर्वाह कतेक धरि क' सकलहुँ अहाँ? संगहि स्थिति, भाव अथवा चरित्रकेँ तटस्थ भावेँ भोगबाक लेल केहेन जरब उठाब' पड़ल अहाँकेँ ?

दू-तीन टा घटना मोन पड़ैत अछि । पंडिताइनक हत्या भ' गेलनि त' घंटा सँ उपरे अनेर आँखि सँ नोर थम्हबे नञि करए । एकटा बच्चा पांबनिक नबेद खा लेलकै तत्जन्य जे ओकरा प्रताड़ना देल गेलैक, से आदरणीय पं. गोविन्द झा केँ कूही भ' क' कनैत देखने रहियनि । एकटा कथाक नायिकाक अकस्मात् 'वाक् हरण भ' जाइत छैक त' घंटा हमर वाक् हरण भ' गेल छल । एकटा 'भोज' मे बौआ सभकेँ रसगुल्ला खाइक लेल लिलसा अंठीने देखने रहियै त' बहुतो दिन तक रसगुल्ला खाएले नञि हुअए ।

ओना हमर ई मान्यता थिक जे वास्तविकताक अनुभूत ज्ञान रचनात्मक कल्पनाक आधारशिला थिक । जेरचैं छी तकरा त' चेतनाक स्तर पर भोगैक बूता चाही । प्रामाणिकता जँ स्वत: प्रमाणित नञि थिक त' रचना कहै मे कने संकोच होयत ।

'जरब' की ? वेह त' रचनाक लोकोत्तर उपलब्धि थिक । ओना जँ बूझी, प्रत्येक रचना रचबाक ताल्लुक रखैत अछि, आ से रचनाकारक नितांत वैयक्तिक मानल जेबाक चाही।

भोगके अहाँ कदाचित सर्वोपरि मानैत रहल छी । की आइ अहाँ अनुभव करैत छी जे भरि जीवन तलवारक धार पर चलल छी ? कोनो अफसोचो अछि अहाँके?

भाइ, हमरा हेमिंग्वे क' पात्र स्मरण अबैत अछि । जे भरि-भरि दिन बंसी पथने दूर-दूर समुद्र मे झिलहोड़ि लैत रहै छल, आ जँ माछ फँसै त' तेहेन भयावह जे जान परक गाहकि । मुदा मछबाहि जँ मलाह करय नञि तँ करय की ?

अफसोचक प्रश्न कत' छै ? भोग त' हेमिंग्वेक नियति थिकनि, समुद्र शान्त रह' वा उद्वेलित ।

भाइ, लेखक व्यक्तियो रहय आ रचना मे निर्वैयक्तिकताक निर्वाह क' सकय ताहि लेल की सभ आवश्यक मानैत छी अहाँ ? भोगक लालसा आ तटस्थ भावक बीच कोना संतुलन बनाक' राखल जा सकैत अछि ?

हम मानैत छी जे लेखकक व्यक्तित्त्व कोनो तरहेँ झूस नञि बनि जाइत छैक. आ ने

लेखक कोनो विशिष्ट प्राणी बनि जाइत अछि । रचना मे अन्तत: लेखन दर्शने प्रस्फुटित होइत अछि । एकरा एनाक' कही जे जीवन जीबैत-भोगैत त' सभ अछि, रचनाकार जीवन रचितो छथि । येह रचबाक प्रक्रिया हमरा जनैत हुनक विशेषाधिकार सेहो छनि। रचनामे निर्वैयक्तिकताक दर्शनक स्तर पर त' बूझल जा सकैत अछि, मुदा ततबेधरि जाहिसँ मूर्ति लसि धरय ।

नञि, नञि, 'लालसा'क अनुराग त' बिच्चे मे सभके छहोछित क' देत । तखनि त' 'तटस्थता' वा 'संतुलन' इत्यादिक प्रश्ने नहि रहि जाइत छैक।

भाइ, की अहाँ मानब जे अहाँक रचना-प्रक्रिया अहाँ सँ बंसी कथा नहि लिखेबाक लेल उत्तरदायी अछि ? प्रक्रिया परिणाम पर भारी पड़ि गेल अछि? अथवा एकर मूल मे आलस्य अथवा सुस्ती अछि ?

ध्यान नञि गेल छल । कतेक बेर एहनो भेल अछि जे मोन-मोन भेल जे एकटा खिस्सा लिखलौं, मुदा लिखल गेल नहियें । अहुना रचना हमरा लेल प्रसव वेदना सँ कम नञि होइत अछि । आइ राइट ओनली व्हेन आइ मस्ट तैं बात अंठबैत रहैत छियैक । एतबा मानब जे जीवन जँ कोनो दोसर तरहेँ बीतल रहितए त' थोड़ेक आर कथा लिखने रहितहुँ। ओना आलस्य हमर स्थायी भाव रहल अछि । तैयो, 'जो मिला गय उसी को मुकद्दर समझ लिया' ।

ओना लिखल कम नहि अछि । एखनहु दू टा कथा संग्रह नीक कलेबर बला तैयार अछि । तकर अलावे उगरा-पुगरा मिलाक' एकटा आर नीक संग्रह तैयार भ' सकैत अछि । अनापो-सनापो कम नहि लिखल अछि ।

भाइ, अहाँक एकटा कथा अछि 'कुलटा' । हमरा जनैत एहि जोड़क कथा मैथिली मे बहुत कम अछि । फुलिया सन पेशेबर वेश्या सँ अहाँ एहन त्यागक कल्पना कोना केलहुँ । की अहाँ मानैत छी जे विपन्न लोकक नैतिकता दोसर होइत छैक ? महान आ सर्वस्व त्याग एहने लोक द्वारा भ' सकैत अछि?

जाहि कथाक चर्चा क' रहल छी से आचार्य रमानाथ झाक ध्यान आकर्षित केने छलनि, आ आचार्य काञ्चीनाथ झा त' 'सगर समान पुत्रक' आर्शिवचन देने छलाह। ध्यान पर दी भाइ, शरतचन्द्रक पात्रके 'नैतिकता'क जामा पहिराक' विचार कर' लगबैक त' बहुत मुश्किल हेतैक । विचारणीय ई थिक जे कंन्द्र मे की भाव परिपाक होइत अछि ।

अधिकांशतः ई देखबा मे आओत जे नैतिक मानदण्ड पर जे महान नञि निकलि पबैत अछि, सएह श्रेयश रचि जाइत अछि । तैं अहाँ जतेक ताछन्न दृष्टिएँ देखिक' फुलिया सँ जे कल्पनो नञि करा सकलियै हमर रचनाकार कैं से स्वीकार नञि छल। नञि विपन्नताक प्रश्न नञि छै । फुलिया संपूर्णतः भरल पूरलि व्यक्तित्वक नाम थिक। प्रायः कारण ई, जे महान थिक, ओकरा संगे टुच्चापनिक कल्पना नञि हो ।

भाइ, अहाँक कथा 'अगुरवान' के प्रसिद्ध समालोचक मोहन भारद्वाज मैथिलीक किछु अल्प परिमाण मे आएल सामाजिक चेतनाक कथा मे सँ एक मानैत छथि। मुदा नव लोक सभ कहैत छथि जे ई चेतना स्त्रीक विरूद्ध अछि । एहि कथामे पतित पुरूष अछि तखन स्त्रीए के किएक दण्ड भेटलैक? जँ पुरूष आ स्त्रीक दृष्टि सँ नहियों देखी त' की ओहि स्त्री के ओहि पुरूषक पतितपनाक कारण मानैत छी अहाँ ?

पहिल बात त' हमरा ई स्पष्ट नहि कएल गेल अछि जे भारद्वाज जी कोन अर्थे आयल चेतनाक मीमांसा प्रस्तुत केने छथि । दोसर बात ई जे मात्र दण्डित हेबाक सवाल रहितै त' समाजशास्त्रक दृष्टिएँ बात पर विचार कएल जतैक। अहाँक सम्पूर्ण दृष्टि समाजशास्त्रीय लागि रहल अछि । पण्डिताइन सधवा छथि, कोनो तरहें दण्डनीय नञि छथि । मुदा तथापि घटना घटित होइत छैक आ पण्डिताइन स्वयं नेहोरा करै छथिन जे हमरा काटि दे ।

हमर दृष्टिमे मात्र एकटा मनोवैज्ञानिक प्रश्न टा छल । पुरूष दण्डित कएल जा सकैए तत्तेकटा गज्झा रहितैक त' गोटेक दर्जन पण्डिताइनक कथा प्रत्येक वर्ष लिखल जा सकैत छल ।

अहाँ बहुत प्रश्न नञि पूछी त' माएक हत्या अइ लेल केलक जे माएके बिछान पर संगे सुतैक सुविधा नञि छलैक । हम फेर कहब जे 'पतितपनाक' मीमांसा कत्तेको दृष्टिएँ संभव थिक ।

भाइ, कहल गेल अछि जे हरेक युगक प्रचलित विचारधारा ओहि युगक प्रभावी वर्गक होइत अछि । मिथिलाक परिप्रेक्ष्य मे स्वतंत्रताक बाद प्रभावी वर्ग मे परिवर्त्तन आयल अछि । ई परिवर्त्तन केहेन अछि ? की एहि प्रभावी वर्गक विकास भौतिक उत्पादन मे परिवर्त्तन सँ जुड़ल अछि ? मिथिलाक इतिहास मे कने पाछू जा क'

एहि बात के अहाँ सँ हम सून' चाहब । यदि परिवर्त्तन नहि आयल अछि त' किए ? कोना ?

हमर दृष्टि ई थिक जे कोनो विचारधारा सम्पूर्णतः युगक प्रभावी प्रतिनिधि नञि होइत अछि । संवर्षक क्रम मे विचारधारा प्रभावी बनैत रहैत आ स्खलित होइत रहैत अछि। अंग्रेजी राजक उपरांत 'प्रभावी वर्ग' द्वारा अपन वर्गीय हित साधनक हेतु यथाविध कार्यकलाप होइत रहल । नाजिम हिकमत जकरा फुदना, झुनझुना लिखलथिन अछि, स्वाभाविक छल जे मौलिक परिवर्त्तनक कोनो परिकल्पनाक प्रश्ने नञि छल । जे तथाकथित 'परिवर्त्तन' आयल ओ परिवर्त्तनक छद्म आ तैं परिवर्त्तनक विकृत रूप छल। स्वतंत्रताक बाद तैं सभ सँ प्रमुख त्रासदी स्वतंत्रते छल ।

जे परिवर्त्तन अपेक्षित आ आशान्वित दूनू छल तेकर भ्रूण हत्या भ' गेल । जे प्रभावी वर्ग भौतिक विकास उचडि लेलक परिवर्त्तन ताहि सँ एकांगी रूपें जुड़ल । निश्चित रूपें तकरा सामूहिक उत्पादकत्व कहब उचित नञि होयत ।

मिथिलाक इतिहासक विषय मे बड़कीटा आ व्यापक प्रश्न पूछि देलौं भाइ। राजकमल मूइल छला त' हम एकटा पाँती लिखने रही–'आब जे हेबाक से हेतैक, जे होइतैक से नहि हेतैक ।' मिथिलाक सामाजिक विकासक क्रम छिनमस्ता भ' चुकल अछि।

'डिरेलमेंट'क की कारण कहू 'हूलिगन' वा सायाश बतहपन ? हमरा क्राइस्टक पाँती कहाइत अछि–'फादर फोरगिभ देम फॉर दे नो नौट व्हाट दे डू' । ओना हम साहित्यक विषय सँ सम्पृक्त रही से नीक । अर्थशास्त्रक 'जार्गन' दिस अहाँ हाँकी से अहूँक अभीष्ट नञि होयत ।

भाइ, की अहाँके लगैए जे दरभंगा राजक चौअनियाँ खोरिस, कांग्रेसी राजक दलाली वृत्ति आ तकरवादक लम्पट तंत्र मे एक अन्तर्सबन्ध अछि ? मिथिलाक बौद्धिक उत्पादन सेहो एकर प्रभाव सँ नहिं बचि सकल अछि । एहि प्रभाव के कोना काछि क' फेकल जा सकैए ?

भाइ, 'लम्पट-तंत्र' जाहि सीमा तक जा सकैत अछि ताहिमे कोनो रास्ता किएक ओ छोड़त ? बल्कि कोनो दलाली कि खोरिस त' एकर हथियार थिक । ऐतिहासिक 'ट्रेजेडी' त' यैह ने थिक जे अपना लोकनिक तथाकथित 'बौद्धिक उत्पादन' सर्वांगसतः लम्पट-तंत्रक पृष्ठपोषण करैत रहल । मुदा काछिक' एकांगी रूपें कोनो प्रभाव के कना

काटब संभव थिक । दोसर बात ई जे कोनो सामाजिक संस्थाक ऐतिहासिक आ तें तात्कालिक महत्व होइ छै । इतिहास स्वयं टूटि-फूटि क' अपना के 'स्मूथ' बनबैत रहैत अछि। संगहि हमरा लोकनिकेँ समाज सुधारक कार्यक्रम सँ बचबोक चाही-हमर तात्पर्य साहित्यकार सँ अछि ।

ओहि प्रभाव के काछि क' फेकबा मे अथवा ओंहि दिस ध्यान आकृष्ट करबा मे मैथिली कथाक योगदान की भाइ, अहाँ उल्लेखनीय मानैत छी? यदि नहि त' किए ? यदि हँ त' कोना ?

श्रद्धेय योगानन्द बाबू शब्दस: त' प्राय: स्मरण नञि अछि, अपन उपन्यासक उपोद्घात मे लिखने छलाह, जे पीसाजी जँ मैथिलक प्रतिनिधि थिकाह त' जतेक शीघ्र हो भलमानुस समाप्त होथि, मुदा जँ भोलानाथ बाबू मैथिलक भलमानुसक प्रतिनिधि थिकाह त' सम्पूर्ण मिथिला मे भलमानुस भरि जाथु। हुनका लिखना त' बहुत दिन भेलनि, मुदा हम एखनहुँ कह' चाहब जे, जे जीवन के मूल्यवान बनबैत अछि, तकरा निखालिश काछिक' परिशुद्धताक आग्रह नञि करक चाही । जे प्रभाव अछि ओ स्वाभाविक रूप सँ अछि। ध्यान आकृष्ट करबाक खा-मखा चेष्टा कछइ सँ बेसी जड़िआइत। कम सँ कम हम सायास एहन प्रयत्न करैक पक्ष मे नञि छी ।

भाइ, की अहाँ एहि सँ सहमत होयब जे मिथिलाक लोक उद्यम सँ बेसी अनेक जड़ संस्कार आ अन्धविश्वास सँ परिचालित अछि ? एहि कारणें ओकर शोषण सेहो होइत अछि ? अहाँक 'छठिपरमेसरी' कथा एहि सन्दर्भ मे हमरा ध्यान मे आबि रहल अछि। एहि शोषण सँ मुक्ति लेल अहाँक की सुझाव होयत ?

प्रियवर हरेकृष्णजी किसिम-किसिम सँ शोषण, गरीबी आ धर्मान्धता सभहक सांगोपांग विश्लेषण केलनि अछि । हमरा सभसँ बेसी ओइ बौआक आँखि उद्वेलित करैत रहल जकरा ई विश्वास नञि, जे अन्तत: करा ओकरा नञि पैठ हेतै । अरे, बाप, 'शोषण मुक्तिक' लेल आ ताहि मे हमर सुझाव ! भाइ, खा-मँखा लजा रहल छी ।

भाइ, दिल्लीक प्रतिष्ठित 'कथा' पुरस्कार सँ सम्मानित अपन मूल्यवान कथाकेँ अहाँ 'एकटा मूल्यहीन कथा' किएक कहलियैक ?

कहाँ कहलियै, अन्तत: नञि ने कहलियै । 'दि डस्क एण्ड दी डॉन' कहलियै। भाइ, मूल्यवान कथा केकरा कहै छै ? सम्मानित रचना की थिक ?

हमरा एकटा कथा मोन पड़ैत अछि । एकटा कलाकार लीखि देलकैक जे सर्वोत्तम चित्रक अंश प्रदर्शित कएल जाय । प्रात भेने चित्रक प्रत्येक भाग सर्वोत्तम रूप मे प्रदर्शित क' देल गेलैक । कलाकार दोसर दिन लीखि क' अन्वेषण केलक जे सभ सँ असर्ध कोन भाग अछि । चित्रक प्रत्येक भाग पुन: असर्धतम रूपमे प्रदर्शित क' देल गेल छल । तं कोन सर्वोत्तम आ कोन असर्धतम् से त' उधो, मन माने की बात ।

एहि बीच मे की सभ अहाँ पढ़ि-लीखि रहल छी ? मैथिलीक कोनो खास रचनाक अहाँ उल्लेख कर' चाहब ?

पढ़ैत-लिखैत नञि रही भाइ, त' शुद्ध क' बताह भ' जायब, ई बात फूट जे अधिकांश लोक मानै छथि जे हम पढ़ैक चलते बताह भ' गेल छी, पहिल बात । दोसर बात, ई जे हमर विषय वक्ठेठा अछि । पढ़ैत नञि रही त' विषयक संपर्क मे रहब कठिन । एतेक दिन आदत परि गेने त' आब रसो अपने विषय मे अधिक अबैत अछि। अहाँ प्राय: एक बेर चर्चा कने रही जे लेखन थोड़ केलौं अछि । आरोप पूरा-पूरी नहियों मानी, तैयो एतबा त' अवश्य हम मानि लेब जे अपन छुछुन्नर विषयक स्वभावक चलते जतबा सृजन कर्म कँ अर्घ्य चढ़ैबाक चाहै छल से नहि क' सकलौं ।

अइ बीचमे अमर्त्य सेन हमर सभसँ बेसी समय जियान केलनि अछि आ थांड़ेक महबूबुलहक । विनोद कुमार शुक्लक 'दीवार मे एक खिड़की रहती थी' अकादमी पुरस्कार सँ पूर्व, पढ़बाक सौभाग्य भेल छल ।

किछु दिन भारतीय ज्योतिष बहुत मनोरंजक लागल । मुदा आखियासलयै त' प्राय: 'ई कथातत्वक कारणे नीक लागल छल ।' पढ़ैत-तढ़ैत त' प्राय: यैह सभ रहै छी भाइ। लिखबैक जिम्मा हाल मे चि. कानन कन्हेटने छथि। एकटा नेपाली जनजीवनक औपन्यासिक प्रयास मे लागल छी । रचबोक स्कोप त' अपन मातृभाषा मे कम्मे सम छै भाइ, आ कि नञि ?

हँ, एकटा उल्लेख्य रचना शैलेन्द्र कुमार झाक 'कथा-संग्रह' नजरि पर पड़ल अछि। लगँए दोंहराक' पढ़' पड़त ।

मैथिली कथा-यात्रा मे अहाँ अपनाकेँ कत' ठाढ़ पबैत छी ? ललित, राजकमल आ मायानन्दक बाद प्रभास, धूमकेतु आ राजमोहनक ट्रायो केहेन लगैत अछि? कोनो मन्तव्य ?

भाइ, ठाढ़ पबै छी से कनियेंटा बात नञि भेल । हम तञि गदगद छी । अहाँक स्नेह बलधकेल ट्रायो बना रहल अछि ।

एहि बीच मे 25 दिसम्बर सँ 29 दिसम्बर धरि अहाँ साहित्य अकादमी आ सम्प्रति, पटनाक संयुक्त तत्वावधान मे आयोजित मैथिली कथाक अंग्रेजी अनुवाद कार्यशाला मे विशेषज्ञ रूप मे भाग लेलहुँ । केहेन अनुभव रहल? अनुवाद एवं आयोजन के आर अधिक सार्थक ओ उपयोगी बनेबाक लेल अहाँ कोनो सुझाव दिय' चाहब ?

बहुत सुखद अनुभव रहल । एक तरहें बूझी त' पहिले-पहिल अंग्रेजीक खिड़की मैथिली पर खूजल छल । अइ बातक त' अनुभव हेबाक चाही जे मैथिलीक रचनाक माध्यमें अंग्रेजी भाषा मे बात कहल जा सकैत अछि। ई कतेक दृष्टिएँ बहुत महत्त्वपूर्ण अछि। अपन सांस्कृतिक अस्मिताक प्रक्षेपण भारत वर्ष मे अंग्रेजीक माध्यमेटा संभक थिक। जे अखिल भारतीय रचना संसार अछि तेकरहु परिचिति अंग्रेजीयेक माध्यमें संभव थिक। दोसर ई अनुभव कहक छल जे मैथिलीक रचना जखनि बहुत 'ग्रीकोसेक्शन' आग्रहक संग प्रस्तुत कएल जायत त' ओकर मौलिक सुगंधि नष्ट भ' जेतैक । एहनो वैदुष्यपूर्ण कथा रचना उपलब्ध भेल जे कथा सँ बेसी पाण्डित्य प्रदर्शन छल आ तञि ओकर कोनो अर्थे नञि रहि जाइ छल। मैथिलीक जे रचनाक स्वत: स्वाद छैक कोनो स्थिति मे, से जँ नष्ट भ' गेल त' पदार्थ 'ट्रान्सफोर्म' नञि भेल । अइ बातक अनुभव कार्यशालाक क्रम मे कत्तेक बेर भेल । हमरा लोकनि कैं अत्यधिक फूट नोटक उपयोग कर' पड़त। एकाधिक बेर त' हमरा जोर देब' पड़ल जे बरु फूटनोटक फुट्टे एकटा 'ग्लोशरी' द' देबाक चाही । मैथिली बहुत जीवंत भाषा छी आ ओक, सांस्कृतिक शब्द समूह व्याख्याक अपेक्षा रखैत अछि । तञि अनुवादक क्रम मे मैथिलीक संग सरलीकरणक व्यामोह त्यागक चाही । बात श्रमसाध्य, से हम ध्यान दियाब' चाहब ।

सुझाब त' सभ सँ बड़का भाइ, ई जे किछु कएल जाए से सरिपौं कएल जाए, खाना-पूरी मात्र नहि । किमधिकम् विग्येषु ।

शताब्दी बीति चुकल अछि । मैथिली कथाक उपलब्धि सँ अहाँ संतुष्ट छी? की सभ मैथिली कथामे अहाँके उपस्थित भेटैत अछि आ कि सभ एखनधरि अनुपस्थित अछि जेकर उपस्थितिक आकांक्षा अहाँ करैत छी ?

शताब्दी बीतल रहए त' हम नेपाल मे रही, ओत' एहन किछु नञि बूझि पड़ल जे

किछु बीतल अछि । वास्तव मे जे उपलब्धि अछि से अछिये। मुदा एकटा अंतिम बात कह' चाहब भाइ, जे साहित्य जीवनक जाहि अंशके प्रस्तुत करैत अछि, तकरा कोनहुँ आन तरहें नहि कएल जा सकैत अछि। कालक्रम मे जे व्यथा मनुख भोगैत अछि आ जकर इतिहास साक्ष्य नञि दैत छै, मनुखक सैह व्यथा साहित्य अक्षोणि जोगा क' रखने रहैत अछि ।

आकांक्षा त' अइ भाइ, जे मैथिल जनक कथा बिना कोनो लाग-लपेटके आ चोरोने-नुकोने कहि सकी, कहैक सामर्थ्य आ साहस जाबत जीवन उपलब्ध रहितए । शताब्दी-तवाब्दी त' बीतिते रहतैक । हम मैथिल जनक व्यथा सँ अपनाकैं सम्पृक्त रखैत छी । उपलब्धिक मीमांसा पंडितजन करथु । ❑

वार्त्ता

मैथिली मे लिखल साहित्यक मैथिलत्व ओकर भाषा अछि

सुभाषचन्द्र यादव आ तारानन्द वियोगीक अन्तरंग वार्त्ता

['जीवनक लेल जे नीक आ सुन्दर अछि, हमर कथा तकरे आग्रही अछि । हमर कथाक प्रेरणा जीवन-प्रेम अछि । जे कोनो चीज जीवन-विरोधी अछि, हमर कथा तकरा प्रति वितृष्णा उत्पन्न करैत अछि ।'

समकालीन मैथिली कथा मे सुभाषचन्द्र यादवक अपन विशिष्ट स्थान अछि। पूर्ववर्त्ती आ आजुक पीढ़ीक कथाकारक बीच जे किछु कथाकार सभ अर्थे एकटा सेतुक निर्माण केलनि ताहि मे सुभाष अन्यतम छथि । मैथिलीक आजुक रचनाकार मध्य उर्जा आ उष्मा सँ भरल सर्जक तारानन्द वियोगी एहि अन्तरंगवार्त्ता मे सुभाषचन्द्र यादवक गम्भीर, संतुलित आ सरल-सहज व्यक्तित्त्वकें सोझाँ अनलनि अछि।]

तारानन्द वियोगी : सभ सँ पहिने तँ भाइ, अहाँकेँ हम वधाइ दै छी जे एक पैघ अन्तरालक बाद अहाँ पुनः कथा लिखब शुरू केलहुँ अछि । बहुत-बहुत वधाइ । एहि बीच के अन्तराल मे अहाँ लगातार चुप रहलहुँ । प्रसंगवश, एतय हमरा अहाँक कथा-संग्रह 'घर देखिया' क पहिल कथा 'अभाव' मोन पड़ैत अछि। ओहि कथा मे अहाँ देखेने रहियै जे कोनो लेखकक लेखन-उर्जा कोना सुन्न भ' जाइ छै, स्त्रोत सूखि जाइ छै आ लाख-चेष्टाक अछैत ओ लीखि नहि पाबैए। अहाँ असहमत नहि होयब सम्भवतः जँ हम कही जे ई अनुभव वस्तुतः अहाँक अपने रचनाकारक अनुभव थिक । की कारण होइ छै एहि स्त्रोत सुखबाक ? निज अहाँक संग केहेन अनुभव रहल अछि एहि मादे?

सुभाषचन्द्र यादव : हम सभ सँ पहिने उपन्यास लिखने रही । हिन्दी मे । साठि सत्तरि

पृष्ठक भावुक आ रूमानी उपन्याम । ओ हेरा गेल । फेर आइ धरि कोनो उपन्यास नहि लिखलहुँ । उपन्यास लिखवाक बारे मे कतेको बेर सोचैत छी । एक बेर किछु तैयारियो कयने रही, मुदा छूटि गेल ।

ओहि पहिल हिन्दी उपन्यासक बाद हम मैथिली मे कथा लिखब शुरू कयलहुँ । पहिल कथा छल 'गजखेर आ मजमूंगर' । ई कथा 1968क आरम्भ मे 'मिथिला मिहिर' मे छपल । तकर बादे कहियो कविता लिखब शुरू कयने होयब । हमरा इहो मोन नहि अछि जे हमर पहिल कविता कोन रहय । मिथिला मिहिरक फाइल देखला सँ पता चलि सकैत अछि। दू-तीन साल कविता लिखैत रहलहुँ । किछु कविता हिंदियो मे छपल छल। फेर कविता छूटय लागल । बुझायल जेना ई विधा हमर नहि छी। कविताक निजी अभिव्यक्ति-पद्धति विकसित करब हमरा कठिन बुझाएल। हमरा लेल गद्य-लेखन जेना स्वतः स्फूर्त छल तेना कविता नहि । कविता-लेखनं सँ विमुख हेबाक एकटा कारण इहो भ' सकैत अछि ।

'अभाव' हमर काव्य-लेखनक परित्यागक एकटा मनोदशाकेँ चित्रित करैत अछि । ई कथा 71 ई. मे लिखल गेल छल । भरिसक एहि कथाक बाद हम कविता लिखब छोड़ि देने छलहुँ । मुदा अहाँकेँ ई जानि आश्चर्य होयत जे हम पच्चीस सालक बाद 1996 मे पाँच टा कविता लिखलहुँ। ई कविता कोनो स्वतः स्फूर्त आंतरिक प्रेरणा अथवा सर्जनात्मक व्याकुलताक परिणाम नहि छल; आकाशवाणीक अनुरोध पर लिखल गेल छल। लेकिन तकरबाद किछु दिन धरि काव्यात्मक आवेगक अनुभव होइत रहल । कैकटा विषय आ तदनुरूप काव्यात्मक ढाँचा दिमाग मे चक्कर काटय । मुदा पच्चीस सालक अभ्यासहीनता आ कथा लिखबाक हिस्सक वाधा बनि गेल । तकरवाद सँ अखनधरि फेर कोनो कविता नहि लिखने छी आ ने भविष्य मे लिखबाक नेआर अछि। अनेक रचनाकार अपन लेखनक आरम्भ कविता सँ करैत अछि आ आगू चलिक' मात्र गद्य लिख' लगैत अछि । मैथिली मे राजमोहन झा आ प्रभास कुमार चौधरी एहने रचनाकार छथि । एहि सन्दर्भ मे हमरा ई बुझाइत अछि जे जाहि विधा मे लेखकक स्वाभाविक रूचि होइत छैक, ताहि मे ओ लिखैत रहैत अछि आ जे रूचिक अनुकूल नहि लगैत छैक तकरा छोडि दैत अछि । किछु लेखक अनेक विधा मे लिखैत अछि । धूमकेतु, जीवकान्त, मायानन्द मिश्र, रमानन्द रेणु, सोमदेव, धीरेन्द्र आदि एहने लेखक छथि। लेखन एक विधा मे कयल जाय या अनेक विधामे–ई रूचि आ अभ्यास पर निर्भर अछि ।

मात्र रूचि आ अभ्यास पर ? रचनात्मक उत्तेजना पर नहि ? कोनो दृश्य अथवा स्थिति हमरा आवेगपूर्ण बना देलक आ हम लिखबा लेल सोचय लगलहुँ । ई निर्णय तँ बाद मे हेतै जे ओहि वस्तुकेँ हम कोन विधा मे लिखी । प्राथमिक बात तँ अछि आवेग कि हमरा लिखबाक चाही...।

लेखनक प्राथमिक शर्त्त ठीके सृजनात्मक आवेग या प्रवृत्ति होइत अछि। मुदा मात्र सहज प्रवृत्ति पर्याप्त नहि अछि । अध्ययन या लेखनाभ्यास सेहो जरूरी होइत अछि । अध्ययन आ अभ्यास द्वारा लेखक अपन सृजनात्मक क्षमताक विकास करैत अछि । रचनाकार कतेको विधाकेँ अजमाबैत अछि। मुदा ओकर गुणक सर्वाधिक विकास कोनो एके विधा मे होइत छैक । भारतीय आ विश्व साहित्य मे एकर अनेक उदाहरण अछि जे अधिकांश रचनाकारक कलात्मक श्रेष्ठता कोनो एके विधा मे सर्वाधिक पल्लवित-पुष्पवित भेल अछि ।

अहाँ ठीक कहै छी भाइ । एकाग्रता आ एकनिष्ठता ओहुनो विशिष्टता आ विशेषज्ञताक मूल थिक । मुदा, सभक जड़ि मे तँ अछि जे लेखक लिखय । उद्यम करय । आर बात सभ तँ एकर बादक बात थिक । एहिठाम दू टा अलग-अलग स्थिति हमरा देखार पड़ैत अछि । एक तँ ई जे हम लिखी तँ किए लिखी ? यानी कि लिखबाक कारण? आ दोसर, हमरा नहि लिखबाक चाही तँ से किएक ? यानी की नहि लिखबाक कारण? निश्चित रूप सँ अलग-अलग रचनाकारक लेल एहि मे सँ अलग-अलग कारक जवाबदेह होइत छैक । अहाँक बौद्धिक क्षमता अचूक अछि भाइ! हम एहि प्रश्नक सन्दर्भ मे अहाँक विश्लेषण सुनए चाहै छी । खास क'क' मैथिली सन भाषा मे जतए कि लेखन करबाक हेतु उत्प्रेरक कारण सभक घोर अभाव छै ,लेखक लोकनि किए लिखब छोड़ि दै जाइ छथि आ कि किए कलम धेने रहै छथि ? लेखकक अपन जीवन-शैली तँ सेहो संभवतः एकरा लेल उत्तरदायी हेतै।

जखन क्यो लिखब शुरू करैत अछि त' ई नहि बुझैत अछि जे ओ किएक आ कोन कारणे लिखैत अछि । ओ प्रेरणावश लिखब शुरू करैत अछि आ आँगा चलिक' लिखबाक कारण आ उद्देश्य बुझैत अछि । अधिकांश रचनाकार अपन लेखनक आरम्भ आत्माभिव्यक्ति , आत्मसंतोष आ यशक लेल करैत अछि । एहन लेखक विरले क्यो होयत जे लेखन आरम्भ करबा सँ पहिनहि साहित्यक आदि अंत अर्थात साहित्य नामक संवृति (फेनोमेनन) के फरिछा क' बूझि लिअय आ तकरवाद साहित्य-सृजन मे प्रवृत

इहहुअय । लेखक के परम्परा सँ साहित्यक मॉडेल या नमूना भेटैत छैक आ ओ ओहि मॉडेल मे अपन बोध एवं अभिरूचिक अनुसार परिवर्तन करैत साहित्य लिखैत अछि।

लिखबाक एकमात्र सामान्य कारण त' इएह अछि जे साहित्य मानव समाज लेल उपयोगी होइत अछि । साहित्यक उपयोगिताक अनेक रूप आ स्तर होइत अछि । मनोरंजन सँ ल' क' सामाजिक परिवर्तन धरि। कोनो रचनाकार एहि कारणे नहि लिखैत अछि जे लिखला सँ कोनो समाजिक-राजनीतिक क्रान्ति भ' जेतैक । एकर अर्थ ई नहि जे क्रान्ति मे साहित्यक कोनो भूमिका नहि होइत छैक । लेखक मे मनुक्खक प्रति असीम प्रेम होइत छैक आ ओ अपन लेखन सँ जीवन के अधिकाधिक मानवीय आ सुन्दर बनेबाक प्रयत्न करैत अछि ।

रचनाकार जाहि भाषा मे लिखैत अछि ,ओहि भाषाक सामाजिक स्थिति सँ निरपेक्ष नहि रहि सकैत अछि । मैथिलीक सामाजिक परिस्थिति साहित्य- लेखनक बहुत अनुकूल नहि अछि । मैथिली मे प्रकाशक ,वितरक आ सामान्य पाठकक अभाव अछि । कोनो दैनिक समाचार-पत्र नहि अछि। स्थायी आ नियमित पत्रिका नहि अछि । जे थोड़ बहुत पोथी-पत्रिकाक प्रकाशन होइत अछि से सभ व्यक्तिगत प्रयास आ त्यागक फल अछि। एहि परिस्थिति क प्रत्यक्ष तात्कालिक प्रभाव ई पड़ल अछि जे मैथिली मे छोट रूपवंध वला रचना ,जेना कथा ओ कविता बेसी लिखा रहल अछि ,जाहि सँ ओ कम स कम पत्रिकोटा मे छपि सकय अथवा गोष्ठी मे सुनायल जा सकय । धूमकेतु ,महाप्रकाश, आ रमानंद रेणुक उपन्यास कतेको साल सँ लिखल पड़ल अछि आ प्रकाशनक बाट ताकि रहल अछि। एहि सभ सँ लेखकक उत्साह मारल जाइत छैक आ ओ लेखनक प्रति उदासीन भ' जाइत अछि ।

लेखन बंद करबाक एकटा कारण उचित महत्व आ प्रतिष्ठा नहि भेटब होइत छैक । जेना ललित संगे भेलनि । मैथिली मे कृतिक मूल्य निर्धारण अधिक काल साहित्येतर दृष्टि सँ होइत अछि । सम्बन्धवाद, व्यक्तिगत स्वार्थ, गुटबाजी इर्ष्या, द्वेष- ललित एहि सभक शिकार भेलाह आ लिखब छोड़ि देलनि । साहित्यक राजनीति सँ दूर रहनिहार मैथिली लेखक आइयां एहि सभक मारल अछि । मैथिली साहित्य आ संस्कृतिक उन्नयन मे लागल प्रमुख संस्था सभ पर एहन तत्व काबिज अछि जे साहित्य आ संस्कृतिक बदला मे व्यक्तिगत स्वार्थक उन्नयन क' रहल अछि । परिस्थिति लेखनक प्रतिकूल अछि । रचनाकार एहि कारणे लीखि रहल अछि जे ओ मैथिली साहित्य आ संस्कृति के जिआ क' राखय चाहैत अछि ।

सही बात । लेखक जँ जिद पकड़ने अछि जे हम लिखबे करब तँ एकरा पाछां बहुत गहन करूणापूर्णताक संग ओकर ई चेष्टा छै जे साहित्य आ संस्कृति केँ जिआ क' राखल जाय ।

एम्हर अहाँक कथा-लेखनक दोसर दौर शुरूह भेल अछि । अहाँक दू - तीनटा एम्हरूका कथा सभ पढलहुँ अछि । एहि मे एकटा बात सभ सँ बेसी हमर ध्यान आकृष्ट केलक। आ से थिक कथाक पठनीयता । कथा मे बहुत बेसी प्रवाह छै आ फोर्स छै । सरल आ सहज शैलीक तँ अहाँ मास्टरे छी । मुदा अहाँक प्रथम दौर के कथा सभ जे हम पढ़ने छी ताहि सँ बहुत बेसी पठनीयताक गुण एहि मे छै । पहिने तँ हम जानए चाहब जे की ई अहाँक सावधान प्रयोग थिक? एकरा पाछां कोनो गँहीर प्रयोग, कोनो निष्पति.... आ दोसर एहि दिस अहाँक ध्यान आकृष्ट करब जे एहि कथा सभक जे नायक अछि (जेना 'बात' कथाक नायक) तकरा मे चमत्कृत वा हतप्रभ रहि जेबाक बोध छै । दुनियाँ तते बदलि गेल अछि जे ओ चकित-विस्मित अछि । सामंजन करबा मे ओकरा असोकर्य भ' रहलैए तँ, हमरा ईहो देखाइत अछि जे एहि बदलल समयक चित्रे प्रस्तुत कएनाइ नायकक हतप्रभते देखेनाइ कथाक मूल उद्देश्य थिक । कथानकक पाछां एक ठोस कथ्य होइक, प्रभावान्विति द्वारा तकरा पल्लबित करबाक जतन हो-ई जे समकालीन समभ्क अछि कथा कलाक सम्बन्ध मे, तकरा अहाँक कथा लेखन तोड़ैए। एहि पर अहां की सोचे छी ?

अहाँ ठीक लक्ष्य कयने छी हमर कथाक ई दोसर चरणं थिक । 'घरदेखिया' संग्रहक बादक लिखल कथा सभक गढ़नि किछु भिन्न अछि । ओहि मे अपेक्षाकृत बेसी सावधानी आ सर्तकता अछि । ई परिवर्तन आ विकास एकटा स्वभाविक प्रकिया अछि। रचनाकार शिल्पक प्रति उत्तरोत्तर सजग आ सचेष्ट होइत जाइत अछि ।

पठनीयता साहित्यिक कृतिक पहिल शर्त होइत अछि । कोनो रचनाक कथ्य कतबो महत्वपूर्ण आ मूल्यवान किएक नहि हो जँ रचना मे पठनीयता नहिं अछि त ओ रचना बेकार अछि । चाहे लोककथा हो अथावा शिष्ट कथा, खिस्सा सदैव संसारक सर्वाधिक रोचक आ मनलग्गू वस्तु रहल अछि। श्रेष्ठ कथा रोचक होइते अछि, मुदा मात्र रोचकता कोनो कथा के श्रेष्ठ नहि बना सकैत अछि ।

'बात' कथाक नायक ने त' हतप्रभ अछि ने चमत्कृत । ओ दुखी आ उदास अछि।

ओ धोखा ,प्रपंच आ हिंसा सँ दुखी अछि । ओकर प्रतिवाद करैत अछि । अ क प्रति विरूचि आ विकर्षण उत्पन्न करैत अछि । कथाक इएह प्रेरक भाव वा कथ्य अछि ।

रचनाक परिणति जाहि संवेदना ,भाव आ विचार मे होइत अछि , सएह ओकर कथ्य होइत छैक । कथ्य के अज्ञात रूप सँ पाठकक मनोरचनाक अंग बनि जयबाक चाही। हरेक कथाक पाछां कोनो ने कोनो प्रेरक भाव होइत छैक । एहि प्रेरक भावक बिना कोनो कथा लिखायले नहि जा सकैत अछि आ इएह प्रेरकभाव कथा केँ महत्व आ सार्थकता प्रदान करैत छैक।

हमरा मोन पड़ैए जे 1983मे जखन 'घरदेखिया' छपल तँ एकर व्यापक स्वागत भेल रहै । खूब सराहल गेल रहै । आइ हमरा लोकनि एकरा पढ़ै छी तँ एक बात तँ ई लागैए जे अहाँ अपन पीढ़ीक सभ सँ काबिल कथाकार छी तँ दोसर दिस ईहो देखार पड़ैए जे अहाँ सर्वाधिक दुविधाग्रस्त लेखक सेहो छी । दुविधाग्रस्त एहि अर्थ मे कहै छी जे अहाँ अपन जगह निर्धारिते नहि कए पेने छी। कृत्रिमतापूर्ण आ भागदौड़-टूटन-भरल शहरी जीवन एक दिस तँ युग-युग सँ मूक-बधिर-पंगु बनल दलित जनताक जीवनक राग-विरागक संवेदना दोसर दिस। अहाँ एहि दुनूक बीच डोलैत रहल छी आ ई दुविधाग्रस्तता अहाँक ऊर्जस्विता केँ कुंद करैत रहल अछि। अहाँकेँ एहन महसूस होइए ?

लेखक जीवनक सम्बन्ध मे लिखैत अछि । ओ जीवन शहरी अछि वा ग्रामीण से महत्वपूर्ण नहि होइत छैक । लेखक अपन अनुभव क्षेत्र सँ विषयकेँ उठबैत अछि । ई अनुभव क्षेत्र शहरी भ' सकैत अछि, ग्रामीण भ' सकैत अछि या दुनू भ' सकैत अछि । एहि मे दुविधाक कोनो बात नहि अछि, ने एहि सँ लेखकीय ऊर्जाक अपव्यय होइत अछि। 'घरदेखिया' संग्रह मे जँ एक दिस घरदेखिया, काठक बनल लोक, झालि, फँसरी आदि ग्रामीण जीवनक लोकप्रिय कथा अछि त' दोसर दिस डर, टिप, लिफ्ट, रामनिहोर आदि शहरी जीवनक लोकप्रिय कथा अछि ।

सातम दशक मे हिन्दी मे 'अकहानी' आन्दोलन चलाओल गेल रहै । 'अकहानी' माने कि परम्परा निर्धारित आ सामान्य-समर्थित गुणधर्म सँ मुक्त कहानी। कथाक विषयवस्तु आ शिल्प दुनू मे व्यापक तोड़फोड़ एहि कालखण्ड मे कएल गेलै। 'तोड़फोड़' जे हम कहै छी से निगेटिभ सेन्स मे नहि कहै छी, एकरा विकासेक

सन्दर्भ मे लेल जाय । मैथिली मे ई चीज आन्दोलन चलाक' नहि, बहुत सहज आ स्वाभाविक रूप मे एलै । हँ, एहि आगमन मे थोड़े बरखक देरी जरूर भेलै। हिन्दी मे राजकमल चौधरी सेहो एकर मुखर प्रयोक्ता बनलाह । मैथिली मे ई अकहानी-तत्व जतए हमरा सर्वाधिक प्रस्फुटित रूप मे देखार पड़ैत अछि, से थिक अहाँक बहुतो कथा सभ । 'अभाव', 'टिप', 'डर', 'धुंध मे घटना' आदि-आदि कथा हमरा एतय मोन पड़ैए ।

तँ हम अहाँ सँ जानए चाहै छी भाइ जे अहाँक एहि कथा सभ मे जे नवीनता छै, परम्परागत कथा-मर्यादाक निषेध छै, से अहाँक स्वानुभूत अछि-माने कि अहाँ जाहि जीवन-प्रवाहकेँ अपन चतुर्दिक देखलियैक अछि तकर घात-प्रतिघातक स्वाभाविक निष्पति थिक आ कि देश-विदेश मे चलल कथा-आन्दोलनक अनुरूप मैथिली कथाकेँ समर्थ आ सम्पन्न बनेबाक सदिच्छा सँ अपनाओल गेल एक अननुभूत प्रयोगमात्र, जकरा कि आम भाषा मे 'देखाउँस' कहल जेतै...

हिन्दी मे 'अकहानी' कोनो आन्दोलन नहि छल, एकटा नारा छल । गंगा प्रसाद विमल अपनाकेँ स्थापित करबाक लेल एकटा कृत्रिम नारा देलक। 'अकहानी' क' ने त' कोनो सुचिंतित सैद्धान्तिक आधार छलैक, ने कोनो सामाजिक मांग। 'अकहानीक' नारा लगायब ठीक ओहिना छल जेना क्यो अपनाके चिन्हेबा लेल अपनाकेँ स्थापित करबाक लेल हिंदी मे कोनो पत्रिका निकालि लैत अछि । 'अकहानी' एकटा स्टंट छल, वैयक्तिक महत्वाकांक्षा पूर्त्तिक चेष्टा छल । 'अकहानी'क स्थिति आ गतिक तुलना मैथिली मे सोमदेव क 'सहजतावाद' सँ कयल जा सकैत अछि ।

राजकमल चौधरी केँ 'अकहानी' सँ कोनो लेन-देन नहि छलनि । ओ 'नईकहानी' युगक कथाकार छलाह । 1957 मे 'नई कहानी' इलाहावाद मे समारोहपूर्वक स्थापित भेल आ 1958 मे राजकमलक पहिल हिन्दी कथा छपल ।

डर, टिप, अभाव आ धुंध मे घटना–एहि चारू मे अभाव आ धुंध मे घटना कृत्रिम संवेदनाक कथा अछि, बौद्धिक व्यायाम अछि ।

एकटा दोसरो दृष्टि सँ तँ एकरा देखल जा सकैए । जेना एही प्रकारक कथा सभकेँ लेल जाय तँ प्रश्न उठैए जे जँ ई मैथिली कथा थिक तँ एकर मैथिलीपन कतैए छै ? एहि कथा सभ मे मिथिला कतए छै ? जँ दोसर भाषा मे एकर अनुवाद

कएल जाए तँ पाठक कें एहि मे कोन-कोन ठाम मिथिला देखार पड़तै आ कोना लोक एकरा 'मैथिली कथा' मानत ?

कोनो रचना सांस्कृतिक विशिष्टता प्रदर्शित करबाक लेल नहि लिखल जाइत अछि। ओकर सरोकार मानवीय तत्व सँ रहैत छैक, सांस्कृतिक चिह्न सँ नहि । भाषा मे सांस्कृतिक समस्त विशिष्टता समाहित रहैत अछि। मैथिली मे लिखल साहित्यक मैथिलत्व ओकर भाषा अछि ।

एतए एक बेर फेर हम राजकमल चौधरीक उल्लेख करए चाहब । जे राजकमल हिन्दी मे अकहानीनुमा कहानी-लेखनक लेल प्रसिद्ध छथि आ विधागत तोड़फोड़क लेल विख्यात छथि, वैह राजकमल जखन मैथिली मे कथा लिखलनि तँ ओहि सँ एकदम अलग । हुनकर मैथिली कथा सभ मे बेछप व्याप्तिक संग मिथिला तँ जगजगार छैके, पारम्परिक कथा-भाषा आ कथा-शिल्पक अंगीकार सेहो छै। अहाँ तँ भाइ, राजकमल चौधरीक सेहो विशेषज्ञ छी । राजकमल चौधरीक संग एना कोना भ' सकलनि आ अहाँक संग किए ःहि भ' सकल ?

राजकमलक अधिकांश हिन्दी कथाक परिवेश शहरी अछि आ मैथिली कथाक परिवेश ग्रामीण अछि । परिवेशगत आ भाषागत भिन्नताक कारणें राजकमलक हिन्दी आ मैथिली कथा भिन्न लगैत अछि । शिल्प आ दृष्टिक स्तर पर हुनक हिन्दी आ मैथिली कथा मे कोनो भेद नहि अछि ।

रचनाकारक आपसी भेद-अभेद कोनो अस्वाभाविक आ आश्चर्यजनक घटना नहि अछि। कतेको अर्थ मे समान होइतो हरेक व्यक्ति दोसर सँ भिन्न होइत अछि । ओ राजकमल चौधरी छलाह आ हम सुभाष चन्द्र यादव छी ।

कखनो-कखनो हमरा लागैए भाइ जे एक कथाकार रूप मे अहाँ अकहानी-आन्दोलनक देन छी । से लागैए विशेषतः अहाँक अवधारणा देखिक' । अहाँक कथा-रचनाक जे शिल्प अछि, तकरा 'फोटोग्राफिक' कहल जा सकैए । माने कि स्थिति आ घटना जेनाक जेना अछि, तकर सीधा-सीधी फोटोग्राफी । एहि शैलीक विशेषता हमरा एकटा ई बुझाइए जे एहि मे उपस्थापनक ओते महत्त्व नहि छै, जते कि चयन के । अकहानी दौर के हिन्दी कथा सभक ई शैली छलै । आ कमोवेश अहाँक निजी शैली आइयो सेह थिक। अहाँकेँ केहेन लागैए ?

‘अकहानी’ कोनो आन्दोलन नहि छल। ओ व्यक्तिवादी नारा छल। ओकर कोनो सिद्धान्त, शिल्प आ शैली नहि छल। अस्तित्ववादी आ एब्सर्ड विचारधाराक प्रभावमे रचित गंगा प्रसाद विमलक किछु कथाक संग ‘अकहानी’ जनमल आ मरि गेल। एहि सम्बन्ध मे अहाँक समस्त धारणा आधारहीन अछि।

नहि भाइ, हम कोना मानब जे आधारहीन अछि। ई बात सही छै जे अकहानी धरती सँ नहि जनमल छल, आयातित छल। मुदा जे किछु होउक, छल त' ओ अवश्ये। अस्तित्ववाद आ एब्सर्डिटीक कोनो प्रभाव हिन्दी कहानी पर नहि पड़लै, से क्यो मानत? तखन ई बात जरूर जे गंगा प्रसाद विमल प्रभृति कमजोर पड़लाह आ 'नई कहानी' बला सभ हुनका दाबि देलकनि। ओना, ईहो बात हमरा साफ देखाइत अछि जे अकहानीक एकमात्र प्रयोक्ता विमले टा तँ नहियें छलाह सभ सँ प्रतिभाशाली प्रयोक्ता सेहो विमल नहि, निश्चित रूप सँ राजकमल चौधरी छलाह। तखन, ई बात ध्यान राखब जरूरी जे राजकमलक समुच्चा कहानी-साहित्य एहि दौर के नहि छियै मात्र परवर्त्ती कहानी सभ छियै। हँ, एहि बात सँ हम पूर्ण सहमत छी जे अकहानी जेना जनमल, तहिना मरियो गेल। हम तँ ई कहब जे ओकर मरि जायब हिन्दी कहानीक स्वास्थ्य लेल आवश्यक छल आ ई एक कल्याणकारी घटना भेल। मुदा मूल बात ई अछि जे जनमल तँ ओ छल जरूर, पसरल तँ छल जरूर, बहुतों कें प्रभावितो कएने छल, बहुतो लोक ओही कलाकेँ विधेय कहानीकला मानलक, तहियो मानलक आ बादो मे मानैत रहल...व्यक्ति के बात हम नहि करै छीं, हम दौर के बात करै छी। खैर, एहि प्रसंग कें छोड़ू। अहाँ अपन कथा-शिल्पक विषय मे की सोचै छी?

1977 मे मैथिली, अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रह मे हमर ‘घरदेखिया’ कथा संकलित कयल गेल। एहि कथाक भाषाक सम्बन्ध मे संपादकीय टिप्पणी छल: कथा मे भाषा कोना फोटोग्राफी करैत चलैत छैक, तकर बड़ सुंदर उदाहरण ई कथा अछि। लगैत अछि भाषा सम्बन्धी इएह टिप्पणी अहाँक एहि धारणाक स्रोत एवं आधार अछि जे हमर शिल्प फोटोग्राफिक अछि।

साहित्य चित्रात्मक होइत अछि। ओ देश काल-पात्रक भावात्मक चित्र प्रदान करैत अछि। चित्रात्मक कहला सँ हमर शिल्पक कोनो विशिष्टता प्रमाणित नहि होइत अछि। अहाँक चयन आ उपस्थापन अर्थात भाव-तत्व आ ओकर गढ़नि-सुन्दर कृतिक लेल

दुनू एक रंग महत्वपूर्ण अछि। सौंदर्य मे अनुपात होइत अछि। भाव-तत्व आ ओकर गढ़निकेँ समानुपातिक हेबाक चाही, तखने रचना सुन्दर भ' सकैत अछि।

प्रश्न ई नहि अछि भाइ जे की 'हेबाक चाही', प्रश्न अछि जे की छै। अस्तु। हमरा लागैए जे समकालीन जीवन जें कि बहुत जटिल भ' गेलैए, अनेकानेक प्रकारक जटिलता सभ सँ परिपूर्ण तें एकरा अभिव्यक्तिक हेतु जे 'वस्तु' चुनल जेतै कथा मे, आ तकर जे उपस्थापन हेतै, से जटिलता सँ परिपूर्ण। आ लेखकक सफलता एहि बात मे निहित छै जे एहि समस्त जटिलता कें ओ कते सरल ढंग सँ अभिव्यक्त क' पाबैए अपन कथा मे। एम्हरूका जे कथा सभ अहाँक नजरि मे आएल हएत, ताहि मे ई बात अहाँ देखने हेबै। जँ हम हरिमोहन झा वा प्रेमचन्द्र जकाँ जीवनक पक्ष मे आ प्रगतिशीलताक पक्ष मे ठाढ़ छी तैयो हुनका सभ जकाँ सरल निष्पति हम कथा मे नहि द' सकै छी, कारण हमरा सभक समक्ष जे समकालीन समाज आ जीवन अछि, यथार्थ अछि से महाग जटिल अछि।

मुदा भाइ, अहाँक जे मान्यता हमरा बुझाइत अछि से एकर एकदम विपरीत अछि। अहाँ स्थितिक फोटोग्राफी करै छी। ई बात कोनो संग्रहक भूमिका पढ़ि क' हम नहि कहि रहल छी, शुद्ध अपन अभिमत कहि रहल छी। सरल यथार्थ के' पकड़ै छी आ तकर सरल अंकन करै छी। जटिलता जँ कतहुँ आबितो छैक तँ से मात्र वस्तुक चयन मे उपस्थापन मे तँ किन्नहु नहि। बहुत सुनिर्धारित तरीका सँ, सहज-व्यवस्थित भ'क' अहाँक यथार्थ अपन निष्पति दिस गमन करैत अछि। नहि?

हरेक रचनाकार अपन समयक चुनौती, मानवीय संकट आ समस्याकेँ अपना ढंगे बुझैत अछि आ अपन क्षमताक अनुरूप ओकरा व्यक्त करैत अछि। यथार्थ बदलैत रहैत अछि आ ओकरा संग-संग अभिव्यक्तिक पद्धति सेहो बदलैत रहैत अछि।

सहज आ सरल भेनाइ बड़ कठिन होइत अछि। जटिलता सँ गुजरिए क' सरलता प्राप्त कयल जा सकैत अछि।

एकदम सही बात। हम देखै छी जे यथार्थ के चयनक संग-संग ओकर उपस्थापनों पर जतय अहाँ समान रूप सँ सजग रहलहुँ अछि आ तकर फलस्वरूप एक चमत्कारपूर्ण सन्तुलन कायम भेल अछि जकरा कि अहाँ 'भाव तत्व आ गढ़नि

के समानुपातन' कहलहुँ, से कथा सभ बहुत सफल भेल अछि। 'घरदेखिया' आ 'काठक बनल लोक' के हम खास तौर पर चर्चा करब, जे कि अहाँक सर्वश्रेष्ठ रचना मानल जाइए। हमरा बुझने एहि दुनू कथाक जे श्रेष्ठता छै, से एकर सन्तुलने मे निहित छै। दोसर बात जे कखनो-कखनो हमरा लागैए से ई जे कथाक सम्बन्ध मे जे अहाँक मान्यता अछि आ कथा-कलाक जे अहाँक मानदण्ड अछि, ई दुनू कथा तकर अतिक्रमण करैत अछि। आ एकर समस्त श्रेष्ठता एकर अतिक्रमणे मे निहित छै। अहाँ की कहै छी?

जीवनक लेल जे नीक आ सुन्दर अछि, हमर कथा तकरे आग्रही अछि। हमर कथाक प्रेरणा जीवन-प्रेम अछि। जे कोनो चीज जीवन-विरोधी अछि, हमर कथा तकरा प्रति वितृष्णा उत्पन्न करैत अछि।

साधुवाद भाइ। अहाँक एहि आश्वस्तिपूर्ण विचारक लेल साधुवाद! हम, मैथिलीक समस्त लेखक लोकनि अहाँक एहि उक्तिकेँ ल' क' एकैसम शताब्दी मे प्रवेश करी। यैह हमरा लोकनिक काम्य हो, लक्ष्य हो। साधुवाद! ❑

कथाकार अपन लेखनमे क्रमशः अधिक लोकोन्मुख होइत गेलाह अछि

कुलानन्द मिश्रसँ अशोकक अन्तरंग वार्त्ता

['हमरा लगैत अछि जे प्राचीनकालसँ आइधरि वाचिक परम्परासँ लिखित परम्पराधरि उपलब्ध कथा सभक उद्देश्य, स्वरूप एवं स्वरक मध्य व्याप्त भिन्नताकेँ देखैत कथाकेँ कोनो परिभाषाक सीमामे बान्हबे कि तकर चेष्टे करब अर्नगल भ' गेल अछि। कारण जे प्रत्येक कथा आब पाठकसँ वैयक्तिक संवेदना आ संस्पर्शक अपेक्षा रखैत अछि। स्वयं कथा संग सोझ सम्पर्क राखब आ कथाक समस्त इतिहासक अवगति राखब कथाक लग पहुँचबा लेल आब अत्यन्त आवश्यक आ एकमात्र सार्थक उपाय थीक।'

मैथिलीक मान्य समालोचक आ हेबनि मे प्रकाशित अपन दोसर कविता संग्रह 'आब आगाँ सुनू'क कवि कुलानन्द मिश्र अपन अद्‌तन सोच, दृष्टिक संग उपस्थिति छथि एहि वार्त्ता मे। कुलानन्द मिश्रक मैथिली कथा पर लिखल समालोचना चर्चित-प्रशंसित अछि। दृष्टान्त स्वरूप हुनक विचार बहुधा उद्‌धृत होइत रहैत अछि। अहू वार्त्ता मे कतेक प्रश्न हुनके लिखल पाँती पर आधरित अछि।]

अशोक : भाइ, मैथिली साहित्यमे कवि ओ समालोचक-चिन्तक रूपमे अहाँक एक विशिष्ट स्थान अछि। अहाँक मन्तव्य ओ टिप्पणी बहुधा चर्चामे रहल अछि। मैथिली कथा पर अहाँक प्रकाशित ओ आकाशवाणीसँ प्रसारित निबन्ध हमरा लोकनिकेँ मैथिली कथाक प्रवृत्ति, ओकर सामाजिक सन्दर्भ, ऐतिहासिकता तथा युगीन दृष्टिबोधसँ परिचित करबैत अछि। अहाँ स्वाभाविक रूपेँ मैथिली कथाक सजग ओ सचेष्ट पाठक सेहो छी। एही शताब्दीमे प्रारम्भ भेल मैथिली कथा-यात्रा आइ जत धरि पहुँचल अछि की ओहिसँ संतुष्ट छी? यदि संतुष्ट छी त' कोना? यदि सन्तुष्ट नहि छी त' से किए? कने फरिछा क' कहियौक।

कुलानन्द मिश्र : हम साहित्य संग अपन संम्पृक्ति तीन तरहें मानैत छी। पहिल-पाठक, दोसर रचनाकार आ तेसर समीक्षक कि आलोचक रूपमे। पाठकक रूपमे साहित्य संग हम अपन सम्बन्ध हाइ स्कूली जीवने मे (प्राय: किछु अधिके आतुरता संग) जोड़ल। पटना कॉलेजक मिण्टो छात्रावासमे चारि बरख जे काटल ओहि अवधिमे साहित्यक पाठके मित्र अधिक भेटलाह। रचनाकारक रूपमे एकमात्र सहपाठी रहथि डा. नन्द किशोर नवल, जे मौकाक सभ अवसर पर इम्हर कतोक बरखसँ कोनो बाँस आ कोनो रंगक कप्पा संग आलोचनाक क्षेत्रमे झण्डा गाड़ैत आबि रहल छथि। हिनके प्रेरणा सँ छात्रावास-कालमे हम दूटा अनुवाद कयल, जे हमर पहिल लेखकीय प्रयास मानल जा सकैछ। एहि दुनू अनुवादमे एकटा राजकमल चौधरीक मैथिली (दमयंतीहरण)क हिन्दीमे आ दोसर यशपालक हिन्दी कथा (मनुष्य)क मैथिली मे अनुवाद छल। छात्रावास हम 1960 ई. मे छोड़ल। सन् 1963 इ.क जुलाई सँ सरकारी चाकरी आरम्भ कयल। एहि समस्त अवधिमे हम मूलत: पाठके बनल रहलहुँ, मुदा से हम गम्भीरता संग बनल रहलहुँ। राजकमल चौधरीक अकाल निधन जून 1967 मे भेलनि। ओहि संदर्भमे 'दिनमान' (2 जून 1967) मे छपल हमर पत्र पैघ विवाद ठाढ़ कयलक आ एहि विवादसँ हमरा आत्मा मे ई बोंध फरीछ भेल जे हमरा मे लेखन-क्षमता अछि। राजकमल 'ध्वजभंग' नामक एकटा पत्रक प्रकाशन लेल कहियो विचारने रहथि आ ई बात एक दिन हम चारि मित्र (हम, डा. नन्द किशोर नवल, प्रो. शिव बच्चन सिंह आ सिद्धिनाथ मिश्र)क बीच चर्चाक केन्द्र बनल। ओहि दिन हम सभ 'ध्वजभंग' नामक एकटा मात्र समीक्षा पर आधारित पत्रिका हिन्दीमे बहार करबाक निर्णय कयल। 'ध्वजभंग'क तीन अङ्क बहार भेल आ एहि प्रकारें हमर लेखकीय जीवनक विधिवत् आरम्भ समीक्षा-लेखन संग भेल। ई बात सन् 1967 सँ 1970 क बीचक थीक। 'ध्वजभंग'क बन्द भेलापर हम सखा-स्नेही मोहन भारद्वाजक प्रेरणासँ हुनके संग मैथिलीमे 'सन्निपात' नामक अनियतकालीन पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ कयल, जकर 5 टा अङ्क बहरा सकल। 'सन्निपात' मे हम सम्पादनक अतिरिक्त अनुवाद आ समीक्षा द्वारा रचनात्मका सहयोग कयल। निश्चित रूपसँ लेखनक क्षेत्रमे डेग धरैत काल समीक्षा आ आलोचनेक पथके प्रशस्त करबाक बात हमरा मोनमे सभसँ अधिक जड़िआयल छल। कविता हम किछु बाद मे लिखब आरम्भ कयल आ कविता लेल आलोचना सँ कम लेखकीय ममत्व नहि पोसैत छी, मुदा हुनको लोकनिक मान्यताकेँ गंभीरतापूर्वक स्वीकार करैत छी जे हमरा कविकेँ हमरा आलोचककेँ कद-काठी आ मर्यादामे ठेंठ मानैत छथि।

यद्धपि किछु गोटे भिन्नो मतिक छथि, मुदा हम अहाँक एहि मान्यता संग सहमत छी, जे मैथिली कथा-यात्राक आरम्भ एही शताब्दी मे भेल। एहि शताब्दीक पहिल दू दशकमे भेल मैथिलीक कथा-यात्रा सँ हम संतुष्ट आ गौरवान्वित दुनू अनुभव करैत छी। एहि संदर्भ मे हम ई स्पष्ट करब आवश्यक बुझैत छी जे एहि शताब्दीक पहिल दू दशकमे लिखल गेल कथा-उपन्यासक अविचारित विधा नामकरणक कारण कथा-उपन्यासक वास्तविक आरम्भ काल सम्बन्धी ओझरा अखनो बनल अछि। हमर व्यक्तिगत मान्यता ई अछि जे तुलापति सिंहक 'मदनराज चरित', जीवनाथ मिश्रक 'मोहन मोहिनी', जर्नादन झा 'जनसीदन'क ताराक वैधव्य', 'निर्दयी सासु' आ 'पुर्नविवाह', जीवछ मिश्रक 'रामेश्वर' आदि खाहे ओ कथा कहि छपल हो कि उपन्यास कहि वास्तवमे ओ सभ कथा थीक आ यदि कथा नहि थीक त' मनोरंजनक गद्य रचना थीक। एहि शताब्दीक पहिल दू दशकक त' बाते भिन्न सन् 1932 मे काञ्चीनाथ झा 'किरण'क उपन्यास कहि बहरायल 'चन्द्रग्रहण' सेहो उपन्यासक रूपमे नहि, कथेक रूप मे हमरा मान्य अछि। मैथिलीक पहिल उपन्यास वास्तवमे प्रो. हरिमोहन झा लिखलनि, जे पोथी रूपमे 'कन्यादान' नाम सँ सन् 1933मे प्रकाशित भेल छल।

मैथिली कथा-यात्राक अद्तन प्रगतिसँ हमर संतुष्ट कि असंतुष्ट हायबाक प्रसंग अहाँक जिज्ञासाक सम्बन्धमे स्पष्ट उत्तर देब हमरा कठिन आ असंगत दुनू लगैछ, कारण कोनो एक निश्चित बात कहलासँ, बहुतो एहन बात कहबाक प्रासंगिकता समाप्त भ' जायत जे एहन जिज्ञासाक सन्दर्भमे आवश्यक रूपसँ चर्चाक पात्रता रखैछ। तें अहाँक एहि जिज्ञासाक संदर्भमे हम मैथिलीक कथा-यात्राक प्रगतिक सम्बन्धमे संतोष आ असंतोष दुनूक बात गछब उचित बुझैत छी। ओहुना कोनो क्षेत्रमे प्रगतिक गप्प संतोषपूर्वक मानब कोनो ने कोनो रूपमे भविष्यक संभावनाकेँ आवांछित कि असंभव मानब भ' सकैछ। हम मैथिलीक कथा-यात्राक प्रगतिक प्रति अपन संतोष आ असंतोषक सन्दर्भमे अहाँक 'किया' ओ 'कोना'क जबाब मे अपन स्थिति एहि तरहें स्पष्ट करबाक प्रयास क' रहल छी।

(1) हम मैथिलीक कथा यात्राक अद्यतन प्रगतिसँ संतुष्ट छी, कारण अजुका मैथिली कथामे ओ वैचारिक आ आवेगात्मक तत्व सभ-न्यूनाधिक रूपमे समाहित थीक जे कोनो भाषाक आधुनिक कथा-साहित्यमे अनिवार्य रूपसँ ग्रहण कयल गेल अछि। तखन एहि कथा सभमे आधुनिक भाव- बोधक प्रामाणिकता, सघनता तथा निजताक निर्वाहक विन्दु सभ पर विवाद भ' सकैछ। असहमति एहू प्रश्न पर संभव थीक जे मैथिली

कथा अपन जातीय अस्मिताक रक्षा करैत अपन यात्राक प्रगति जारी रखलक अछि कि प्रगति-क्रममे ओकर जातीय अस्मिता खाहे देशीय प्रकृतिक क्षरण वा नवीनीकरण भेलैक अछि ।

(2) हम मैथिली कथाक अद्यतन प्रगतिसँ संतुष्ट नहि छी, कारण जे मैथिली कथामे सार्वदेशिकताक सामानान्तर निजताक संस्कारक कोनो विकास नहि भेल । सभ भाषाक साहित्यमे भीतरी आग्रह आ बाहरी प्रभावक कारण समय-समय पर बगय-बानीमे किछु अन्तर अबैत छैक, मुदा सभ भाषाक साहित्यमे निजताक विकासक उद्योगो देखार रहैछ। मैथिली कथा आन बहुतो भाषाक आधुनिक कथा जकाँ बाहरी प्रभाव ग्रहण करबा मे पर्याप्त सामर्थ्य देखाइयोक' अपन नैसर्गिक संस्कारक विकास हेतु चेष्टा कि चिन्ताक प्रति उदासीन सन रहल ।

हिन्दीमे प्रेमचन्दक समकालीन आ बादोक कतोक रचनाकार जकाँ समष्टि आ व्यष्टिक सार्वभौम अनुभूतिक संग एकात्मता स्थापित करबाक संग एक विशिष्ट भौगोलिक आ ऐतिहासिक इकाईक प्रति देखार चिन्ता, दुश्चिन्ता, सामाजिकता आ निस्संगता एवं अनुरक्ति तथा विरक्ति आ उपलब्धि तथा अनुपलब्धिक निरूपणमे मैथिलीक समकालीन कथाकार वर्गमे एकान्त रूपसँ अपन कोनो विशिष्ट छवि-छटाक प्रस्तुतिक सुनियोजित प्रयासक प्रति रूचि आ उत्साहक अभाव स्पष्ट देखा पड़त ।

भाइ, मैथिली कथाकेँ देखैत कोन तत्त्व सभ अहाँके ओहिमे उपस्थित भेटैत अछि ? संगहि की सभ अहाँ अनुपस्थित पबैत छी ।

अहाँक एहि प्रश्नक सोझ आ बहुत संतुलित उत्तर देबामे हमरा अमौकर्य भ' रहल अछि। कोनो भाषामे कथाक देल कोनो परिभाषा क्रमशः खाहे अव्याप्ति कि अतिव्याप्तिक दोषसँ ग्रस्त मानल गेल अछि, खाहे बदलैत कथा-परिदृश्य मे कथाक सम्बन्ध मे बहुतो पुरना धारणा कि मान्यताकेँ ध्वस्त करैत जयबाक आ तकरा स्थान पर नव-नव अवधारणा आ परिभाषा प्रस्तुत करबाक प्रक्रिया निरंतर जारी रहल अछि । जखन कथाक अवधारणा आ परिभाषा मे एतेक त्वरित गतिसँ बदलाओ आबि रहल हो आ ओ स्वीकृतो भ' रहल हो, एहनामे अहाँक एहि प्रश्नक उत्तरमे कोनो सुच्चा आ बेलाग बात कहब निरापद नहि होयत । तेँ हम चाहब अध्यापकीय गतानुगतिकता आ सम्पादकीय निस्संगता अवधारियेक' एहि प्रसंग मे अपन बात कही ।

कथाक सम्बन्धमे सर्वसम्मत परिभाषा कि अवधारणाक अभावक अछैतो कथाक पाठक-विचारक लोकनिकेँ कथाक सम्बन्धमे एकटा एहन मिश्र बोध रहलनि अछि जकरा आधारपर कथा आ अन्य गद्य-रचनामे अन्तर्निहित प्रकृत भिन्नताकेँ फराक-फराक चिन्हबामे कोनो आधारभूत जटिलता पर विवाद अपेक्षित नहि भेल अछि । ई बात पुरना आ आधुनिक दुनू कथा-रूप संग न्यूनाधिक मात्रामे सत्य रहल अछि । तखन आरंभिक कथामे जत' फ्रायड आ मार्क्सक सम्बन्धमे हमरा सभकेँ कोनो चिंता नजरि नहि पड़ैछ, आधुनिक कथाक सभ भंगिमामे ई दुनू महाप्राणक छाप बेछप देखबामे आओत। ग्रामीण अर्थ-व्यवस्थाक टूटब औद्योगिक विकासक परिणाम जकाँ लक्षित होइछ आ गामक क्रमशः पतरायब आ नगरक पसरब बीच नव अर्थ-व्यवस्था सँ बदलैत सामाजिक संरचनाक असहज स्वरूप सभ प्राचीन मूल्य सम्बन्ध आ सोचकेँ नव अर्थ आ भंगिमा प्रदान करैछ ।

हमरा सभक आधुनिक कथाक आरंभिक कालमे सामाजिक कुरीति आ वैषम्य पर अधिक ध्यान गेल आ सुधारक भाव लेखनक प्रमुख उद्देश्य बनल रहल। बादमे जखन सामाजिक वैषम्य आ मानवीय सम्बन्धमे व्याप्त दूरीक कारण सभक व्याख्या कयल गेल त' एहिसभ दुरबस्थाक पाछाँ व्यवस्थाक संहस्त्र बाँहिपर लोकक नजरि पड़लैक आ सभ सामाजिक आ मानवीय संत्रासक लेल व्यवस्थाक अव्यवस्थित व्यापार उत्तरदायी बुझा पड़लैक। व्यवस्था, जे कोनो सत्ताक सभसँ विश्वस्त यंत्र होइछ, सामाजिक असंतोष मे वृद्धि के देखैत अपन नौह आर तेज आ अपन सिकंजा आर कठोर बना लैत अछि। मैथिलीक आधुनिक कथा व्यवस्थाक विद्रूप आकृति आ संवेदनहीन प्रकृति सँ त' परिचित भेल अछि, मुदा तकर भयङ्करता आ हृदयहीनताक प्रति ओकर दृष्टि तेहेन फरीछ भेल नहि लगैछ, जाहिसँ शंका आ छलनामे अंतर करब साध्य होइत छैक ।

कुला भाइ, मैथिली कथा मे जे एखन अहाँक सम्मुख अछि, अर्थात एखन जे कथा लिखल जा रहल अछि, से केहेन लगैत अछि ? की मैथिलीक टटका, आजुक कथा अहाँकेँ आकृष्ट करैए ? कोन तत्त्व सभक दिस अहाँक ध्यान बेसी आकृष्ट भेल अछि ?

हम अहाँक एहि प्रश्नक प्रसंगमे सोझ उत्तर देबा सँ बचैत अजुका साहित्यक (कथा सहित) सम्बन्धमे अपन किछु सामान्य सोच प्रस्तुत करब ।

समकालीन लेखनक प्रायः सभ विधाक आगाँ सभसँ पैघ चुनौती ई रहलैक अछि आ

अखनो छैक जे पूर्व सँ अरजल संस्कार आ बोधक कारण सामान्य पाठककेँ एहि लेखनक कथ्य आ तकर उपस्थापनकेँ रूचिगर मानबामे असौकर्यक अनुभव होइत छैक। एकरा सङ्गे विडम्बना ईहो जे अपना जीवनो मे जे ओ संस्कारबद्ध लड़ाइ लड़ैत अछि तकरा साहित्यमे पाबि असमंजसमे पड़ि जाइत अछि। एतेकधरि जे ओकर अपनो क्षत-विक्षत स्वरूप साहित्यमं अनभुआर लगैत छैक। आ अखनधरि साहित्यमे लड़ल जाइत लड़ाइकेँ अनठीया आ अपनासँ फराक आ अद्‌भुत बुझैत आयल अछि। आ तें ओ अपन अखनो लड़ल जाइत लड़ाइ साहित्य मे साहित्यिक लड़ाइ जकाँ लड़ल जाइत देखय चाहैत अछि। समकालीन साहित्यमे संघर्षक ओ छवि-छटा बदलि गेल अछि। आब साहित्य लेल अपन रचनात्मकता मे सामान्य पाठकक सामानान्तर होयबाक बात अनर्गल भ' गेल अछि, कारण जे समकालीन लेखन आब सामान्य पाठकक सामानान्तर नहि रहि सोझे-सोझ ओकर जीवनमे दाखिल आ शामिल भ' गेल अछि। समकालीन लेखनक आगाँ जे अखन एकमात्र रास्ता बाँचल छैक ओ व्यवस्था आ ओकर द्वारा कयल जाइत उपयोगक विरूद्ध जाइत छैक।

व्यवस्थाक विध्वंस तथा विरोधक नाम पर अपनाओल गेल सभ परिपाटी विद्रोहकेँ सुगमतापूर्वक व्यवसायमे बदलि दैछ आ तकराबाद व्यवस्था द्वारा ओहि क्रान्तिक उपयोग सरल भ' जाइछ आ क्रान्तिक भ्रमो पसरल रहि जाइछ। एहने समयमे पहिनहुँ आ आइयो-काल्हि एकटा 'विकल्पहीन अभिशप्त स्थिति'क दार्शनिक जुमला साहित्यमे चलाओल गेल आ अखनो चलाओल जा रहल अछि, मुदा लगले ई बात फरीछ भ' जाइछ जे समकालीन लेखनमे उठाओल गेल नाना तरहक समस्या मध्य साहित्यक वास्तवमं दुइएटा समस्या मुख्य रहल अछि-पहिल जे साहित्य स्थितिसँ भिड़बा लेल अन्तर सँ उद्यत हो किवां पङ्गु रहि सर्वजन-स्वीकृति-जोगर 'साधु' साहित्यक सर्जनक' अपनाके कृतार्थ मानय।

रचनाक व्यापक व्यावसायिकताक तथा पीढ़ी सभक मध्य मौजूद रचनात्मक दृष्टिक अन्तर तथा संघर्षक एहि युगमे स्वीकृति लेल अनेक चोर-गली उपलब्ध छैक। अपन समकालीन रचनात्मक अपेक्षासँ अपनाकेँ फराक राखि स्वीकृति पायब बड़ सुविधाजनक बात थीक। मुदा ई स्पष्ट थीक जे कोनो रचनाकार अपन लेखकीय अस्मिताके क्षति पहुँचौने बिना आसानीसँ स्वीकृति नहि प्राप्त क' सकैछ, कारण जे ई स्वीकृति बरोबरि कोनो व्यावसायिक संस्था वा व्यवस्था-पोषित संस्थानेक माध्यम सँ प्राप्त होइत छैक।

अखनुक व्यवस्थामे शब्द समस्त रूपाकारमे शक्तिहीन आ लुञ्ज-पुञ्ज भ' गेल अछि।

अतएव साहित्यकेँ जीवित रहबा लेल ई परमावश्यक छैकजे ओ अपन सम्पूर्णता मे अनुभव गम्य हो तथा बेपर्द नजरि आबय। अंमूर्तता साहित्यकेँ तटस्थ त' बनबिते अछि, ओकरा परोपजीवी सेहो बना दैछ। जतय अधिकांश लेल एक पलक जीवन लेल संघर्ष अनिवार्य हो, एक कौर भात लेल श्रम-स्वेद अपरिहार्य हो, ओतय तटस्थताक की अर्थ भ' सकैछ? आब जे सभ अहाँकेँ संग नहि चलि रहल छथि, अहाँके ई मानिक' चलबाक अछि जे ओ अहाँके विरोध मे जा रहल छथि। तें समकालीन लेखक लेल विरोध कोनो प्रयोगक परिणामक प्रतीक्षाक वस्तु नहि थीक। विरोधक निरन्तरता समकालीन लेखनक रचनात्मकताक प्रकृत आ अनिवार्य स्वभाव थीक।

प्राचीन भारतीय कथा अपन निष्कर्ष ल' क' महत्त्वपूर्ण होइत छल, ओकर खण्ड-खण्ड मे बाँटल सम्प्रेषणीय तथ्ये ओकर प्राण होइत छलैक, मुदा समकालीन कथा मनुक्खक जीवनक एहन मूर्त आ स्पन्दित चित्र होइछ, जाहि मे पात्र आ पाठक संग स्वयं लेखको ओहिमे शामिल रहैछ।

समकालीन कथाक स्वरूप आ स्वभावक सम्बन्धमे एतबा बात प्रस्तुत करबाक क्रममे एहि कथाकेँ परिभाषित करबाक पाठकीय अपेक्षा हमरा विसरल नहि रहल अछि, मुदा हम देखैत छी जे भिन्न-भिन्न भाषाक कथा-साहित्यक इतिहास सँ जे तथ्य उभरैत अछि ओ ई थीक जे कोनो युगमे कोनो भाषा-साहित्यक कथाक गढ़ल कोनो परिभाषा ओहि युगक समस्त कथा लेल मानक परिभाषा सिद्ध नहि भेल। देखबामे त' बहुधा ई अबैछ ने प्रत्येक समर्थ कलाकार लेल अपन विशिष्ट सृजन-क्रम मे एकटा नव परिभाषा गढ़ब ओहि कथा-विशेषक आंतरिक संरचना तथा अभीष्ट प्रेषणीयताक कारण आवश्यक भ' जाइछ। यैह कारण थिक जे एक युग आ एक भाषामे गढ़ल कथाक परिभाषा दोसर युग आ भाषा लेल अप्रासंगिक भ' जाइछ। एके युग आ एके भाषाक एक कथाकारक कथा-दृष्टि दोसर कथाकार लेल असंगत भ' जाइछ। हमरा लगैत अछि जे प्राचीनकाल सँ आइधरि वाचिक परम्परासँ लिखित परम्पराधरि उपलब्ध कथा सभक उद्देश्य स्वरूप एवं स्वरक मध्य व्याप्त भिन्नताकेँ देखैत कथाकेँ कोनो परिभाषाक सीमामे बान्हबे कि तकर चेष्टे करब अनर्गल भ' गेल अछि। कारण जे प्रत्येक कथा आब पाठकसँ वैयक्तिक संवेदना आ संस्पर्शक अपेक्षा रखैत अछि। स्वयं कथा संग सोझ सम्पर्क राखब आ कथाक समस्त इतिहासक अवगति राखब कथाक लग पहुँचबा लेल आब अत्यन्त आवश्यक आ एकमात्र सार्थक उपाय थिक।

छठम दशकक समाप्ति कालधरि मिथिलामे सामाजिक स्तर पर परम्परागत सामंती

व्यवस्थाक तौनीमे भूर भेनाइ आरम्भ भ' गेल छल । मैथिली बाजब आ माछ-भात खा भाङक तरङ्ग मे नचारी गयबाक प्रति आसक्ति बनल रहितो अन्न आ माछक स्रोत सुरक्षित नहि रहल, किनबालेल द्रव्यक अभाव भ' गेल । कोजगरा लेल मखान आ बहीनि लेल सामा-चकेबा कीनब जखन कठिन भ' गेलैक त' जड़िआयल मिथिलाक सूत्रबन्ध छिन्न-भिन्न होबय लागल । क्रमे-क्रमे एतुका लोक प्रवासी बनय लागल । हिन्दी, बंगला आ पंजाबी सीखि चाह-बिस्कुट खा, ठर्रा चढ़ा सिकरेट धूकय लागल। एहनो दु:स्थितिक कालमे मिथिलामे क्रान्तिक किवां वास्तविक जन-जागरणक कोनो लक्षण नहि देखा पड़ल, श्रीकाकुलभ बनबाक बात त' बहुत दूरक गप्प भेल । तथापि भिन्न-भिन्न क्षेत्रक समगोत्री पीड़ाक साधारणीकरण एहना मे सहज भ' गेल । आधुनिक पाश्चात्य सोच कि भारतीय साहित्यक दाबल-दबल मनोदशा संग एकमेत होइत मैथिलीके रचनाकारकेँ बोधक विस्तार हेतु कतोक नव आयाम प्राप्त भेलैक । समयक एहने कुचक्र आ स्थितिक एहने विभीषिका बीच मैथिली कक्षा क्षेत्रमे ललित, राजकमल, मायानन्द मिश्र, सोमदेव, बलराम आदि किछु पहिने तथा प्रभास कुमार चौधरी, राजमोहन झा, जीवकान्त आ गुञ्जन आदि कनें बाद मे अपन कथा चेतना संग उपस्थित भेलाह ।

ई सभ कथाकार लगभग समान क्षेत्र आ समान सामाजिक स्थितिक भोक्ता होयबाक कारण अपन आशा-निराशा, संतोष-विक्षोभ, क्रान्ति चेतना कि क्रान्ति प्रति अरूचिमे एक जातीयताके रेखांङ्कित कयलनि । ई कहबाक प्राय: प्रयोजन नहि जे एहि कालखण्डक सभ कथाकार मध्यवर्ग सँ अयनिहार कथाकार छथि जे अपन समस्त वैचारिक तापक बादो ओहि लक्ष्मणरेखा सँ बाहर जायब अनिष्टकारी बुझैछ, जतय गेलाक बाद लोक खाहे नष्ट भ' जाइछ, खाहे अभीष्टक प्राप्तिमे सफल होइछ । एकटा निश्चित सीमाक अतिक्रमण मैथिली कथाक क्षेत्रमे सुभाषचन्द्र यादवक शुभागमनक बादे आरम्भ भेल जे अखनुक नव्यतम कथाकार लोकनिक प्रियतम आस्था आ पवित्रतम विश्वास बनि गेल अछि ।

व्यवस्थाक प्रति मोहभंगक प्रक्रिया समस्त भारतीय कथा साहित्यमे छठमे दशकमे आरम्भ भ' गेल छल जे सातम दशकमे आबि क' असंदिग्ध रूपसँ निराशामे परिणत भ' गेल। मैथिलीक कथाकारो सभक दृष्टिमे व्यवस्था आ तकर संग पुरनिहार लोक-शत्रुक स्वरूप आ स्वभाव क्रमश: फरीछ भ' गेल । मुदा तें व्यवस्थाक विरोधक प्रक्रिया लगले देखार नहि भ' सकल। एहिकालक अधिकांश कथाकार अपन कथाक माध्यमसँ एहि सत्यक

सोझ साक्षात्कार कयल । किछु गोटे क्रान्तिकेँ बोल नहि देबाक कुण्ठोक भोग कयल। मुदा किछु कथाकार एहनो छथि जे एहि समय सत्यकेँ अवचेतन मे स्वीकारि एकरा परोक्ष रूपसँ प्रस्तुत कयल । एहन करबाक पाछाँ एहि कथाकार सभक अन्तरमे व्यवस्था भीति प्राय: नहि रहनि । प्राय: अपन कथा-शिल्पक माँगक अनुरूप सत्यक प्रत्यक्ष प्रस्तुति सँ परोक्ष प्रस्तुति हिनका सभकेँ अधिक संगत बुझा पड़लनि ।

समकालीन लेखनक कतोक शिविर आ मंच देखबामे आओत । प्रत्येक शिविर आ मंचपर आधुनिकता बोध आ तकरा संग सामाजिक बोधक प्रति मत-भिन्नताक संग अपन-अपन रचना-धर्मक निरूपणमे एतेक परस्पर विरोधी आ आत्ममुखी स्थापना भेल अछि जे ओ सभ वस्तु सत्यकेँ ओझराक' राखि देने अछि । समकालीन लेखन पर इतिहासक प्रति विवेकाहीनताक आरोप बहुत प्रवल आरोप थिक । संस्कृति-संस्कारक हीनता, जीवनसँ अलगाओ, फोंकपना आ सतही आडम्बर, नकली क्रान्ति-बोध, दायित्व-चेतनाक शून्यता, चमत्कार-हीनता, विम्ब आ प्रतीक सँ पाटल गंभीर अर्थवान संसारक अभाव आदि-आदि अनेक आरोप लगाओल जाइत रहल अछि । एहि आरोप सभसँ भले ई प्रतिभासित हो जे साहित्यकर्मी लोकनि सामाजिक यातना, आर्थिक वैषम्यक कलुष आ सांस्कृतिक विसंगतिक पहिचानक जे चेष्टा कयलनि अछि ओ आंशिको थीक आ परस्पर विरोधियो थीक ।

स्पष्टत: एहन आरोप सभ ओहि वर्ग द्वारा लगाओल गेल जे साहित्यक क्षेत्रमे दिन-प्रतिदिन जनतांत्रिक मूल्यक प्रतिष्ठा, वर्गीय समाजमे क्रमश: घटैत वर्ग विशेषक गरिमा आ दोसर वर्ग विशेषक मानवीय महत्त्व आ अपन उचित अधिकार लेल अधिकारहीन वर्गक बढ़ैत रोष आ क्रान्तिधर्मी संघर्षक चेतनासँ बहुत प्रसन्न नहि छथि । ओ सभ परिवर्तनो व्यवस्थित ढंग सँ चाहैत छथि, खूनी समाजकेँ भागवत सुना ओहिमे शुचिता आनय चाहैत छथि।

किछु संस्था मनुष्यक मानसिकताकेँ विकृत आ विरूपित करबामे लागल रहल अछि। भारतक ऐतिहासिक सन्दर्भ मे बिआह, सम्मिलित कुटुम्ब आ वर्णाश्रम व्यवस्था किछु एहने संस्था थीक । वर्त्तमान समाजमे पूँजीवादी स्वतंत्रता आ सम्पत्तिक पवित्रता दूटा एहने अन्य संस्था थीक । समकालीन लेखको सभ एहने-एहने संस्थासँ विकृत होइत पुन: पुन: प्रबुद्ध भ' नव साज-सज्जा संग उगैत अयलाह अछि । एकटा विराट सांस्कृतिक छल सँ गुजरैत एहि देशमे समृद्धिक अनुभव सँ कतोक नव अनुभव लोकके भेलैक। समृद्धिक अर्थ समानतावला समाजमे सामाजिक न्याय नहि होइछ, समृद्धिक प्रदर्शन बुर्जुआ समाजक अभिरूचि बनि गेल अछि, समृद्धिक मानदण्ड उपभोक्तावः आदति

हाइछ एवं समृद्धिक साधन भ्रष्टाचार, अधिकाधिक लाभ व्यभिचार आ निर्मम शोषण-चेतना बनि गेल अछि । नेहरू युगक छद्म समाजवादी सामाजिक चेतनाक बाद आरम्भ भेल अनिश्चयताक दौर, जे चलैत रहल आ एहन सन प्रतीत होबय लागल जे लोकक क्रान्तिकारी चेतना मद्धिम पड़य लागल अछि । चारू दिस व्यक्तिवाद, स्वार्थ, लंठई तथा भोगवादी रूचिक बोलवाला होबय लागल आ एहन सन प्रतीत होबय लागल जे जनताक मूल्य-बोध आ जनतांत्रिक अभिरूचि पस्त पड़य लागल अछि । एक तरहें राष्ट्रक मानवीय चेतनाक व्यापारीकरणक संग सामाजिक-ऐक्य-चेतनो पर धूराक ढेरी लागि गेल । मुदा क्रमशः एहन सांस्कृतिक आ सामाजिक स्थिति उत्पन्न भेल जे सभ तरहक उत्सर्गक मांग कयल जाहिमे खतरा, बलिदान, त्याग, संघर्ष आ क्रान्ति-सभक अपेक्षा छैक ।

हम मानैत छी जे समुदायक बहुलांशक जीवनमे त्रासदी अखनो बनल छैक। समकालीन सामाजिक यातना आ सांस्कृतिक संक्रमणक विसंगति बीच जीवनक त्रासदी अखनो कार्यशील थीक । मुदा सहस्रो वर्षसँ त्रासदीके जीवन धर्म मानि चलैत अबैत मनुक्खक संतान आ रचनाकर्मी अखनो विलुप्त नहि भेल अछि । यातना भोग ओकर नियति छैक त' ओकरासँ मुक्ति लेल अविराम संघर्ष ओकर स्वभावो बनि गेल छैक । ओ ई खूब जनैत अछि जे सामाजिक यातना-भोग आ मानसिक वेदनासँ उद्धारक एक्केटा आदिम आ अत्याधुनिक मार्ग छैक जे मार्ग राजनीतिक स्वतंत्रता संग आर्थिक स्वतंत्रताक बीच प्रशस्त होइत छैक । एहि स्वतंत्रताक उत्कट अभिलाषा संग संस्कृतिक पुनरूद्धार आ रचनाकर्मक पवित्रताक सुरक्षा लेल चिंतित मनुक्खक एक मात्र धर्म होइत छैक–क्रान्ति।

बहुतो भारतीय साहित्यक कथा जकाँ मैथिलीक विगत 20-25 वर्षक कथा-रचनाक विहंगावलोकन सँ कतोक तथ्य दर्पण जकाँ झलक' लगैछ। एहि अवधिक कथा-आन्दोलन कतोक वर्षसँ चलि अबैत विचार-मंथनके पूर्णतः निर्णीत क' देलक अछि जे कोनो जीवन्त कथाकार हेतु सामाजिक प्रतिबद्धता आवश्यक थीक । ई कोनो कथा-रचनाक सार्थकता लेल अनिवार्य अर्हता थीक । राजनीतिकेँ नकारब कि ओहिसँ दूर रहबाक गप्प करब एक तरहक अभिजात पाखण्ड थीक । तटस्थताक गप्प वास्तवमे गप्पे मात्र होइछ। मैथिलीं कथाक जातीय परम्परा मे प्रो. हरिमोहन झा, किरण, श्री गोविन्द झा, मणिपद्म, ललित, सोमदेव, राजकमल, मायानन्द मिश्र आदि रचनाकार छथि प्रो. उमानाथ झा, मनमोहन झा, उग्रानन्द, नगेन्द्र कुमार सन रचनाकार नहि ।

लोकप्रियता आ महानतामे कमे काल अन्तर्विरोध भेटैछ । यथार्थवाद आ प्रकृतवाद एकदम्मे

भिन्न वस्तु होइछ । आदर्शवाद नहि, आदर्शोन्मुख यथार्थवादो नहि, अपितु द्वन्द्वात्मक आ ऐतिहासिक यथार्थवादे कथा लेल सही खाद-पानि, ऊर्जा तथा उष्माक जोगाड़ करैत् अछि । अनुभववाद आ तथाकथित भोगल यथार्थवाद एक तरहें पूँजीवादी व्यक्तिवादेक असंयत संतति थीक । कोनो कथा पाठक लेल मात्र शोभा आ स्वादक वस्तु नहि होइछ, ओ ओकर अस्तित्वक कथा सेहो होइछ आ से यदि ओ नहि अछि त' ओकरा हायबाक चाही । पियरे इपोतँक अनुसार '.......दी थ्योरी ऑफ आर्ट फॉर आर्टस सेक स्पष्टतः 'इनफेंटाइल' थीक आ ओ घोषणा कयलनि जे...आर्ट मस्ट हैवए सोशल परपज' एहि बिन्दु सभकेँ ध्यान मे रखैत हमरा लगैत अछि जे विगत शताब्दीक अंतिम दू दशकक कथाकार अपन लेखन मे क्रमशः अधिक लोकोन्मुख होइत गेलाह अछि आ लोकरंजनक संग-संग लोक-चिन्तोक प्रति एक संग सजगता देखौलनि अछि ।

भाइ, नवम दशकके कथाकारक कथा प्रवृत्ति पर गप्प करैत अहाँ कहने छी जे 'प्रकट संघर्षक चेतना आ निष्कम्प दिशा-बोध हिनका लोकनिमे एक हद्धरि चरित्र-भिन्नताक बादो हिनका सभकेँ अविभक्त धरातल पर सभ जातीय प्रतिवद्धता आ एकदेशीय वैचारिकताक संग ठाढ़ क' देने छनि। निश्चित सामाजिक, राजनीतिक आ साहचर्य बोध संग ई लोकनि व्यवस्थाक नाम पर पसरल सभ अव्यवस्थाक संतुलित आ सार्थक प्रतिरोध लेल प्रस्तुत नजरि अबैत छथि ।' की अहाँके लगैत अछि जे साहचर्य बोधक संग सार्थक प्रतिरोधक बात एम्हर आर बढ़ल अछि ? आर व्यापक भेल अछि ? खासक' कए शताब्दीक अन्तिम दशकमे ?

हमरा लगैत अछि जे अहाँक एहि प्रश्नक उत्तर हम पूर्वे द' चुकल छी। जेना-जेना कथाकार सभ सामाजिक प्रतिवद्धताकेँ अपन रचनात्मक धर्मक रूपमे स्वीकार कयलनि अछि, निश्चित रूपसँ साहचर्यवोधक संग हिनका सभमे प्रतिरोधक संकल्प बढ़लनि अछि । लोकक प्रति स्नेह कि मात्सर्यक वृद्धिसँ व्यवस्था-विरोध आ उत्पीड़नक प्रतिरोध स्वतः उग्र आ तें स्वतः देखार होइछ ।

भाइ, कहल जाइत अछि जे सांस्कृतिक चेतनाक स्वर एम्हर बेसी मुखर भेल अछि मैथिली कथामे । (सन्दर्भ-मैथिली कथामे समकालीन स्वर–डा. शिवशंकर श्रीनिवास) कथाकार लोकनि अपन कथामे अपन जड़ि, माटि-पानि, अपन समाजक बात बेसीक' रहल छथि । की ई विश्वक भूमण्डलीकरणक प्रभाव थिक अथवा बिहारक सामाजिक-न्यायक प्रभाव? की लगैए अहाँकेँ ?

अहाँक एहि प्रश्नक उत्तरमे अपन बात कहबासँ पूर्व हमरा किछु प्रतिप्रश्न करब आवश्यक लगैछ–मैथिली कथामे इम्हर सांस्कृतिक चेतनाक स्वरक अभिवृद्धिक बात जे सभ कहि रहल छथि हुनक सांस्कृतिक चेतनाक अभिप्राय की आ व्याप्ति कतेक छनि ? कथाकार लोकनि जे अपन जड़ि, माटि-पानि आ समाजक बात बेसी कर' लगलाह अछि, की ओहिमे अन्तर्निहित चिन्ता वर्गीय दृष्टिक आग्रह-दुराग्रह सँ निरपेक्ष होइत अछि ?

इम्हर रचनाकार लोकनिक रचना कि लेख आदिमे सांस्कृतिक चेतना संग जड़ि आ माटि-पानि संग सरोकारक चिन्ता हमरो किछु अधिक देखबामे आयल अछि। प्रो. हरिमोहन झा आ यात्रीसँ ल'क' कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास आ कवि विवेकानन्द ठाकुर धरिक रचना प्रसंग गप्प करबाक क्रममे एहन चिन्ता सभकेँ बोल भेटलैक अछि । हमरा एहन चिन्तामे होइत वृद्धिसँ प्रसन्नता भेल अछि, मुदा हमरा संगहि ईहो स्पष्ट बुझा रहल अछि जे हमरा सभक चिंताक केन्द्र सँ एखनो ओ वर्ग तत्वतः बाहर थीक जे वृहत्तर होयबाक संग-संग सांस्कृतिक विकासक असली कारक कि माटि-पानि सँ अधिक सम्पृक्त रहल अछि आ तें हमरा सभक चिन्तो खण्डित रहबा लेल अभिशप्त बनल रहैछ । हम ई स्वीकार करैत छी जे अभिजात वर्गे द्वारा अपनाओल सांस्कृतिक अवधारणा ओहि सम्पूर्ण जाति, समुदाय कि क्षेत्रक सांस्कृतिक चेतनाक आत्मा होइत छैक, मुदा तकर अभिव्यक्तिक सभ उपादानक ओरिआओनमे ओहि वर्गक प्रमुख भूमिका रहलैक अछि जे एहि वा ओहि कारण सँ ओहि संस्कृतिक बारल वर्ग क रहल अछि। हम सभ अपन साहित्यमे ओहि बारल वर्गक जीवन आ संस्कारकेँ यथास्थान प्रतिष्ठित कयलाक बादे, अभिजात आ लोक संस्कृतिक बीच संवाद स्थापित कैयेक' अपन सांस्कृतिक चेतनाक वस्तुनिष्ठताकेँ चिन्हितक' सकैत छी। हमरा सभक रचनाकार जे एहि दिशामे सजगता देखा रहल छथि तकर विश्वक भूमंडलीकरण संग अप्रत्यक्ष सम्बन्ध अवश्य छैक मुदा अपना प्रदेशक मण्डलवादी बिहाड़ि अलवत्त एकरा अधिक प्रभावितक' रहल अछि। भूमण्डलीकरणक प्रभाव जखन प्रत्यक्ष होयत त' ओ संस्कृतिक बहुतो पुरना तानी-भरनीकेँ नष्ट क' देत । ओना दृष्टि सम्पन्न वर्गक लेल वर्गीय संघर्षक जातीय संघर्ष दिस उन्मुख होयब नितांत चिन्ताक विषय थीक, मुदा तथाकथित 'मनुवादी' संस्कृतिक हाथें आइधरि जे ओहि वर्गक दुर्गति होइत अयलैक अछि, तकर प्रतिक्रिया होयब त' अवश्यम्भावी छलैहे । हमरा सभक वेद-व्राह्मण-उपनिषद-पुराण आ स्मृतिग्रंथ आ किछु शाखा-सम्प्रदायक सिद्धान्त सभक अनुशासनमे विकसित सांस्कृतिक चेतना 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' सन बातक उद्घोष करैत काल समस्त मानव समुदायक बात निश्चिते नहि ध्यानमे रखैत छल, ओकर 'सर्वेक' परिधिमे मात्र 'आर्यजनाः' कि 'संस्कृतजनाः' समाहित छलाह ।

कुला भाइ, मैथिली कथामे अन्तिम दशकमे आयल ई सांस्कृतिक चेतनाक स्वर की पूर्व सँ अबैत वर्ग-संघर्षक स्वरकेँ कमजोर केलक अछि ? की वर्गक स्थान पर वर्णक गप्प बेसी भ' रहलए ? मैथिली कथा अपन यात्रामे भटकि त' ने रहल अछि ? की सोचै छी अहाँ ?

इन्दिरा गाँधीक आपातकालकेँ विरोधमे लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा सम्पूर्ण क्रान्तिक आन्दोलनक नेतृत्व कयल गेल । आपातकाल समाप्त भेल, इन्दिरागाँधी गद्दीसँ उतारल गेलीह, मुदा तकराबाद जे भेल आ भ' रहल अछि ओ निश्चित रूपसँ जन-क्रान्तिक एकजुट होइत शक्तिकेँ छिन्न-भिन्न क' देलक । वर्ग संघर्षकेँ धकियबैत वर्ण-संघर्षक चेतना प्रत्यक्षतः समतावादी सामाजिक दृष्टिकोणकेँ पथभ्रष्ट क' रहल अछि आ हमरा लगैत अछि जे एकरा पाछाँ उएह शक्ति काजक' रहल अछि जे सम्पूर्ण क्रान्तिकेँ प्रतिक्रान्तिमे बदलि देलक । साहित्यमे इम्हर जोरदार ढंग सँ अभरैत सांस्कृतिक चेतनाक स्वर मे हमरा कखनोकाल फासीवादी अन्दाजक फुसफुसाहटि शामिल लगैछ ।

भाइ, शताब्दीक अन्तिम दशकसँ आब अहाँके सत्तरि-पचहत्तरि वर्ष पाछू ल' चलैत छी । जखन मैथिलीक मौलिक कथा लेखन प्रारम्भ भेल । अहाँ अपन निवन्ध मे कहने छी जे 'मैथिलीक मौलिक कथा अपन भारतीय स्वरूप आ आत्माकेँ चिन्हैत आरम्भ त' भेल, मुदा ओकर ढबमे परम्पराक विकास नहि छल, नवताक वेलूरिपना आ सकपकाहटि अलबत्त देखबामे आयल । क्रमशः डेग स्थिर आ गति सहज भेलैक तथापि गुलाम भारतक सामाजिक वैषम्य आ अन्याय-अत्याचारक मुखर विरोध ओहिमे परिलक्षित नहि होइछ ।' परम्पराक विकास नहि हेबाक पाछाँ आ सामाजिक वैषम्य आ अन्याय-अत्याचारक मुखर विरोध नहि हेबाक पाछाँ की कारण लगैत अछि अहाँके ? की कथाकार लोकनिक अपन वर्गीय हितसँ बाहर नहि जेबाक अथवा बाहर नहि देखबाक मनोभाव एकर जड़ि मे अछि ?

अहाँक एहि प्रश्नक उत्तरमे संक्षेपमे जे हम कहि सकैत छी जे ओकर उत्तर अहाँ स्वयं अपन प्रश्नक अंतिम भाग मे द' देने छी । ओना अपना सभक साहित्य-संस्कार 'काव्य-शास्त्र विनोदेन' समय काटब त' संगत बुझैत अछि, मुदा कोनो मानवीय कि सामाजिक मूल्य लेल 'टंटा बेसाहब' अमर्यादित बुझैछ । विश्वमे भोगल जाइत नाना प्रकारक कष्ट कि संकटक अनुभूति त' ओकरा भेलैक अछि, मुदा कष्ट मे काहि कटैत समुदायकेँ ओ ब्ररोबरि नियतिक मारल बुझैत आयल अछि, जखन कि वास्तविकता

ई छैक जे ओ एक वर्ग द्वारा बुधियारीसँ चलाओल सामाजिक व्यवस्थाक नाम पर दोसरवर्गक सम्पूर्ण शोषणक नग्नलीला थीक । हमरा सभक जन-हित-चिन्तन बरोबरि वर्गीय चिंतन रहल अछि, ओहिवर्गक चिन्तन जे अपन समुदायक लाभ-हानिक प्रति सतर्क रहैत सभ जीवमे ब्रह्म दर्शन करैत आयल अछि। ओ वर्ग दया, बन्धुत्व आ स्नेह सँ खूब परिचित अछि, मुदा ओकरा दृष्टि मे एकर अधिकारी विशिष्ट वर्गेटा रहलैक अछि ।

भाइ, अहाँ अपन निवन्धमे कहैत छी जे 'मैथिली मे मौलिक कथा-लेखनक संगे कथा अपन वाचिक की लिखित परम्परासँ विछिन्न भ'गेल अछि। हिन्दीमे कथाक आरंभमे प्रेमचन्दक कथामे भारतीय कथा-चेतनाक जाहि सातत्यक दर्शन होइछ, ओहेन किछु यदि मैथिलियो कथामे परिलक्षित होइत त' अपन कथा-दृष्टिक गप्प संभव छल । प्रो. हरिमोहन झाक कथा बाद मे जाहि जातीय आ क्षेत्रीय विशेषताक संग उपस्थित भेल तकरो अनुसरण भेल रहैत त' एहन चर्च लेल आधार बनैत । मुदा से नहिं भेल आ मैथिलीक मौलिक कथा आदिए सँ अनठीया गमला मे पल्लवित-पुष्पित भेल । तैं विश्वकथा दृष्टि, कम सँ कम सामान्य भारतीय दृष्टिसँ पृथक कोनो स्वतंत्र दृष्टि मैथिली मे विकसित नहि भेल ।' भाइ, मोटामोटी सभ आधुनिक भारतीय भाषामे कथाक विकास त' अनठीये गमलामे भेल अछि। हिन्दीयो मे प्रेमचन्द्रक बादसे बात कहाँ रहल । तखन मैथिलीमे स्वतंत्र दृष्टि सँ की तात्पर्य अछि अहाँके ? कने स्पष्ट करियौक ।

हम अहाँक एहि टिप्पणीसँ सहमत छी जे अजुका अधिकांश भारतीय भाषाक कथा-साहित्य अनठीये गमला मे फुलायल अछि आ हमरा सभक देशी वाचिक परम्पराक अवशेषो आब लिखित साहित्यमे देखबामे नहि अबैछ आ एहि दृष्टि सँ मैथिली कथाक स्थिति कोनो भिन्न नहि कहल जा सकैछ। ई बातो सत्य थीक जे प्रो. हरिमोहन झाक समाने प्रेमचन्द्रोक 'किस्सागोई' कि कथा कहबाक छवि-छटाक सम्हार परवर्त्ती रचनाकार लोकनि द्वारा संभव नहि भेलनि वा खाहे ओ अपना समयक बात कहबा लेल उपयुक्त नहि जँचलनि, मुदा प्रेमचन्दक सामाजिक-वैचारिक दृष्टि बादक बहुतो हिन्दी कथाकारकेँ दिशा-निर्देश देलकनि, जखन कि प्रो. हरिमोहन झा एकटा एहन आदर्श बनिक' रहि गेलाह जे अनका ककरो अनुकरणक सुविधा प्रदान नहि क' सकल, ककरो अनुकरण हेतु तत्वत: अनुप्राणित नहि क' सकल। हमरा एकर प्रमुख कारण प्रेमचन्दक साहित्यक दुनियाक विस्तृत होयब तथा प्रो. झाक दुनियाक संकुचित होयब लगैछ । प्रेमचन्दक

सत्य जत' समस्त हिन्दी क्षेत्रक सत्यकेँ आत्मसात कयने रहल, प्रो. झाक सत्यक खण्डित रूप तकरा अगिला उदारपीढ़ी लेल कोनो सम्यक वैचारिक दृष्टिक ओरिआओन नहि क' सकल। प्रेमचन्दक साहित्य जाहि वृहत्तर वर्गकेँ सम्बोधित अछि, ओ अखनो ओहि साहित्यमे अपन जीवनक सत्य संग न्यूनाधिक रूपमे अपन सरोकार बनल देखैछ, जखन कि प्रो. झाक साहित्य द्वारा सम्पोषित सीमित वर्ग आब अपन जीवनक सत्यक धरातल सर्वथा अलग देखैत अछि, जीवन-मूल्य सर्वथा बदलल देखैत अछि ।

मैथिली कथाक अपन स्वतंत्र दृष्टिसँ हमर अभिप्राय ओकरा कोनो क्षेत्रीय सीमामे बान्हब कथमपि नहि थीक । हम त' मात्र एतबा कह' चाहैत छी जे कोनो विषयक उपस्थापनमे ओकर ओ जातीय विशिष्टता स्पष्ट रूपसँ परिलक्षित होयबाक चाही जे ओकरा बंगला कि तमिल कि मलयाली कथा-चेतनासँ भिन्न चरित्र प्रदान करैक ।

भाइ, एही क्रममे एकटा प्रश्न अहाँसँ पुछबाक मोन कर' लागल अछि । ओना ई मैथिली कविताक सन्दर्भमे बेसी स्पष्ट ढंगें देखल जा सकैत अछि। की परम्पराक विकास उचित ढंगे नहि हेबाक पाछाँ ई जीर्ण लेखन-नवलेखनक सोरहो त' ने अछि ? की ई स्पष्टत: दू गोला भ' गेनाइ विकासकेँ प्रभावित त' ने केलक? की हमरा लोकनि दू अतिवादी दृष्टिकोण मे त' नहि फँसि गेलहुँ ? मैथिली कथाक प्रसंग मे अहाँक की विचार? की मैथिली मे एहि दृष्टिसँ कथा आ कविताक विकासकेँ फुटकाओल जा सकैत अछि ?

नव लेखन शब्द हम सभ हिन्दी सँ उधार लेल अछि । हिन्दी मे ई शब्द एक विशिष्ट प्रकारक लेखन हेतु प्रचलित कयल गेल । मैथिलीमे नव लेखनक तात्पर्य आधुनिके लेखनसँ रहल अछि । नव वा आधुनिक लेखन अपन तात्त्विक विशेषताक कारण पारम्परिक लेखनसँ पृथक होइत अछि। समय आ समाजकेँ देखबाक ओ अन्तरे ओ मूल कारक थीक जे एहि दुनू प्रकारक लेखनकेँ पृथक बगयबानी प्रदान कयल । नव लेखनक प्रति नव पीढ़ीक आग्रह-दुराग्रहकेँ एही सन्दर्भमे देखल जा सकैछ । परम्पराक विकासमे बाधाक दोष कि श्रेय एहि आग्रह-दुराग्रहकेँ नहि देल जा सकैछ। पुरना मूल्य सभक एक-एक क' ध्वंस आ नव-नव सामाजिक सम्बन्धक स्थापनामे परम्पराक विकासक वास्तविक अवरोधक कारणकेँ चिन्हित कयल जा सकैछ ।

अहाँ लिखैत छी जे 'आरम्भक आधुनिक मैथिली कथा बहुतो अर्थमे मध्य वा निम्न मध्यवर्गक सचेष्ट लोक सभक मोहभंग, आलस्य, क्षुत्रता, निरीहता आ

टूटैत जयबाक निरंतर यंत्रणाक कथा थीक । उत्साह आ निर्माणक स्वर ओहि कथा सभमे कतौ कान नहि पड़ैछ । 'भाइ, एकर की कारण लगैत अछि अहाँके ? की सम्पूर्ण मिथिला समाजमे उत्साह आ निर्माणक स्वर कतहु नहि रहय ? अथवा कथाकार लोकनिक कान मे ई स्वर नहि पहुँचि सकलनि ?

अंग्रेजी शासनक अवधिमे भारतीय समाजक तानी-भरनी तेनाक' अव्यवस्थित नहि भेल छल, जेना कि ओ स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद भेल आ स्वाधीनता सँ प्राप्त ख़ुशी तें लगले विलायब आरम्भ भ' जाइछ । बदलैत सामाजिक-आर्थिक सम्बन्धक उच्छृङ्खलता जेना-जेना अधिक देखार होइत गेल, लोकक व्यवस्थाक प्रति असंतोष बढ़ैत गेल, मुदा सामाजिक सम्बन्धक नव समीकरण अस्पष्ट रहबाक कारणें चिन्ताकुल होइतो लोक समाधानक ने त' नव रस्ता देखि रहल छल आ ने कोनो नव रस्ता पर आश्वस्ति संग डेग बढ़यबा लेल प्रस्तुत छल । मैथिली आधुनिक कथाक आरम्भिक काल समाजक एही द्विविधाक कथा कहैत अछि ।

भाइ, एकठाम अहाँ लिखने छी जे 'मैथिली कथामे निम्नवर्ग कि त 'अपन प्रकृति रूपमे आयले नहि अछि, खाहे आयलो अछि त 'ओहिरूपमे जाहिरूपमे उच्चवर्ग, मध्यवर्ग कि निम्न मध्यमवर्गकेँ कतौसँ हिंस्र प्रतीत नहि भेलैक। 'की अहाँ आइयो यैह मानैत छी ? अथवा स्थितिमे कोनो परिवर्त्तन लगैत अछि ? परिवर्त्तन अयलैक अछि त ' कोना ? केहेन ? यदि नहि अयलैक अछि त ' एकर की कारण लगैत अछि अहाँकेँ ?

हम अपन टिप्पणी सँ एखनो सहमत छी । कोनो बदलाओ किया नहि आबि सकल अछि, ई अलबत्त विचारणीय थीक । वास्तव मे निम्नवर्गक दशा-दुर्दशाक लेल जिम्मेदार हाथेसँ साहित्यक कठपुतरीक डोरि घिचाइत रहल अछि आ तें सत्यक निरूपणक मार्गमे कतोक तरहक कुण्ठाक अवरोध बनल रहल अछि । हम सभ कृषि आधारित अर्थ व्यवस्था सँ औद्योगिक अर्थ व्यवस्था कि पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था सँ छलाङ्ग लगबैत आब उपभोक्तावादी अर्थ व्यवस्थाक व्यूहमे फँसबा लेल वृत्त छी । एहि आपाधापीमे सामाजिक संरचनाक तानी-भरनीमे तेनाक' बदलाओ आबि गेलैक अछि जे ओहि विशिष्ट वर्गक गप्प करब आब सहज भ' गेलैक अछि ।

सातमदशकक मैथिलीकथा पर टिप्पणी करैत अहाँ लिखैत छी जे 'लागत जेना सातम दशकक मैथिलीक्रथाकेँ विचारक प्रौढ़ि त 'हासिल भेलैक, मुदा निश्चित

सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिक अभावमे कोनो व्यवस्थित आ विश्वासयोग्य प्रतिरोध लेल आधारभूमि तैयार करब ओकरा लेल संभव नहि भेलैक । आर्थिक आ राजनीतिक पस्तीक वादो लोकक आँखिमे शील आ विचारमे कुलीनता, सुलभ मूल्यक बात समाप्त नहि भेलैक । ओ परिवर्त्तनक उदीप्त आकांक्षा रखितो विरोध मे हाथ उठा लेबाक मनस्थिति नहि बना पबैछ । ' की भाइ, अहाँकेँ लगैत अछि जे निश्चित सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिक अभावकेँ अतिरिक्त एकर कारण अपन इतिहास ओ संस्कृतिक फरीछ ज्ञानक अभाव सेहो अछि ? प्रतिरोध आ विरोधक इतिहास आ परम्पराके झाँपि देबाक चेष्टाक ई एक कुफल थिक? प्रतिरोध लेल आधार भूमि तैयार करबाक लेल हमरा लोकनिकेँ अपन सामाजिक-राजनीतिक ओ सांस्कृतिक इतिहासकेँ हिला-डोलाक ' देख ' पड़त ? की लगैए अहाँके ?

हमरा नहि लगैत अछि जे हमरा लोकनिक प्रतिरोध कि विरोधक कोनो ठोस परम्परा कि विश्वासयोग्य इतिहास रहल अछि । वृहत्तर भूखण्डक नीक अधलाह सामाजिक संचरण संग एकात्म होयबाक यत्न मैथिलक इतिहासमे बड़ थोड़ आ सेहो बड़ दुर्बल लागत । अखनुक समय लेल आवश्यक प्रतिरोध-विरोधक भूमि तैयार करबालेल पुरना परम्परा कि इतिहासकेँ हिला-डोलाक' देखबा सँ श्रेयस्कर तकरा एक हदधरि बिसरि नव परम्परा आ नव सामाजिक समीकरणक सम्बर्द्धनक दिशामे डेग उठायब होयत । हमरा सभकेँ एहि भूमण्डलीकरणक दुनिया आ मण्डलीकरणक समाज मे ई बात बिना कोनो ननुनचकेँ स्वीकार कर' पड़त जे वर्ग कही वा वर्ण ओकर संख्या मात्र दूटा छैक। एहि सत्यक स्वीकारसँ हम सभ परम्पराक आ इतिहासक बहुतो बान्ह छैक केँ हँटा स्वतंत्र आ व्यवस्थित चिंतन आ लक्ष्यगामी अभियान लेल प्रस्तुत भ' सकब ।

सातम दशकक मैथिली कथा पर हमर जाहि टिप्पणीक उल्लेख अहाँ कयल अछि, ओकर वस्तु सत्य सँ हम एखनो सहमत छी । हम त' एखनो ई देखि हतप्रभ छी जे मैथिलीक अधुनातन प्रवृत्तिक कथाकारो प्राय: एहि लेल चिंतित नहि छथि जे एखनधरि कोनो एकात्म परम्परा आ सार्वजनीन ऐतिहासिक सत्यक दर्शन हमरा सभक मोनमे फरीछ नहि भ' सकल अछि ।

भाइ, आठम दशकक कथा यात्रा पर दृष्टिपात करैत अहाँ कहैत छी जे 'एतेक दूर अबैत-अबैत कथाक सभ पुरना परिभाषा अव्याप्ति दोषसँ ग्रस्त प्रतीत होबय लगैत अछि । तखने एहि सत्यक अनुभूति भेल जे कथाक इतिहासे कथाक

एकमात्र संगत परिभाषा होइछ। अखनुक कथा त 'एक तरहें एकटा एहन विशिष्ट रचना भ 'गेल अछि जे एकटा कोनो कथा एके कथाकार द्वारा कहल जा सकैछ। प्रत्येक सफल आ सार्थक कथा पर कथाकारक अपन विशिष्ट आ वैयक्तिक छाप होइछ। ई छाप कथाक विन्यास, भाषा आ रचना-विधानक संग-संग ओकर समग्र प्रभाव पर परिलक्षित होइछ।' भाइ, कथाकारक अपन विशिष्ट आ वैयक्तिक छापक कारण की कथाक अन्तर्वस्तु जटिल भ' गेल ? कथा जे सामान्यत: वाचिक परम्परामे सोझ, सादा-सादी रहैत छल से बदलि गेल ? कथाकार आ पाठकक सम्बन्धक दृष्टिसँ ई केहेन घटना लगैत अछि अहाँके ?

कथ्य कि शिल्प पर कथाकारक बढ़ैत छाप आ कथाक अर्न्तवस्तुक संशिष्ट होयबाक बीच हम कोनो तात्विक सम्बन्ध नहि देखैत छी । कथाकारक वैयक्तिकता कथाक प्रभान्वितिकेँ त' स्पष्टत: प्रभावित करैत छैक, मुदा कथाक सरंचना कि ग्रथन-तंत्रकेँ मूलत: ओकर कथा-तत्त्व प्रभावित करैत छैक । कथाक अन्तर्वस्तुक संशिष्ट होयबाक खतरा मनोजगतमे विचर'वला कथा संग अधिक होइत छैक । देखार दुनियाक ओझरो देखारे होइछ ।

एहिठाम एकटा आर बात भाइ। हरिमोहन बाबूक पाठककेँ अहाँ मैथिली कथाक पाठक मानैत छी ? की ओहि पाठकक विकास मैथिलीमे भेल अछि अथवा हरिमोहन बाबूक वाद नव पाठक, नव रसबोधक संग मैथिलीमे आएल अछि ? की लगैए अहाँकेँ ?

मैथिली कथा साहित्यक आरंभिक कालमे मैथिली पाठकक वृहत्तरवर्ग निश्चित रूपसँ प्रो. हरिमोहन झाक कथाक पाठक छल जकरा ओ नव रसज्ञता प्रदान करबामे सफल भेल रहथि । तखन ई भिन्न बात थीक जे बादक कथाकार जें कि प्रो. झाक कथाकारिता सँ भिन्न पथ पर डेग बढ़ा अग्रसर भेलाह । प्रो. झाक कथाक पाठकक बगय बदलि गेलैक, ओकर मोनक चिन्तो-दुश्चिन्ता फराक भ' गेलैक । प्रो. झा सराहल एखनो जाइत छथि, मुदा ओहि सराहनामे वर्त्तमानक अनुराग नहि, इतिहासक पूर्वराग भंटैछ।

अहाँ कहने छी जे 'आधुनिक मैथिली कथाके ललित, राजकमल, मायानन्द मिश्र, राजमोहन झा, प्रभास कुमार चौधरी आ जीवकान्तक योगदान आन सभ कथाकारक तुलनामे अधिक व्यापक छनि । ललित अपन भाव आ भाषाक सहजता, राजकमल अनुभूतिक अक्खड़पन आ आन्तरिक करूणा, मायानन्द मिश्र अपन वोधक सुकुमारता, राजमोहन झा अपन तराशल शिल्प आ स्पंदित भाषा, प्रभास कुमार चौधरी अपन विषयक संग सुपरिचय आ वर्णनक संतुलित रूखि आ जीवकान्त अपन कथा वस्तु आ अभिव्यक्तिमे अन्तर्निहित वेग ल'कए चिन्हार होइत छथि । एहिक्रममे धूमकेतुक कथाक कोन विशिष्टता अहाँके आकर्षित करैत अछि ? अगुरवान सँ ल' कए छठिपरमेसरी ओ एकटा मूल्यहीन कथाधरिक हम सन्दर्भ ल' रहल छी ।

आधुनिक मैथिली कथाक उपलब्धिमे प्रमुख योगदानक प्रसंग हमर जाहि टिप्पणीक अहाँ उल्लेख कयल अछि, ओहि मे धूमकेतुक नाम नहि छनि आ एहि लेल उचिते हमरा अपन स्थिति स्पष्ट करबाक चाही । एहि प्रसंग पहिल बात ई जे जहिया ई टिप्पणी लिखल गेल छल तहियाधरि धूमकेतुक 'छठिपरमेसरी' कि मूल्यहीनकथा' लिखल नहि गेल छल । ओना एहि दुनू कथाक प्रकाशनक बादो हमरा विचारसँ आधुनिक मैथिली कथाकेँ महत्त्वपूर्ण अवदान देनिहार कथाकार सभमे धूमकेतुक नाम ओहि कथाकार लोकनिक नामक बादे लेल जयबाक चाही, जिनका लोकनिक उल्लेख प्रसंगाधीन टिप्पणीमे हम कयल अछि । धूमकेतुक कथाकारक लेल हमरा मोन मे पर्याप्त आदरक भाव अछि । हम अपन ओही टिप्पणीमे आगाँ लिखने छी जे-'अपन एकान्त रूपसँ नव रचनात्मक संवेदना आ नव सौन्दर्य-आस्थाक कारण हिनक (धूमकेतुक) कविता आ कथा अपन बहुतो समकालीनसँ पर्याप्त भिन्न गोत्रक आ परवर्त्ती पीढ़ीक रचना-धर्मिताक समगोत्री प्रतीत होइछ । सभ लोकधर्मी रचनाकार जकाँ समय-शोधित जीवंत मूल्यक लेल ईहो आग्रह रखैत छथि, मुदा परम्परा जर्जर निस्पन्द मूल्यक प्रति हिनका कोनो मात्सर्य नहि छनि । बहुतो बारल मनोभावक प्रकृत संवेदनाकेँ पकड़ि ई व्यक्तिक कतोक मनोग्रन्थिकेँ विश्लेषित क' ओकरा पाठकक सोझाँ प्रस्तुत करैत छथि आ एहि क्रममे अन्तरक अबोल सत्यसंग सोझ साक्षात्कार करबैत छथि । 'अगुरबान', 'टिटिम्हा', 'देह', छहोछित्त', 'बताह' आ 'भरदुतिया' हिनक किछु रम्य आ प्रिय कथा अछि ।' हँ, सम्भव थीक जे तहिया जँ हमरा 'छठि परमेसरी' कि 'एकटा मूल्यहीन कथा' पढ़बा लेल उपलब्ध भेल रहैत त' हमर उल्लिखित टिप्पणीक स्वर किछु भिन्न होइत । हमरा यदि धूमकेतुक दूटा कथाक नाम लेबाक लेल कहल जाय त' हम 'अगुरबान' आ 'एकटा मूल्यहीन कथा'क नाम लेब आ धूमकेतुक कथाकारक प्रति अपन धारणाकेँ 'अण्डरलाइन' करब ।

भाइ, मैथिली कथामे किछु कथाकार जेना रमानन्द रेणु, विभूति आनन्द आदि

निम्नवर्गक भाषा-भंगिमाक संग कथा कहि सामान्य धारा सँ फराक अपन परिचिति बनौलनि । मुदा हिनका लोकनिक प्रयास अथवा आन्दोलन गति नहि पकड़ि सकल । एकर की कारण मानैत छी अहाँ ?

निम्नवर्गक भाषा आ भंगिमाकेँ अपनाके कथाक पात्र आ परिवेशकेँ यथार्थक स्वर आ संस्कार देबाक चेष्टा त' ठीके होइछ जा धरि रचनाकार ओहि पात्र आ परिवेश संग आत्मीय आ अकृत्रिम सम्बन्ध स्थापित नहि क' पबैछ, ता धरि कथाक धारा सामान्य धारासँ सारत: फराक नहि होइछ । औपचारिक लगाओ सँ एहनामे बात नहि बनैछ । रमानन्द रेणु कि विभूति आनन्द सन कथाकार अपन प्रतिपाद्य संग ओ सम्बन्ध सूत्र जोड़बा मे सफल नहि भेलाह। ओहुना एहि तरहक 'विशिष्ट' प्रयास सामान्यत: आन्दोलन ठाढ़ नहि क' पबैछ । हिन्दीमे आंचलिक उपन्यासक धारा त' चलल, मुदा 'मैला आंचलो' कोनो आन्दोलनमे नहि बदलि सकल । हमरा लगैत अछि जे रचनामे पर्याप्त वस्तुनिष्ठ होयबा लेल अपना विषय संग बहुतो स्तर पर एकमेत होयब आवश्यक होइछ । महाश्वेता देवी होयब सभक लेल संभव नहि, तें जंगल आ जंगलवासीक कथो लिखब सभक लेल सम्भव नहि ।

भाइ, मैथिली कथामे कविता जकाँ सहजतावाद, अकवितावाद, नवचेतनावाद, अभिव्यंजनावाद आ तदर्थवाद आदि कोनो नारा वा आन्दोलन नहि देखाइ पड़ैत अछि । एकर जड़ि मे की कारण लगैत अछि अहाँकेँ? की मैथिली कथा पर हिन्दीक 'नई कहानी' आन्दोलनक कोनो प्रभाव लगैत अछि अहाँकेँ ?

आधुनिक मैथिली कवितामे कोनो आन्दोलन कि नाराक पाछाँ कोनो सुविचारित दर्शनक बरोबरि अभाव रहल आ तें एहिमे अधिकांश अपन स्थापक धरि सिमटि क' रहि गेल। कोनो एहन आन्दोलन अपन सार्थकता एहि लेल सिद्ध नहिक' सकल कारण जे आधुनिक कविताक प्रचलित दू धारा (परम्पराक प्रति निर्मोह कि परम्पराक प्रति मोह पोसैत) सँ अपन एकदम भिन्न पहिचान बनाएब ओकरा लेल संभव नहि भेलैक । सभ उछल-कूदक बादो राजकमल चौधरी सन कवियो अपन कविताकेँ कोनो दोसर धारा कि नामसँ नहि जोड़ल । मैथिली कथामे यदि कोनो आन्दोलनक विशिष्ट आन्दोलनक सूत्रपात्र नहि भेल त' एहिसँ मैथिली कथा कतोक वैचारिक ओझरासँ बाँचि गेल । हिन्दीक 'नई कहानी' एकटा आन्दोलनक रूपमे प्रकट भेल छलैक जे किछु वैचारिक आग्रह-दुराग्रहकेँ अपन आधार बनौने छल । हिन्दी नवकविताक 'लघु मानव'क वर्चस्व हिंन्दीक नई कहनियाँ पर निर्विवाद रूपसँ पड़ल छैक । मैथिलीक आधुनिक कथाक

काल-विभाजन त' एहि वा ओहि आधार पर कयल जाइत रहल अछि, मुदा विषय कि तकर प्रतिपादनक भिन्नताक दृष्टिसँ कथाक वर्गीकरणक चेष्टा मैथिलीमे नहि भेल अछि । आब हम ई त' स्वीकार करब जे मैथिली आधुनिक कथा हिन्दीक नई कहानीसँ विषय संग सम्बन्ध स्थापित करबाक संस्कार आ तकरा संग निबाहबाक कौशल त' अर्जित कयलक अछि, मुदा अपन विशिष्ट अनुभूतिक पृथक सौन्दर्यक अलग-पहिचान लेल विषय-वस्तुक उपस्थापनक प्रक्रियाकेँ अपन जातीय संस्पर्श नहि द' सकल।

भाइ, कथा ककरा कही अथवा आइ कथा केहेन रचना भ' गेल अछि ताहि पर अहाँ अपन निवन्धमे त' विचार कने छी । अपन फराक, खास दृष्टि संग मैथिली कथा नहि उपस्थित भेल अछि सेहो बात अहाँ मानैत छी । मुदा कोनो कथाकारक कथाके कोन तत्व सभ मैथिली कथा बना दैत अछि ? मैथिली कथाक परिचिति लेल कोन निम्नतम तत्त्वक अनिवार्यता अहाँ जरूरी बूझैत छी ? एहि लेल कोनो अनुशासन अहाँकेँ आवश्यक लगैत अछि कि नहिं ?

अहाँक जिज्ञासा ई अछि जे मैथिली कथाकेँ मैथिली कथा-होयबा लेल ओहिमे कोन-कोन तत्त्व सभक उपस्थिति हम जरूरी मानैत छी । अहाँ अपनो स्वीकार करब जे अहाँक एहि जिज्ञासाक उत्तर मे बहुत फरिछाओल बात कि निश्चित बिन्दु नहि गनाओल जा सकैछ । ओना 'मैथिलीक आरम्भिक अवधिक कथाकार लोकनिक कथामे मैथिल-संस्कार ततेक प्रकृतरूपमे आयल अछि जे तकरा चिन्हबा लेल कोनो तरहक चश्माक जरूरति नहि। ललित सँ ल'क' जीवकान्त धरिक रचनाकारक कथामे विशिष्ट मैथिलत्त्वक छाप खाहे नजरिए नहि आओत खाहे ओ गैर-मैथिल चेतना संग तेनाक' एकमेत भेल लागत जे तकरा आधुनिक मैथिली-कथा कहबासँ अधिक उपयुक्त ओकरा आधुनिक भारतीय कथा कहब होयत ।

सुभाषचन्द्र यादव मैथिली कथाक बहुतो रूढ़िके तोड़बाक संग मैथिली कथाकेँ पुन: ओहि सुगन्धि सँ सुवासित कयलनि जे हम सभ मैथिलत्वक सुगंधिक रूपमे जनैत आयल छी । तखन ई भिन्न बात थीक जे प्रो. हरिमोहन झा कि उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क कथाक मैथिल-चेतना आ सुभाष चन्द्र यादवक मैथिल-संस्कारक बीच अभिजात-अनभिजातक एहन देवार ठाढ़ अछि जे जकरा तोड़ब अनिवार्य होइतो ओ आइधरि तोड़ल नहि गेल अछि। एहि लेल ओहेन विचारक लोकनि अधिक उत्तरदायी छथि जे सभ प्रो. हरिमोहन झाक कथा-संसारमे समस्त मिथिलाकेँ समाहित देखैत अयलाह

अछि । ओकर बाहरक दुनियाँ हुनका अपन सोचक स्थापना लेल अनावश्यक लगैत रहलनि अछि ।

धरती एक होइतो सभठाम एक रंग नहि छथि । तहिना मनुक्ख जाति तत्वत: एक होइतो कतोक तरहक भिन्नता रखैत अछि । एहि भिन्नताक कारण सभकेँ आब जानल-बूझल छैक । चीन, जापान, भारत वा आन देश एकें भूमिक भाग होइतो भौगोलिक क्षेत्रक रूपमे अपन किछु विशिष्टता रखैत अछि । मानव जातिमे ई विशिष्टता भौगोलिक भिन्नताक अतिरिक्त ऐतिहासिक आ वैचारिक भिन्नतोक रूपमे देखल जाइछ । तें कोनो रचना अपन जातीय आ क्षेत्रीय संस्कारकेँ आत्मसात्क' वैश्विक सोचक संग होइतो अपन संवेदनागत विशिष्टताक कारण अपन पृथक पहिचान बना सकैछ। मैथिलीक कथाकारोकेँ अपन विशिष्टताक रक्षा हेतु एक संगे कतोक दुनिया मे रहबाक संग-संग भिन्न-भिन्न क्षेत्र आ दुनियाँक सोच संस्कार संग आत्मीयता स्थापित क' अपनाकेँ ओहि भिन्न-भिन्न दुनिया आ सोचक अपनाकेँ सहभागी आ सहभोक्ता बना अपन असंदिग्ध पहिचान लेल नव ओरिआओन कर' पड़तनि । अपन इतिहास आ संस्कृतिक पुर्नअन्वेषण दुरूस्त बात थीक । मुदा एहि अन्वेषणकेँ एकाङ्गी नहि होयबाक चाही । एहि पुर्नअन्वेषण मे मानव जातिक समस्त अधिवास आ सम्पूर्ण चिंतनक प्रतिफलोक प्रभाव देखार होयबाक चाही। समता आ एकताक समस्त दण्ड-प्रणायामक बादो ई एकटा सत्य थीक जे सुकरात, अरस्तू आ भरतमुनि मे तात्विक अन्तर छनि जे हुनक मनुक्खकेँ छोट-पैघ घोषित कयने बिना हुनका सभकेँ पृथक करैत छनि । वेद, बाइबुल, कुरान आदि सभ धर्म चिंतन मानवक हित-चिंतन करितो अपना चिन्तनमे भिन्न अछि । तहिना भिन्न-भिन्न विश्व साहित्य कि देशीय साहित्यक सहगामी होइतो मैथिली रचना अपन फराक अस्मिताकेँ निस्संकोच भावसँ फराक राखि सकैत अछि।

अन्तमे भाइ, मैथिली कथाक समालोचना पक्षपर अहाँक विचार जान' चाहब। की आइधरि जे समालोचना अहाँक दृष्टिमे आयल अछि से मैथिली कथाक इतिहास, प्रवृत्ति, कलात्मकता ओ सामाजिक सन्दर्भके फड़िछा क 'सोझाँ आनि सकल अछि? अथवा अहूमे अहाँकेँ मैथिल मानसक अतिवादिता हाबी लगैत अछि ?

अहाँक लेल ई सोचि पायब बहुत आसान थीक जे एहि प्रश्नक उत्तर देब हमरा लेल धर्म संकटक संग सोझ साक्षात्कार थीक । प्रतिष्ठित समालोचक मोहन भारद्वाजक पुस्तक 'अनवरत'क भूमिकामे हम मैथिली आलोचनाक विद्यमान स्थिति-दु:स्थितिक सम्बन्ध

मे किछु अपन सोच प्रस्तुत कयने रही, यद्यपि हमर सभ बात ओहि 'प्रकाशित' भूमिका मे कोनो कारण सँ शामिल नहि थीक । हम एखनो ई मानैत छी जे प्रो. रमानाथ झाक बाद मैथिली आलोचनाक काज बहुत कालधरि गम्भीरता ओ आग्रहहीनताक संग सम्पादित नहि भेल । प्रो. झा आग्रहहीन रहथि, ई हम नहि कहब मुदा ओ अपन काजक प्रति गम्भीर रहथि, ई हुनक शत्रुओ स्वीकार करताह। मैथिली आलोचनामे अखन जे हमरा देखबामे आबि रहल अछि ओहिमे सभसँ भयावह बात ई थिक जे आलोचना रचनाक नाम पर नहि, रचनाकारक नाम पर आग्रही भ' रहलि अछि । क्यो हमर उल्लेख कत्तौ करैत छथि त' हमरो ई धर्म बनि जाइछ जे हम हुनक गुणगान करियनि । वस्तु अपना जगह जड़बत स्थापित रहैछ आ आलोचनाक आँखिये ओकर स्वर आ स्वरूप स्पष्ट होइछ। जखन कि वस्तुक स्वर आ स्वरूपेकेँ ओहि रचनाक चरित्रकेँ विश्लेषित करबाक चाहैत छलैक । ओकर आलोचनाक दिशा स्थिर करबाक चाहैत छलैक ।

मैथिली आलोचनाक क्षेत्र मे प्रो. रमानाथ झाक बाद व्याप्त अन्हार किछु अधिक समयधरि व्याप्त रहल, मुदा से इम्हर पतराय लागल अछि । आब वस्तुनिष्ठ आलोचक आ आलोचनामे संख्यात्मक आ गुणात्मक दुनू तरहक अभिवृद्धि भेल अछि । हम ई मानैत छी जे आलोचनाक क्षेत्रमे अखनो निष्ठापूर्वक काज कयनिहार व्यक्तिक संख्या बहुत थोड़ अछि, मुदा ई संतोषक विषय थीक जे नव लेखक सभक रचनात्मक क्षमताक संग आलोचनात्मको क्षमताक स्तर ऊँच भेलनि अछि । हमरा इम्हर राजमोहन झा, मोहन भारद्वाज, हरेकृष्ण झा, तारानन्द वियोगी सन किछु व्यक्ति अपन आलोचनात्मक दृष्टिसँ पर्याप्त आश्वस्त कयलनि अछि । एहि सभ व्यक्ति मे मोहन भारद्वाजक आलोचनात्मक लेखन हमरा सभसँ व्यवस्थित आ दृष्टि-सम्पन्न लगैत अछि । ओना प्रतिमानक अनुसार वस्तुके देखबाक स्थान पर वस्तुक अनुसार प्रतिमान गढ़ब हिनका अपन बात कहबा लेल बहुधा अधिक अनुकूल होइत छनि ।

हमरा मैथिली आलोचनामे आलोचनाक उपयुक्त भाषाक अभाव बरोबरि सर्वाधिक चिन्तित करैत रहल अछि । जेना कविताक भाषामे कथा लिखब बेढव होइछ, ओहिना हमरा सभकेँ निबन्धक भाषामे आलोचना लिखब बेढव बूझि ओकरासँ परहेज करबाक चाही। निबन्धक भाषामे विशेषार्थक ध्वनि ओकर स्वरूप आ चरित्रकेँ स्पष्ट होयबामे बाधक बनैत अछि । जखन कि आलोचनात्मक प्रभावान्वितिक दृष्टिसँ ओ लाभप्रद होइछ । हम आलोचना मे सांध्य-भाषाक पक्षपाती कथमपि नहि छी, मुदा ओकरा भाषा मे अखबारी कि निविदात्मक स्थूलता हमरा त्रस्त करैत अछि । आलोचना लेल कोनो

स्थितिमे कोनो सर्वेक्षण-प्रतिवेदन, अंकेक्षण प्रतिवेदन कि घटना स्थलसँ पठाओल प्रतिवेदनक यथातथ्यता काम्य नहि होइछ । ओ त' कोनो रचनाक ओहि सौन्दर्यबोध आ यथार्थोस्थापन केँ विवेचित आ विश्लेषित करबा धरि सीमित रहि रचनाकार आ पाठकक बीच ओहि संवादकेँ आरम्भ करबाक आधार तैयार करैत अछि, जकर परिणति रचनाकार आ पाठकक बीच आत्मीय सम्बन्धक स्थापना मे होइछ । ओकर भाषामे कोनो न्यायाधीशक भाषाक निर्णायक भंगिमो काम्य नहि थीक । एकटा अधिवक्ताक भाषाक लोच ओकरा अपन विन्दुकेँ स्पष्ट करबामे अधिक सहायक होयतैक । प्राय: आलोचनाक भाषाक सम्बन्धमे हम अपन बात स्पष्ट नहि क' सकलहुँ अछि, मुदा हमरा द्वारा उल्लिखित संकेत सभसँ हमर अभिप्राय बुझबामे लोककेँ असुविधा नहि होयतैक।



कथा

विभा रानी

प्रतिग्रहण

''फेर स' वएह इडली ।'' मेजर रंगाचारी खौंझ स' भरि उठलाह—''अहाँ ई इडली-डोसाक अतिरिक्त आओर किछु नञि पका सकै छी हमरा लेल ? यदि नञि पका सकै छी त' किछु नञि बनाउ हम खा लेब किछुओ, कत्तहु।''

मीनाक्षीक मीन सन-सन पैघ आँखि नीब जकाँ ढबकि गेलै । नजरि उपर बिन उठौने इडलीक प्लेट उठबइत बाजल—''अहाँ बैसू । हम एखने शीरा (सुज्जीक हलुवा) बना देइत छी ।''

''नञि । रह' दियउ । शीरा बनैत धरि ऑफिस पहुँच' मे देरी भ' ज़ाएत । अहाँ हमर डिब्बा द' दिय', ओहिमे दू चारि टा इडली बेसी ध' देब शंकरन लेल। असगरुआ छै ।''

शंकरन के नाम मुंह पर अबिते ओकर रूप रंग आ बोली मेजरक कान मे बाजि उठलनि—'अहूँ त' मेजर ।'' ओ कनेक मुस्की छोड़लनि, पुन: यथावत गंभीर भ' गेलाह।

बहुत रास समानता आ ओतबे असामनता—अइ दुनूक मिश्रण छलाह शंकरन आ मेजर रंगाचारी । अपना आ ओकरा मध्यक समानता स' जत' ओ तृप्त होइत छलाह, ओतबे असामनताक घेरा हुनका क्षुब्ध क' देइत छलनि आ शंकरनक प्रति कनेक ईर्ष्या भाव सेहो भरि देइत छलनि । ओ सोचने बेगर नञि रहि पाबैत छलाह—''केहन तकदीर पाओलए ई शंकरनो । एकटा ओ अछि आ एकटा हम छी ।''

मीनाक्षी स्टीलक पैघ डिब्बा मे इडली आ चटनी भरिक' ल आनने छल आ ओ डिब्बा मेजर के थमा चुकल छल । मीनाक्षी दिस दृष्टिपात कएन बेगर ओ डिब्बा ल' क' चलि पड़ल छलाह । मीनाक्षी हुनका छोड़' लेल दूरा धरि आएल छल। ओ सोचने छल जे चुप्पे स' मेजरक हाथ पकड़िक' अपन आँखि स' अथवा ठोर स' सटा लेत । यद्यपि अइ स' नञि त' मेजरक खीझ समाप्त हएत आ नहिंए हुनक ओ स्वभाव

बदलतै जकरा ओ पछिला बाईस वर्ष स' ढोइत आबि रहल अछि । एतेक दीर्घ अवधि आ ओतबे पैघ मौन आ मौनक अकथनीय वेदना । हुनका की । मीनाक्षी सोचलक-''भरि दिन त'आफिस मे नाना तरहक गप्प सड़क्का, भाँति-भाँतिक लोक सभक संग मे हिनक दिन त' कटिए जाइत हएत । हँसी-मजाक, बाजब-भूकब सेहो होइते हेतैक । मुदा ओ की करय ? कत जाए ? ककरा स' गपियाबए ? ककरा सँ अपन दुख बखानए? भाषाक त' आब कोनो एहेन समस्या नञि छल । मेजरक संगे-संग ठाम-ठाम घूमैत-घूमैत काज जोगर हिन्दी आ अंग्रेजी सीख गेल छल । मुदा मोनक गप्प कोन भाषा मे करए आ ककरा स' करए ? अइठां त' एगो अछियो-शोभा-शोभा कुंदर । वएह कहियो-कहियो क' आबि जाइत अछि । मुदा बेसी नञि । अएबो करत कत' स ? ओहो त' नोकरीया लोक अछि । भरि दिनुका नोकरी रवि दिन छुट्टी होइत छै त' भरि दिन घरक भाँति-भाँति के काज । तइयो ओ कहियो-कहियो क' समय निकालिए लैत अछि । जखन कि एम्हर मीनाक्षी स' ईहो संभव नञि भ' पबैत अछि । असलमे किछुओ कएल संभव नञि भ' पबैत छैक । ने तहिये, जहन मेजर फौज मे छलाह, ने आबे, जहन ओ अइ कंपनी मे छथि ।

जेना एखने लेल जाओ । गल्ली पार करैत ओ मेजरक हाथ थाम' चाहै छल। ओ ओकरा अपन आँखि अथवा ठोर स' छुअ' चाहैत छल । ओ ई सभ सोचिए रहल छल कि पाछाँ स' आवाज आएल-''अम्मा । कत' छी ? हमरा गरम पानि द' दिअ'। अम्मा....।

आवाज सुनिक' दुनूक दुनू क्षणांश लेल ठकमकाएल । मेजरक संगमरमरी चेहरा ओहि आवाज के सुनिक' जत' जंगली पाथर जकाँ खुरदुर आ कड़ा भ' गेल, ओतहि मीनाक्षी एकरा सुनिक' अहिल्या जकाँ जड़ि भ' गेल । किन्तु दोसरे क्षणे मे ओ जेना सचेत भेल आ मेजर के गलीए मे छोड़ि ओहि आवाज दिस पड़ाएल-अप्पाक आवाज दिस । अप्पा पड़ल छलाह-एकदम चितांग । आँखि उनटि जाएबला अंदाज मे ऊपर टँगल आ दुनू हाथ दूटा सूखाएल चैला जकाँ दुनू दिस खसल पड़ल छल । पपड़ियाएल ठोर निरंतर हिल रहल छल आ सुखाएल पातक खरखर ध्वनि आबि रहल छल-अम्मा। अम्मा । कत' छी अम्मा । गरम पानि द' दिअ' अम्मा । गरम पानि द' दिअ' अम्मा।'

मीनाक्षी के मोने-मोन बहुत तीव्र खौंझ बढ़लै । आब ओ सत्ये खौंझ जाइत छल। किन्तु मोश्किल ई छल जे अपन खौंझ ओ ककरो पर कतहु उतारि नहि पबैत छल। ककरा पर उतारय । मेजर पर ? मुदा ओ त' राति बारह क अमलसँ पहिने कहियो प्रकटे नहि होइत छलाह । प्रीति पर ? परंतु ओहि नान्हिटा बुचिया के किऐक अपन

कष्टक बाणक शिकार बनाबए ? अथवा अप्पे पर ? मुदा कोना ? ओ त' विवाहक प्रथमे रात्रि के मेजरक कथाक अदृश्य डोर स' बन्हा गेल छल । बन्हा की, जकड़ि देल गेल छल, सत्ये । मीनाक्षीक मोनक आवेग आब एकरा भावनाक बंधन नञि लौह जंजीरक सख्त पाश मान' लागल छल जे निरंतर एकहि अवस्था मे पड़ल रहबाक कारणे जड़ि भ' गेल छल-सख्त, भारी, आ ठरल ।

''अहाँ केँ बूझल हएत, हमर माँ त' हमर नेनेपने मे हमरा छोड़िक' चलि गेली। अप्पे हमरा माय आ बाप दुनू बनिक' पोसलए । आब अहाँकेँ हुनकर माँ बनिक' हुनकर देखभाल करबाक अछि । हमरो स' बेसी ख्याल अहाँ केँ हुनकर राख' पड़त । हुनक एक-एक बात केर अक्षरशः पालन हेबाक चाही, ई ध्यान रहय । ''मेजरक शब्द नञि, न्यायाधीशक फैसला हुअए जेना ।

की-की ध्यान मे राखए मीनाक्षी । अपन उमिर, अपन आकांक्षा, अपन स्वप्न अथवा अप्पा क' संग नाथि देल गेल अपन जिनगी आ कि मृगतृष्णा सन बनि गेल मेजर । बाईस वर्ष पूर्व अप्पा एकटा डोरी ल' क' आएल छलाह आ ओकर माय-बाप स' ओकरा मांगि क' क' अही डोरी स' मेजर संगे बान्हि क' ल' आएल छलाह। आहो ओकरे सहारे ता-थइ, ता-थइ के थाप पर नाचि-नाचि उठल छल-सरल, सहज, जेना पहाड़क कोरा स' निकसल नदी सभक कल-कल किलोल, झर-झर झहरइत पदचाप । गै माय गै माय । कोना क' सम्हारी अपन खुशी । एतेक पैघ फौजी अफसर।

ठेठ मद्रासिन छल मीनाक्षी आ ठेठ पुरूष छलाह अप्पा । जहन वियाह भेल छल, तहन मात्र सोलह-सत्रह के उमिर छल । गरीब घरक बेटी । सतमा बाद माय घरे बइसा लेलकै । कहलकै-''वर खोजू ज़ी । जतेक सोन हमरा लग अछि, सभटा एकरा द' देबै । मुदा आगा पढ़ेबाक कथा नञि बाजी । बेसी पढ़त त' बेसी दिन एतहि रहत। बेसी दिन धरि खेनाइ-पिनाइ, कपड़ा-लत्ताक जोगाड़ आ जौं बेसी पढ़ि-लिख गेल त' बेसी पढ़ल-लिखल वर । ओतबे बेसी सोन, कत' स' आओत ?

पूब स' पच्छिम, उतर सँ दक्षिण धरि बेटी जाति लेल यैह समस्या । पढ़ायब-लिखाएब के समस्या, पढ़ि-लिखि गेल त' नीक घर-वर भेटबाक समस्या, नीक घर-वर भेटि रहल हुअए त' नीक पाइ, नीक सोन देबाक समस्या । समस्ये समस्या।

परंतु अइ ठाँ सभ किओ ओकरा सराहने छल । ओकर भाग्यक बलिहारी नेने छल । ऐहेन निपट सामान्य मुंह-कान । सामान्य की-बदसूरति कही तँ सएह बेसी उपयुक्त, गामक सतमा पास, न बाजक तरीका, न उठ-बैस'क शऊर आ वर-नाम, छरहर, दूध जकाँ उज्जर धपधप, पढ़ल लिखल आ सभस' बढ़िक' त' फौज मे अफसर । गामवला

सभ शंकाक फोंफि छोड़ल–फौज मे त' सुनै छी जे लोक आओर अपने स' लड़िकी पसीन क' वियाह करैत अछि। भाई यौ, फौजी जीवन भेलै-खुजल मेल-जोल, स्वच्छंद बात-व्यवहार। सुंदर अफसर, खूबसूरत, सलोनी आ सेमलक रूइ जकाँ फर-फर अंग्रेजी बाज' वाली ओकरा सभक घरवाली सभ ! फौजी अफसर सभक त' सुनल जे खास माँग होइत अछि–हमरा त' एहेन लड़की चाही जे तेज धारबला कैंची जकाँ खच-खच अंग्रेजी बाजि सकय।

आ मीनाक्षी ? मांथ मे भरि-भरि चुड़ू तेल थोपिक' नाम, कारी, घनगर केशक बांस जकाँ मोट-मोट चोटी बनाक' भारी-भारी गजरा लगाब' वाली, मोट-मोट आँखि मे ओतबे मोट-मोट काजर माढ़'वाली, ललाट पर चंदन के तिलक आ गाढ़ मोट-मोट कपड़ाक घघरा-चोली मे रह'वाली मीनाक्षी कोना क' मोन मे गड़लइ अइ फौजी रंगाचारी के ?

त' अइ मे रंगेचारीक कहाँ कोनो दोष छल। ओ त' अपन पाँच वर्षक उमिर स' अप्पाक एक अहि अहसानक जांत तर अपन जिनगी के दबौने चलल आबि रहल छलाह, जे अप्पा हुनक मुँह देखिक' पूरा जिनगी काटि देलनि, दोसर विवाह नञि केलनि, तैं, अप्पाक प्रत्येक आज्ञाक पालन हुनका लेल धर्म भ' गेल छल।

आ यैह धर्म भ' गेल छल मीनाक्षीक। भिनसर पाँच बजे सँ' ल' क' राति के एक दू बजे धरि। मीनाक्षीक रग-रग मे नींद आ थकनी पैंसि गेल छल। ओकर इच्छा होइत छल जे ओ निरंतर सुतल रहै–बरस-बरस धरि, युग-युग धरि, सदी-सदी धरि...निसभेर नींद मे, जाहि स' ओकरा पता नञि चलए जे दीन दुनिया मे की भ' रहल अछि ? आ जहन ओ नींद स' जागय, तहन मौसम मे बदलल हवाक झंकार हुअए आ ओहि हवा मे केराक भालरि सनक नरम, कोमल चिकनाइ हुअए। ओ जहन जागय, तहन जाहि रस्ता स' पास करय, ओत' फूलक क्यारी, सड़कक बत्ती ओकरा स' कनबतिया करए, आ ओ सड़क पर पसरल चानी सन उज्जर धूल कण जकाँ भरि उजास मुसका दिअए। ओकरा आइयो अपन विवाहकं प्रथम रात्रिक एक-एकटा गप मोन छैक, जेना गप्प के स्मृति पटल के ठीक मध्य मे किछु अइ तरहे राखि देल गेल हुअए जाहि स' कोनो दिस स' कोनो हाल-सूरत मे विस्मृतिक जीवाणु ओकरा धरि नञि पहुंचि सकय। ओ गप्पो छल त' की छल–अप्पा लेल कहल गेल गप्प सभ आ बस। सोलह-सतरहमक वयस कोनो एतेक नादान आ नासमझवला सेहो त' नहि होइत छैक जे विवाह आ विवाहक माने बूझ' मे नञि आबय।

बूझ' मे नञि आयल त' मेजरक विचार आ अप्पाक व्यवहार। मुदा ओहो बस किछुए दिन धरि, तकरा बाद त' चीज उज्जर दागरहित वस्त्र जकाँ झकाझक चमकि उठल छल त' ओकर दोसर दिस मीनाक्षी के गर्त मे जेना गहीर आ आओर गहीर ठेल देने छल।

नञि जानि कोना क' अप्पा अपना मोन मे इ धारणा बैसा लेने छलाह जे फौज मे जा क' लोक आओरो बहसि जाइत अछि, सरकार दिस स' मुफतिया दारू भेटबे करै छै, गोश्तक मामिला मे त' जीवित आ मुर्दा दुनू स' ओकरा सभक यारी भ' जाइत छैक। आ छौंड़ीबाजी मे त' फौजी सभक कोनो मोकाबिले नञि। सरकारो देशक ई पहरूआ सभक विरूद्ध आम जन जकाँ पेश नञि अबैत अछि। तैं ओ बगटूट घोड़ा भ' जाइत अछि आ जौं कतहु मेम टाइप संगिनी भेट गेल तखन त' आगि मे घीए बूझू। तैं, जहन ओ मीनाक्षी के देखलनि, ओकर ठेठ मद्रासी गजरा आ कारी मोट चोटी, गहीर हरियर रंगक घघरा, माथ पर अयंगार ब्राहमणबला ठोप आ आँखि मे मोटगर काजरक संगे-संगे निर्धनता, कम पढ़ल-लिखल होयबा स' उत्पन्न उजबक भाव, त' हुनका एकदमे स' लागि गेलैन जे रंगाचारीक आचारक रंग बनाक' राख' मे इएह लड़की सभ तरहें सफल आ सक्षम भ' सकैत अछि। मीनाक्षी के प्राप्त कर' मे हुनका कोनो श्रमो नञि कर' पड़लनि, निर्धन-माय-बापक बेटी आ ओहू मे हुनकर बहीनक पड़ोसिया मीनाक्षी के वस्तुतः ओ अपन बहीने ओहिठाँ देखने छलाह–इडलीक चाउर पीसैत। ओतहि चोट्टे बहीनक मार्फत संवाद पठौलनि।

मीनाक्षक माय-बाप त' अवाक–''फौजक एतेक पैघ अफसर, एतेक सौंदर्यवान! हमर मीनाक्षी त' हिनक पैरक धूरो नञि अछि–ने देख' सुन' मे, ने पढ' लिख' मे। संबंध ल'क' गेल अप्पाक बहीन बुझौने छल–''अरे लक्ष्मी। भगवान के धन्यवाद दही जे तोहर छौंड़ी अप्पा के पसंद आबि गेलौ। आ हमर रंगाचारी त' सोन अछि सोन। तों फिकिर जुनि कर। मीनाक्षी ओत' राज करत राज।

अप्पा रंगाचारियो के समझ' बूझक मौका कहाँ देलनि। कखनो शंकरन स' गपियबैत, कखनो ऑफिस मे बैसल, गाड़ी चलबैत–जखनो-तखनो ई विचार रंगाचारी के मथैत रहैत छल–कियैक ? आखिर कियैक ? कियैक अप्पा ओकरा संगे एहेन क्रूर आ भयंकर मजाक कएल ? ओ त' अप्पाक प्रत्येक गप्प पर नौकर के कहय, स्वाभिक्त कुकुर जकाँ गर्दनि निहुँरौने चलल आबि रहल छलाह। अप्पाक स्वभावक मादे बूझल छल, तैं मोन के कएक बेर विचलित भेलाक बावजूद ओकरा भावनाक आवेग मे नञि बह' देलनि आ तय कैलनि जे अप्पा जत' कहताह, ओत्तहि विवाह

करब । मोन मे एक गोट विश्वासो छल जे आखिर अपन पुतौहु आनैत काले अप्पो त' अपन विवेक स' काज लेताह ।

सत्ये । अप्पा अपनहि विवेक स' काज लेलनि । रंगाचारी के तार कएलनि मात्र दू शब्दक–''कम सून'' संयोग एहेन छल जे ओहि समय देश भीतरी आ बाहरी कोनो उपद्रव स' नञि जूझि रहल छल । तैं रंगाचारी के छुट्टी भेटबा मे कोनो दिक्कत नञि भेलनि । ओ घर पहुँचलाह त' देखलनि जे पीसी सभटा इंतजाम क' क' मनोयोग पूर्वक विवाह गीत गाबि रहल छली । रंगाचारी जा धरि किछु बुझतथि, सोचतथि, बिचारथि, ताधरि त' मीनाक्षी हुनक घर मे आबि गेल छल ।

विवाहक प्रथमे रात्रि के, जखन रंगाचारी मीनाक्षी के अप्पाक मादे कहि रहल छलाह, तखन मीनाक्षीक झुकल आँखि क्षण भरि लेल ऊपर उठल छल आ ओ रंगाचारी के दखने छल । यद्यपि ओ दृष्टि क्षणे भरक छल, परंतु ओहि पलभरक दृष्टि रंगाचारीक संपूर्ण अस्तित्वं के एकदम स' झोड़िक' राखि देलकनि । गहीर पिड़स्याम रंग के त' ओ शंकरक विष जकाँ पचा गेल छलाह कियैक त' संग मे घनगर, नाम आ कारी केश छल आ झुकल पलकक उपर सँ आँखि माछसन लागि रहल छल जे मीनाक्षी नाम के सार्थकता प्रदान करैत छल आ आब एकरे सहारे अपन जीवन नैया खेबाक विचार ओ क' रहल छलाह । हुनक पूराक पूरा रेजिमेंट पंजाबी बेल्ट छल । सभटा स्त्रीगण पंजाबी छलीह सक्कति : सक्कति सानल मैदा जकाँ गोर-नार, कसल, भरल, खूबसूरत आ स्मार्ट । आब ओकरा सभक मध्य ई डेढ़ आँखिवली कोना क' रमि सकतै? पहील बेर हुनका अप्पा पर बहुत जोरक तामस उठलनि आ स्वयं पर तरस अएलनि। मीनाक्षी स' घोर वितृष्णा भेलनि आ अपन श्रवण कुमार होयबाक दुख सेहो हुनका भीतर अंकुराएल छल । ओहि दिन हुनका अपना माय बहुत जोर स' मोन पड़लथिन। आइ यदि ओ रहितथि त' बेटाक एहेन दुर्गति देखैत रहतथि की ?

बहुत क्षीण आ मध्यम स्मृति रहि गेल छल रंगाचारीक मोन मे अपन मायक। तइयो, ओहि मद्धम स्मृतियो मे अप्पा सँ आतंकित माय के मुह बहुत गहीर धंसल छल। शायद कहियो ओ माय के हँसैत नहि देखने छलाह । सदिखन डेरायल-डेरायल सन, जेना शिकारीक पाँज मे फँसल कोनो चिड़ै, जकरा हर पल अपन गर्दनि मचोड़बाक अंदेशा लागल रहल हुअए । बात-बात पर अप्पा चिचियाइत छलाह आ ठीको काज पर माय के लुल्हुआ लेइत छलाह । रंगाचारी के अपनो कहाँ मोन छै जे अप्पा कहियो हुनका अपन कोरा मे लेने होथि । पुचकारने होथि आ आना दू पाइ के गुड़े दिया देने होथि बस, अपन काज स' काज, अपन जरूरति आ तकर पूर्ति सँ सरोकार । अप्पाक

इ व्यवहार स' ओहि नान्हिपनो मे रंगाचारीक मोन मे काँट बहुत गहीर धँसल छल ओ सोचने छल जे पैघ भेला पर माँ के ल' क' कतहु, कोनो आन ठाम चलि जेताह । नञि रहताह एहेन कूर, शुष्क अप्पा लग आ नञि रह' देताह अपन निष्कपट, निश्च्छल माय के ओहि अदंकक छायाक भीतर । मुदा, अइठाँ त' माइएं चलि गेलीह । अप्पाक कठोर, शुष्क जीवन आ व्यवहार बालमणि अम्मा के मृत्यु दिस अनायासे ठेल देलक। रसम कने कम खट्टा भेल वा सांभर बेसी करू भ' गेल वा इडली कनेक सख्त बनि गेल, ओ माथ पर आकाश उठा लेइत छलाह । पूजाक समय जे एक्कोटा बर्तन मे मिसियो भर माटि लागल रहि गेल तइयो आफति । बालमणि अम्माक करेजा मे शान्ति नञि छल । रंगाचारीक जन्म लेबाक दिन धरि दौगि-दौगिक' अप्पाक हुकुम बजाबैत रहली। रंगाचारीक जन्मक बादो कनिको आराम नञि भेटलनि । तहिया रंगाचारी साढ़े तीन बरखक छलाह, जहन बालमणि अम्मा ओछाओन स' लागि गेलीह मुदा, ओहि नान्हि टा उमिरो मे ओ अप्पाक बाजब आ अम्माक बेबस, नचार नजरिक व्यथा बूझि लेइत छलाह । अपन नान्हि-नान्हि टा हाथ स' बालमणि अम्माक नोरो पोछबाक प्रयास करैत छलाह। अम्मा कें ओछाओन ध' लेलाक आ रंगा के घर मे होयबाक बादो अप्पा नञि बदलल छलाह । बदललाह त' मात्र एतबे जे रंगाक हाथे जेहने बर्त्तन भेटै छल, ल' लेइत छलाह; पूजा क' लेइत छलाह आ निकसि जाइत छलाह । कत' गेलाह, की खेलनि-पीलनि, कोम्हर समय बितौलनि, रंगा आ अम्मा की खाइत-पीबैत गेल–तकर नञि त' हुनका चिन्ते छल आ ने पर्वाहे । डेढ़ बरस धरि स्वयं स' लड़ैत आ अपना निरीहता पर नोर चुअबैत एक दिन चिता पर चढ़ि अनंत लोक मे चलि गेलीह बालमणि अम्मा ।

कतहुँ मीनाक्षीयो...मेजर रंगाचारीक दिमाग मे इ आएल त' ओ एके बेर थरथरा गेलाह । बीस बरखक बाद स्त्री छाया घर पर पड़ल छल । बीस बरख स' दबा' क' राखल अप्पाक कठोर अनुशासनक लावा एकबेरिए भरभराक' फूटि पड़ल छल आ दीमक अथवा जोंक जकाँ ओ सटि गेल छलाह मीनाक्षीक जीवन स' । पाँच बजे भिन्सरे अप्पा जागि जाइत छलाह आ भरि घर किलोल कर' लागै छलाह–''अम्मा । पानि चाही । अम्मा ! कॉफी । अम्मा ! पूजा स्थल साफ नञि अछि । अम्मा ! आरतीक़ छिपी मे घीक चिकनाइ लागलें अछि । आइ दोसा बनलए ? नञि । आइ त' हम इडली खाएब । नञि । आइ चटनी नञि, साँभर चाही ।''

वितृष्णा आ तामस स' मेजर भरि-भरि उठैत छलाह । हुनका मीनाक्षी मे बालमणि अम्माक झलकी देखाइ पड' लागल छल; पस्त, आतंकित-परंतु बालमणि त' एकेटा पुरूष के सहैत छली--मीनाक्षी के त' दू-दू गोट पुरूषक अदंकक सामना कर' पड़ैत

छल । बहुत सहज होयबाक प्रयास कयने छलाह रंगाचारी । विवाहक राति मीनाक्षीक गाढ़ रंग, ओकर देहाती भुच्चपनी स' तालमेल बैसाइए रहल छलाह कि ओकर आँखिक डेढ़पनी हुनकर मोन के डेढ़ बना देल आ ओ करौट फेरि सूति गेलाह । तहिया स' ल' क' आइ धरि ओ मीनाक्षी दिस स' पीठ कनेहि छथि । हुनका होइत रहैत अछि जे ओ मीनाक्षीक प्रति अन्याय क' रहल छथि—मुदा ओकरा स' सहानुभूति वा प्रेमक कथा सोचिते ओकर डेढ आँखि सोझा आबि जाइत छल आ ओ पाछाँ हटि जाइत छलाह।

''आब अइ मे भाभीक कोन गलती ? इफ शी इज नॉट गुडलुकिंग ? अहाँ एतेक संकीर्ण कोना भ' गेलहुँ मेजर ? मात्र अइ लेल जे अहाँ बहुत हैंडसम आ स्मार्ट छी ? की शारीरिक सौंदर्य सभ किछु होइत छै ? मेजर, इट डज नॉट लुक नाइस । शोभा नञि देइए अहाँ कें ।''

शोभा सेहो बुझाबै छल मीनाक्षी के—''कियैक पड़ल रहै छी ओहि बुढ़बाक पाछाँ । मर' दियउ ओकरा । जकरा लेल सोचबाक अछि, जकरा साधबाक अछि, जकरा बस मे करबाक अछि, तकर तालाक कुंजी त' ढील छोड़ि देने छी आ अनेरे ओहि बुढ़बाक पाछाँ हड्डी गला रहल छी । हमरो ससुर' छथि त' घर मे । एतेक बूढ़ भ' गेल छथि, तइयो एखनो धरि तीमन-तरकारी ल' अबैत छथि, छोट-मोट सौदा सुलफ क' अबैत छथि । बेटी जहन नान्हिटा छल त' साँझ मे ओकरा ल' टहलाएब-बुलाएब, खेलब-कूदब सभ ओएह त' करैत छलाह, हमरा सभ लग एतेक समये कत ?''

मीनाक्षी चुपचाप सुनैत रहैत छल । शोभा कहियो चकली त' कहियो पूरनपोली, कहियो पोहा बनाक' ल' अबैत छल, मेजर के ई सभ पसीन छल । मीनाक्षी ई सभ सीख' चाहैत छल, सीखक' अपना हाथे बनाक' मेजर के खुआब' चाहैत छल किन्तु अप्पा ! ओ त' ई दुनूक मध्य अभेद्य दीवार बनिक' ठाढ़ भ' गेल छलाह ।

अप्पाक क्रूर कठोर आ शुष्क जीवन आ स्वभाव स' आतंकित मेजर रंगाचारीक जीवन सेहो सुखाएल चैला जकाँ भ' गेल छल—नीरस आ शुष्क, फौज मे रहितहुँ फौजी जिनगीक सुख, सुविधा, आराम आ सरसता स' कोसो दूर । अप्पाक ख्यालक' क' आन कोनो व्यसन त' नञि अपनौलनि, तइयो एकटा व्यसन के गारा मे लटकाइए लेलनि—अध्ययन व्यसन, एक के बाद एक कोर्स, नव-नव डिग्री । अरोड़ा त' खुलेआम कहिते छल—'अरे, मदरासी तो चूहे देखकर पेंट गीली कर देते हैं । अबे ओए किताबी कीड़े । तू इत्थे फौज ते कित्थे आ गया भाई ?''

मेजरक सौभाग्य कही वा दुर्भाग्य संपूर्ण जीवन मे एको बेर युद्ध नञि भेलै । श्रीलंका पठाओल गेल शांति सैनिक टुकड़ी मे सेहो हुनका नञि पठाओल गेल-बाद

मे कारणक पता लागल—''बीकॉज, ही इज अ तमिलियन'' छोट-मोट घरेलू आपात स्थिति मे कहियो-कहियो जाए पड़ैत छल । तकरा आ रूटीन रक्षा अभ्यासक अतिरिक्त आन कोनो खास काज नञि छल—ने क्लब, ने पार्टी, ने दारू, ने कवाब आ ने शबाबे।

भाटिया बरमहल हुनका कोंचैत रहैत छलै—''जभी तो सारे मद्रासी ब्यूरोक्रेट्स होते हैं । किताबों में चौबीसों घंटे मुंह घुसाए हुए । जिंदगी का मजा लूटना जानते ही नहीं । पहनेंगे तो लुंगी, खाएंगे तो इडली-डोसा और देखेंगे तो बस मोटी-मोटी किताबें ।''

अप्पा के जाग' स' पहिनहि मीनाक्षी उठि जाइत छल आ दौग-दौगक हुनक काज सलटाब' लागैत छल । अइ बीच रंगाचारी कखन उठि जाइत छलाह, कखन तैयार होइत छलाह, ओकरा पता नञि चलि पबैत छलै । पता तहन चलैत छलै, जहन अखबार मे मूँड़ी गोंतने ओ जलखइ के माँग करैत छलाह । मीनाक्षी के तहन पतिक खेयाल अबैत छल । ओ लाजे काठ भ' जाइत छल । परंतु असहाय आ बेबस छल। एक दिन रंगाचारी के जलपान देइत काले ओ ओत' दू मिनट लेल रूकि गेल छल कि अप्पाक टेप चालू भ' गेलै—''अम्मा ! अगरबत्ती नञि अछि ।'' आ जहन ओ दौगिक ओत' पहुँचल त' देखल जे अगरबत्ती हुनकर सोझे राखल छल । ओ बस एतबे बाजल छल जे अप्पा ! अगरबत्ती त' एतहि छल कि बस अगिया बैताल भ' उठलाह, ज्वाला जकाँ छुटलाह—''एतहि अछि त' की हम निकालि क' जराएब ?'

मीनाक्षी आब अप्पा के नीक जकाँ बूझि गेल छल । अप्पा अपन, मात्र अपन अधिकार ओकरा ऊपर चाहैत छलाह । ओ चाहैत छलाह जे मीनाक्षी भरि दिन हुनका लेल, हुनके काज मे व्यस्त रहय । हुनके आस-पास बनल रहय । रंगाचारी ल'ग क्षणो भरि लेल देखिते मात्र हुनका अजीब बेचैनी ध' लेइत छलनि । ओ तुरंत ओकरा कोनो ने कोनो बहाने अपना लग बजा लेइत छलाह—मीनाक्षी अप्पाक पत्नी नञि छल । मुदा मात्र एक शारीरिक संबंध छोड़ि ओ ओकरा संगे सभटा कार्य-व्यवहार कोनो निरंकुश पति जकाँ करैत छलाह । पत्नी ओ मेजरक छल मुदा ओहो कहाँ निभौलनि पति-पत्नीक भाव सभ । विवाहक प्रथम राति ! मेजरक हाथ ओकर हाथ के धयने छल । अप्पाक कथा पर ओ पलभर लेल नजरि उपर उठौने छल आ तखने अनुभव कएने छल जे मेजरक हाथ एकाएक ढील पड़ि गेल आ मुखाकृति घृणा स' भरि उठल । ओकरा अपना शारीरिक सौंदर्यक भान छल । पढ़ल-लिखल नञि होयबाक अफसोसो छल। किन्तु रूप-रंग के ओ विधाता आ कम पढ़ल-लिखल होयबाके अपन माँ-बाप द्वारा ओकर माथ पर थोपल नियति के मानै छल । ओहि राति ओ जे पकड़ ढील भ' क'

लटकि गेल छल, लटकले रहि गेल । कनिए देर बाद मीनाक्षी देखलक जे रंगाचारी प्रथम रात्रिक समस्त औपचारिकता बिसरिक' मीनाक्षीक अंकक बदला नीनक कोरा मे चलि गेल छथि।

मेजर के शंकरन मोंन पड़लनि–ओकर विवाह होइवला छलै । फोटो देखौने छल भावी पत्नीक-अत्यंत सुंदर, पढ़ल-लिखल, स्मार्ट । शंकरनक माता-पिता दुनू अइ बातक पक्ष मे जे बियाह क' क' शंकरन कनिआ के अपना संगे नेने जाथु । आ बूढ़ा बूढ़ी! से अखनि त' हाथ गोर सही-सलामत अछि । जहिया देह खसत । तहिया देखल जेतै।

मेजर हिनका सभक तुलना बरबस अप्पा आ मीनाक्षी स' क' बैसलाह । कतेक फर्क छै हुनकर पिता आ पत्नी तथा शंकरनक माता-पिता आ पत्नी मे । मुदा शंकरन स्वयं एंना कत' सोचैत छल । तैं त' ओझरा-ओझरा जाइत छल मेजर सँ–''ये क्या मेजर । अपना भी सारा जीवन होम कर दिया और भाभी का भी । मानल जे अप्पा अहाँक मुँह देखि दोसर विवाह नञि केलैनि । ओहूँ स' पहिने, अहाँक मोताबिक, जहन ओ शुरुए स'अहाँ आ अहाँक माय स' एकदम असम्पृक्त रहलाह, तेहेन मे अहाँ ई कोना कहि सकै छी जे ओ अहींक ख्याल क' क' दोसर बियाह नञि केलनि । आ जँ मानियो ली, तइयो एकर त' कोनो माने नञि भेलइ जे अप्पाक इ प्रतिदान चुकाब' लेल अहाँ स्वयं के सेहो होम क' दी । भाभीक जीवन सेहो जरैत चेला जकाँ बनाक' राखि दी। ठीक छै जे ओ कम पढ़ल-लिखल छथि, सुन्दर नञि छथि, मुदा छथि त' अहाँक पत्नी । यदि अहाँ कुरुप रहितहुँ, तहन की ओ अहाँ संग एहेन व्यवहार करितथि ? यदि हुनकर पिताक संग एहेन किछु भेल रहितनि त' की अहाँ अपन जिनगी हुनकर पिताक नामे क' दितियनि ? एतेक पढ़ाइ-लिखाइ स' फैदे की जहन ओकर लाभ अपनहि जीवन के नञि भेटि सकय ।

भरि दिन ऑफिस, साँझ मे इवनिंग कॉलेजक क्लासेस, बड़ी रात धरि पढ़ाइ आ भिनसर पुनः ऑफिस । कोनो पार्टी-तार्टी भेल त' आओरो देरी । मेजरक विजिटिंग कार्ड पर डिग्रीक संख्या बढ़ैत रहल आ घर पर बिताओल घंटा ओही अनुपात मे कम हुअ' लागल। मीनाक्षीक चेहरा पर दुख, शिकायत आदि भाव आबैत छल, जाइत छल। किन्तु भिनसर आठ बजे के निकलल राति मे बारह, एक, दू बजे घर पहुँचल मेजर स' कोन फरियाद करय ? ओहो तहन, जहन ओकर बातक कोनो असर मेजर पर पड़इयोबला नञि छल।

शोभा अपन दिनचर्या कहैत छल–भोर मे भानस क' क' जाइ छी । साँझ मे ई अपने स्टेशन पर हमरा लेब' लेल ठाढ़ रहैत छथि । रेलवे पास खतम भ' गेला

पर लाइन मे लागिक' हमरा लेल पास निकालैत छथि । मूड भेला पर भेलपूरी, गुपचुप, बड़ापाव आदि खाइ छी, तहन घर घुरै छी । ससुर पचहत्तर वर्षक छथि, तइयो छोट-छीन तीमन-तरकारी कीनि क' ल' अबै छथि । बेटी के सेहो देखि लइत छथि, माने, गार्जियनशिप बनल रहैत छै । सासु के मरि गेलाक बाद पति एकबेर बाजल छलाह–''नौकरी छोड़ि दियउ त' ओ जवाब देने छल–''अहाँ त' तीन-तीन टा बिजनेस करै छी । अहाँ ओहि मे स' एक टा छोड़ि दियउ आ ओहि समय मे बाबूक देखभाल करू ग' । हमर ससुर, अहाँक सप्पत, बड्ड नीक छथि । तइयो पूरा समय हुनका संगे घर मे रहिक' त' हम पागले भ' जाएब ।

प्रीति के बढ़ैत देखि मीनाक्षी के बहुत प्रसन्नता होइत छल । मीनाक्षीक संपूर्ण जिनगीक एकमात्र हरियर पात छल त' प्रीति ओकर बेटी । आ मेजर स' भेटल अइ एकमात्र प्रसन्नता लेल ओ सचमुच मेजरक आभारी छल । ओ दिन सेहो ओकरा ओहिना मोन अछि । मात्र एक दिन, जखन मेजर अपना स्थाइ भावक लबादा उतारि पति बनल छलाह आ मीनाक्षी मे भुतिया गेल छलाह । कनेक सकुचाएल, कनेक लजाएल मीनाक्षी खुलियो नञि सकल छल, परंतु ओ एक दिन ओकरा कोरा मे प्रीति क' द' गेल छल आ ओ मेजरक प्रति कृतज्ञ भ' उठल छल ।

परिस्थितिवश मीनाक्षी बेसी पढ़ि-लिख नञि सकल रहय, यद्यपि पढ़बाक ओकरा बहुत सख छलै । माय जहन पढ़ाइ छोड़बा देलकै, तहन बहुत कानल छल । अपन ओएह नोर ओकरा मोती मे बदलैत नजर एलै । जहन ओकर सम्बंध रंगाचारी स' जुड़लै। ओकर मोन मे आसक सुग्गा पोसाए लागल–''हुनका' स' कहिक' फेर पढ़ाइ शुरू करबाएब । हुनका लग त' किताब ढेरी हेतै । ओ खूब पढ़त । मुदा अप्पा त' चमगोदड़ी जकाँ ओकरा स' एहेन चिमटि गेलाह जे ओकर जिनगीक सिलेट पर स' सुख, आकांक्षा, इच्छा सन शब्दे धोआ-पोछा गेलै ।

रंगाचारीक बदली ठामे-ठाम होइत रहलनि आ ठामे-ठाम ओ अप्पा आ मीनाक्षी केँ ढोइत रहलाह । हँ, ढोअब शब्द सेहे हुनका अइ दुनूक लेल उपयुक्त लागैत छल। मीनाक्षीए जकाँ ओहो आब ई बूझि गेल छलाह जे अप्पा इ बियाह ककरा लेल करौने छलाह । जवानीये मे जाहि स्त्री छाया स' ओ विलग आ विमुख भ' गेल छलाह, ओही स्त्री छायाक प्रति एहि प्रकारक जबर्दस्त आग्रह आ निरंकुशता । परंतु अइ मे मीनाक्षी किएक दोषी बना देल गेल ? कियैक ओ ओकरा स' एना विमुख भ' गेलाह ? रंगाचारी स्वयं अइ बुझौअलि के सोझरा नञि पबैत छलाह । जखन थाकि जाइत छलाह त' मोन के यैह कहिक' बुझा लैत छलाह–कारी, साधारण, डेढ़ही लेल कियैक ओ मोह मे फँसथु ?''

रूप, रंग आ बुद्धिक ई पैमाना प्रीति लग' नञि छल। पिता जकाँ मेधावी, हँसमुख आ मीनाक्षी जकाँ सरल आ निश्छल प्रीति जहन हँसै छल त' मीनाक्षीक पोर-पोर जेना जुड़ा जाइत छल। ओ सभटा थकान, सभटा दौड़-बड़हा बिसरि जाइत छल। मुदा प्रीति नञि बिसरि पबैंत छल मीनाक्षीक प्रति अप्पा आ मेजरक व्यवहार। नान्हिएटा स' ओ माय के अप्पाक एक-एक हुकुम पर घिरनी जकाँ नचैत देखैत आएल छल। पापा के बिना माय स' मोखातिब होइत खाएत, पिबैत, सुतैत आ ऑफिस जाइत देखैत छल। पहिने त' ओ जिदो करैत छल-''नञि। ताता (बाबा) संगे बजार जएबाक अछि। ताता संगे खेलेबाक अछि, ताता, खिस्सा सुनबियउ ने। ताता टॉफी ल' दिय ने परंतु ताता ई कहियो महसूसे नञि केलनि जे घर मे एगो छोट-छीन बच्चो अछि। तहिया त' प्रौढ़ छलाह अप्पा। अखनि जकाँ ओछाओन नञि धएने छलाह। मुदा, गलतीयो स' कहियो प्रीतिक आंगुर जे धएने होथि वा बोलीए स' चुचकारने होथि-इ नञि त' प्रीतियें के मोन छल आ ने मीनाक्षीए के।

आब त' ओ सियान भ' गेल छल। बुझबो कर' लागल छल। मेजरक व्यवहार धरि। आ तहन ओ बिसरि जायत छल जे ओ बेटी अछि आ अपन पिता स' ओकरा एना नञि बाजबाक चाही। शंकरन त' ई जानियो-बूझियोकै जे मेजर ओकरा स' बहुत पैघ छथि, बहस कर' लागैत छल आ सभ बेर ओकरे पलड़ा भारियो रहैत छल। आश्चर्य जे सभक बातचीत, व्यवहार आ सोचक केन्द्र मे मीनाक्षी छल, जहन कि मीनाक्षी के अपने नञि बूझल छल जे ओ कत' अछि, ओकर स्थान की अछि, ओकर हैसियत की अछि ?

अपना सर्किल मे मेजर अत्यंत मृदुभाषी, सरल, हँसमुख आ लोकप्रिय छलाह। मीनाक्षी द्वारा पैक कएल लंच फोलिक' सोझा मे राखि देइत छलाह। सभ ओकरा पर लुधि जाइत छल-''अरे, इतनी सॉफ्ट इडली। कतेक अनयूज्यूअल टेस्ट अछि। दोसाका एंड दिस कर्ड राइस-हाऊ फैन्टास्टिक। मेजर, मान' पड़त जे भाभीजी बहुत कुशल कुक छथि। मेजर मुस्की छोड़ैत छलाह, हुनक डिब्बा पलखतिए मे साफ भ' जाइत छल आ ओ दोसरा क डिब्बा स' खाइत रहैत छलाह-रोटी, पराठा आ आलू भुजिया-अइ टिपिकल बिहारी भोजनक पाछा त' ओ पागल छलाह। एक बेर कहनहुँ छलाह मीनाक्षी स'-अहाँ रोटी बनाएब सीखि लिअ' प्रथम रात्रिक बाद ई पहिल संबोधन छल। मीनाक्षीक नस-नस जेना प्रसन्नताक तान मे नाच' लागल। संयोग एहेन जे ओहि समय ओकर एकटा पड़ोसिया बिहारी छल। ओकरे स' रोटी, पराठा, पूरी आ एकाध गोट आओर व्यंजन सीखलक। तकरो लेल कतेक-कतेक पापड़ बेल' पड़ल

छल। बेरखन जहन अप्पा खाक' सुतैत छलाह, ओहि समय ओ भागिक' पड़ोसिया ओहिठाँ पहुँचैत छल, सीख' लेल। होशियार छल। तें, सीख' मे कोनो खास परेशानी नञि भेलै। आब त' सदिखन आटा सानिक' फ्रिज मे राखैत छल। रात्रि मे कदाचित कहियो मेजर भोजनक फर्माइश करैत छलाह त' ओ रोटीए पकबैत छल। भोरो मे चाहै छल जे दूए टा सही, रोटीए बना दी। ताबा सेहो चढ़ा देइत छल, मुदा अप्पाक चिल्ला-चिल्ली मे सभ किछु छूटि जाइत छलैक।

फौजी जीवन जकाँ अनुशासन एत' नञि छल। सेवानिवृत्तिक बाद एकगोट नीक कंपनी ज्वॉयन क' नेने छलाह मेजर। एत' सभ किओ अपन-अपन डिब्बा ल' क' अबैत छल, खाली शंकरन टा नञि। सभ किओ ओकरा स' मजाक करैत छल-आब' दिअनु मेम साहेब के एतेक दिनुका सभटा कसर निकालब हुनके स'। शंकरन सेहो ठीके छल-हँ, ठीके अछि, तहन दूटा डिब्बा आनब, साँझ मे हमरा दुनूक लेल भ' जाएत।''

प्रीति आ मेजर भोरे-भिनसरे निकसि जाइत छलाह आ अप्पा के भरि दिनुका एकछत्र राज्य भेटि जाइत छल। आइ काल्हि ओ सप्ताह मे तीन दिनुक उपवास राख' लागल छलाह। उपासक दिन हुनक फमाइशक बाजार आओरो गर्म भ' उठैत छल। मीनाक्षी अपन भूख-पियास, थकनी बिसरि क' जुटल रहैत छल। अप्पाक खेलाक बाद जे किछु बचि जाइत छल, सएह खाक' रहि जाइत छल। अपना लेल अलग स' किछु पकाएब आ पका क' खाएब कोनो भारतीय स्त्रीक स्वभाव नञि होइत छै। जे वस्तुत: स्वभाव नञि, विवशता होइत छैक, मीनाक्षी सेहो एकर अपवाद नञि छल।

शोभे कहियो-कहियो पूछैत छल-''अहाँ त' पूरा इंडिया घूमि क' आयल छी। आब ई मुंबई केहन लागैत अछि अहाँकेँ ?'' मीनाक्षी चुप्पी साधि लैत छल। की कहए जे गेल त' अबस्से हिन्दुस्तानक कोना-कोना। किन्तु ओ शहर कहियो नञि बदलल खाली घरक चौखटि बदलइत गेल। अइ शहरक घरक चौखट स' ओहि शहरक घरक चौखटि धरि बस। यैह ओकर यात्रा छल, यैह ओकर घूम-फिरब ! गलतीयो म' मेजर कहियो नञि कहने छलाह जे चलू, आइ कतहु चलै छी घूम'-फिर' लेल। मीनाक्षी त' अपन बियाहक बाद धराउ साड़ी आ गहनो तक कहियो नञि पहिरलक। कत' जाइत पहिरिक' भन्सा मे ?

शंकरनक दिन-रातुक कहब आ प्रीतिक नाराजगी देखाब' स' मेजर आब कनेक अपना जीवन दिस सोच' लागल छलाह-खासक' मीनाक्षीक मादे। परंतु पछिला बाइस वर्ष स' संबंध पर जे काइ जमा भ' गेल छल, ओ एकदम स' आ एतेक जल्दी कोना

क' निकसि सकैत छल । असलमे आब त' संकोच सेहो होब' लागल छल । कोनाक' मीनाक्षी दिस मोखातिब होथि ? कोना क' ओकरा सँ गप्प करबाक, सहज होयबाक पहल करथि ?

पहल प्रीति कएलक । नेनपने स' माय के ताताक हाथे हैरान-हैरान होइत देखैत आएल छल । नान्हिएटा स' ओकरा ताता स' कोनो नेह नञि भेटल छल । तैं, ओकरा मोन मे ताता लेल कोनो प्रेम वा सम्मान नञि छल । बस, लेहाज छल, जे घरक वरिष्ठ सदस्य होयबाक' नाते छल, तकरो तोड़ि देलकै ओहि दिन ।

पाँच बाजि गेल छलै । मीनाक्षी चाहियो क' नञि उठि पाबि रहल छल । ओम्हर अप्पा ओछाओन स' उठिते चिकड़ब शुरू क' देने छलाह-''भोर भ' गेल । सूर्य माथ पर चढ़ि आएलाह । हमरा पानि नञि भेटल एखनि धरि । किओ पानि-तानि देबो करत कि नञि रौ...पानि...अरे पानि...'' आ ओ एना चीकर' लगलाह जेना छने मे पानि नञि भेटतनि त' हुनक प्राण छुटि जेंतनि ।

प्रीति एकदम स' भड़कि उठल । तड़ाक स' उठल, भड़ाक स' दरवाजा खोललक आ बरसि पड़ल-''की अछि ताता ? किऐक भोरे-भोरे केंठ फाड़ने जा रहल छी?''

सुनिते मात्र अप्पा त' अगिया-बेताल होब' लगलाह कि प्रीति गरजि उठल-''बस ताता । बहुत भेल, चीकरब बन्द करू । अम्मा बेमार अछि । नञि उठि सकैत अछि। भिनसरे मे अहाँक जे जरूरत अछि, हमरा कहि देल करू । कॉलेज जाए स' पहिने क' देल करब । आ भरि दिन आब अम्मा के परेशान केनाइ बन्द करू, वरना बहुत खराब हएत । भरि जिनगी ओकर हड्डी धरि चींथैत अएलहुँए । आब ओकरा कनेक आराम कर' दियउ ।''

अप्पा अवाक् भ' उठलाह । हुनक एकछत्र राज्य जेना किओ चुटकी मे ध्वस्त क' देने हुअए । आइ धरि रंगाचारी अथवा मीनाक्षी मुँह नञि खोलले छल आ ओकरे बेटी सभटा लाज-लिहाज बिसरिक' एना हमरा उपर चढ़ि बइसल ? सत्ये । पढ़ल-लिखल लड़की सभ एहने होइत अछि । यदि हमहूँ रंगाचारीक विवाह एहने कोनो पढ़ल-लिखल लड़िकी स' कएने रहितहुँ त' जे आइ सुन' पड़इल, से बाइस वर्ष पूर्वहि सुन' पड़ितए। परंतु तहिया त' उमिर छल, दम छल, जोश छल आब त' लस्त-पस्त छी । आब त' कतहु जाइयो नञि सकैत छी आ ओ पुरना कहबी ने जे अपना स' बेसी जोरगर सोझा मे आबि जाए त' अपने आप पाछाँ हटि जेबाक चाही, प्रीतिक रूपमे हुनका अपना स' जोरगर उत्तर भेटि गेल छल ।

प्रीति एतबे धरि नञि रुकल । दनदन करैत मेजरक कोठरी मे घुसि गेल आ बरसि पड़ल-''इट्स टू मच पापा । अम्मा के अहाँ आ ताता दुनू बिन मुंह-जीहक

कठपुतरी बूझि लेने छी । जेकरा जेम्हर मर्जी, घुमा दियौ, नचा दियौ । पापा, शी इज योर वाइफ । हमरा नञि बूझ' मे आबि रहलए जे अहाँ हुनका संगे एहेन व्यवहार कियेक क' रहल छी ? थिंक पापा, यदि हमर विवाह भ' जाए आ हमर हस्बैंड हमरा संग एना करय तहन ?

''तहन हम ओकर खून पी जेबै ।'' मेजर हठात् बाजि उठलाह ।

''अइ लेल ने पापा जे अहाँ कैपेबल छी आ नानूक सामर्थ्य मे ई नञि छल। अहाँ सभ अम्मा के की बना क' राखि देल ? अहाँ लोकनि एना कियैक क' रहल छी ? ताता के बुझबै कियै नञि छी ? अपनो बूझक कोशिश कियै नञि क' रहल छी ?

''ट्राई टू अंडरस्टैंड मेजर । अप्पा को भी समझाइए । आ सभ स' पहिने त' स्वयं के बुझाउ । अहाँ बूझि जाएब त' ओ अपने आप बूझि जेताह ।'' शंकरन एकांत देखि' बाजल छल ।

आइ मेजर ऑफिस मे बड़की टा केक मँगौने छलाह-''टुडे इज माई वेडिंग एनीवर्सरी-ट्वेंटी फिफ्थ एनीवर्सरी ।''

''वाऊ । यू मीन सिल्वर जुबली ?'' आ बधाइ, शुभकामनाक लाइन लागि गेल । पूरा विभाग मिलिक' पचीस टा गुलाबबला सुन्दर गुलदस्ता आ मीनाक्षी लेल एक जोड़ी बाला भेंट कएने छल ।

ई दुनू मेजरक टेबुल पर पड़ल छल । साँझ के सात बाजि गेल छल । ऑफिस खाली भ' गेल छल । मेजर कखनो गुलदस्ता त' कखनो बाला के देखि रहल छलाह। कखनो क' सोचियो रहल छलाह-''कियैक मँगाओल केक ? कियैक बजलहुँ ऑफिस मे ? खुशीक ई नाटक कथी लेल ? पचीस बरस भ' गेल मीनाक्षी के अइ घर मे अएना । अइ पचीस वर्ष मे संभवत: पचीस वाक्यो नञि ओकरा स' बजने होयब । पचीस बेर मोखातिब नञि भेल होयब पचीस सेकेंडो नञि ओकरा देखने होयब । बस, बियाह क' क' अयलहुँ आ अप्पाक पसीन के अप्पेक जिम्मा क' देलहुँ जाहिस' अप्पा स्वयं अपना मर्जी स' कएल गेल त्यागक प्रतिदान असल मे ओकरा स' ल' सकथि, अपन पीठ बचाक' ओकर पीठ आगाँ क' देलहुँ-लगाउ अप्पा, जतेक जुता लगेबाक' हुअए। अप्पाक फैसलाक विरोध नञि क' सकलहुँ, तैं सन्टा कोर-कसर मीनाक्षी पर निकालैत रहलहुँ, ओएह कमजोर आ मजलूमक शोषणक एकटा आओर किताब।

मुदा मीनक्षी कहाँ कमजोर पड़ल ? ओ त' पचीस बरस स' एके धुरी पर निरंतर घूमि रहल अछि । कमजोर त' ओ पड़लाह अछि-निरंतर । आइ धरि छथि । फ्रौजक,

कंपनीक एतेक पैघ अफसर आ भावनात्मक रूप स' एतेक कमजोर । एतेक कायर जे परिस्थितिक मोकाबिला धरि ठीक स' नञि क' सकै छलाह ।

नौ बाजि गेल छल । मेजरक ध्यान भंग भेल । आइ साँझ मे एकटा ऑफीशियल पार्टी छल । भिनसरे मे ब्रीफकेस मे एकटा शर्ट राखि नेने छलाह । बाथरूम गेलाह—मुँह हाथ धोलनि । गील हाथ के माथ मे फेरलनि । कंघी कएलनि । शर्ट बदललनि, कनेक ताजगीक अनुभव भेलनि । केबिन लॉक केलनि । पचीस फूलबला गुलदस्ता आ बाला ओहीठाँ पड़ल छल । बाला दिस हाथो बढ़ौलनि, मुदा फेर छोड़ि देलनि। मोन पड़लनि अजुका पार्टी त' विद स्पाउस छियै ।

पार्टी अपन संपूर्ण यौवन पर आबि गेल छल । चीयर्सक स्वरक संगे गिलास छलकि रहल छल, हँसी खनकि रहल छल, ठहक्का बरसि रहल छल । मद्धिम संगीत नीक नीक विहस्की जकाँ वातावरण मे रसे-रसे सुरूर उत्पन्न क' रहल छल । सभ किओ अपना-अपना जोड़ा मे छल । ओ सभ हँसि-बाजि रहल छल, मजाक क' रहल छल, किओ नॉनवेज जोक्स छोड़ि रहल छल त' किओ कोनो गजलक लाइन गुनगुना रहल छल । एकसर, बिन जोड़ाक दुइएटा लोक छल—शंकरन आ मेजर रंगाचारी ।

जहिना मेजर पार्टीक मध्य पहुंचलाह, सभ किओ एके संग चीयर्स कएलक आ हुनक सिल्वर एनीवर्सरीक बधाइ देब' लागलनि, शंकरन नव थ्री पीस सूट मे खूब जंचि रहल छल, ओकर एके संग मासूम आ नटखट मुस्की स' ओ बूझि गेलाह जे सिल्वर जुबलीबला गप एत' धरि कोना क' पहुँचलनि । शंकरन हुनका ल'ग आएल पुन: बधाइ दैत, बाजल—''चली मेजर, ओम्हर बैसी ?''

दुनू गोटे तरबूजाक फ्रेश जूस लेलनि आ एक टेबुल पर बैसि गेलाह । शंकरन आस्ते-आस्ते बाज' लागल—''मेजर । आइ त' अहाँ के बूझल छल ने जे ई पार्टी विद स्पाउस अछि । आ, आइ त' संयोग स' अहाँक वेडिंग एनीवर्सरी सेहो छल । ओहो सिल्वर एनीवर्सरी । कम स' कम आइ त' जिनगीक सुर बदलितहुँ भाभी के संग ल' क' अबितहुँ । संभवत: आइ, हुनका ओ सभ किछु भेंटि जइतनि, जे हुनका पछिला पचीस वर्ष मे नञि भेटल छल । सत्ते कहै छी मेजर । हमरा एहेन पत्नी भेटल रहितय ने, त' हम पूजा करितहुँ ओकर ।'' मेजर किछु नञि बजलाह । बस, चुपचाप तरबूजाक जूस दिस तकैत रहलाह ।

'असलमे पतिक अत्याचार सहब त' पत्नी अपन धर्म आ कर्त्तव्यक हिस्सा मानिक' चलैत अछि । मुदा अहाँक अत्याचारक त' कोनो सीमे नञि रहल । जेना कुन्ती द्रौपदी के पाँच-पाँच पति मे बाँटिक' राखि देलनि, तहिना अहूँ भाभी के दू-दू टा पतिक बीच बाँटिक कें राखि देलहुँ । ऐहनो की मेजर ! जंगे मैदानक बहादुर सिपाहीक एहेन कायरता ? ऑफीसक एफीशिएंट मैनेजर घर मे एहेन अनएफीशिएंट । एकक प्रति अंध आसक्ति आ दोसर क प्रति घोर अनासक्ति आ घृणा । ई त' गंभीर मानसिक असंतुलनक भयंकर उदाहरण । बचू मेजर एहेन असंतुलन स। एहेन नञि जे ई अहूँके लील जाए । किताबक नकली दुनिया स' बाहर आउ मेजर। जिनगीक रस के चीन्हू-अन्यथा काल्हि भ' सकैये जे अहूँ अप्पाक स्थिति मे पहुँचि जाइ । अप्पा के त' अहाँ सन बेटा भेटि गेल छल । सोचू जे अहाँ लग के अछि ? प्रीतिए ने ? त' ओ की जिनगी भरि अहाँ संगे रहत ? की ओकर पति अहाँ कें ओहिना ट्रीट करत जेना अहाँ अप्पा कें क' रहल छी ?

आवेशक मारे शंकरन आवाज कनेक ऊँच भ' गेल छल । जकरा सुनिक' एकाध लोक ओम्हर बढ़ि आएल छलाह—''एनी सीरियस मैटर मेजर ?'' ''नों' नथिंग, थैंक्स।'' मेजर मुस्किया क' जवाब देलनि । शंकरन के सेहो एकर अनुभव भेलनि—''आएम सॉरी मेजर । मुदा हम अहाँक बहुत इज्जति करै छी । यू आ'सौ ब्रिलिएंट, इंटलेक्चुअल, सो एफीशिएंट, जेंटल कि कखनो-कखनो ईर्ष्या होइए अहाँ स' आ जतबे ईर्ष्या होइए, ततबे अहाँ लेल हमरा मोन मे आदर भाव बढ़ैत जाइए । मुदा आजुक बाद ई समस्त आदर भाव समाप्त भ' गेल । अहाँ ऑफिस मे कंक मँगाओल त' हम सोचल जे अहाँ संभवत: नॉर्मल भ' रहल छी । मुदा अईठां अहाँक एकसरि उपस्थिति यैह देखाबैत अछि जे ई सभ मात्र देखाबा अछि, खाली एकटा नाटक दुनिया के बताब' लेल जे सभ किछु ठीक-ठाक चलि रहल अछि । एहेन नाटक कियैक मेजर ? कियैक ?''

शंकरन अपन गिलास ल' क' उठि गेल । मेजरक जूस आधा गिलास बचले छल । ओ ओहि अधभरल गिलास के देखैत ओतहि बैसल रहलाह । ओहि अधभरल गिलासक ऊपरी सतह पर अप्पा त' निचला सतह पर मीनाक्षी उगैत आ डूबैत रहला। पार्टीक रंगीनी बढ़ल जा रहल छलै । कोनो-कोन मे कार्पोरेट बिजनेस पर बहस चलि रहल छल त' कोनो ग्रुप राजनीतिक चर्चा स' माहौल के अतिरिक्त गर्मी द' रहल छल त' किओ फिल्मी गॉसिप मे डूबल छल । किओ किओ गिलास ल' क' एम्हर स' ओम्हर घूमि रहल छल । ककरो नजरि मेजर स' मिलैत छल त' दुनू मुस्किया देइत छल । किओ किओ विवाहक सालगिरह के बधाइ देइत छल त' किओ पूछि बैसैत छल—'टुडे इज योर वेडिंग एनीवर्सरी एंड यू हैव कम अलोन ? व्हेयर इज योर वाइफ? व्हाइ डिन्ट यू ब्रिंग हर ?''

एहेन सवाल स' मेजर के आब ठीके परेशानी होब' लागल छल । शंकरनक प्रश्न हुनका मथैत छल । लोकक सवाल चिढ़ आ खौंझ उत्पन्न क' रहल छल। शंकरन

कत' होयत, ई जान' लेल ओ नजरि घुमाब' शुरू कयलनि आ प्रवेश द्वारा दिस नजरि पहुँचतहि ओ चकित रहि गेलाह । हुनकर हाथ सँ गिलास छुटैत-छुटैत बचलनि।

सोझा सँ प्रीति आबि रहल छल । मुदा एकसरि नञि । मीनाक्षीक संग । मीनाक्षी जेना चलि नञि रहल छल, ठेलल जा रहल छल । ओकर देह पर नेवी ब्लू रंगक पातर जरी बॉर्डरक सिल्क साड़ी छल । नाम, मोट चोटी पर मोगराक मोट सन गजरा लागल छल । कान मे हीराक टॉप्स झिलमिल क' रहल छल । नजरि तेना झुकल छल जेना ओकरा विवाह-वेदी लग आनल जा रहल हुअए ।

मीनाक्षी के नेने प्रीति मेजरक सोझा मे ठाढ़ भ' गेल । मीनाक्षी के सामनेबला कुर्सी पर बैसाओल आ बाजल-''हम घर जा रहल छी पापा । ताता के सम्हार' अहाँ अम्मा के सम्हारू । एंड बिहेब लाइक अ' हस्बैंड, पापा । अहाँ मात्र बेटे नहि, ककरो पति सेहो छी आ हमर त' दुलारू पापा छीहे । अ कांग्रेट्स फार योर सिल्वर एनवर्सरी पापा ।'' ओ आस्ते स' मेजरक हाथ दबाओल, मीनाक्षीक कान्ह छुअल आ निकलि गेल ।

जाने कोम्हर स' ता शंकरन सेहो प्रकट भ' गेल । ओकर दोसर हाथ मे तरबूजाक जूसक एकटा आओर गिलास छल । मुँह पर मुस्की छल आ आँखि मे चमक । ओ मेजर दिस बढ़ल आ रसे स' कान मे टीपलक-''एन्जॉय योरसेल्फ मेजर !'' फेर ओ मीनाक्षी दिस मोखातिब भेल-''भाभी जी, नमस्कारम् ! हम शंकरन छी, जकरा लेल अहाँ रोज भोजन पठबै छी । काज त' ओना अहाँक मेजर साहेबक संगे करै छी, मुदा अहाँ चाही त' हमरा अपना देओर बूझि सकै छी । आ हँ, भाभी जी । कने हमर मेजर साहेब के सम्हारू । बहुत छूट देनें छी अहाँ हिनका । कियै मेजर ? एना कियै मेजर ? ऑए ?'' आ शंकरन दहिना हाथमे पकड़ल जूसक गिलास के मीनाक्षी दिस बढ़ा देलक आ बामा हाथक गिलास के आंगुर पर नचाब' क प्रयास करैत भीड़ दिस बढ़ि गेल ।

बरबस मेजरक ठोर पर मुस्कीक एकटा पातर-छीतर रेघा खिंचा गेलनि । ओहि रेघाक संग जखन ओ मीनाक्षीके देखलनि त' ओ रेघा और गहीर भ' गेलै । अइ गहराइ के मीनाक्षी सेहो अनुभव कयलक आ कोनो नव-नवेली जकाँ आँखि लाज आ गर्दनि संकोच स' निहुरि गेलै । मेजर उठलाह । क्षण भर लेल पूरा पार्टी दिस देखलनि। मीनाक्षी के लागल, जेना किछु सोचि रहल होथि । फेर दृढ़ पएरे आगाँ बढ़लाह आ मीनाक्षी के कंधा सँ पकड़ि क' स्वयं सँ सटौलनि और बजलाह-''चलू मीनू। अहाँक सभ' स' भेंट करा दी ।''

❑

कथा

शैलेन्द्र कुमार झा

ओ हाथ

तिरुपति बाबूक मन एकदम घोर भेल जा रहल छलनि । अकच्छ भए गेल छलाह बैसल-बैसल । डेढ़ घण्टा सँ ऊपर भए गेल रहनि आ' एखनहुँ धरि नम्बर लगबाक कोनो सम्भावना नजरि नहि आबि रहल छलनि । तीन-चारि बेर जा क' पूछि आएल छलथीन । एक बेर त' कने खुशामदो पर उतरि गेल रहथि तिरुपति बाबू । मुदा सामनेवला छोटका केबिन मे जे छोटका डाक्टर बैसल छल, तकरा पर कोनो असरि नहि पड़लैक। कहलकनि प्रेमे सँ आ' सेहो कोनो बेजाए बात नहि, मुदा तिरुपति बाबूकेँ से कोनो तरहें रूचलनि नहि ।

''नम्बर अहाँक लागल अछि । आबि जाएत त' तुरन्त बजबा लेल जाएत । आखिर अहाँ सँ पहिने जकर नम्बर लागल छैक, सेहो त' अहीं सन केओ अछि । ओकरो त' कोनो ने कोनो कष्टे छैक ने जे एत' आएल अछि । सौख सँ त' एत' प्राय: केओ नहि आएल अछि । की करबै थोडे बहुत देरी त' लगिते छैक...।''

''एत्ते देरी...'' तिरुपति बाबू कहए चाहलथिन । मुदा बात बिच्चे मे काटि छोटका डाक्टर कहलकनि-''से त' देखिये रहल छियैक ने.....कत्ते समय दैत छथीन डाक्टर साहेब एक-एक टा मरीज केँ....। इएह त' छनि डाक्टर साहेबक खूबी । समय जे लागओ-लेकिन एक बेर भीतर गेला पर...''

तिरुपति बाबू घुरि अएलाह । अपना जगह पर बैस' लेल, देखलनि ओहि पर केओ आन बैस गेल रहनि । एक मन भेलनि जे ओकरा उठा देथि । मुदा तखने भीतर सँ डाक्टर साहेबक कर्कश स्वर कान मे पड़लनि । विगड़ि रहल छलथीन कोनो मरीज केँ, कि क्रोधाएल स्वर मे किछु कहि रहल छलथीन । पहिनहुँ तीन-चारि बेर बैसल-बैसल ई सुनि चुकल छलाह तिरुपति बाबू । कने अनसोंहात सन लागल रहनि मुदा संग बैसल लोक सभ कहलकनि-'डाक्टर साहेबक बोलिए एहन छनि । अपन सीट पर बैसल

व्यक्ति कें किछु कहबाक विचार त्यागि ओ दोसर कात जाक' ओही पंक्तिक अंतिम कुर्सी पर बैस रहलाह । कने ओठंगि क' । एक्के संगे लोहाक तीन-चारिटा पाइप सँ जोड़ल, सटल-सटल आठ टा कुर्सी । एक....दू...तीन....चारि...पाँच... नौ टा पाँती । तिरूपति बाबू मने-मन हिसाब लगओलनि...नौ अठे बहत्तरि कुर्सी । एखनो आधा सँ बेसी भरले छलैक । आएल छलाह तखनो करीब-करीब एतबे लोक रहैक । नहि किछु त' दस-बारह टा पेशंट अवश्ये भीतर गेल हाएतैक-बाहर निकलल होएतैक, मुदा तिरूपति बाबूकेँ लगलनि जेना कुर्सी पर बैसनिहार लोकक संख्या कम होएबाक बदला मे बढ़िए गेल होइक । साढ़े आठ बजे सँ डाक्टर साहेब देखैत छलथीन पेशेंट । तिरूपति बाबू आठ बजे पहुँचि गेल छलाह ।

अपन बीमारीक सम्बन्ध मे आइ कोनो पहिल बेर डाक्टरक ओत' बैस' पड़ल होनि से नहि । पछिला तीन-चारि मास मे हुनका नहि किछु त' सात-आठ बेर डाक्टर ओत' जाए पड़ल छलनि । पहिल तीन-चारि बेर त' डाक्टर ठाकुरे लग गेल छलाह। मोहल्लेक छथीन । कोनो तेहेन अपेक्षा नहि रहनि, मुदा जाइत-अबैत कहियो काल नमस्कार पाती होइत रहैत छलनि । परिचय छलनि । पुर्जी पठबओला पर लगले बजबा लेने रहथीन । पुछने रहथीन-''की भ' गेल...की बात...?

तिरूपति बाबूकेँ एक बेर कोनादन लागल रहनि । कोनो तेहेन बात त' छलनि नहि, पत्नी जोर देने छलथिन त' चल आएल छलाह ।' बड़नी, जाहि सँ हुनका सभकेँ संतोष होनि ।' कहलथीन-''नइ डाक्टर साहेब, कोनो खास नइ । ओहिना एम्हर सँ कने पेट मे दर्द रहैत अछि.....। बेशीकाल.....मद्धिमे....कखनहुँ काल कने बेशियो आ'. ...कने पेट सेहो गड़बड़ सन लगैत रहैत अछि । माने तीन-चारि बेर...कहियो काल आठ दस बेरं पैखाना जाए पड़ैत अछि....। से ई कहलनि जे...एक बेर देखा लितहुँ... तएँ...''

''अच्छा...अच्छा...ठीके कहलनि । एहू लाथे एत' अएलहुँ त भेंटो भ' गेल । नइ त' कहाँ फुर्सति होइए...ने अहाँकेँ ने हमरा...''

''हँ, से त' ठीके...'' तिरूपति बाबू बात पुराबए लेल कहलथीन।

''की, एम्हर भोज-भात किछु बेशी चलि रहलयँ की ? शुद्धक समय छै आ' अहाँ छी सामाजिक लोक । एम्हर-ओम्हर जाइते रहैत छी । सएह सब किछु होएत। देखि लैत छी...कने एम्हर आबि जाउ त'....''

तिरूपति बाबू सामनेवला कुर्सी पर सँ उठिक' डाक्टर साहेबक लगमे बगलवला कुर्सी पर जाक' बैस गेलाह । डाक्टर साहेब आला लगओलथीन । नाड़ी देखलथीन। फेर कहलथीन-''कने त' जरो लगैत अछि ।''

''जी हँ...किछु दिन सँ कमजोरियो सन लगैत अछि...असल मे जे किछु खाइ छी से किछु पचिते नइ अछि त...''

''अच्छा चलू....कने एम्हर पड़ि रहू त'....''

तिरूपति बाबू पाछूमे राखल, बिना गेडुआक घिनाएल बेंच पर पड़ि रहलाह । डाक्टर साहेब पेट टाेब' लगलथीन...'' कने साँस...लम्बा...

तिरूपति बाबू लम्बा-लम्बा साँस लेबए लगलाह-छोड़ए लगलाह । डाक्टर साहेब पेट मे चारूकात सँ आंगुर भोंकैत रहलथीन । दू-एक ठाम दर्द बुझएलनि । देह कने एइँच गेलनि ।

''ठीक छै....आउ...'' कहि डाक्टर साहेब अपन कुर्सी पर बैस गेलाह... ''कत्ते बएस भेल होएत..?''

बेंच पर सँ उठि कुर्सी पर बैसैत तिरूपति बाबू कहलथीन-''पाँच वर्ष बाँकी अछि रिटायरमेण्ट के....चौवन...पचपन भइए गेल होएत ।''

डाक्टर साहेब दवाइ लीखि देने रहथीन । बेशी नहि, तीन चारि टा । कहलथीन-''कोनो खास बात त' नइ लगैत अछि...। इएह कने खेनाइ-पिनाइ पर ध्यान दियउ । समय पर खाएल करू...हल्लुके । मिरचाइ-मसल्ला कम क' दियउ आ पानि खूब पीबू । आ हँ, खाली पेट जुनि रहल करू...किछु नइ त' चारि टा बिस्कुटे...। दस दिनक दबाइ द' रहल छी । एक बेर फेर देखा लेब समय निकालि क'....''

तिरूपति बाबू घुरती काल दबाइ किननहिं आएल छलाह । दबाइ मे मुदा करीब दू-सए टका लागि गेलनि । से कने अखरलनि, मुदा अएबा काल मना केलाक बादो डाक्टर साहेब फीसक चालीस टका घुरा देलथीन...नीके लगलनि । दबाइ शुरू कएलनि। तेसर दिन किछु आरामो सन लगलनि, मुदा से एक्के-दू दिन । तकराँ बाद फेर ओएह। किछु बढ़ले सन । अरुचि से बढ़ि गेलनि । दसम दिन फेर पहुँचलाह, कहलथिन। ''एक दूटा जाँच करबा लितहुँ त' ठीक रहैत...'' डाक्टर साहेब जाँच लीखि देलथीन, किछु दबाइ बदलि देलथीन तिरूपति बाबूकेँ जाँच करब' मे किछु देरी भेलनि । मासक अंतिम सप्ताह । पाँच दिन बादे करओता त' कोनो तेहेन हर्ज नहि। पथ्य-परहेज त' कइए रहल छलाह । पैखाना-पेशाबक जाँच मे त' कोनो नहि मुदा बेरियम मिल' एक्सरे मे पाइयो बेशी लगतनि आ फेर एक दिन ऑफिसो छोड़ए पड़तनि। नबका ऑफीसर कने कड़ा छलनि । बिना छुट्‌टीकेँ ऑफिस सँ अनुपस्थित रहब ओकरा सोहाइत नहि रहैक...से...। पाँच दिनक बदला आइ-काल्हि करैत-करैत दस-बारह दिन भए गेलनि । पैखाना मे किछु मामूली गड़बड़ी निकललनि मुदा एक्सरे वलाकेँ पुछलथीन,

रिपोर्टो पढ़लनि–खास किछु नहि । मन कने हल्लुक लगलनि । डाक्टर साहेब ओत' गेलाह । रिपोर्ट सभ देखिक' मूड़ी डोलबैत डाक्टर साहेब कहलथीन...न, कोनो खास गड़बड़ी नइ अछि...दबाइ खाइ छी ने...?'

तिरूपति बाबू तीन दिन पहिनहि दबाइ छोड़ि देने रहथीन । हँ, नहि किछु नहि बाजि ओहिना मूड़ी डोला देलथीन ।

''ओएह सब चल' दियउ...ख़ाली एकटा आओर जोड़ि दैत छी...ठीक भ' जाएत...।''

से मुदा ठीक नहि भेलनि । दवाइ खाइत रहलाह, पथ्य-परहेज करैत रहलाह, समय पर खाइत रहलाह, खूब पानि पीबैत रहलाह; भरि जन्म जे कहियो नहि कएलनि से ऑफिस टिफिन लए जाए लगलाह....मुदा आराम नहि भेलनि । कष्ट क्रमहि बढ़ले गेलनि । दर्द सेहो, पेटक गड़बड़ी सेहो, अरूचियो आ कमजोरियो । दोसर डाक्टरकेँ देखओलनि । पचास टका फीस तखन तीन-चारि सए रुपैय्याक जाँच आ फेर दू-तीन सए रुपैयाक दबाइ । तिरूपति बाबू जहिया सँ होस सम्हारलनि, तहिया सँ अपना ऊपर एत्ते खर्च नहि कएने छलाह ।

डाक्टर फेर कोनो पेशेंटकेँ हुड़कल । ध्यान भंग भेलनि । ध्यान भंग भेलनि त' कने शंका सेहो जोर केलकनि । एक बेर फेर निवृत्त भए अएलाह । एहूठाम ई लगाक' दू बेर...। बारम्बारता क्रमहि बढ़ले जा रहल छलनि । 'ई त' आब बेसम्हार सन भेल ज़ा रहल अछि...'' तिरूपति बाबू कने चिन्तित, कने उद्विग्न भेल, सोचैत आबिक' बैस रहलाह । एहि बेर जगह पर.कोओ नहि बैसल छलनि । लगलनि जेना लोको किछु कम भेल होइक । मोन कने हल्लुक, सन लगलनि । विचारक क्रम फेर ओत्तहि पहुँचि गेलनि जतए छूटल छलनि । नहि किछु त' हजार रुपैय्या सँ बेशी खर्च भए चुकल छलनि जखन कि मोहल्ला वला डाक्टर एक्को पाइ फीस नहि लेने छलनि। उन्टे एक दिन दू पत्ता भिटामिन सेहो दए देने रहनि । तैय्यो...पछिला मासक बजट एकदम गड़बड़ा गेल रहनि । दूधवलाक आधा पाइ बाँकी राखए पड़लनि । मासे-मास जे थोड़े पाइ जमा करबैत छलाह सेहो जमा नहि भए सकल रहनि । असल मे पछिले मास एल. आइ. सी. क प्रीमियम देबाक छलनि । दू टा करालेने छलाह बहुत पहिनहिं । तहिया एत्तेक मंहगी नहि रहैक । सम्पन्न त' कहियो नहि छलाह तिरूपति बाबू मुदा तहिया एना टानो नहि छलनि । बर-कनिञा; दू व्यक्ति आ चारि टा बच्चा–डेढ़-दू बर्षक जेठाइ छोटाइ पर । ताहू मे दूटा बेटा, दू टा बेटी। व्यवस्थाक हिसाबें जोड़-जाड़ करथि त' अपना केँ मोटा-मोटी संतुष्ट व्यक्तिक श्रेणी मे कोनहुना घुसिया लैत छलाह

तिरूपति बाबू । मुदा क्रमहि आर्थिक समस्या बढ़ल गेलनि । धिया-पुता चेतन होबए पर अएलनि । सभहक पढ़ाइ-लिखाइ, कपड़ा -लत्ता; समय के जे मांग होइत छैक तकरा बेल्लाग नकारि त' नहिए सकैत छी; चाहे अहाँ जे होइ ! तेजी सँ कि नहूँ-नहूँ. ...भसियाए धरि पड़बे करत । तिरूपति बाबूकेँ सेहो, यद्यपि धीरे-धीरे, मुदा भसियाए पड़ले छलनि । वर्ष मे दू बेर एल. आइ. सी. प्रीमियम मे मोटा-मोटी चौथाइ दरमाहा निकलि जाइत छलनि । फरवरी आ अगस्त मास मे सभ बेर हिसाब उनटा-पुनटा भए जाइत छलनि । एहि बेर केँ त' कोनो बात नहि। ने दूधवलाकेँ पूरा देल भेलनि ने अखबार वलाकेँ । किछु बनिञाक उधार सेहो चढ़ि गेल रहनि । भविष्य मे जे दू लाख टाका भेटतनि ओहि सुखद प्रत्याशा मे तिरूपति बाबू वर्त्तमानक कष्टकेँ काछिक' कात कए दैत छलाह । आब त' लगचिया गेल छलनि। दू वर्ष आओर । खाली प्रीमियम टा समय पर जमा होइत रहबाक चाही । 'कोनो बात नहि–' तिरूपति बाबू अपनाकेँ मनओलनि–' एखन त' ग्रेस पीरियड मे चारि दिन बाँकी छैक ने, करा देबै जमा जेना-तेना...।'

ध्यान फेर भंग भेलनि–डाक्टर साहेबक गर्जन सँ । कोनो पेशेण्ट केँ डपटैत। एतबा देरी मे तिरूपति बाबू आने लोक सभजकाँ अभ्यस्त भए गेल छलाह । सूनल पहिनहुँ छलनि जे 'मूहक बड़ दुर्दुट छथि ई डाक्टर साहेब । किछु ने देखता जे के. ..की...जे मुह मे अएतनि...कहि देताह नीक-बेजाए ।...मुदा तैय्यो...लोक कहैत छनि धन्वन्तरि । आँगुर भिड़ा देलनि, आला सटा देलनि–'बुझू बेमारी गेल...। तएँ जखन जाउ पचीस-पचासक भीड़ भेटबे करत...।'

एक बेर फेर उठलाह तिरूपति बाबू । छोटका डाक्टर लग जाक' चुपचाप ठाढ़ भए गेलाह । किछु पुछलथीन नहि । अपनहि कहलकनि...''आब भइए गेल । बस चारि-पाँच टा पेशेण्ट आओर–'' तिरूपति बाबू हिसाब लगओलनि–'माने कम सँ कम आधा घन्टा चालीस मिनट आओर । आइयो दिन बेकार भए गेलनि–आठम सी. एल। ओना आब बेशी चिंता नहि छलनि । तीन चारिटा एखनो बाँकी होएतनि आ फेर आब त' पाबनि-तिहारक समय आबि रहल छलैक–दुर्गापूजा, दिवाली, छठि–। निमहि जएतनि। मास-दू मास मे नवका साहेबक ढाही सेहो कने कम भए जाइ–के जानए। मुदा एल. आइ. सी. प्रीमियम जमा करबाक छलनि, दूधवला, अखबार वला, बनिञा...। आब अगिला दू मास तक लटपटाएले रहतनि । एक मन सोचलनि जे की होएतैक, एल. आइ. सी. वला कने फाइने लगतनि ने...अगिला मास देखल जएतैक; नहि जँ किनसियाइत पूजा मे बोनस किछु बोनस...तखन त'....'

डाक्टर साहेबक झुलौउआ केबाड़ फेर खुजलनि । तिरूपति बाबूकेँ भेलनि जे पेशेण्ट निकलत, पुकार होएतैक-दोसर पेशेण्ट घुसत । मुदा से नहि । पेशेण्टक संग डाक्टर साहेब निकललाह-ओकरा कन्हा पर हाथ देने-मुस्कियाइत । तिरूपति बाबूकेँ भेलनि जे केओ निकटस्थ व्यक्ति होएतनि । मुदा मन पड़लनि ओहो व्यक्ति त' हुनके सभ संग बैसल छल बाहर मे दू-अढ़ाए घंटा प्रतीक्षा करैत । नाम पुकार भेल रहैक त' गेल रहए भन-भन करैत । समांग होइतनि त'......। कोनो तेहेन रोगग्रस्तो नहि लागि रहल छल। केहेन बढ़िया पैण्ट-बुशशर्ट पहिरने...चेहरा अवश्ये कने झमाड़ल सन लागि रहल छलैक, क्लान्त आ निस्तेज । दरवज्जा सँ बाहर छोटका डाक्टरक केबिन तक अएलाह डाक्टर साहेब । छोटका डाक्टर हड़बड़ाक' ठाढ़ भए गेल । ओ पेशेण्ट डाक्टर साहेब केँ पुछलकनि-''की डाक्टर साहेब-''

''अरे सभ ठीक भ' जाएत...बेशी चिंता नइ करू । जे कहलहुँ से सब लेकिन करबा लिय'...'' कहि डाक्टर साहेब बड़ा स्नेह सँ ओकर पीठ थपथपा देलथीन आ' पलटि क' अपना केबिन दिस चल गेलाह । दोसर नामक पुकार भेल...।

तिरूपति बाबू छोटका डाक्टरकेँ पूछि बैसलाह...''एँ यौ...; डाक्टर साहेबक केओ समांग छलथीन की-?''

''से की...?'' छोटका डाक्टर हुनकर आशय नहि बुझलकनि

''नइ, माने...'' कने विहुँसैत तिरूपति बाबू पुछलथीन...।

''माने ई डाक्टर साहेब त'...। जखन सँ अएलहुँ अछि...देखिये रहल छियैक...। तखन एत्तेक प्रेम सँ गप्प, एत्तेक स्नेह सँ पीठ थपथपओनाइ....से....''

''ओह से...? अरे बोली-चाली त' कड़ा छनिहे डाक्टर साहेबक...। मुदा सब संगे त'...। आब एहीपेशेण्ट केँ...। ओहो बुझैत छथीन...। जएह किछु दिन...किछु मास...। तखन एहेन पेशेण्ट केँ...''

''से की भेलेय्यै...?''

''ओ....'' किछु बजैत-बजैत ओ चुप भए गेल । फेर बाजल-''छोड़ू ई सब बात । ई सब त लागले रहैत छैक...अनेरे...''

तिरूपति बाबू घूरि अयलाह । एहि बेर बेशी देरी नहि बैसए पड़लनि । बीच मे दू बेर डाक्टर साहेबक डपटैत स्वर कान मे पड़लनि फेर पुकार भेलैक । तिरूपति बाबू दोसर बेर मे सुनलनि । हड़बड़ाक' उठलाह, भीतर गेलाह-प्रणाम कएलथीन।

''बैस...''

सकपकाइत सन बैस गेलाह ।

''हँ...त' की होइय्ये अहाँकेँ...?''

''जी कने पेटक गड़बड़ी रहैत अछि । कमजोरी सेहो बढ़ल जा रहल अछि। खएबाक त' किछु इच्छे नइ होइत अछि । तैय्यो जे किछु खाइत छी, से किछु पचिते नइ अछि । पथ्य-परहेज त'...''

''कए बेर जाए पड़ैत अछि पैखाना...?''

''जी पहिने त' तीन-चारि बेर...मुदा आब...त'...''

''आब...?''

''जी छओ-सात...आठो-दस बेर...''

''हँ...'' डाक्टर साहेब गँहिकी नजरि सँ हुनका देखैत हामी भरलथीन । तिरूपति बाबू सभटा पुरना रिपार्ट, डाक्टर सभहिक प्रेस्क्रिप्शन आदि आगू बढ़ा देलथीन । ओहि सभ दिस बिना देखने डाक्टर साहेब पुछलथीन...'' कत्ते दिन सँ ई सभ भए रहल अछि...?''

''जी...इएह पाँच-छओ मास सँ...''

''की...; पाँच-छओ मास सँ...?'' डाक्टर साहेब भड़कि उठलाह-''बाह...'बड़ा जल्दी चल अएलहुँ । आओर पाँच-छओ मास बाद अबितहुँ...।''

तिरुपति बाबू चुप रहलाह । मन मे भेलनि, कोन कर्म केलहुँ, एकरा लग अएलहुँ। मुदा आब त'...। मूड़ी उठाक' धीरे सँ कहलथीन-''दू-तीन टा डाक्टर सँ त' देखेने रही । किछु जाँच सभ सेहो जेना जे कहइ जाइ गेलाह, सेहो करओने रही । मुदा..''

''कोनो लाभ नइ भेल...नइ भेल ने...? डाक्टर साहेब हुनकर देल कागज-पत्तर केँ उनटबैत-पुनटबैत पुछलथीन । एहि तीक्ष्ण प्रश्नक, कि उत्तिक की उत्तर देथीन ? तिरुपति बाबूकेँ किछु नहि फुरएलनि । चुप भेल बैसल रहलाह । डाक्टर साहेब किछु काल कागज-पतर सभ देखैत रहलथीन । फेर कहलथीन

''एम्हर चलू...''

तिरुपति बाबू जाँच-टेबुल पर जा क' पड़ि रहलाह । बिना कहनहि दुनू पाएर ठेहुन लग सँ मोड़ि लेलनि । डॉक्टर साहेब आँगुर भिड़ेलथीन त' रुकि-रुकि क' लम्बा-लम्बा साँस लेबए लगलाह । एक ठाम तीन आँगुरक दबाव पड़ैत देरी बिमिया गेलाह । पड़ले पड़ल आगू निहुरि सन गेलाह ।

''सीधा-सीधा रहू...'' डाक्टर साहेब जोर सँ डपटलथीन । तिरूपति बाबू साझ भए गेलाह । डाक्टर साहेब कने बामा, कने दहिना, ठीक ओही ठाम फेर सँ तीन-चारि बेर दबलथीन । तिरूपति बाबू सभ बेर एइँच जाथि ।

''पेट मे दबओला पर दर्द होइत अछि कि ओहुना रहैत अछि ?''

''जी पहिने त' नइ, लेकिन एम्हर एक आध मास सँ हरदम रहए लागल अछि। कखनहुँ काल त' बहुत बेशी बढ़ि जाइत अछि । ओ जे डाक्टर साहेब दबाइ देने छलाह से खेला पर कनी...''

''ठीक छै...आर किछु...?'' डाक्टर साहेब घुरिक' अपन सीठ पर बैसैत अपेक्षाकृत नम्र स्वर मे पुछलथीन । तिरुपति बाबूक मन कने हल्लुक लगलनि ।

''नइ...माने आओर त' नइ किछु, मुदा ई हाजति सँ बड़ा...कोनादन लगैय्ये । दस लोक मे...बेर कुबेर...। आ फेर ई दर्द...''

''ठीक छै...; दबाइ एखन दुइए टा लीखैत छी । एकरा खाउ । आ' दू-एक टा जाँच करबाब' पड़त । जरूरी अछि । सात दिन बाद भेंट करब । ठीक छै...?'' डाक्टर साहेबक स्वर एकदम सामान्य छलनि मित्रवत-परामर्श दैत सन ।

तिरुपति बाबूक बोल फुटलनि...''कत्ते दिन मे ठीक भ' जाएत डाक्टर साहेब। कने दियउ कड़ा दबाइ जे...। आ' नइ त' कोनो सूइ-तूइ जँ होइ त' सेहो...।''

डाक्टर साहेब बिहुँसलाह । कहलथीन...''न:.सूइ तूइक एखन कोनो प्रयोजन नइ अछि । अहाँ जाउ...पहिने जाँच करा आउ । आ' दबाइ नियमित रूप सँ लेब । ठीक...?'' आ 'घण्टी बजओलनि । बाहर पुकार भेल ।

''एखने घुरती करओनहि जाएब डाक्टर साहेब–'' तिरुपति बाबू फुलपैण्टक बामा जेबी पर हाथ फेरैत बजलाह । आ डाक्टर साहेब केँ प्रणाम कए बाहर निकलाह। मुदा लगलनि जेना पाछाँ सँ संग लागल डाक्टरा साहेब निकलल होथीन । कान मे स्वर पड़लनि ।

''की नाम कहलहुँ...तिरुपति ने...? हँ त' तिरुपति बाबू...जाँच करबाइए लेब । बिसरब नहि । रिपोर्ट मे किछु समय लागि जाएत, तएँ जत्ते जल्दी...। आ हँ, सांतम दिन रिपोर्ट संग लेने जरूर आबि जाएब...ठीक छै ने...?''

तिरुपति बाबू अपन कन्हा पर डाक्टर साहेबक हाथ अनुभव कएलनि । ओ हाथ हुनक पीठ थपथपा रहल छलनि । तिरुपति बाबू बाहर निकलि गेलाह । रोड पर आबि एक क्षणक लेल थकमकाएल सन ठाढ़ रहलाह–फेर बामा दिस मुड़ि गेलाह । एल. आइ. सी. ऑफिस लगे मे छलैक । भेलनि प्रिमियम जमा कराइये दी ।



कथा

नारायणजी

रोग

रेड लाइन बससँ हम उतरैत छी । हमं सफदरजंग चौराहा पर उतरैत छी । हमरा संग हमर छोट बेटा अविनाश छथि। अविनाशकेँ ल' हम मास दिनसँ रोज-रोज छिछियाइत छी ।

अविनाशकेँ आँखिक रोग भ' गेलनि अछि । अलीगढ़मे ऑपरेशनक बादो, बाम आँखि ज्योतिविहीन भ' गेलनि अछि । दहिन आँखिक ज्योति नष्ट भ' रहल छनि । हम अविनाशक आँखिक समुचित इलाज लेल, एम्स अर्थात् ऑल इण्डिया इन्स्टीच्यूट ऑफ मेडिकल साइंसक आँखि विभाग आयल छी ।

पछिला सप्ताहक बुधकेँ आयल रही । डॉक्टर अविनाशक आँखिक अनेक तरहक जाँचक बाद शनिकेँ बजओने रहनि । शनिकेँ डॉक्टर, हुनकर जाहि आँखिक ज्योति नष्ट भ' रहल छनि, तकर छोट-छीन ऑपरेशन, जकरा क्रायो कहल जाइत छैक, कयने रहनि । क्रायो लेल डॉक्टर आइ बजओलकनि अछि ।

आइ शनि थिक । बारह बजे दिनुक एप्वांटमेंट छनि ।

हम अविनाशक बाम हाथ पकड़ैत छी, आ अत्यन्त सावधानीपूर्वक रिंग रोड पार करैत छी।

रिंग रोडक कातमे शनि महाराज़ छथि । शनि महाराज कड़ू तेलक थारमे छथि। कड़ू तेलक थारमे ठाम-ठाम शनि महाराज़ अपन सम्पूर्ण शोभा आ प्रभुता संग उपस्थित छथि ।

हम सोचैत छी, गाममे बहुतरास वस्तु नहि अछि । टेम्पो नहि अछि । रेल नहि अछि । हवाइ जहाज नहि अछि । ओहन डॉक्टर आ अस्पताल त' निट्ठाहे नहि अछि गाममे, जेहन शहरमे सहस्त्र परिदृष्टि संग सजग अछि । गाममे गाछी अछि । गाछीमे पीपर अछि । पीपरमे शनि छथि । शनिकेँ बदाम आ गूड़ लोक चढ़बैत अछि पिपरक

जड़िमे । मुदा, मुल्कीक, सुख-सुविधाक वस्तु रहितो, शनि महाराज खुशफैलसँ जगह दखल कयने छथि शहरमे । थारमे लोक पाइ चढ़ओने अछि । हम अविनाशकेँ अठन्नी चढ़ेबा लेल कहैत छियनि आ आगू बढ़ि जाइत छी ।

आगू एम्सक विशाल भवन अछि । ओकर कैम्पस अछि । कैम्पसमे प्रवेश करैत हम सभ ओहि समुदायमे मिज्झर भ' जाइत छी, जे रोगीक थिक; अथवा रोगीक परिचर्यामे लागल कष्ट भोगैत, मुदा परम उदार बनल लोकक ।

आँखि विभागक ओ. पी. डी. मे आइ भीड़ नहि अछि । बेसी कुर्सी खाली अछि । पेशेंट आ अटेनडेंट सभ ओ. पी. डी. कार्ड बनबा, अथवा कार्ड पर डेट चढ़बा निर्धारित डॉक्टर लग चलि गेल छथि ।

हम सभ अबेर क' अयलहुँ अछि । पछिला दिन ठीक ओ. पी. डी. खुजबा काल आयल रही । खूब भीड़ रहय । सभटा कुर्सी भरल रहय । अविनाशक बाम आँखिमे कॉटन बान्हल देखि, एकटा महिला कुर्सी झट उठि गेलि रहथि । आ ओ स्नेहपूर्वक अविनाशकेँ अपना स्थान पर बैसओने रहथि ।

हम अभिभूत भेल रही । बस आ ट्रेनमे एतेक मनुक्खता कहाँ बाचल अछि, हम सोचने रही । इहो सोचने रही, गाममे सभ दिनसँ हमसभ एकठाम रहैत छी, आ अपना आचरण सँ ईर्ष्याक जाल बुनि लैत छी । अदनीटा बातमे एक-दोसरासँ भीड़ि जाइत छी । अनकर मूड़ी छोपि लेबाक बात सोचैत छी । हमसभ स्वस्थ रहैत छी। एहिठाम रोगी आ रोगीक परिचर्या लेल लोक अबैत अछि । एहिठाम लोकक हृदय दया आ करूणासँ भरि जाइत छैक । सहयोग शिविर थिक ई ।

बासठि नम्बर चेम्बर मे हमसभ अबैत छी । अविनाशक एहिठामक एप्वांटमेंट छनि । सभटा कुर्सी खाली अछि ।

बेसी कुर्सी पछिलो दिन खाली रहय । किछु गोटे बैसल रहथि । जे किछु पेशेंट आ अटेनडेंट बैसल रहथि, ओ सभ आँखिक दोसर रोगक रोगी रहथि । तेँ किछु गोटेक संग बैसल हमसभ ककरो संग नहि रही । तथापि, किछु गोटेक संग बैसल रही । आइ, मुदा क्यो नहि छथि ।

देबालपर ओहिना लिखल अछि—'आँख ईश्वरीय वरदान है, उसकी रक्षा है आपका कर्त्तव्य' ।

हम अविनाशकेँ एकटा कुर्सी पर बैसाय स्वयं चैम्बरसँ लागल ओ. टी. मे हुलकी दैत छी । ओ. टी. मे किछु कर्मचारी छथि । मुदा, एतेकटा चेम्बरमे हमरा दुनू गोटेके छोड़ि कियोटा नहि अछि ।

हमरा मोन पड़ैत अछि, पछिला शनिकेँ हमरा एहिठाम उकासी उठल रहय । स्कूलमे, जहिया हम पढ़ैत रही, जे एकबेर उकासी उठल रहय, तखन सरस्वती पूजाक संगीत समारोह चलैत रहैक । हमर वर्ग-शिक्षक जे कुर्सीपर बैसल रहथि, उकासी करैत देखि हमरा दिस अपन आँखि तरेड़ने रहथि । आ हम श्रोता-समुदायक बीचसँ उठि, स्कूलक कैम्पससँ बहरा' गेल रही । मुदा, ओहिदिन एहिठाम हमरा उकासी करैत देखि एकटा महिला अपना वाटर पॉटसँ हमरा धरि आबि पानि देने रहथि, आ हमर उकासी छूटि गेल रहय ।

मुदा, आइ एतेकटा चेम्बरमे कियो नहि अछि ।

बारह बजबा पर आबि रहल अछि । एप्वांटमेंटक समय आबि रहल अछि ।

पछिला शनि एहिना बारह बजेक एप्वांटमेंट छल । डॉक्टर मुदा दू बजे क्रायो कयने रहथि । किछु गोटेक संग बैसल रही । मुदा, अपना रोगीक रोगमे एकसर रही। आइ, हमरा आ अविनाशकेँ छोड़ि एहि चेम्बरमे कियोटा नहि अछि ।

हम डॉक्टरक चेम्बर दिस जाइत छी । चेम्बरमे बड़ भीड़ अछि । बहुतरास रोगी डॉक्टर लग अपन क्रम अयबाक प्रतीक्षामे छथि ।

डॉक्टर सभ रोगीक आँखिक जाँच करताह । लेसर लेल बजाओल रोगीक आँखिक लेसर करताह, तखन ओ. टी. अओताह ।

हम बासठि नम्बर चेम्बरमे घुरि अबैत छी । घुरबाकाल लेसर रूममे किछु पेशेंट हमरा बैसल देखाइत छथि ।

बासठि नम्बर चेम्बरमे किछु रोगी आ हुनकर अटेनडेंट ता' आबि गेल रहैत छथि।

हमरा आँखिक रोगीकेँ चिन्हबामे एकोरत्ती भाङठ नहि होइत अछि । कारण, हुनकर आँखि डायलेट कयल रहैत छनि, तेँ अत्यधिक नोराइत देखाइत रहैत अछि।

पता कयला पर ज्ञात होइत अछि, जे ई जे कानपुरसँ आयल छथि, हुनका दहिना आँखिमे सरियासँ चोट लागल छनि । भरतपुरसँ आयलि एहि महिलाक बाम आँखिक ग्लूकोमाक ऑपरेशनक बादो कोनो सुधार नहि बुझाइत छनि ।

दुनू रोगीक आँखिक रोग हमरा रोगीक रोगसँ भिन्न अछि । तेँ हुनका सभक ओ. टी. हमरा पेशेंटक ओ. टी. सँ भिन्न अछि । आ तेँ आइ सेहो हम अपना रोगीक संग एकसर छी । एकसर आ दुर्बल ।

हम बेर-बेर रेलिंग सँ हुलकी दैत छी, आ एहि महानगरमे मकानक जंगल देखैत छी । हम स्वयंकेँ समयमे खपबैत छी, एहि आशा संग जे आब'बला समयमे ओहि इच्छाक पूर्ति हैत, जे हमर अभीष्ट अछि ।

किछु कालक बाद एकटा काफिला एहि चेम्बरमे प्रवेश करैत अछि, आ क्रमसँ पाँचटा खाली कुर्सी छेकि लैत अछि ।

काफिलामे चालीसक उमेरक एकटा महिला छथि । पहिला समीज-सलवार पहिरने छथि । गरदनिमे ओढ़नी लपेटल छनि । हमरा लेल से सभ कोनो उत्सुकता नहि अछि । हुनकर दुनू आँखि नोराइत छनि, दुनू आँखि डायलेट कयल छनि । काफिलामे आँखिक रोगी येह महिला छथि । हुनकर रोग जनबाक हमरा उत्सुकता अछि ।

हम हुनका संग आयल एकटा भद्र पुरुषसँ हुनकर आँखिक रोग जनबाक चेष्टा करैत छी । आ पंजाबी मिश्रित हिन्दीमे हमरा ज्ञात होइत अछि, जे आँखिक पर्दामे छेद भ' रहल छनि डॉक्टर बारह बजे आँखि सेंदतनि ।

हम ई जानि जे वैह डॉक्टर आँखि सेंदतनि, जे हमरा रोगीक आँखि सेंदताह, उत्सुकतापूर्वक ओहि महिलाक हाथसँ कार्ड ल' देखैत छी । आ पबैत छी, जे रोगीक नाम मोना गुलाटी थिक, आ हिनका आँखिमे सेहो आर. डी. अर्थात रेटिनल डिटैचमेंटक खतरा छनि । डॉक्टर बारह बजे क्रायो करतनि ।

हमरा स्वयंमे एकसँ दू होयबाक बल भेटैत अछि ।

हमर रोगी सेहो एही रोगसँ पीड़ित छथि, जानि मोना गुलाटीक पिता नहि मात्र हमरा अपना लग बैसबैत छथि, अपितु संग आयल भद्र-पुरुष जे मोनाक पति छथि आ तीस हजारी कोर्टमे इंप्लाइ छथि, अविनाश लग बैसि, अविनाशक दहिन हाथ अपना हाथमे ल' हँसोथं' लगैत छथि । कनेकालक बाद ओ हमरा लग आबि एहि रोगक सम्बन्धमे सविस्तर गपकर' लगैत छथि । ओ मोनासँ कहैत छथि-''धैर्य राखू, देखू ई बच्चा बारह-चौदह बर्खक अछि, की देखलक अछि ई ?''

हम देखैत छी, मोनाक पिता कान' लगैत छथि । मोनाक पति सान्त्वना दैत कनैत छथि । दबाइये सँ सही, नोराइत दुनू आँखि देखि हम कोना मानू जे मोना कानि नहि रहलि छथि ?

क्षण भरिक लेल हम द्रवित भ' जाइत छी । मुदा, पुन: विचारि जे भावना हमरा धोखा दैत अछि, संग दैत अछि बुद्धि, हम मोनासँ जा कहैत छी-''रोग कनलासँ नहि छुटैत छैक, इलाजसँ छुटैत छैक । हमरा सभ इलाज लेल हिन्दुस्तानक सभसँ नीक जगह आबि गेल छी ।''

हमरा बुझाइत अछि, हमर भरोससँ मोनाक हिचुकब कमि गेलनि अछि ।

मोनाक पतिक आग्रहपर हम मोनाक पिता आ भाए संग एकठाम बैसैत छी ।

ओ सभ हमरा बेर-बेर क्रायो द' पुछैत छथि । आ हमर ई उत्तर देला पर, जे क्रायो बड्ड पेनफुल होइत अछि, भयभीत होइत छथि ।

गपक क्रममे ज्ञात होइत अछि, जे मोना पति संग स्कूटरसँ आयलि छथि आ हुनकर पिता आ भाए अपन मारुती गाड़ीसँ । गाड़ीमे ओ सभ खेनाइ अनने छथि । डॉक्टरक अयबाक बेर कखन ने भ' गेल अछि, मुदा एखनो डॉक्टरकँ अयबामे विलम्ब अछि । ड्राइवर सँ कहि ओ सभ खेनाइ मंगबैत छथि । आ मोनाक पिता हमरो खयबाक आग्रह करैत छथि ।

हमरा अपन आत्म-प्राचीर ठाढ़ करबाक तखन पर्याप्त सुविधा आ अवकाश भेटि जाइत अछि । हम कहैत छियनि-''एक जनम जानि ने हम ककर की खयलहुँ, जे एम्समे एखन धक्का खा' रहल छी । हम अहाँक खा' ऋणकत' आ कोना उतारब ?''

मोनाक पिता किछु आगू बाजथि, एहिसँ पहिने हम चोट्टे उठि जाइत छी । आ यूरिनल जयबाक लाथें अविनाशकँ संग क' चेम्बरसँ बहरा' जाइत छी ।

हमरा भूख लगैत अछि । मुदा, डॉक्टर कखनहुँ आबि सकैत छथि, सोचि कतहुँ कैम्पससँ बाहर नहि जाइत छी । कोनो पलखति नहि बुझाइत अछि कतहु जयबाक।

डाक्टरक चेम्बरमे लोक बड़ थोड़ रहि गेल रहैत अछि । मुदा, लेसर रूम मे पेशेंटक भीड़ बढ़ल देखि, हम अनुमान करैत छी, जे थोड़ेक देरी एखनहुँ अछि ।

किछु बूलि-टहलि हम सभ बासठि नम्बर चेम्बरमे फेर आबि जाइत छी ।

मोना बैसलि छथि । हुनकर परिवारक लोक भरिसक पछुऐतिमे खयबा लेल गेल छथि ।

भंरतपुरसँ आयलि महिलाक आँखिमे पट्टी बन्हाय गेलनि । ओ अपना अटेनडेंटक संग जा रहलि छथि । कानपुर सँ आयल रोगी भरिसक चलि गेलाह । हुनका सभक लेल ओ. टी. दोसर रहनि, रोग जे दोसर रहनि ।

हम अविनाशकेँ बैसाय अपनं ओ. टी. दिस हुलकी दैत छी । सभकिछु पूर्ववत अछि ।

मोनाक पति सिगरेट पिबंत अबैत छथि । पाछू हुनकर पिता आ भाए आ ड्राइवर आ एकगोटे आर अबैत छथि ।

मोनाक पिता बजैत छथि जे डॉक्टर लेसर रूममे आबि गेलाह अछि, ओ बात क' लेलनि अछि । आब हुनका सभक रहब कोनो आवश्यक नहि छनि । ओ सभ मोनाकेँ सान्त्वना द', स्वीकृति पाबि बिदा भ' जाइत छथि ।

हमर पुछला पर मोनाक पति कहैत छथि जे एहि शहरमे हुनका ससुरजीक

होजिअरीक फैक्ट्री चलैत छनि, एखन एहिठाम रहब आवश्यक नहि लगलनि आ चलि गेलाह ।

हम सभ डॉक्टरक अयबाक प्रतीक्षा करैत छी । पछिला दिन ई बेर चलि गेल रही। हमर पेशेंटक क्रायो भ' गेल छल ।

मोनाक पति अकछाइत बजैत छथि–देखियौक ने, तीन बजबापर अयलैक अछि, डॉक्टरक कतहुँ पता नहि । बारह बजेक एप्वांटमेंटक कोनो अर्थ नहि ।''

हम किछु नहि बजैत छी ।

ताबत डॉक्टर अबैत देखाइत छथि । ओ एक तरहें दौड़ैत अबैत रहैत छथि । हुनका दहिना हाथमे एकटा करिया बॉक्स छनि । पाछू-पाछू किछु डॉक्टर सभ सेहो दौड़ैत अबैत रहैत छथि । आ सभ क्यो ओ. टी. मे पैसि जाइ जाइत छथि ।

ओ. टी. सँ एकटा नर्स बहरा' कहैत छथि जे पेशेंट अपन-अपन कार्ड संग ओ. टी. मे अबै जाथि ।

हम अविनाशकेँ हाथमे कार्ड द' ओ. टी. क मुँह धरि द' अबैत छियनि । मोना पति संग हाथमे कार्ड लेने ओ. टी. जाइत बड्ड असहाय बुझाइत छथि ।

भरिसक वार्ड जयबाक परमीशन लेल रेलिंगसँ सटि एकगोटे ठाढ़ रहैत छथि। हुनका हाथमे अखबार रहैत छनि । मोचड़ल अखबार मे हमरा देखाइत अछि हत्याक एकटा छोट-छीन खबरि । एहन समाचार सभ पर हम ध्यान नहि दैत छी । मुदा, एखन ई समाचार हमरा मर्माहत क' रहल अछि । दूरमे कतहु टिटहीक बाजब सुनाइत अछि, आ हमर रोम-रोम आशंकासँ सिहरि उठैत अछि ।

मोनाक पति सिगरेट धुकैत रहैत छथि ।

हम ओ. टी. मुहधरि बरोबरि अबैत-जाइत रहैत छी, ई सोचि जे क्रायोक बाद अविनाश कखनहुँ बहरा सकैत छथि ।

सहसा हम अविनाशकेँ ओ. टी. सँ बहराइत देखैत छियनि । ओ दुनू हाथसँ बसातमे देबाल हँसोथबाक प्रयास क' रहल छथि । हमरा से भीतर धरि विह्वल बना दैत अछि। हम झटसँ लग जा हुनकर हाथ पकड़ि लैत छी ।

अविनाशक एकटा आँखि पहिनहि ज्योतिविहीन भ' गेल छनि । दोसरमे एखन क्रायो भेलनि अछि । ओहिमे कॉटन बान्हल छनि । मुदा कॉटनक तरसँ शोणित हुनका गाल धरि टघरि रहल छनि । दर्दसँ हुनकर देह काँपि रहल छनि ।

हमर हृदय बिदीर्ण होब' लगैत अछि । तथापि, हम मोनाक पतिकेँ अपना पेशेंटकेँ सम्हारबा लेल कहैत छियनि । आ अविनाशकेँ कुर्सी पर बैसाय दैत छी ।

मोनाक एकटा आँखिक क्रायो भेलनि अछि । ओ दोसर आँखिसँ दुनिया देखि रहल छथि ।

हम ओ. टी. क मुँह लग जाइत छी । डॉक्टर कार्ड हाथमे दैत कहैत छथि जे एक-एकटा टेबलेट तीन बेर तीन दिन धरि देबाक अछि, आ अगिला शनि फेर क्रायो सिटिंग लेल अयबाक अछि ।

डॉक्टर मोनाक पतिकेँ एहिना सलाह द' वार्डमे राउण्ड देबाक लेल ढुकि जाइत छथि ।

हम अविनाशक हाथ पकड़ने आ मोना अपना पतिक हाथ पकड़ने हास्पीटल सँ बहरा जाइत छी । दर्दसँ अविनाशक देह कँपैत रहैत छनि ।

हमर करेज फटैत रहैत अछि । तथापि, हम अपना पर नियंत्रण कयने रहैत छी।

हम सभ हॉस्पीटलक लॉनमे अबैत छी । 'अबेर भ' जयबाक कारणें ओ. पी. डी. क सभ फाटक बन्न भ' गेल रहैत अछि।

हम अविनाशकेँ घास पर बैसाय दैत छियनि । मोना किछु कात भ' यूक्लिप्टसक जड़िमे बैसैत छथि ।

हम मोनाक पतिकेँ कहैत छियनि–''ओ. पी. डी. बन्न भ' गेल अछि । सभसँ पैघ समस्या पानिक अछि एखन । अहाँ सड़कक कातसँ दू गिलास पानि लेने आउ। हम मेडिसीन कार्नरसँ पेन किलर लेने अबैत छी । दुनू गोटेक कार्ड पर ब्रूफेन पेन किलर लिखल अछि, आ लिखल अछि जे 'फोलो आफ्टर वन वीक' ।

क्यूमे ठाढ़ भ' हम जा पेन किलर कीनि आबी, मोनाक पति पानि आनि लेने रहैत छथि । हुनकर कहब रहैत छनि जे खुदरा नहि रहबाक कारणें गिलासक सिक्यूरिटीक रूपमे पानिबला लग ओ पचसटकही छोड़ि अयलाह अछि ।

हम एक पात पेन किलर हुनका दैत छियनि ।

खाली गिलास घुमाब' जाइत काल मोनाक पति हमरासँ कहैत छथि–''अहाँ त' बससँ चलि जायब । अपन स्कूटरसँ हमरा पेशेंटकेँ डेरा ल' जायब ठीक नहि रहत। तें हम थ्री व्हीलर ठीक कयने अबैत छी ।''

हमरा भूख लागि गेल रहैत अछि । हमरा अविनाशक भूखक चिन्ता सेहो बढ़ि जाइत अछि । मोनाक पतिसँ जिज्ञासा कयला पर ज्ञात होइत अछि जे एहि कैम्पसमे हॉस्पीटलक अपन केन्टीन छैक । आ हम कैन्टीन भजिआब' चलि दैत छी ।

चारि बजैत रहैत अछि । केन्टीन बन्न भ' गेल रहैत अछि । हम निराश घुरि जाइत छी । घुरलमे हमरा दूरेसँ देखाइत अछि जे मोना अविनाश लग आबि, अविनाशकेँ

अपना कोरामे लेने छथि, आ ओकर माथ हँसोथति ओकरासँ किछु-किछु गप क' रहलि छथि।

हमरा आश्चर्य होइत अछि, जे मोना आ अविनाशक मात्र रंग एक छनि, लिंग आ वय आ भाषा धरि एक नहि छनि । तथापि, कोना ओ सभ एक-दोसरासँ सटि अपनामे गप क' रहलि छथि ?

हम लग अबैत छी । हमरा उदास घुरल देखि मोना मौन भंग हमरा लग करैत छथि-''बारह बजेक एप्वाटमेंट छल, चारि बाजि रहल छैक, डॉक्टरक व्यवहार ठीक नहि छैक ।''

हम कहैत छियनि-''अगिला शनि आउ, डॉक्टरकेँ हम कहबनि जे पेशेंटकेँ देल समयक सेहो कोनो महत्त्व दियौक ।''

मोना चट उत्तर दैत छथि-''अहाँ किए' कहबैक ? हम कहबैक । आब हम एकसँ दू भेलहुँ अछि । डॉक्टर अपन देल समय पर हमरा सभक इलाज करथि, डॉक्टरकेँ से कहब हमर अधिकार थिक ।''

हम अनुभव करैत छी, जे हमर दायित्व घटि रहल अछि ◻

राजमोहन झाक कथा 'आदंक' सँ

मुदा रहै । बहुत बड़का बात रहै-जते हम कहियो सोचियो नहि सकैत छलहुँ। कहलहुँ ने, कोनो-कोनो घटना जखन घटित होइत रहैए, तँ तखन वा ओकर तुरंत बाद ओकर पूरा अर्थ बुझबा मे नहि अबैत छैक । एहि घटनाक भयावहता वा विकरालताक हमरा कनियो अन्दाज नहि भेल छल, तें सभ किछु खेल जकाँ बुझा रहल छल । मुदा आइ दस दिन बाद जखन अपन ड्रावर मे हम ओ घड़ी पड़ल देखलहुँ, तँ जेना साँप देखि लेने होइ । पूरा शरीर मे माथ सँ ल' क' पयर धरि आदंकक एकटा थरथराइत डाँड़ि घिचा गेल ।

हम चिचियाक' पिंकू कें सोर पाड़लिऐ । पत्नी कहलनि जे ओ तँ भोरे विवेकक संग बाहर निकलल अछि ।

कथा

सुस्मिता पाठक

भूमिका

नमहर-चौड़गर फ्लैटक पहिल कोठली सुन्न पड़ल छल, जतय ओ सूतैत छलै। पाछाँ दिस, जेम्हर सुनसान छलै, एकटा खिड़की खुजैत छल, जतय सँ शोक-संतप्त हवाक झोंका अबैत छल आ ओछाइन पर धूरा-गरदा भरि दैत छल । फर्श पर खढ़-पात आ धूरा जमा भ' गेल छलैक । ओहि धूराक कारणे ओकर खूनक निशान नुका गेल रहैक ।

खूनी कतय नुकायल रहैक, ई ज्ञात नहि भ' सकल छलैक । मात्र ओकर पत्नी कें बूझल रहैक । उत्सवक रातिकेँ जघन्य अपराध मे बदलि देब' बला वहशीक आहटि धरि सँ ओ परिचित छलि । मुदा एहन दुर्घटना भेलैक अछि आ ओकर पति मारल गेलैक अछि, अपन होश-हवास सँ बेखबर, ओ मानबाक लेल तैयार नहि अछि । ओकरा लेल ई कोनो असत्य कथाक एकटा अंश छलैक । मुदा ओकर आँखि खून सँ लथपथ मूइल पड़ल अपन पतिकेँ देखि रहल छलैक । एकटा उमेदक अंत, तीन-तीन टा छोट बेटीक अंधकारमय भविष्यक आभास ।

एहि बेटी सभक भविष्यक खातिर ओ दिन-राति मेहनति करैत रहैत छल । कमयबाक जेना धुन सवार भ' गेल छलैक ओकरा । यैह पाइ ओकर प्राण ल' लेलकै प्राय : ।

सांत्वना देब'बला, अपन आ आन अनेक प्रकारक शक आ संदेह क' रहल छल । के मारि देलकै एकरा...? ककरो सँ शत्रुता नहि रहैक ।...अरे, पाइ बड्ड छलैक एकरा लग, पाइक लोभें कहीं कनियें तँ नहि...। सब क्यो अपन-अपन परिधि मे, शक आ संशय मे डूबि-उगि रहल छल ।

ओ सब किछु सुनि रहल छलि । टूटल छाती मे प्रतिरोधक हिम्मति नहि छलैक। ओ लुटायल-पिटायल अपन दर्द समेटन निढाल पड़ल छलि । ओकरा पुछयबला क्यो

नहि रहैक । ओकर अपन एकाकी चेतना मे ओ राति भरि आहत चिड़ै जकाँ छटपटाइत रहल छलि ।

तूफानी राति आ बरखा अकस्मात शुरू भेल छलैक । साँझ मे मौसम साफ रहैक आ ओहो मौसमे जकाँ धोअल-पोछल बहुत प्रसन्न रहैक ।ओहि दिन अनेक वर्षक मेहनतिक उपहार भेटल रहैक ओकरा । लाखां टाकाक एकटा चेक । दिन-राति ठीकेदारी मे एक कयने रहैक । एहि उपलब्धिकेँ ओ उत्सव जकाँ मनब' चाहैत छल मुदा एकसरे नहि । अपन किछु मित्रकेँ, जे ओकर दुख-सुख मे संग रहैत छल, तकरो ओ निमंत्रित कयने छल ओहि दिन ।

दारू आ मुर्गा...बाहर मे बरखाक संगीत...जिनगीक सभटा प्रसन्नता ओहि समय जेना ओकरा सभ लग समेटि क' आबि गेल रहैक । अनवरत ठहाकाक गूंज दू कोठरीक बीच होइत कीचन मे व्यस्त रूपा सेहो सुनि रहल छलि । सुनि रहल छलि आ प्रसन्न भ' रहल छलि । थकावटि सँ अंग-अंग टूटि रहल छलैक मुदा एहि प्रसन्नताक आवेग मे जेना एकदम थाकलि नहि छलि ।

रातिक एक बाजि गेल रहैक । सबसँ छोटकी बेटी अकस्मात चेहा उठलि आ कानय लागलि । एकटा बिलाड़ि अपन मुँहमे मूसकेँ दबौने खिड़की पर सँ कूदि गेल छलै, सैह देखि प्रायः ओ चेहा उठल छलि ।

पाछाँ मे आबि क' ओ ठाढ़ भ' गेल रहैक । ओकर आँखि लाल भ' आयल रहैक आ ओ पत्नी सँ अपन आँखि चोरा रहल छल-'दिय', हमहीं थारी ल' जाइत छी । फेर अपना सभ संगहि खा लेब । तावत अहाँ छोटकी केँ, ठोकि सुता दियौक'। ओ पतिक आँखि दिस ध्यान नहि देलक । छोटकी के सुतबैत-सुतबैत ओकरो आँखि लागि गेलैक । निन्न मे जखन ओ गोलीक आवाज सुनलक तँ चौकि क' उठि गेल। कोठली मे क्यो नहि रहैक । सब क्यो बहुत पहिने चलि गेल रहैक आ ओ खून सँ नहायल फर्श पर निश्चेष्ट पड़ल छलैक । थारी जहिनाक तहिना टेबुल पर राखल रहैक ।

ओ सोचि नहि पबैत छलि जे ई सत्य थिक अथवा ओकर आँखिक देखल कोनो भयानक दुःस्वप्न । ओ अपन मृत पतिक देह सँ लिपटि कए कानियो नहि सकलि। अकस्मात आयल ई विपत्ति जेना ओकरा जड़ क' देलकै । ओकरा लगलै जेना ओ बरफक सिल बनि गेलि हो, जे आब पघिलि-पघिलि क' कोठली मे पसरल पतिक खून मे मिलि क' बहय लागत । ओ अपनाकेँ यत्नपूर्वक सम्हारबाक चेष्टा कयलक।

अपन छोट-छोट बेटीकेँ ओ की कहि परबोधत...कोना कहि पाओत जे ओ, जे ओकरा सभसँ ओकर पिताकेँ छीनि लेलकै, ओकर सभक टिंकू अंकले थिकै । मिठाइक

डिब्बा बला टिंकू अंकल, जकरा पर ओकर सभटा बेटी अपन जान दैत छलैक । जे एहि घर-आँगनक भ' क' रहि गेल छलैक, भौजी-भौजी कहैत जे थाकैत नहि छल कखनो ।

मन अविश्वासक देहरि नांघि गेल छलैक । टेबुल पर पड़ल घड़ी आ एक पयरक एकटा चप्पल...प्रमाण लेल हड़बड़ी मे छोड़ि गेल छल हत्यारा । ओहि घड़ी बन्हने हाथक रोइं-रोइं सँ ओकर आँखि परिचित छल । ओ मुठ्ठी मे ओहि घड़ीकेँ जोर सँ दाबि लेलकै ।

ओ कानि नहि सकलि । बेहोश भ' गेलि । ओकर मुनाइत आँखिमे प्रतिकारक लपट बन्न भ' गेल छलैक । आब ओकर पतिक हत्याराकेँ जहिया फांसी हेतैक, ओही दिन पतिक नाम पर कानत ओ ।

सांत्वना देब' बलाक कमी नहि छलैक । अटकल लगब' बला सेहो कम नहि रहैक । सभ अपन-अपन कहैत छल, अपने सुनैत छल आ लहासकेँ देखि घुरि जाइत छल । मुदा रूपा अपन सोचक वृत्त मे योजना बना रहल छलि ।

आब एक्के व्यक्ति पर भरोस बचल रहैक । आन सभ पर टिकल विश्वास खंडित भ' गेल रहैक । मुदा विधायक अमर बाबू उदार आ नीक लोक छलाह । ओकर पतिक अभिन्न मित्र, मार्गदर्शक आ आत्मीय । चुनाओ मे जान-प्राण लगा देने रहैक ओकर पति । मेहनति सफल रहलै आ अमर बाबू जीति गेल छलाह । विधायक बनि क' गेल रहथि, ताहि दिन ओकर पति कतेक प्रसन्न रहैक । अमर बाबू कृतज्ञ रहथि, हरेक अवसर पर मदति कयने रहथि । पतिक भाग्योदय मे हुनक पैघ योगदान रहनि कोनो चीज लेल बेथूत नहि होब' देने रहथि । अमर बाबूकेँ आवश्यकतो रहनि एहन व्यक्तिक, जे दिन आ रातिमे भेद नहि करय ।

हत्याक सूचना भेटिते आबि गेल रहथि अमर बाबू । हुनक एतेक शीघ्र आगमनक आशा ककरो नहि रहैक, कियैक तँ ओ कोनो विशेष यात्रा पर बहरायल छलाह । हुनक अबिते हरबिराड़ मचि गेल छलैक । हुनक उज्जर गाड़ी रूपाक आँखि मे आशा आ विश्वासक हजार-हजार किरिन भरि देने रहैक । ओकरा लागल रहैक जे ओ अकस्मात बहुत मजबूत भ' गेलि अछि ।

अमर बाबू ओकरा पतिकेँ अपन स्वजनक खाढ़ीमे रखने छलाह, ताहूसँ बढ़ि कए । आब ओ आबि गेल छथि तँ ओकरा न्याय अवश्ये भेटतैक । ओकरा लगलैक जे ओ अत्यन्त तिक्ख रौदमे ठाढ़ि हो आ अमर बाबू ओकरा माथ पर सघन छाया क' देने होथि ।

नजरि मिलैत देरी अमर बाबू फफकि-फफकि क' कानय लगलाह-'एकर चलि जयबाक दुख अहाँ सँ कम नहि अछि हमरा, हम तँ आब एकदम एकसर भ' गेल छी...।' भर्रायल आवाज मे एतबे कहि सकलाह अमर बाबू ।

ओ उत्साहित भेल छलि । एकाकीपनक हताशा तत्काल थोड़ेक मंद पड़ि गेल रहैक । अस्त-व्यस्त मोनके समेटैत ओ बाजलि-'आब सब किछु अहींक हाथमे अछि। हमरा ह्रदय कें शांत कऽ दिऔ भाइसाहेब । अपराधी कें सजाय दिअबियौक, हमरा लग सभ साक्ष्य अछि । हम एकसर की क' सकैत छी...।

अमर बाबूक चेहरा अनेक रंग मे परिवर्तित भेल आ उज्जर भ' क' जेना ठहरि गेल । ओ गंभीर भेल अपन नजरि उठौलनि आ ओकरा चेहरा पर स्थिर क' देलनि-'साक्ष्यक जरूरति नहि छैक, हमरा सबकिछु बूझल अछि ।' ओ धीरे सँ बाजि गेलाह ।

एम्हर-ओम्हर चौचंक भेल, ओ तकलनि आ एकटा ब्रीफकेस ओ रूपा दिस बढ़ा देलनि । ओ किछु बूझि नहि सकलि, निरीह याचक जकाँ अमर बाबू दिस तकैत रहलि ।

'...एकरा ओरिया क' राखू । बेटी सभहक विवाह-दान मे काज आओत आ ओहि सभ साक्ष्यकें नष्ट कए दिऔक...।'

ओ हतप्रभ भ' गेलि, बेचैन भ' पूछि बैसलि-'ई कोना संभव अछि ? अहीं पर आस लगौने मनक टूटैत तारकें कोनहुना जोड़ि कए बैसल छी हम । अन्यायकें आत्मसात कए कोना जीबि सकब ? ओ आगाँ बाजि नहि सकलि । ओकरा अपने आवाज दम तोड़ैत बुझा रहल छलैक ।

कुरसी पर बैसल व्यक्ति ओकरा विधायक अमर बाबू नहि लागि रहल छलैक। ओकरा आँखि पर जेना धोन्हि पसरि गेल होइ । ओकरा लगैत रहैक जेना अमरबाबू के दुनू कात पैघ-पैघ बल्ब जरि रहल होइ आ केओ हुनक फोटो खींचि रहल होइ आ अमर बाबू निस्पृहता आ अन्यायीक भूमिकाक सफलताक चरम पर होथि...। सोझाँ मे बैसल ई व्यक्ति अमर बाबू नहि, कोनो अभिनेता होथि...रूपाकें लागि रहल छलैक जे ओकर पति मुइल नहि होइक, सब किछु जेना छल हो, नाटक हो...आ अमर बाबू परिहास कए रहल होथि...।

ओ स्तब्ध भेल अमर बाबू दिस तावत देखैत रहलि जावत ओ उठिकें ठाढ़ नहि भ' गेलाह । चमचमाइत जूता मचमचा उठल । नजरि नीचा कयने ओ बाजि उठलाह-'अहाँक मनोदशा हम बूझि रहल छी । मुदा जे हत्या कयलक, ओ हमर दोसर

लाठी थिक । पहिल लाठी अहाँक पति छल । ओकर टूटि गेलाक बाद हम एकरो नहि तोड़य चाहैत छी । फेर जखन अहाँक घर नष्ट भइये गेल अछि तखन फेर एकटा दोसरो घर कें बरबाद कयला सँ की फायदा...अनुग्रह राशि अहाँकें भेंटि चुकल अछि...। आब कखनो मुँह खोलबाक प्रयास नहि करब...। अमर बाबू फुसफुसा उठलाह।

आ ठीके, तकरा बाद रूपाक मुँह नहि खुजि सकल, दुनू ठोर एक-दोसरा सँ सटि गेलैक । आँखि गोल भ' गेलैक । बताहि जकाँ ओ अपन केश नोचय लागलि। शीघ्रता सँ जा रहल अमर बाबू सँ ओ चिचिया क' पूछय चाहैत छलि 'विधायक जी, रूकू, सुनैत जाउ...। अभिनय मे जीत नायकेक होइत अछि, खलनायकक पराजय निश्चित होइत छैक...। अहाँ खलनायक थिकहुँ अमर बाबू...खलनायक ।'

मुदा ई तमाम शब्द ओकर मस्तिष्क सँ ल' क' सम्पूर्ण शरीर मे चक्कर मारैत ओकरा आँखि मे आबि स्थिर भ' गेलैक । आँखिक सोंझा जीवन छलैक । नाटक नहि...।



जीवकान्तक कथा 'सीड़क' सँ

सुनराक बेटा मुरूत सँ कुकुर भ' गेल आ सीड़ककें झपटि लेलक आ अपना बापक हाथ मे फेंकि देलक । सुनरा ससरल ।

मनता सुनराकें पछुऔलक । बताहि विलाड़िक बच्चा एकटा कुकूरक पाछाँ खेखनैत विदा भेल ।

सुनराक बेटा आर खौंझायल कुकूर भ' गेल आ मनताकें पकड़ि लेलक।

मनता माटि पर उतान भ' पड़ि रहलि आ मुक्का भाँज' लागलि आ ओकरा मुँह सँ गारिक लाबा फट्-फट् फूटि क' छिड़िआय लगलैक ।

सुनराक बेटा ओकरा छाती पर बैसल रहल आ ओकरा पाछाँ मनताक दुनू टा नाङट कारी, रौद मे चमकैत टाङ उठैत-खसैत रहलैक ।

अनिरूद्ध बाबू दूर सँ ढेप फेकलनि-चिन्नी बाबू, चलू, फेकू पंचकठिया।

कथा

प्रेमचन्द्र पंकज

ढाल

ओ डंग झारनं चल जा रहल छल । कखनो-कखनो पाछू उनटि क' ताकि लैत छल । आब डर हुअ' लागल रहैक ओकरा ।

दोसर-तेसर साँझ भ' गेल रहै । रहैक त' इजोरिया पक्ष मुदा पाँचमे दिन । काल्हिये त'-चौठचन्द्र पावनि रहैक । मेघ लागल छलैक । एहन अन्हार नहि रहैक जे बाट नहि सूझै । सं किछु दूर आगुओ धरि देखाइत रहै । हँ, ओतेक फड़िच्छ नहि छलै । तें ओकरा चलबा मे असौकर्य नहि बूझि पड़ैक । मुदा ओ भीतर सँ डेरा रहल छल । बूझि पड़ैक जे कियो पाछू सँ आबि रहल छै, ओकरे खिहारने । ओ पाछू उनटिक' ताक' नहि चाहलक । ओ बढ़ले चल जा रहल छल । मोन मे अनेक तरहक आशंका सभ मूड़ी उठा रहल छलै कोनो जुआएल बिषधरक फन जकाँ । होइक जे कियो कोम्हरो सँ' हुल्ल द' आगू ने आबि जाइ, तें डेग झार' लागए । फेर होइक पाछू सँ नं क्यो आबि रहल अछि-खिहारने । आ' डेग तेज भ' जाइ । फेर होइक आ जँ आगूएँ सँ कियो अबैत होइ ? तखन की करत ? मुदा डेग ठमकैलक नहि ।

पाछू मे किछु खड़खड़ेलैक । भेलैक साइकिल खड़खड़ाइत छैक । कहुना क' उनटि क' तकलक । छाती धक्क द' रहि गेलैक । आब ? किछू दूर पाछाँ एक गोटे साइकिल पर आबि रहल छलैक-गीत गबैत । रेडी बला गीत । ओकर देह घाम सँ नहा गेलैक । चलब तेज भ' गेलैक । अन्हार एवं डरक कारणें ई नहि देखि सकल रहय जे ओ आदमी पएरें साइकिल गुड़कबैत आबि रहल छैक आ कि साइकिल पर चढ़िक' । ओकरा बूझि पड़लैक जे ओकरे खिहारने आबि रहल छैक । चलब आब और तेज नहि भ' रहल छलैक । साईकिल बला ओकरा लग आबि गेल रहैक । गीत गाएब बन्द भ' गेल रहैक । अस्पष्ट स्वर मे गुनगुनाए लागल रहए । आब साइकिल बला ओकर बराबर पाँजर मं चल आयल रहैक । गुनगुनाएब सेहो बन्द भ' गेल रहैक।

साइकिल बला ओकरा दिस गऽर क' क' तकितो रहैक आ साइकिल सेहो हकने जा रहल छलैक। बूझि पड़लैक जे अन्हार मे चिन्हबाक प्रयास कएने होइ । भेल रहैक जे साइकिल बला आब साइकिल पर सँ उतरतैक । मुदा, उतरलैक नहि, बढ़ि गेलैक आगू ।

मोन मे भेलैक जे अखन ई आगू बढ़ि गेलैए । आगू कत्तौ रूकतैक-पाछू सँ एकर कोनो संगी जँ अबैत होइ ।

ओ फेर पाछू उनटि क' तकलक डेराएले नजरिए । मुदा, कतौ ककरो नहि देखलकै । फेर आगू ताक' लागल । साइकिल बला आगू बढ़ल जा रहल छलैक । बेसी आगू भेल जा रहल छलैक । ओ पाछू छूटल जा रहल छल । भेलैक जे साइकिल बला कोनो बटोही छलैक । ओ ओकर पछोड़ नहि कएने रहैक । तें एहि साइकिल बलाक पाछू-पाछू जएबा मे सुरक्षाक अनुभव भेलैक । ओ फेर डेग झारलक । ओकर चलब तेज भ' गेलैक । नजरि साइकिल बलापर रहैक जे आब अन्हार मे विलुप्त भेल जा रहल छलैक । एकाएक बूझि पड़लैक जे साइकिल रूकि गेलैक आ ओहि पर चढ़ल व्यक्ति उतरि क' नीचा मे ठाढ़ भ' गेलैए ।

ओ झटकारनहि चल जा रहल छल । मुदा मोन मे फेर डर पैसि गेलैक । भेलैक जे आब एकान्त मे आबिक' ठाढ़ भेलैए । ओ चारू भर नजरि खिरौलक। दूर-दूर धरि पसरल वाध । दुनू कात धन खेती । धानक हरियरी अखन कारी भ' गेल छैक-से आओर भयाओन लगैत छैक । दुबगली धनखेती आ बीच द' बाट-बेस चाकर-एक गाड़ीक लीखसँ बेसी ।

साइकिलबला ठीके ठाढ़ रहैक-धनखेती दिस पश्चिम मुँहें ।

ओकर डेग पताए लगलैक । आब निश्चित ई बदमाशी करतैक । आगू बढ़बाक साहस नहि भ' रहल छलैक । मुदा, रूकियो नहि सकैत छल तें चलिते रहल ।

आब पछताइए । घर सँ डेग निकालबाक निर्णय एकदम अनुचित बुझाइत छैक। नहि निकलबाक चाहैत छलैक आ सेहो राति-विराति । इयह भेलैक घर छोड़ि घुरमुग्यिा खेलाएब । मुदा....।

ओ एकटा नमहर साँस घीचैए । आँखि डबडबा जाइत छैक । मोन होइत छैक हिचुकि-हिचुकि क' कान' लागए । मुदा, ओ अपनाकेँ सक्कत करैए ।

साइकिलबला ओहिना ठाढ़ रहैक-धनखेती दिस पश्चिम मूहें । साइकिल रस्ता पर एककात कएल लागल रहैक । तकर सटले साइकिलबला ठाढ़ लग्घी क' रहल छलैक । ओ सोझे आगू बढ़ि गेल । साइकिलबला दिस कनडेरिये तकैत । साइकिलबला

अपन जगह पर सँ हिललै आ साइकिल दिस मुँह क' ठाढ़ भ' गेलै–पेन्टक चेन लगबैत। फेर साइकिल पर चढ़ि गेल आ ओकरा दिस गरसँ तकैत आगू बढ़ि गेलैक । ओकरा साइकिलबलाक फेर गरसँ ताकब भीतर धरि सिहरा देलकै । मुदा, साइकिलबलाक आगू बढ़ि गेलाक कारणें ओ अपनाकेँ किछु हल्लुक अनुभव कएलक ।

आब बुन्दाबुन्दी शुरू भ' गेल रहैक । ओ ऊपर मेघ दिस तकलक-एकदम कारी भयाओन मेघक एकटा टिक्कड़ रहैक । ओकर डेग तेज भेल जा रहल छलैक, संगहि-संग बून्द सेहो पैघ-पैघ आ घनगर भेल जा रहल छलैक । आब भिजनहिं कुशल। डेग आओर तेज भ' गेल रहैक । एक हिसाबसँ दौग' लागल रहए ई सोचि क' जे आगू स्कूलक ओसारा पर चलि जाएत आ भिजबासँ बाँच जाएत । देह सर्दियाह छैक। भीजब अपकार करतैक ।

ओ धड़फड़ाएले स्कूलक ओसारा पर चढ़ि गेल रहए ।

''सरियाक' आएब । साइकिल छै ।'' ई स्वर सुनि चौंकि उठल । नजरि उपर उठौलक । मुदा, ओसारा पर बेसी अन्हार रहबाक कारणें ने तँ साइकिलेकेँ देखलकै आ ने बजनिहारेकेँ । थकमका क' ठाढ़ भ' गेल रहए। सौंसे देह घाम बुनबुना आएल रहैक । तखने बिजलोका लोकलै । किछु काल मात्रक लेल सौंसे वातावरणक संग स्कूलक ओसारा सेहो इजोत सँ नहा गेल रहैक । ओतबहि कालमे ओ देखलक जे एक हाथ आगूमे साइकिल लागल छैक आ तकर ओहिकात एक आदमी ठाढ़ छैक। निश्चय ओएह साइकिलबला छियैक जे बाहर मे अभरल रहैक । आब की करत ? मोन भेलैक जे विदा भ' जाए पानिमे भीजिते । मुदा फेर सोचलक जे जँ सएह हेतैक त' मनसा खिहारि क' नहि पकड़ि लेतैक ?

आत्माक अर्न्ततम भाग सँ एकटा कूही उठलैक । नोर भरि गेलैक आँखि मे।

''ओह, दसो मिंनट आर रूकि जइतै बरखा, त' हम सभ घर ध' लीतहुँ ।'' साइकिलबला बड़बड़ाएल रहैक । फेर कनेकाल चुप रहलाक बाद पुछने रहैक, ''अहाँ कत' जेबै यै ?'

ओ नहि किछु बाजल । नोर बहैत रहलै

''अहींकेँ पुछलौं, कत' जेबै ?'' फेर प्रश्न ।

ओकर कानब' तेज भ' गेलैक ।

''कानै छियै ? किछु भेलए की ?'' पुछलकै साइकिलबला ।

''नञि'' कहुना क' बाजि सकल रहए ।

''कत' जेबै ?'' किछु बेसी नरम स्वर भ' गेल रहैक साइकिलबलाक ।

''बिट्ठो।''

''ककरा ओत' ?''

''जिबुआ ओत' ।''

''जिबुआ ओत' किछु भ' गेलैए की ?''

''नञि ।''

''तखन कानै किए छियै ?''

''....... '' किछु नहि बाजल ।

''डर होइए की ?''

''नञि ।'' ओकर कानब तेजी पकड़ि लेने रहैक ।

''तखन किए कनै छी ?'' फेर जोर देलकै ।

''भागि क' जाइ छियै ।'' आ फफकि-फफकि क' कान' लागल ।

साइकिलबला एकटा नमहर साँस घिचलक ।

''गलती काज कएलौं । एना राति-विराति नहि निकलबाक चाही । भिनसर नहि होइतै की ?''

''तामसे एहन होइ छै, जै पर लोक किछु क' लैए ।'' ओ अपनाकेँ संजत करबाक प्रयास कर'- लागल ।

''की भेल रहए से ?'' पुछलकै साइकिलबला ।

''आठ-नओ बर्खक एकटा ननदि अछि । ओकरा कहलियै बरतन माँजै ले । से नहि माँजि देलक । तै पर तामस चढ़ल त' एक चटकन मारि देलियै ।'' फेर कान' लागल । आ कनेकालक बाद आगू बाजलि, ''तैं ले' हमर ससुर मारबो कएलक आ कहलक भागि जो एत' स' ।''

''घरबला बाहर रहै छथि की ?''

''हँ, मुदा अखन गामे मे छै । ओ आएल त' ओहो मारलक । हम हरदम दुखीत रहै छियै कि ने तै मे जे खर्चा होइ छै, तै दुआरे हम ककरो नहि सोहाइ छियै ।'' कनैत-कनैत बाजल ओ ।

''अच्छा, कानू नहि । सभक परिवार मे एहिना होइ छै ।'' बोल भरोस द' क' पुछलकै साइकिलबला, धीया-पूता अछि की ?''

''भगवान सेहो नञि देने छथि ।''

''विवाह केना कतेक साल भेलए' से ?''

''तेसरा साल फागुने मे भेल । आब जे फागुन औतै त' चारि बरख भ' जाएत।''

साइकिलबला चुप भ' गेलैक । किछु नहि बजलैक ।

ओ सोच' लागल साइकिलबलाक मादे । 'बटोहिये छियै, पछोड़ नहि कएने अछि । गप-सपसँ सेहो नीक लोक बुझेलैक । मुदा, धीया-पुता द' किएक पुछलकै? कहियो वियाह भेल तें सँ एकरा की मतलब ? ओ साइकिलबला दिस तकलक। अन्हारक कारणें एकटा छाह मात्र बुझेलैक । फेर बाहर तकलक-अन्हारक साम्राज्य पसरल छलैक चारूकात । अन्हार गुप्प । अन्हारक कारणें एकरा उमेरक पता नहि लगलै तें बाल-बच्चाक मादे पूछि बैसलै । आ जे जे साइकिलबला पुछने गेलै ओ कहने गेलै । एकबेर फेर साइकिलबलाक मुँह दिस तकबाक प्रयास कएलक । बिजलोका लौकलै । साइकिलबलाक मुँह बड़ भयाओन लगलैक । ओ भीतर धरि सिहरि गेल। मोन भेलैक भागि पड़ाए एत' सँ ।

"बुनछेक भ' गेलै, बुझाइए । चलू हमहूँ ओम्हरे जाएब ।" साइकिलबला साइकिल उतार' लागल । ओ ओहिना ठाढ़ रहल । साइकिलबला स्कूलक बीच अङनइ मे चल गेल रहैक । ओत सँ चिकरिक' बाजल" एकदम बुनछेक भ' गेलै । चलू, बड़ अन्हार छै । असगर डर होएत ।'

ओ द्वन्द्व मे फाँसलि रहए । की करए ? एक मोन कहै-नीक लोक छै, एकरा संग जएबा मे कोनो हर्ज नहि । मुदा, दोसर मोन संग जएबा सँ मना करै

"हम बढ़े छी त' ।" साइकिलबला बाजल । मुदा बढ़ल नहि । ओहिना ठाढ़ रहल । साइकिलबलाकेँ ओहिना ठाढ़ देखि ओ फेरसँ डेरा गेल । ओम्हरे तकैत रहल। किछु कालक बाद साइकिलबला लग इजोत भेलैक । ओ ओकरा दिस गर क'क' ताक' लागल । साइकिलबला बीड़ी आ कि सिकरेट लेसने रहैक । सलाइक जरैत काठीकेँ स्कूलक अङनइमे फेकि देलकै । सिकरेट आकि बीड़ीक एक सोंट घिचलक। साइकिल के ओहिना ठाढ़ छोड़िक' स्कूलक ओसारा दिस विदा भेल । ओकर करेज काँप' लगलैक। 'आब निश्चय बदमाशी करतै' -साइकिल बला ओसारा दिस बढ़ल चल आबि रहल छलैक । कानब बिसरि गेलि रहए । साइकिलबलाकेँ अपना दिस बढ़ैत देखि ओकर होश उड़ल जा रहल छलैक । देह घामसँ नहाएल जा रहल छलैक। साइकिलबला तैयो बढ़ले आबि रहल छलैक । ओसाराक सीढ़ीपर सेहो चढ़ि गेल रहैक कि तखने साइकिलबलाक देह इजोत मे नहा गेलैक । कियो बाट दिससँ टॉर्च बारि देने रहैक एम्हरे ।

"के छी यौ, भाइ साहेब ? एकटा जनाना केँ देखलियै एम्हर की ?" स्वर बाट पर सँ आएल रहैक । स्वर सुनि क' ओ चौंकि गेलि रहए । ई ओकरे घरवलाक स्वर छलैक ।

"हँ. हँ, इएह स्कूलक ओसारा पर छथि ।" साइकिलबला चिकरिक' उतारा देलकै ।

टॉर्चक इजोत स्कूलक ओसारा पर पड़लैक । ओ प्रकाश मे डूबि गेल ।

साइकिलबला ओसाराक एकटा खाम्हसँ सटाक' राखल झोड़ा उठौलक आ साइकिल दिस ई कहैत बढ़ि गेल, "आइ मसाला पिसले रहि जइतए । माछक झोड़े बिसरल जा रहल छलौं ।"

ओकरा गप्प सुनिक' हँसी लागि गेलैक-भीतर-भीतर । ओ सोचलक साइकिलबला ठीक लोक छै । टार्चक इजोत ओकरा दिस बढ़ल आबि रहल छलैक। इजोत पतिक हाथ मे रहैक । आ डरक गछाड़ सँ मुक्त भ' रहल छल । आब मेघ आ चन्द्रमा चोरा नुक्की खेलाइमे लागि गेल रहय ।

❑

सामाजिक चेतनाक कथा मैथिली मे बड़ कम लिखल गेल अछि । ललित एहि प्रकारक किछु कथा अवश्य लिखलनि, किन्तु हुनको कथा-साहित्य मे अवान्तर प्रसंग भेंटैत अछि । 'अगुरवान' आ 'छठि परमेसरी' धुमकेतुक महत्वपूर्ण कथा अछि, प्रतिनिधि कथा नहि । एहिना गोटपगरा उदाहरण आरो भेंटि सकैत अछि । मुदा, स्थिति यैह अछि जे युगीन बोध सँ सम्पृक्त भइयो क' सामाजिक चेतनाक कथा-लेखनक गति बड़ मन्थर अछि । आजुक प्रखर चेतनाक मुखर कथाकार रमेश पर्यन्त कथाकार वा साहित्यकार केँ नागदंश मे अयनाक व्यवसायी बूझैत छथि । तथापि निराश होयबाक स्थिति नहि अछि । प्रतिलोम, चिन्ता, दिनकर बाबू के भ्रम भेल छलनि तथा हीरा जनम तिहारो सदृश कथाक तर्जनी-संकेत सामाजिक चेतनाक बाट दिस अछि आ तत्काल यैह संतोषक विषय थिक ।

-मोहन भारद्वाज

कथा

अनलकान्त

कुपुत्रोवाचऽ

घर घुरैते एहि घटनाक मादे जानिक' सन्न रहि गेलहुँ । हम पूछ' चाहैत रही जे अहाँ एना कोना कयलहुँ, मुदा ताबत अहाँ स्कूल जा चुकल रही । हम एखन धरि आश्चर्य मे छी जे एहन घटनाक बादो अहाँ स्कूल जयबाक स्थिति मे कोना रहलहुँ...?

क्रोधक उत्तेजना मे नहि, अपितु पीड़ित रहितहुँ सचेत भ' ई सभ लिख' पड़ि रहल अछि । हमरा एहि बातक पूरा-पूरा भान अछि जे अहाँ एक सुयोग्य, आधुनिक आ प्रगतिशील सोचक व्यक्ति रहलहुँ अछि । निछछ पारंपरिक छलाह अहाँक पंडित पिता, माने हमर पितामह, जे प्रकटत: अपन सम्पूर्ण जीवन धर्म, आध्यात्म आ लोकाचारक अनुशरण मे बीता' देलनि । हुनक कठिन अनुशासनक दमघोटू वातावरण मे रहितो अहाँ अपन अलग बाट बनेलहुँ, तकर सम्मान हम कोना नहि करब ! कालिदास, भवभूति आदिक अमर कृतिक संग बाल्जाक, प्रेमचंद आदिक उपन्यासक प्रशंसक हे हमर पिता महान, जखन अहाँ खूब जोशमे आबि मार्क्स-लेनिनक पुस्तक पर सेहो समान रूपें बजैत छी आ सोझाँ बला चुप भ' जाइत छथि, तँ सरिपहुँ हमर छाती फूलि क' कुप्पा भ' जाइत अछि !...ककरा एहन पिता पर गौरव नहि होयतैक...?

अहाँ अपन पिता द्वारा निर्मित दमघोटू वातावरण सँ मुक्ति लेल कोन-कोन संघर्ष कयलहुँ, से अहींक मुँहें सुनने छी । विद्वान हेबाक कारणे किछु नून-तेल तँ जरूर लगौने होयब अहाँ, मुदा तैइयो विश्वास करैत छी । जे से ...। आइ हम अपना ढंग सँ अपन रस्ता बना रहल छी, तँ किएक दादाजी जकाँ अहाँक भीतर पागक चिंता जीवित भ' जाइत अछि ? अपन खास, सभसँ छोट मौसी संग अहाँक केहन संबंध रहल, से की हमरा नहि बुझल अछि ? आजुक समय रहैत तँ अहाँ जेना-तेना बियाह करबा मे जरूरे सफल भेल रहितहुँ । बियाह नहि कयलहुँ तें की,.हुनका संग अहाँक संबंध तँ तेहने

रहल ! सुनै छी कुमारि मे हुनका जे रहलनि, से तँ खानदानक इज्जति बचेबाक लेल घरक बुझनुक स्त्रीगण सभ खसबा' देने छलनि, मुदा बियाहक बाद अहाँक बूढ़वा मौसाक नाम पर जे साले-साल हुनका बालक भेलनि, से हमरे बेमातर भाइ सभ छथि ने । ई गप सभ हमरा माय सँ पता चलल अछि जे ओ सोझे हमरा तँ नहि कहलक, अहाँक स्वतंत्र-प्रवृत्ति ल' क' अहाँ सँ होइत कतेको झगड़ा-लड़ाइक बाद जखन ओ रूसल रहैत छलि तखने जतय-ततय बजैत छलि, ताहिसँ हमहूँ सुनलहुँ । गाम मे जे अहाँक बिसनुपर वाली विधवा पितिआइन छथि, तिनका संग अहाँकेँ तँ हम स्वयं देखने रही। मुदा हमर माय जे अहाँक कौचर्च ''जेहने बाप तेहने बेटा हैत ने ! परचट्टाक जनमल परचट्टे !...'' सन बात सँ करैत छलि, तँ ओहिक्रममे इहो बाजलि छलि जे अहाँक इएह बिसनपुर वाली पितिआइन संग अहाँक पिता, माने हमर पितामह, केँ कतेको बेर असामान्य स्थिति मे देखल गेल छल । जखन कि दुनू मे संबंध भैसुर-भावहुक छल, मुदा खानदानक मर्यादा पर झाँपन देबाक लेल सभ-चुप रहल।

लोककेँ जे लगै, हम एकरा स्वाभाविके मानैत रहलहुँ अछि आ तें हमरा कहियो बड़ बेजाय नहि लागल । हमरा अहाँक आधुनिक ढंगसँ प्रसन्नते होइत रहल छल । हमर मित्र सभ कतेको बेर अहाँके स्कूलक कतेको छौंड़ीकेँ देखबैत हमरा कहने होयत जे ''ई तोहर नवकी ''मम्मी'' छियौ'' आ हम तकर जवाब मे इएह कहैत रही, ''माइ फादर इज सो यंग, ब्राउड माइन्डेड एण्ड माउड । आइ प्राउड ऑफ हिम ।'' आ सत्ते हमरा गौरव जकाँ होइत छल ।

अहाँकेँ एकटा गप मोन होयत । पछिला साल बोर्ड परीक्षा देब' खातिर अहाँक भागिन मनोहरक कनियाँ आयलि छलि । अहींक स्कूल मे सेंटर भेल छलै । भगीनपुतहु छलि अहाँकेँ, तें जाइ तँ छलि अलग रिक्सा पर, मुदा सुनने छलहुँ जे दुपहरकेँ टिफिन मे अहाँ दुनू एक्के संग खाइत रही । ई गप प्रभाकेँ कहलहुँ तँ ओ मुस्किआइत बाजलि छलि, ''हमरा सभकेँ एहन पिता पर गर्व करबाक चाही आ एकर जवाब एक्केटा भ' सकैछ जे हम अहाँ केँ ल' क' भागि जाइ आ अहाँक माथ मे सिनुर घसि दी ।''

''हमरा माथ मे अहाँ घसब की अहाँक सिउथ मे हम ?''

''अहाँक सिउथमे हम ! सभ दिन सिउथ मौगीयेक माथ पर रहतैक ?''

मुदा हमरा सभ मे सँ केओ ककरो ल' क' नहि भागि सकलहुँ एखन धरि। केवल अहाँ द्वारा प्रदत्त स्वतंत्र वातावरण मे विकास करैत गेलहुँ, जे नेनपने सँ करैत रही आ जाहि पर अहाँ प्रसन्न होइत रही । अपन एहि प्रसन्नताक उद्गार जतय-ततय व्यक्तो कयने छी अहाँ । जे से...

हम बढ़ैत चलि जा रहल रही अपना रस्ता पर ।

स्कूल सँ कालेज धरिक परीक्षा मे हमर नीक रिजल्ट, व्यक्तित्व मे होइत निरंतर विकास आ फेर अहाँक बौद्धिक विषय मे हमर रूचि अहाँक प्रसन्नता केँ कतेको गुना बढ़ा' देंने छल ।

अहाँ सुखी रही, प्रसन्न रही आ अहाँक अपार स्नेह मे हम सेहो प्रसन्न आ स्वतंत्र रही । एकरे परिणाम छल जे आइ सँ पाँच बरख पहिने बिना अहाँकेँ पूछने कॉलेज दिनक संगी कुमुदिनी सँ बियाह करबाक निर्णय लेने रही । मुदा एतेक छूटक बादो अहाँक प्रति अतिरिक्त सम्मानेक भाव छल जे घर आबि सोझे अहाँ सँ कहबाक साहस नहि भेल । जखन कि हम अपना मनोनुकूल नौकरी सेहो करैत रही आ गुजर जोगर तँ कमा' लैत रही । तैइयो अहाँ लग सोझे जयबाक साहस नहि भेल आ तें माइकेँ कहलियै ।

उमेदक अनुकूले हमर निर्णय पर सहमतिक मोहर लगब' लेल अहाँ स्वयं हमरा कोठली आबि, बाँहि मे भरि, जखन हमर माथ पर चुम्बन अंकित केने रही, सत्ते कहै छी बाबूजी, हमर खुशीक ठेकान नहि रहल ।

अहाँक महानताक चर्चा के नहि कयने छल जखन अहाँ स्वयं कुमुदिनीक पिता लग जा बियाहक प्रस्ताव देने छलियैक । बियाह तय भेलाक बाद एहि छोट-सन शहरमे सगरे अहाँक एहि आदर्श डेगक प्रशंसा-चर्चा भ' रहल छल ।

ओ तँ हमर अभाग जे कुमुदिनीक पिता पारंपरिक आ पुरानपंथी सिद्ध भेलाह जे पंजियारक पाँजि आ गोत्र सन अवैज्ञानिक बात मे आबि तय बियाह तोड़ि देलनि। अहू प्रसंग मे हमरा अहाँक महानताक गौरव रहल जे अहाँ कतेको मास धरि कतेको एहन प्रयास कयलहुँ जे गोत्रकेँ आधार नहि बनाओल जाय । डार्बिनक अनुबांशिक सिद्धांत आ बियाहक सर्वाधिक अनुकूल स्थिति बुझाब' मे जखन अहाँ स्वयं सफल नहि भेलहुँ, तँ किछु परिचित डाक्टर मित्र सँ सेहो हुनका बुझाबक प्रयास कयलहुँ । कतहु सँ हमरा सँ कम चिंतित आ परेशान अहाँ नहि रही ।

अंतत: बियाह नहि भेला पर सेहो हमरा सँ बेसी अहाँ टूटल रही । 'एतेक प्रयासक बाबजूद एकटा मनुक्ख के ठीक रस्ता पर नहि आनि सकलहुँ ।' बेर-बेर अहाँक मुख सँ बहराइत एहि वाक्यमे निहित पीड़ा एखनहुँ हमरा मोने अछि ।

कुमुदिनीक बियाह तीन लाख टाका गनि खूब धनीक घरमे ओही बरख क' देल गेल छल । ओहि राति अहाँकेँ एकसरे दारू मे डूबल देखि हमरा भीतरक देवदास मरि गेल छल ।

ओही सप्ताह मदन के चोरा' क' बियाह करक सूचना आयल छल । मीनाक मेडिकल बला रिजल्ट सँ ठीक तीन दिन पहिने ।...

हमरा अपना पर जतेक ग्लानि नहि छल, ताहिसँ बेसी चिंता अहाँकेँ ल' क' छल जे अहाँ कोनो खराब डेग नहि उठा' ली । मुदा स्तब्ध रहि गेल रही जखन अहाँ कहने रही, ''महेश, तों जेठ छ', मुदा कोनो दुख नहि कर' । कोनो डाक्टर वा वैज्ञानिक नहि लिखने अछि जे पहिने जेठेकेँ बियाह करक चाही । मदन नालायक अछि, किछु बुझै नहि अछि । ओ जे केलक, से केलक...हम तँ पिता छी ने हौ...जाक' आशीर्वाद द' अबैत छी ।''

सत्ते कहै छी बाबूजी, अहाँक ओहि विचार सँ हमरा बड़ प्रसन्नता भेल छल। आ प्रसन्नता आरो बढ़ि गेल जखन तीनये मास पर द्विरागमन सेहो करबा लेलयनि। घरमे कनियाँक आब' सँ तात्कालिके चहल-पहल टा नहि बढ़ल, स्थायीरूपें घरमे नव उमंग आबि गेल छल । मेडिकल मे एडमिशनक बाद मीनाक दिल्ली चलि गेला सँ घर मे जे अभाव बुझाइत छल, से जेना भरि गेल छल । एकदम मीने जकाँ आधुनिक आ खूजल सोचक छलि कनियाँ प्रभा । श्वसुर, भैंसुर सँ पारंपारिक भेद-भाव आ परदाक विरूद्ध अहाँ रहन-सहनक जे स्वाभाविक-जनतांत्रिक वातावरण अपना ओतय बनौने छलहुँ, से पारिवारिक संबंधकेँ आरो मधुर बना' देलक । मदनक प्रतिकूल प्रभा बड़ व्यवहार कुशल आ शालीन सिद्ध भेलीह आ तें बड़ जल्दी ओ हमर नीक दोस्त बनि गेलीह । अहूँ लेल तँ पुतहु सँ बेसी बेटिये छलि, मीने जकाँ ! मुदा मदन लेल...।

एखनो हमरा दुख अछि जे मदन ककरो दोस्त नहि बनि सकल । हम जनैत छी जे मदनक व्यवहार सँ अहाँकेँ सेहो दुख भेल, गौआँ-समाज सभ तँ ओकरा सँ दुखीये अछि । पछिला बेर डेढ़ साल पर घुरल तँ हम ओकरा बड़ बुझेलियै, ''बौआ, आब बियाह कयने छै । बालो-बच्चा हेतौक, आइ ने काल्हि । आबो एना किएक करैत छैं ? नहि कोनो काज होइत छैक, तैइयो घरे रह । तोरा जे चाही हमरा कह, बाबूजी सेहो कहियो कोनो चिंता भार तँ तोरा नहि दैत छथुन । हम आ बाबूजी कमबैते छी। तों घरे रह आ शांत चित्त सँ मनुक्ख सन व्यवहार कर । कोनो काज कर' चाहैत छह, तँ कह । दोकान करबें, पाइ दैत छियौ ...?'' मुदा ओ कोनो जबाब नहि देलक । दोसरे राति कनियाँकेँ खूब पीटलक आ सभटा गहना ल' भागि पड़ा' गेल, से तँ अहाँकेँ बुझले अछि ।

मदन नहि सुधरल, नहि सुधरत से अहूँ अनुमान करैते होयब । पता नहि ओ कोन मानसिकताक अछि, मनोचिकित्सके कहि, सकैत अछि । ओना अहाँक स्वतंत्र

सोचक विरूद्ध मायक नव डेग सँ ओ बड़ आहत भेल छल । भ' सकैछ, तकरो किछु असरि होइ । मीनाक मेडिकल ज्ञान सेहो एहने अनुमानकेँ बल दैत अछि । नव कपड़ाक नाप लेबाक बहाने एकांत मे शकुर मोहम्मदक घर आयब जहिया सँ बढ़ल, तहिये सँ मदन बेसी बिगड़ैल भेल अछि । मीनाक कहब तँ इएह अछि जे मदनक भीतर के ब्राह्मणवाद वा पारंपरिक हिंदू मानसिकता एहि बातकेँ बर्दाश्त नहि कर' दैत छैक। अपना समाजक परंपरो तँ इएह रहल अछि जे घर मे वा अनका लेल यौन-शुचिताक नियमावली बनबैत छी आ स्वयं सदति आन स्त्रीक लहक-चहक के पाछाँ कुकुर जकाँ लेर चुबबैत नुड़िआयल फिरैत छी । मुदा मदनकेँ से विचार किएक रहत !...पढ़ब-लिखब छोड़ि नेनपने सँ सभकेँ ठकब, चोरि करब आ जतय-ततय पंड़ाइत रहबा मे पता नहि ओकरा कोन आनंद भेटैत छै । मुदा दोसर सभ ओकर एहि व्यवहार सँ दुखी अछि। ओकर एहि डेग सँ अहाँक कतेक विरोध होइत छल, से तँ नहि पता, अहीं कहि सकैत छी। मुदा प्रभा ओकरा सँ परेशान छलि आ तें ई निर्णय बहुत पहिने ल' चुकल छलि ओ जे मदन संग नहि रहत । ओ घर छोड़िक' गेलि नहि तँ केवल हमरा आ अहाँक कारणें । हमर मित्रता आ अहाँक पितृवत् स्नेह बहुत दिन सँ इएह दुनू प्रभाक लेल संबल रहल।

सत्ते कहै छी बाबूजी, हमरा अथवा प्रभाकेँ अहाँक स्नेह आ सोच पर असीमित विश्वास रहल अछि । एहिसँ पहिने कहियो कोनोटा संदेह नहि अभरल छल मोन मे मुदा आइ ओ मूर्ति टूटि गेल, सभटा विश्वास ध्वस्त भ' गेल ! अहाँ एना कोना कयलहुँ?

एक माइक ममता, एक पिताक लालसा आ एक निर्दोष भ्रूण तीनूक हत्या करबाक राक्षसी शक्ति अहाँमे कोना आबि गेल ? सरिपहुँ अहाँ राक्षस छी ! पिता कहैत लाज भ' रहल अछि आइ !

हम जनैत छी जे अहाँक मोन मे ई प्रश्न उठैत होयत जे भैंसुर-भाबहु मे एना कोना भेल ? ओना भैंसुर-भाबहु मे दैहिक संबंध तँ अहाँ अपन पिते लग देखने होयब, मुदा ओकरा सार्वजनिक स्वीकृति दिआबक लेल लड़बाक निर्णय कोना भेल से अहाँ सोचैत होयब । तें बात खुलासा क' देब आवश्यक भ' गेल अछि ।

एक तँ हमरा सभ व्यवहारिक रूपें भैंसुर-भाबहु नहि, दोस्त रही आ सेहो तेहन जे कतेको दिन एक थारी मे खाइत रही । गपशप मे सेहो बहुत खुजल आ अंतरंग रहबे करी । दोसर, अनायास किछु एहन परिस्थिति आबि गेल जे संबंधकेँ साफ बदलि देलक !...

....करीब पाँच मास पहिनेक गप छी । एक राति भोजन कयलाक बाद सड़क

पर टहलैत बहुत दूर धरि चलि गेल रही । सहसा रजनीगन्धाक गमक सँ मोन प्रसन्न भ' गेल । सड़कक काते मे रजनीगन्धाक खूब झमटगर गाछ छलैक । प्रभाकेँ सेहो रजनीगन्धाक गमक बड़ पसिन छल, तें हम एकटा डारि तोड़ि लेलहुँ आ ओही गमक मे डूबल भसियाइत सन घर घुरलहुँ । मुदा प्रभा अपन कोठली मे नहि छलि । हम किछु क्षण धरि ओतहि ठाढ़ सुन्न बिछानकेँ देखैत प्रभाकेँ रजनीगन्धाक गमक मे सराबोर करबाक कल्पना करैत ओकर बाट तकैत रहलहुँ । बड़ी कालधरि ओकर कोनो अता-पता नहि देखि, छत पर सँ अबैत रेडियोक आवाज सुनि; सीढ़ी चढ़ि गेलहुँ ।

माँझ छत पर बैसलि प्रभा रेडियो सँ अबैत एकटा गीत मे हेरायलि छलि-. ..चन्द्रमा निकलल गगन सँ, चान्दनी के सजाउ औ । चन्द्रमा...ओकर खुजल केश इजोड़िया मे नहा' रहल छल आ गाल पर किछु बुन्न-सन चमकल, मुदा ओकर हमर उपस्थितिक भान नहि छलै । सहसा गीत समाप्त होइते हम प्रभाक लग पहुँचि गाल पर हाथ रखलहुँ-नोर सँ भीजल छल । ''प्रभा, कनैत छी !...मदनकेँ मोन पाड़ैत रही की ?

''नहि, ओकर नाम नहि लिअ । हम ओकरा संग आब किन्नहु नहि रहब । एक्को क्षण नहि । एतय हम सिर्फ अहाँ आ बाबूजीक कारणे रूकल छी । जँ ओ फेर आयल आ एक्को क्षण लेल ओकरा संग रह'क नौबत आयल, तँ हम एहि घरसँ चलि जायब । तलाक द' देब ।'' एक्के साँस मे बाजलि छलि प्रभा ।

''तखन...एखन ककरा मोन पाड़ि रहल छलियैक ?''

''अपन मोनक अभिलषित पुरुषकेँ ।''

'' के छथि ओ ?''

''केओ भ' सकैत छथि । कोनो नाम नहि ।''

हम सहसा ओकर दुनू कन्हा पकड़ि आगाँ झुकि गेलहुँ, ''की हम नहि भ' सकैत छी ओ....?'' हमर हाथ सँ रजनीगन्धाक डारि प्रभाक कोरा मे खसि पड़ल।

''हमर नीक दोस्त तँ अहाँ अवश्य छी । भैंसुर-भाबहु तँ कहियो नहि रहलहुँ। ....हमरा जनैत दोस्त आ पति मे एतबे अंतर होइत छैक जे पतिक संग शारीरिक अंतरंगता सेहो रहैछ ।''...

''तँ हमरा संग ओहो अंतरंगता बना लिअ ने !'' कहैत हम प्रभाक आगाँ सटले सन बैसि गेलहुँ, ''की हम अहाँक मोनक अभिलषित पुरुष सन नहि भ' सकैत छी?'' रजनीगन्धाक डारि अपना हाथ मे ल' प्रभा एक क्षण धरि हमरा आँखि मे आँखि गड़ौने देखैत रहलि आ झट छाती लागि गरा' सँ लपटि गेलि ।

व्यवहारिक रूपें हम दुनू तखने सँ पति-पत्नी भ' गेल छी । हमरा सभ सँ एक्केटा

गलती भेल जे एहि बातकेँ सार्वजनिक करबा मे देरी कयलहुँ। से देरी अनुकूल अवसरक खोज मे एहि लेल भ' गेल जे कुमुदिनी जकाँ प्रभाक वियोग हम नहि सह' चाहैत रही।

मुदा अहाँ सभकेँ ताहि सँ कोन मतलब ! चौबीसो घंटा धैर्य नहि राखि सकलहुँ। हम कोनो बिलायत नहि गेल रही, मात्र एक राति लेल बाहर गेल रही, सभकेँ बुझले छल जे भोरे आबि जायब !...हम मानलहुँ जे प्रभा हमर नाम नहि कहलक असल मे ई हमरा ओकरा बीच प्रेमक सप्पत छल जे ई बात पहिने हमहीं अहाँ सभकेँ कहब। फेर अहाँ सभक हिंसक मूड देखि सेहो डरा' गेलि ओ !...

अहाँकेँ तँ बुझले अछि–मायकेँ दुपहर मे आभास भेलैक आ खोदि-खोदिक' पूछब शुरूक' देलकै। प्रभाक सोझ जबाब नहि पाबि मायक शंका आरो बढ़ि गेलैक। साँझमे स्कूल सँ घुरैते माय अहाँकेँ कहलक आ अहाँ शांति सँ विचार करबाक बदला क्रोधे आन्हर भ' मायकेँ आरो पावर द' देलियैक । अहाँ बगलक कोठली मे बैसल रहलहुँ आ माय प्रभाकेँ लात, मुक्का, थापड़ सँ मारैत गारि सँ गंजन करैत बात उगलबाब'क प्रयास करैत रहलि। एतबे नहि रातिये डाक्टर बजा प्रभाक सम्पूर्ण विरोधक बादो अहाँ जबरदस्ती गर्भपात करबा' देलियैक !...आ भोरे निश्चिंत भ' स्कूल चलि गेलहुँ, जेना किछु भेले नहि !...

अहाँ सभकेँ हमर प्रतीक्षाक प्रयोजन नहि रहल, मुदा प्रभा हमर प्रतीक्षा मे चुप रहलि अछि !...तें की आबो हमरा सभ चुप्पे रही ? नहि !... असंभव !...

मुदा अहाँ कहि सकैत छी जे अहाँकेँ विचारक मौका नहि देलहुँ तें...

जे भेल से वापस नहि भ' सकैछ, मुदा विकल्प एक्केटा अछि । प्रभा कहैत अछि, पछिला सप्ताह प्रभाक जन्म दिन पर साँझ मे देरी सँ अयला पर जेना अहाँ ''सॉरी बेटी, बिलम्ब भ' गेल । बूढ़ भ' गेलहुँ अछि ने !....हेप्पी बर्थ डे टू यू'' कहने छलियै, तहिना आइ साँझ फेर अहाँ कहि दियौक, ''सॉरी बेटी, दुर्घटना भ' गेल ! बूढ़ भ' गेलहुँ अछि ने ! अहाँ दूनू गोटे प्रसन्न रहू !'' आ आइ साँझ हमरा दुनूक अनौपचारिक ढंग सँ होमय जा रहल बियाहक अवसर पर मोहल्लाक किछु लोक आ शहरक अपन किछु मित्रगणकेँ अहाँ स्वयं आमंत्रित क' एकटा छोट सन प्रीति-भोज देबाक व्यवस्था करियैक ।

अहींक कुपुत्रे सही

महेश

❑

कथा

अजित कुमार आजाद

विकलांग

करोलबाग अबैत-अबैत बसमे चुट्टी ससरैक जगह नहि रहलैक । ओना दिल्लीक बस मे भीड़ होयब कोनो नव गप नहि थिक । मुदा एहि बीच ब्लू लाइन बसक हड़ताल भ' जयबाक कारणे महानगरीय परिवहन व्यवस्था चरमरा गेल रहैक । डी. टी. सी. क एक-एकटा बस मे सीट सँ दस-दस गुना बेसी सवारी चढ़बा लेल विवश छल। स्त्रीगण सभक त' कोनो दशा बाकी नहि रहलैक । ओना दिल्ली सन महानगर मे बसक धक्का-मुक्की सहबाक अभ्यस्त भ' गेल छथि एतुका स्त्रीगण लोकनि । तथापि हड़तालक एहि विकट परिस्थिति मे हिनका सभक स्थिति आरो दयनीय भ' गेल छल ।

आइ ओहो युवती बसक भीड़मे पीसेबाक लेल अभिशप्त छल । तें एखन धरि चारि स्टाप आगू आबियो गेलाक बाद बस मे ने त' एकहुटा महिला सीट खालीए भेलैक आ ने कियो पुरूख ओकरा पर दये देखौलकैक ।

ओ भीड़ मे कसमसाइत रहल । बेर-बेर घाम पोछलाक बादो ओकरा माथ पर पसेनाक बुन-बुन्नी आबिये जाइत छलैक । आँखि मे सीट पयबाक मौन याचना करैत ओ बेरि-बेरि अपना दूनू कातक सीट दिस तकैत छल । मुदा ककरहु पर कोनो प्रभाव नहि पड़लैक ।

बसक बामा कातक सभसँ अगिला सीट पर हम बैसल रही । हमरा बामा दिस एकटा अधबयसू सन व्यक्ति बैसल छल । हमरा पाछू बला सीट पर दू गोट अन्य व्यक्ति बैसल छलाह । तकरा बादक सीट सभ पर स्त्रीगण सभ बैसल छलीह । उचितन ई सीट सभ हुनके सभक लेल आरक्षितो छलैक तें ओ सभ कदाचित गौरवबोधक संग बैसल छलीह । बसक दहिना बगलक सीट सभ पर पुरूख लोकनि अपन अधिकार जमौने छलाह । हालांकि दहिना बगलक सीट सभ ककरहु लेल आरक्षित नहि छल

तथापि एतेक त' अवश्ये छलैक जे एहि सीट पर बैसला सँ कम सँ कम जनानी सभ जबरदस्ती त' एकदम्मे नहि उठाओत।

ओ युवती जकर कि उमेर 23-24 बर्ख सँ बेसी नहि छलैक ओ बामा बगल सँ बेसी दहिना बगलक सीट सभ पर बैसल व्यक्ति सभसँ बेसी आशान्वित रहय तें ओ ओहीं बगल घूमिक' ठाढ़ छल। एक हाथ सँ ओ बसक उपरका डंटा आ दोसर हाथ सँ एकटा सीटक उपरका भाग केँ पकड़ने छल। ओकरा भरिसक किछु बेसी दूर तक जयबाक छलैक तें बैसबाक लेल ओ बेसी यत्नशील रहय। बस ताधरि अजमेरी गेट टपि गेल रहैक। ओ पंजाबी बाग सँ चढ़ल रहय। ओकर उकस-पाकस लगातार बढ़िये रहल छलैक। जें कि ओ हमर सीट सँ दू सीट पाछांवला सीटक सोंझा मे ठाढ़ छल तें ओकर व्याकुलता केँ हम परखि सकैत रही।

हमरा ओकरा प्रति दया उपजि गेल रहय मोन मे। भेल जे अपनें ठाढ़ भ' जाइ आ ओकरा अपन सीट द' दियैक। फेर भेल जे हमरा ई दया देखबाक कोन प्रयोजन। हमरो त' कम दूर नहि जयबाक अछि एखन। भने ओ ठाढ़ अछि त' ठाढ़े रहओ...

बस मिन्टो रोड सँ कनाट प्लेस आबि गेल रहैक। एतेक काल धरि ओ घाम सँ तर-बतर भ' गेल छल। ओकर हाथ सेहो भरा गेल रहैक-तेँ ओ डंटा धयने छल। पसेना सँ तीत गेलाक कारणे ओकर समीज देह सँ चिमटि गेल रहैक। गौरवर्णा ओहि युवतीक मुखमण्डल पर व्याप्त व्याकुलताक चेन्ह किछु आरो गहींर भ' क' ओकर सुन्दरताइ के तत्क्षण बढ़ा देने रहैक। कदाचित हमरा मोनक ई अतिरिक्त सौन्दर्य-बोध हमरा ओकरा प्रति किछु बेसिए सहृदय बना देने रहय–तें हम ओकरा अपन ई सीट दिअ' चाहैत रही।

हम सीट पर सँ ठाढ़ भ' क' अपन सीट ओकरा देबा लेल तत्पर भेले रही कि एंकाएक मोनक कोनो कोन मे चकरी मारिक' बैसल साँप फुफकारि उठल। एहि युवती के सीट द' की हैत ? ई कोनों उपकारो मानत ? आ जँ ई उपकार मानबो करत त' एकरा किएक दियैक अपन सीट। कोनो कि हम ओकरा सभक आरक्षित सीट पर बैसल छियैक ? बरू ओ ठाढ़ रहय मुदा हम नहि देबैक अपन सीट।

मुदा तखने फेर भेल जे आइ किछु दूर धरि हम ठाढ़े जायब त' की भ' जयतैक। आनो दिन त' आफिस ठाढ़े जाइत छी। मुदा फेर भेल जे भने ठाढ़ अछि ओ। जँ कोनो पुरूख एकरा सभक आरक्षित जनानी सीट पर बैसल रहितैक त' की ई युवती ओकरा बैसले रहय देने रहितैक। एकरा सभक बूझल अछि हमरा। बूढ़-पुरान व्यक्ति

तककेँ उठा दैत छैक एतुका छौंड़ी सभ। ताहिबेर मे एकरा सभक अपन अधिकार प्राप्त करबाक गौरवबोध देखबा जोग होइतं छैक। मुदा आन बेर मे....? बस मण्डी हाउस सँ किछुए आगू तिलक ब्रिज स्टैंड पर रूकले त' एकटा सीट खाली भेलैक। ओ युवती जाधरि ओहि सीट पर अपन हैंडबेग रखितए-रखितए कि ओहि पर एकटा युवक बैसि रहल। युवती केँ भेल रहैक जे ओकरा गाल पर कियो दस चटकन मारि देने होइक। युवतीक याचना भरल आंखि ओहि युवक पर आक्रोश सँ भरि गेल रहय जेना। युवक चुपचाप आगू तकैत रहल। युवती दिस एकोपाइ ओकर ध्यान नहि रहैक।

हमरा मोनक दयाभाव एक बेरे फेर सँ हिलकोर लेब' लागल छल। भेल जे अपन सदाशयताक परिचय देबाक ई एकटा बढ़िया अवसर सेहो अछि। बस आइ. टी. ओ. क लालवत्ती पर ठाढ़ भ' गेल छल। हमरा शक्करपुर जयबाक छल। एतय सँ आब 15-20 मिनटक रस्ता छलैक। हम सोचलहुँ जे एतेक दूरी त' ठाढ़ो काटल जा सकैत अछि आराम सँ। हम ओकरा अपन सीट देबा लेल तैयार भ' गेल रही। एकटा दीर्घ निसांसक संग अपन निष्ठुरता के त्यागि ओहि विवश युवतीक मदति करबाक लेल उद्यत भेल रही कि कान में 'जाम' लगबाक स्वर सुनाई पड़ल। जमुना पुलपर जाम लागि गेल रहैक। दिल्ली मे एहि पुलक जाम त' नामी छैके। आब कि घंटा-डेढ़ घंटा सँ पहिने टूटतैक ई जाम। मोन मे उपकार करबाक उत्पन्न भेल आवेग जेना एकाएक सरा' गेल रहय। ओहिना चुपचाप बैसले रहि गेलहुँ हम।

दशमीक बाद राजधानीक गरमी मे ओना नरमी आबि जाइत छैक मुदा प्रदूषणक कारणे उमस रहैक। घामक चिपचिपी सँ मोनक औल-बौल करब कम नहि होइत छलैक। भोरक दस बजैत-बजैत रौद ततेक बिखाह भ' जाइत छैक जे एहि समय मे यात्रा करबाक एक्को पाइ मोन नहि होइ छैक लोकके। मुदा ऑफिस नहि जायत से बनतैक ? दस मिनटक बाद बस मे सौंसे घमैनि गन्ध पसरि गेल रहैक। घर-परिवार आ राजनीतिक चर्च करैत बसक अधिकांश लोकक विषय एकाएक 'जाम' पर केन्द्रित भ' गेल छल।

युवतीक अकुलाहटि बढ़िते जा रहल छलैक। एहि बेर हमरा दिस बड़ीकाल धरि तकैत रहि गेल रहय। हमरा ओकर मौन याचना भीतर धरि हिला देने रहय। मुदा आब हम एखन ठाढ़ नहि हुअ' चाहैत रही। नहि जानि ई जाम कखन धरि छुटतैक? किछु कालक उपरान्त बस चुट्टी जकाँ ससर' लागल। लोककेँ जान मे जान अयलैक। मुसाफिर सभक आस बन्हा गेलैक जे जाम आब लगले टूटि जयतैक। हम सोचलहुँ जे जमुना टपितहिं एहि अज्ञात युवती के अपन सीट द' देबैक। जमुना पुलक बाद

त' मात्र लक्ष्मीनगर छैक-तकरबाद त' हमरे स्टॉप शक्करपुर । हँ, सेह ठीक रहतैक। एक बेर फेर ककरहु पर कृपा करबाक गौरवबोध सँ भरि गेल रही हम । बसके जमुना पुलक डेढ़ मिनटक रस्ता टपबा मे पेंतीस मिनट लागि गेलैक । हमहूँ अकच्छ भ' गेल रही । युवतीक हाल-बेहाल भ' गेल छल । हमरा नहि रहि भेल । झोंक मे एकाएक ठाढ़ भ' गेल रही । कहलियैक,

–'देखिये, आप यहाँ बैठ जाइये । काफी परेशान हो गई हैं ।' ओ हमरा दिस तकलक । बसक आनो-आन मुसाफिर सभ हमरा दिस तकलक । हमरा बड़ नीक लागल । आत्मिक संतोषक अनुभूति सँ पुलकित हुअ' लागल रही कि युवती जबाव देलक,

–'धन्यवाद ! लेकिन मैं यहाँ नहीं बैठ सकती ।'

–क्यों ? हम हड़बड़ाक पुछलियैक । युवती किछु बाजल नहि । खाली आंगुर उठाक' देखौलक । आंगुरक इशारा दिस तकलहुँ । हमर सीटक उपर लिखल रहैक-विकलांग ।



धूमकेतुक कथा 'एकटा मूल्यहीन कथा' सँ

लुल्हिया पुछलकै, 'गाइके कनिजे खेलहा केरा खेबैं ? अन्हरा ठोर पर जीह फेरलक, हौ ?' लुल्हिया गुद्दर स' तीन हीस बाँचल एकटा केरा बाहर केलक आ अन्हराके पकड़ा देलकै । अन्हरा दू हबक्का मे खोजिआ सहित उदरस्थ क' लेलक। मोन भेलै, लुल्हियाके छूबि क' देखितै । मुदा तामसक डर भेलै। आह्लादित स्वर मे बाजल-'कत्त' भेटलौ ?'

खुएबाक तृप्ति आइए लुल्हियाके भेल छलैक । गंभीर स्वर मे बाजलि 'इदरिसबाक दोकानक आगू ठाढ़ छलियैग' कोन्ने स' ने कोन्ने स' गाइ एल्लै आ हत्थे पर हबक्का मारि देलकै । हत्था त' इदरिसबा छीन लेलकै । मुदा खेलहा छीमी सड़क पर खसि पड़लै । हम उठा लेली ।'

विमर्श

तारानन्द वियोगी

नव चरणक मैथिली कथा

['नवचरणक मैथिली कथा मे शुद्र, स्त्री आ बच्चा, एहि तीनू दलित-समूहक आबा-जाही व्यापक रूप सँ बढ़ि गेल अछि । ई तीनू दलित समूह जे कथा मे आबि रहल अछि, से सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग आबि रहल अछि । जें कि लेखकक नीयत साफ-साफ जीवन मे आस्थाक खोज रहैत अछि, अखण्डमानस व्यक्तित्वक कथापात्र एम्हर मैथिली कथा मे खूब आबि रहल अछि ।'

डा. तारानन्द वियोगी आजुक मैथिली कथा कें नवचरणक मैथिली कथा कहैत बहुत व्यापक आ गम्भीर प्रश्न सभ सँ मुठभेड़ केलनि अछि । अनेक प्रश्न ठाढ़ केलनि अछि आ अपन मन्तव्य उपस्थित केलनि अछि । अन्ततः ई कहल जा सकैत अछि जे वियोगी विचार-विमर्श लेल ठोस विन्दु सभ रखलनि अछि जाहि पर आगाँ विवाद-संवाद अपेक्षित अछि । अहू कारणे एहि निवन्ध के समाप्त नहि मानल जेबाक चाही ।]

नवचरणक कथा सभकेँ जखन हम देखै छी तँ सभसँ पहिने जे बात हमर ध्यान आकृष्ट करैए से थिक-ममत्वपूर्ण अनुराग । कथाक सम्पूर्ण परिदृश्य मे एकटा अनुराग व्याप्त छैक । ई अनुराग अपन आभामंडल कायम करैत अछि । एहन घरक अहाँ कल्पना करू, जतय अहाँ सुभ्यस्त भ'क' बैसि सकी । सहज भ'क' । एहन मौसमक कल्पना करू जखन भयानक जड़काला मे उगल रौद अहाँकेँ सुखकर अनुराग विलहैए । धारक कात मे बैसल छी अहाँ, एकटा गाछ लागि क' ओङठल छी आ आस-पास पसरल व्यापक जीवन-प्रवाहक अवलोकन क' रहल छी । ई जे आश्वस्ति छैक जे जतए हम छी, आ सहज जीवन मे अवस्थित छी, ई जे आश्वस्ति छै, से हमरा गाछ सँ भेटि सकैए । कहियो अहाँ सोचलहुँ अछि जे गाछ लागि क' ओङठने अहाँ जते सहज आ प्रकृतिस्थ भ' सकै छी, तते कोनो मनुक्ख लागि क' ओङठने नहि । एना

किऐ होइ छै, तकर जड़ि मे हम नहि जाएब, एतबे कहब जे कोनो व्यक्ति अहाँकेँ तते आश्वस्त नहि क' पाबैए जते गाछ । एही आश्वस्ति केँ हम एहि ठाम अनुराग कहलहुँ अछि । 'अनुराग'क संग जँ हम 'ममत्वपूर्ण' विशेषण लगबै छी तँ तकर यैह टा उद्देश्य जे मामला केँ हम थोड़ मानवीकृत क' रहल छी । अनुराग, जेहन कि अहाँकेँ अपन माए सँ प्राप्त होइए । प्रेमिकाक अनुराग तँ एक उत्तजना केँ सेहो भग्ने रहै छै अपना भीतर कि ने ?

ई ममत्वपूर्ण अनुराग हमरा नव चरणक कथा सभ मे देखार पड़ैए । ई कथा सभ जाहि परिदृश्य केँ गढ़ैत अछि, अपन घटना-पात्र-स्थितिक वर्णन द्वारा जे दुनिआ हमरा सामने ठाढ़ करैत अछि, से आश्वस्तिजनक अछि आ हम, एक पाठकक रूप मे, ओहि दुनिआ मे अपना केँ सहज आ प्रकृतिस्थ पाबै छी ।

ई जे परिदृश्य बनि सकलैए मैथिली कथाक, से कोनो साधारण बात नहि थिक। बहुत पैघ उपलब्धि थिक ई, यद्यपि कि बात बहुत साधारण बुझाइत अछि । बहुतो दिनुका बाद ई दिन अएलैक अछि, आ सेहो अपन उचित विकास-सोपान केँ पार करैत। सहज आ प्रकृतिस्थ हम भइयं एहि दुआरें' पाबै छी एहि परिदृश्य मे जे ई परिदृश्य हमर आँखिक देखल, दिमागक बूझल आ हृदयक गूनल सँ मेल खाइत अछि । एहि तीनूटा विशेषतावाची शब्द-समुच्चयक जे हम व्यवहार करै छी, से परम सावधान भ' क' । बाहरी दुनिआ केँ जे हम अपना भीतर ग्रहण करै छी से प्रमुखतः एही माध्यम सभकेँ अपनाक' । लेखक हमरा सभक बीच जँ रहैत अछि तँ ओकरो तँ ओ बात सुझबाक चाही, जे कि हमरा सुझैत रहल अछि ।

कैक कारण होइ छै जे लेखक केँ ओ बात नहि सूझि पबैत छैक, जे हमरा, एक पाठककेँ सुझैत अछि । तकर कैक कारण छै । मुदा प्रमुखतम कारण ई छै जे सहज द्रष्टा बनिक' ओ ने तँ दुनिआ केँ भोगने रहैत अछि, आ ने भोगल के विश्लेषण आ प्रस्तुति क' सकैए । ओकरा असहज बनाबै छै विचारक अतिरिक्त आग्रह, जकरा कि दुराग्रह कहल जाय, आ कि अत्याग्रह । कोनो लेखकक लेल जीवन सँ महत्त्वपूर्ण जँ विचार भ' जेतै तँ ई दुर्घटना घटबाके छै । विचार केँ जीवनक पाछाँ-पाछाँ हेबाक चाही, जीवन सँ जन्म लेबाक चाही । आ जीवन ओ नहि, जे कि शास्त्र सभ मे, सिद्धान्त सभमे व्यक्त भेल अछि, जीवन ओ जे कि स्वयं अपना मे अछि । जीवन केँ बुझबाक लेल शास्त्र हमर मददगार भ' सकैए । मुदा जँ हम एहन रगड़ी होइ जे जीवनोक काज हम शास्त्रे सँ लेबए लागी—शास्त्रे सँ जीवन ल' क'—जीवन्तताहीन जीवनक ढांचा ल' क'—कहानी-कविता लिखी, तँ एकरा की कहल जेतै ? बात ई बहुत खराब थिक,

मुदा एहनो चलन रहलैए जे एहि प्रकारक लेखन केँ 'प्रतिबद्ध लेखन' 'नवलेखन' आ कि 'आधुनिक लेखन' धरि के खिताब सँ नबाजल गेलैए ।

मैथिली मे ई दौर बहुत दिन चललै । बीस-पच्चीस बरस तँ जरूरे चललै। आ, आइयो ई बात नहिं छै जे दौर खतमे भ' गेलैए । सभ तरहक साहित्य धारा तँ सभ काल मे चलितं रहैत छैक (आइ की विद्यापति-कालीन सौन्दर्य दृष्टिक कविता नहि लिखाइत अछि) तखन मूल बात कोनो धाराक मुख्यधारा बनि जेबाक अछि ।

बहुत दिनक बाद, मैथिली कथा मे एकटा एहन परिदृश्य अभरि रहलैक अछि जाहिमे जीवनक स्पन्दन छैक, आ जकर रचनाकार कथा लिखबाक लेल सीधे जीवनक बीच उतरब जरूरी बूझए लागल अछि । यैह कारण थिक जे परिदृश्य मे हमरा ममत्वपूर्ण अनुराग देखाइत अछि, एहन अनुभव होइए जे हम जीवनक बीच छी ।



मैथिली कथा मे जे नव चरण आएल अछि, ओकरा हम इतिहासकारक दृष्टि सँ नहि देखि पाबि रहल छी, आ ने आलोचकक दृष्टि सँ । एक जागरूक पाठकक दृष्टि सँ हम एकरा देखै छी तँ लागैए जे नवम दशकक मध्य सँ मैथिली कथाक परिदृश्यमे एक परिवर्त्तन आबए लागल अछि जे अन्तिम दशक मे स्फुट होइत-होइत आब, मुख्यधाराक रूप मे अपन पहचान काएम करबा लेल अछि । हमरा ई आवश्यक बुझाइत अछि जे इतिहासकार लोकनि केँ, आलोचक लोकनि केँ एकरा चिन्हित करबाक चेष्टा करक चाही।

संगहि एक पाठक रूप मे हमरा जे आवश्यकता देखार पड़ैत अछि, से एक आलोचक केँ नहि देखार पड़ैत छनि । तकर कारण अछि जे ओ लोकनि अतीतमुखी छथि । हुनका लोकनिक स्वर्णकाल हमेशा अतीत मे भेल करैत छनि । जे 'काम्य' आ 'प्राप्य' होइत अछि जीवन मे, से पहिनहि बीति गेल करैत छैक आ आब ओकर दृष्टान्तो टा देल जा सकैए । एना आलोचके टाक संग होइत हो, सेहो बात नहि । सृजनात्मक लेखक लोकनिक संग सेहो बहुधा एहिना होइ छै । ओ निज अपन जीवनक स्वर्णकाल मे ओझरायल रहै छथि आ तकरा तेना क' महिमामंडित करैत छथि जेना ओ सम्पूर्ण भारतभूमिक स्वर्णकाल होइक, नहि भारत-भूमिक जँ तँ मैथिली साहित्यक तँ अवश्ये।

कुल मिलाक' जीवनक संग छुटि जेबाक आ विचारक खूट पकड़ा जएबाक ई सुन्दर उदाहरण थिक ।

नवचरण केँ उत्सुकतापूर्वक देखबाक आवश्यकता आलोचक आ साहित्यकार-सम्प्रदाय केँ तँ नहिये छैक, पाठक केँ सेहो नहि छैक । तकर मुख्य कारण

तँ यैह जे सुच्चा तकनीकी अर्थ मे जकरा 'पाठक' कहल जाय से मैथिली कथा केँ रहँबे नहि केलैक अछि। कखनो-कखनो हमरा चकित करैबला विध्वंसक बात ई लागैत अछि, जे बिना कोनो पाठकक मैथिली साहित्य लिखायल जाइत रहल अछि आ छपैत रहल अछि। पोथी-पत्रिका छपाएब अहंकार तुष्टिक साधन होइत आएल अछि। आ, एहना स्थिति मे, ई अनिवार्य भवितव्य छल जे कि घटित भेल जे उच्च कोटिक सृजनशीलताक अवहेला भेलैक, प्रतिभाशाली लेखक लोकनि मैथिली मे लिखबाक हेतु पश्चात्ताप करैत, प्रायश्चित्तस्वरूप लेखन छोड़ैत अपन बुढ़ारी गुदस्त करै गेलाह।

हरिमोहन बाबूक जे लोकप्रियता हमरा लोकनि देखैत रहल छी आ आइयो देखैत छी, से मोन राखल जाय जे ओ मैथिली कथाक लोकप्रियता नहि थिक, शुद्ध क' क' निज हरिमोहन बाबूक लोकप्रियता छियनि। हरिमोहन बाबूक प्रेमी पाठक लोकनि मँ मैथिली कथाक कोनो उपकार नहि भेलैक, जे कि स्वाभाविकेँ छल। किएक त' ओ लोकनि हरिमोहन बाबूक परिधि सँ बाहर नहि निकलि सकलाह। 'कन्यादान' केँ भारदौर मे सांठ' बला' लोक सभके छेलाह ? वैह लोकनि जे बुच्चीदाइक जीवन मे कालिमा आ अन्हार घोरने रहथि ! प्रणम्य देवता' पढ़ितो रहलाह, आ प्रणम्य देवता बनलो रहलाह। जे पोथी परिवर्त्तनक हेतु लिखल गेल छल, से मनोरंजनक काज करैत रहल। एहन पाठक सँ की आशा कएल जा सकैत छल ? असल मे, ई प्रसंग मैथिल जनताक सांस्कृतिक बुनावट सँ जुड़ल अछि आ गँहीर विश्लेषणक मांग करैत अछि।

गंभीर आ विचारवान पाठक-संस्कारक लोक मिथिला मे होइत रहलाह अछि जरूर, सभ दिन सँ होइत रहलाह अछि, आगाँ सेहो होइत रहताह, मुदा एहि कोटिक पाठक केँ प्रभावित करबा मे, छेंकि पेबा मे मैथिली कथा प्राय: सभ दिन सँ असमर्थ होइत आएल अछि। फलत: ई लोकनि हिन्दी पढ़ैत रहलाह, आरो थोड़े बेसी प्यास बढ़लनि तँ अंग्रेजी पढ़ैत रहलाह। एहि प्रकारक पाठक सँ जँ पूछताछ कएल जाय तँ बहुत साफ-साफ पता चलैत छैक जे हिनका लोकनिक भावनात्मक आ बौद्धिक भूख केँ बुझि सकबा मे आ शान्त क' सकबा मे मैथिली कथा असमर्थ रहल अछि।

एखनो, नीक लेखनक संभावना सँ पूर्ण युवा लेखक लोकनि केँ गंभीर अध्येता पाठक लोकनिक दिस सँ कतेको बेर ई सुझाव देल जाइ छै जे मैथिली मे की लिखै छी, हिन्दी मे लिखू। मैथिली मे पोथी छपाएब केँ दोयम क' क' देखल जाइ छै। श्रेष्ठताक मापक अंग्रेजी मे लिखब तँ निश्चिते रूप सँ थिक, हिन्दियो मे लिखब थिक, मुदा मैथिली मे लिखब तँ किन्नहु नहि थिक। ई विचार जे हम राखि रहल छी, से ओहि हजारो गंभीर पाठक लोकनिक छियनि जे वास्तविक अर्थ मे पाठक छथि, प्रेमचन्द्र

सँ ल' क' उदय प्रकाश धरि, शेक्सपीयर सँ ल' क' गुंटर ग्रास धरि जे मिथिला मे पढ़ल जाइए, से यैह लोकनि पढ़ै जाइ छथि। ई लोकनि मिथिला मे छथि आ मिथिलाक बाहर प्रवासी सेहो छथि, अक्षर आ संस्कृति के हिनका समझ छनि आ मैथिली साहित्य सँ उदासीन छथि।



तँ, हम जखन कहै छी नवचरणक मैथिली कथा मे ममत्वपूर्ण अनुराग के परिदृश्य बनलैक अछि, तँ एकर एक अर्थ ई थिक जे एहि कोटिक पाठकक मांग केँ बूझि सकबाक जागरूकता एकरा मे उदित भेलैक अछि। पाठक नामक प्राणी जे मिथिला मे रहैत अछि, मुदा आन-आन साहित्यक हाथें 'बन्हकी' लागल अछि, ओकर भावनात्मक-बौद्धिक भूखकेँ बूझि सकबाक, शान्त क' सकबाक हुनर पैदा भेलैक अछि।

ई चीज नारा सँ नहि भ' सकैए। विचारधारा सँ नहि भ' सकैए। पण्डित लोकनिक, आलोचक लोकनिक तोषार्थ लिखने नहि भ' सकैए। ईहो बात सावधानीपूर्वक गून' बला अछि जे देखाउँस कएने नहि भ' सकैए। गुंटर ग्रास के, विनोद कुमार शुक्ल के नकल उतारने ई चीज होइबला नै अछि। ई चीज जे घटित हएत, तकर जीवन मे उतरने बिना कोनो उपाय नहि छैक। ई एहन आवश्यकता थिक, जकर कोनो विकल्प नहि छैक।

हमरा खुशी अछि जे नवचरणक मैथिली कथा मे ई चीज उतरि रहलैक अछि। विस्फोटपूर्वक नहि, बहुत सहज-संभव रूप मे उतरि रहलैक अछि।

एहना परिस्थिति मे, हमरा ई बात बहुत जरूरी लागि रहल अछि जे मैथिलीक लेखक लोकनि एहि संक्रान्तिकालीन स्थितिक प्रति साकांक्ष होथि, विश्लेषणमुखी होथि। पाठक केँ विश्वास मे लेब आ तकरा लगातार विश्वास मे राखब सभसँ बेसी जरूरी अछि। लेखक लोकनि कमोबेश एहि बातक प्रति साकांक्ष तँ जरूर छथि, मुदा हुनक समस्त साकांक्षता नाकाम साबित भ' जा सकैत अछि जँ प्रज्ञावान संपादक मैथिली कथाकेँ नहि भेटैक। जे अपने नहि बूझि पाबि रहल छथि परिवर्त्तन केँ, से संपादित कोना क' सकताह ? मुदा स्थिति ईहो अछि जे जकरा देखियौ तकरा एकटा कथा-संग्रह निकालबाक लेल तैयार बैसल छथि।

समय आबि गेल अछि जखन गणितीय विश्लेषण द्वारा साहित्यक लक्ष्य-समूह निर्धारित होइक, आ तखन लक्ष्य-समूहक मांग आ आकांक्षा केँ देखैत पोथी-पत्रिका बहार कएल जाइक।

ई खतरा एखनो नहि टरल अछि जे पाठक कोनो खास लेखकक बनिक' रहि

जाय आ मैथिलीक प्रति जेहन धारणा ओ बनौने अछि, ताहि मे कोनो अन्तर नहि आबैक। हालो मे हमरा लोकनि देखने छी जे प्रभास कुमार चौधरी बहुत लोकप्रिय लेखक छलाह, मुदा हुनक जे पाठक लोकनि रहथि, से निज हुनके टा रहथि, मैथिली कथाक पाठक नहि बनि सकलाह। वास्तविक अर्थ मे ई खतरा कहियो टरैयोबला नहि अछि; कारण लेखकक दिस सँ जँ सोचल जाय तँ ई तँ बहुत नीक बात भेलै, ओकर व्यापक सफलता भेलै जे ओकरे कारणें लोक भाषाकेँ चिन्हलक, मुदा अपन जे छवि होइत छैक। भाषा-साहित्यक तकरा अर्थे सोचल जाय तँ ई खतरा तँ छैके।



एक अर्थ मे देखल जाय तँ मैथिली कथा मे जे नवचरण शुरू भेलैक अछि, से कुल मिलाक' समयक मांग थिक, आ अन्तत: समय के इंगित के पहचान थिक। साहित्य पर संस्कृति पर आ जीवनक (जीवन्तताक) संरक्षण पर चौतरफा दवाब बढ़लैक अछि आ 'सर्वाइवल ऑफ फिटस्ट' के प्राकृतिक नियमक अनुरूपे एहि सभ क्षेत्र सँ जुड़ल लोक सभ मे नवीन चेतनाक आविर्भाव भेलैक अछि। मैथिली साहित्य मे जे घटना घटि रहल छैक, से आनो-आन भारतीय साहित्य मे घटि रहलैक अछि। नव चुनौती केँ स्वीकार करबा मे समकालीन पाश्चात्य साहित्य सेहो अपना केँ तैयार क' रहल अछि, तकर आहट हमरा लोकनि केँ गाहे-बगाहे सुनाइ दैत रहैत अछि।

गुजरातक यात्रा पर हम गेल रही तँ एक प्रसिद्ध आ प्रतिभाशाली गुजराती लेखक डॉ. अजीत ठाकोर सँ हमरा सम्पर्क भेल रहए। दू दिन धरि तँ हमरा लोकनि रेस्ट हाउस मे संगहि टीकल रही। अजीत जी गुजराती साहित्य मे नवीन उन्मेषक एक प्रयोक्ता छथि ओ आधुनिकता आ विचारधाराक मारि सँ मारल गुजराती साहित्य मे एक नवीन दिशा-सन्धानक ब्योंत मे लागल छथि। ओ हमरा 'परिष्कृतिवाद'क सम्बन्ध मे विस्तार सँ बतौलनि, जे ओतुक्का साहित्य मे एक नवीन आन्दोलन थिक। परिष्कृतिवादक मूल सूत्र थिक-अपन जड़ि दिस ताकू, अपना लोकक, अपन समाजक जीवन दिस ताकू आ जँ कोनो विचारधाराक अपनाएब आवश्यके हो तँ 'भारतीयता' केँ अपनाउ। हम हुनका पुछने रहियनि-'डाक्टर साहेब, अहाँ भारतीयताक बात करै छी। भारतीयताक बात भाजपा सेहो करैए। तँ, एना मे ई खतरा तँ छैक जे अहाँकेँ आर. एस. एस. के पुछल्ला मानि लेल जाय!' हमर एहि प्रश्न पर अजीत जी आत्मविश्वास सँ दीप्त उत्तर देने रहथि-'नहि-नहि, किन्नहु नहि। हमरा लोकनिक 'भारतीयता' एतेक उत्थर नहि अछि। आ जँ अहाँ चालू मुहावरे मे हमरा सभक भारतीयता केँ बूझए चाही तँ कहब जे अटल बिहारी, लालू यादव आ कांसीराम केँ मिलाक' जे भारतीयता बनै छै, तँ से हमर 'भारतीयता' थिक।

अस्तु। स्रोतक दिस ताकब, तकरा सँ अपन ऊर्जा लेब, तकरे सँ अपन उपकरण लेब सदति श्रेयस्कर होइत आएल अछि। आ, साहित्यक स्रोत निश्चित रूप सँ जीवन थिक। जीवन आ साहित्यक बीच मे जँ 'शास्त्र' नामक कोनो परदा टांगल हो, तँ ओहि परदा केँ उठाओल जेबाक चाही। से परदा उठाओल जा रहल अछि।



एहि चरणक कथा सभमे एकटा जे बात हमर ध्यान आकृष्ट करैत अछि, से थिक-आलोचनात्मक प्रौढ़ता। कथाकार लोकनि प्रौढ़ देखार पड़ैत छथि आ से प्रौढ़ता जीवनकेँ देखबाक हुनक आलोचनात्मक दृष्टि सँ एलनि अछि।

जीवन मे संघर्ष छैक, जीवन मे आवेग छैक, राग-विराग छैक, सुख आ सन्ताप छै, मुदा ई सभटा चीज तेना एकमेक भ' क' मिज्झर भेल छै, जे फार्मूला बना क' ओकरा अभिव्यक्त नहि कएल जा सकैए। ककरो हारि जाएब ने तँ मात्र हारि होइत अछि, आ ने ककरो जीति जाएब मात्र जीत। अपन ई विचार हम पहिनहु व्यक्त कएने छी जे लेखकक जीवन मे भने संघर्ष होउक की नहि होउक, ओकर रचना मे संघर्ष अवश्ये रहबाक चाही, एहि जिद्दीपना सँ जे लेखन उद्भूत होइत छैक, वैह थिक फार्मूला लेखन। मैथिलि कथा मे तँ ई जिद्दीपना तते हेहर बनि कए प्रकट भेलैक अछि जे पूछल नहि जाय। अहाँक जीवन मे भने जातीय संघर्षक दंश हो, दाम्पत्य संघर्षक पीड़ा हो, एहि सभ बात केँ अनठाउ आ अपन रचना मे अनिवार्य रूप सँ वर्ग संघर्ष देखाउ-बुद्धिवादी लोकनिक ई जिद कदाचित समकालीन मैथिली साहित्यक सभ सँ बेसी अनिष्ट कएलक अछि। समूचाक समूचा साहित्य जीवन सँ कटि गेल आ शास्त्रक चाङुर तर मे दबा गेल। बम्बैया मसाला फिल्मक जकाँ मैथिली कथाक सेहो थोड़ फार्मूला सभ बनि गेलै। कथा मे 'जनता' केँ राखल गेल, 'व्यवस्था' केँ राखल गेल, दुनूक बीच संघर्ष देखाओल गेल आ सिद्ध कएल गेल जे एहि लोकयुद्ध मे व्यवस्था हारल आ जनता जीतल। आलोचक लोकनि एहि कथाक प्रशस्ति कएलनि। कथाकार तृप्त भेलाह। ई बचकानापन तहियो मैथिली मे चलैत रहल, जखन कि हिन्दी आदि साहित्य (जकर कि देखाउँस कएल जाइत रहैक) के कथाकार लोकनि अपना मे पर्याप्त प्रौढ़ता विकसित क' लेलनि।

अपेक्षित समय सँ बेसी कालधरि मैथिली कथा मे बचकानापन के दौर चलैत रहल, तकरा पाछां हमरा दूटा कारण देखार पड़ैत अछि। पहिल जे मैथिली कथाक क्षेत्र मे प्रतिभाशाली लोकक अभाव रहल। धाराक विरूद्ध जेबा मे एकमात्र प्रतिभेटा लेखकक मददगार भ' सकैत छैक। हरेक धाराक अपन आभामंडल होइत छैक आ

अधिकतर लेखक ओहि आभामंडलक छेक सँ बहार नहि जा पबैत छथि। अक्सरहां देखल गेल अछि जे कोनो जुग मे जखन क्यो प्रतिभाशाली लेखक लेखन करैत अछि तँ ओकर बनाओत धारा आ तकर आभामंडल बहुतो दिन धरि मुख्यधारा बनल रहैत अछि आ आन-आन लेखक लोकनि ओही पटरी पर आँखि मूनि क' चलैत रहैत छथि। राजकमल चौधरीक बाद मैथिली मे सर्वाधिक प्रतिभाशाली दूटा कथाकार भेलाह–राजमोहन झा आ जीवकान्त, जे अपन आभामंडल विकसित कएलनि। एकरा बाद बहुत सामान्यीकृत तरीका सँ राजकमल, जीवकान्त आ राजमोहनक एसेन्स बहार क' क' फार्मूला तैयार क' लेल गेल, आ ओहिमे लाठी-भाला-बम के छौंक द' देल गेल आ ओहिमे उठापटक कें मशाला मिला देल गेल। हमरा बहुत मजेदार लगैत अछि जखन युवावस्थहि मे सय-डेढ़ सय कथा लिखि चुकनिहार कथाकार लोकनिक कोनो दुइए-एकटा कथा काजक देखार पड़ैत अछि, जाहिमे जीवनक स्पन्दन छैक। अहाँ डेढ़ सय बीज रोपै छी आ दुइये एकटा गाछ उत्पन्न भ' पाबैए तँ की अहाँ कें खराब माली नहि मानल जायत? की ई नहि कहल जाएत जे अहाँक योग्यता तँ ओहि बीज सभ मे प्रकट भेल अछि जे गाछ नहि बनि सकल, दू-एकटा जँ बनि सकल तँ से अहाँक अतिक्रमण करैत बनि सकल...अहाँक बावजूद।

दोसर कारण ई भेल जे मैथिली लेखक लोकनि रचनाकर्म कें अपन व्यक्तित्वक अंग नहि बनौलनि। लेखन करब सभ दिन हाशिया पर रहल। मैथिली लेखकक रूप मे चीन्हल जाएब स्वयं लेखकेक लेल अरुचिकर रहल। तकर ओना, उचित कारण विद्यमान अछि। मैथिली मे 'लेखक' नामक कोनो फूट पहचान एखनो समाज मे कायम नहि भ' सकल अछि। 'कवि' आ 'विद्वान'क प्रजाति जरूर चीन्हल-जानल अछि, मुदा कविक तात्पर्य कि तँ लोक भांड़ वा गबैया लगाक' बुझैत अछि अथवा सनौतनी पाखंडी पंडित लगा क'। पाखंडी हएब ओना तँ बहुत खराब बात थिक, मुदा जतए समुच्चा समाजे मे पाखंड स्वीकृति-प्राप्त हो, ततए तँ पंडित कें गरिमा भेटबे करतैक। एहि परिस्थिति मे आधुनिक आ प्रगतिशील व्यक्तित्व रखनिहार रचनाकारक लेल मैथिली-क्षेत्र मे कोनो पहचान कायम नहि भ' सकल। एहि ठाम एक प्रसंग हमरा मोन पड़ैत अछि। दिल्लीक अपन पछिला यात्रा मे वरिष्ठ हिन्दी कवि अशोक वाजपेयी संग हमरा गप-सप होइत रहए। अशोक जी आई. ए. एस. अफसर रहलाह अछि आ सभ खेमाक लेल एक प्रतापी लोक रहलाह अछि। से, ओ अशोक जी हमरा कहलनि जे जखन बाहर जाइ छी आ कोनो अपरिचित कें अपन परिचय दैत छिऐक तँ कहै छिऐक जे 'हिन्दी का कवि हूँ', ई कहब जे 'अफसर छी' बहुत उकड़ू लगैत अछि।

मानै छी जे अशोक जीक भाषा-क्षेत्र बड़की टाक अछि आ हमर क्षेत्र छोट अछि, मुदा हमर मंत्रेश्वर जी (कवि) आ कि अशोक जी (कथाकार) जँ नौहट्टा-मोहनपुर जाथि आ ओतए अपनाकें 'मैथिली कवि' बताबथि तँ लोक हुनका जे बुझतनि तकरा ओ सहन क' सकताह? स्थिति तँ आइ ई अछि जे मैथिलीक प्रोफेसर लोकनि, जे कि अपन जन्म-जन्मार्जित जड़ता आ कुसंस्कारक लेल प्रख्यात छथि, सेहो अपना कें मैथिलीक नहि 'मैथ'क प्रोफेसर बतबैत छथि (एहि सूचनाक लेल हम पंकज पराशरक आभारी छी।)

तँ, पहचान कायम नहि भ' सकबाक त्रासदी मैथिली लेखकक मनोविज्ञान मे भूर क' देलक आ खण्डित-मानस भ' जेबाक कारण लेखन-कर्म कें लोक अपन व्यक्तित्वक अंग नहि बना सकल। सृजनकर्म जँ व्यक्तित्त्वक अंग बनि जाय तँ सभ सँ पहिने तँ ओकर अपन जीवन सुगन्धिमय बनतैक, तदुत्तर ओ सहजावस्था कें; प्रकृतिस्थता कें प्राप्त क' सकत। तखन ओकर संभावना सभ प्रकट हेतैक, प्रतिभाक स्फुटन हेतैक। एवम् प्रकारें एक सम्पूर्ण सृजेता पुरूष समाज कें प्राप्त भ' सकतैक। मैथिली मे एहि सभक प्रश्ने नहि उठल, लोक बेमन सँ, शौकियाना तौर पर कहियो थोड़-थाड़ लिखलनि, अपन व्यक्तित्व सँ अपन लेखन कें परम सावधानीपूर्वक अलग राखैत रहलाह। मैथिली मे एक बहुत प्रसिद्ध सूक्ति अछि आ एहि सूक्तिक दर्जनो दृष्टान्त अछि जे कोनो लेखक कें जहिये साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटि जाइत अछि. तहिये ओ लेखन सँ संन्यास ल' लैत अछि। ई बात कोनो पाखण्डी आ व्यक्तित्वहीन समाज मे संभव भ' सकैत अछि। स्थिति ई एहू सँ विकट अछि। पुरस्कार-प्राप्तिक उपरान्त लेखन छोड़ब तँ एतए 'प्रतापी' लोकक कृत्य मानल जाइछ, जिनका बुते 'प्रताप' पार नहि लागै छनि ओ तँ पहिनहि छोड़ि दै जाइ छथि। अथवा जँ कहियो 'प्रताप' के स्थिति बनै छनि तँ पुरनका (बालापन सहित) के लिखलाहा के एक संकलन छपबा लैत छथि।

जे लोकनि मैथिली साहित्यक गतिविधिकें कने ध्यानं सँ देखै जाइत हेताह, से सभ एम्हर एक बात लक्ष्य केने हेताह। जाहि उमर मे आबिक' पहिने लेखक लोकनि लिखब छोड़ि दै जाइ छलाह, एम्हर देखै छी जे ओही उमर मे आबि क' लोक सर्वाधिक सक्रिय भ' जाइ गेलाह अछि। (सर्वाधिक सक्रिय कथी मे? साहित्यक राजनीति मे नहि, लेखन मे। ई बात भिन्न जे लेखन मे सक्रिय भेने ओकर थोड़े ताप, थोड़े आंच साहित्यक राजनीति पर सेहो पड़ि रहल छै।) ललित तहिया लिखनाइ छोड़ि देलनि (गुणात्मक रूप सँ) जहिया डिप्टी कलक्टर भेलाह, आ रमेश तहिया आर

गंभीरतापूर्वक लिखनाइ शुरू केलनि, जहिया डिप्टी कलक्टर भेलाह । महाप्रकाश रोजी-रोटीक ओझरी मे पड़लाह तँ लेखन छुटि गेलनि, प्रदीप बिहारी ओझरी मे पड़लाह तँ आरो बेसी समृद्ध लेखन केलनि । ललितेश मिश्रक प्रतिभा प्रोफेसरी खा गेलनि, विभूति आनन्दक प्रतिभाकेँ प्रोफेसरी आरो वृहत्तम आयाम देलकनि । एहन अनेकानेक उदाहरण भरल-पड़ल अछि । हम प्रश्न उठाबए चाहब जे एना कोना भ' सकल, आ एहि सभ बातक प्रभाव की मैथिली कथा पर नहि पड़लैक ?

मैथिली कथा मे आइ जे आलोचनात्मक प्रौढ़ता देखार पड़ैत अछि, तकरा पाछां सभसँ मुख्य कारण हमरा ई देखार पड़ैत अछि जे नव चरणक कथाकार लोकनि लेखन कर्म कँ अपन व्यक्तित्त्वक अंग बनौलनि । बहुत हद धरि 'मैथिली लेखक'क हीनता-भाव सँ मुक्त भेलाह । व्यक्तित्व मे स्वीकारभाव एबाक कारण सहजावस्था घटित भेलैक आ प्रतिभा अपन स्फुटन प्राप्त करए लागल । ई घटना एते व्यापकतापूर्वक पहिल बेर मैथिली-जगत मे घटलैक अछि ।

यात्रीजी आ राजकमल चौधरी सृजनकर्म केँ जखन अपन व्यक्तित्त्वक प्रधानतम अंगक रूप मे विकसित क' लेलनि तँ मैथिलीक दुनिञा हुनका असह्य आ अव्याप्तिपूर्ण लागलनि, आ ओ हिन्दी दिस चलि गेलाह । मुदा, राजमोहन, जीवकान्त आ प्रभास कुमार चौधरी व्यक्तित्त्व विकसित करबाक अछैत, हिन्दी मे अपन छवि बना लेबाक अछैत मैथिली मे अपना केँ समर्पित केने रहलाह । राजमोहन झाक सम्बन्ध मे हिन्दी कवि जगदीश विकलक एक कथन हम एतए कोट करए चाहब । हमरा संगें राजमोहन जी सँ मिललाक बाद विकल जी हमरा कहने रहथि-'अरे ये वही राजमोहन झा हैं क्या जो 58-60 के जमाने मे गंभीर हिन्दी पाठकों के चहेते कथाकार थे ? आज इन्हें कोई नहीं जानता तो इसका मतलब यही है कि महान प्रतिभाशाली लेखक भी अचर्चित रह जा सकते हैं ।' अस्तु । ई बात जीवकान्तोक संग रहनि आ प्रभासोक संग । तँ, हमरा ईहो देखार पड़ैत अछि जे नवचरणक दिस संकेत केनिहार ई तीनू गोटे पुरोधा पुरूष छलाह ।

पछिला पचास सालक अन्दर मैथिली लेखकक मनोदशा मे बहुत अन्तर आबि गेल अछि । यात्रीजी आ राजकमल मैथिलीक असह्य आ अव्याप्तिपूर्ण दुनिञा केँ देखलनि आ एकरा छोड़िये क' चलि गेलाह । मुदा हुनका दुनू गोटेक कएल काज जे अपन-अपन आभामंडल कायम कएलक तकर प्रसादात राजमोहन-जीवकान्तक लेल मैथिलीक दुनिञा तते असह्य आ अव्याप्तिपूर्ण नहि रहल मुदा हिनका लोकनि केँ बहुतो रास समझौता करए पड़लनि, जाहि कारण राजमोहन आ प्रभास तँ समरस निरन्तरता कायम नहिञे राखि सकलाह, जीवकान्तो केँ अपन प्रतिभाक उच्चतम फ्रीक्वेन्सी सँ थोड़े नीचां उतरि क' लेखन करैत रहए पड़लनि । मुदा, ई तीनू गोटे जे अपन आभामण्डल कायम कएलनि, से अगिला पीढ़ीक मुश्किल बहुत कम क' देलक । आजुक कथाकार ने तँ मैथिलीक दुनिञा केँ असह्य पाबि रहल छथि, आ ने अव्याप्तिपूर्ण । यद्यपि कि ई आत्मविश्वास जरूरत सँ बेसी अछि, वास्तव मे मैथिलीक वातावरण तते उत्साहजनक नहि अछि, मुदा वर्त्तमान मे सक्रिय कथापीढ़ीक गतिविधि केँ देखैत ई उक्ति चरितार्थ होइत अछि जे उत्साहक कारण बाह्य परिवेश मे नहि पाओल जाइछ, अपन आन्तरिक मनोरचना मे पाओल जाइत अछि । मिथिला सँ बाहरक साहित्य क्षेत्र मे आइ बहुत तेजी सँ मैथिली लेखकक पहचान कायम भ' रहलैक अछि । हम आशान्वित छी जे थोड़े दिन बितैत-बितैत मिथिला मे मैथिली लेखकक एक पहचान बनतैक । मिथिलाक गम्भीर पाठक समाज मे तँ एखनहुँ बनि रहलैक अछि ।



'आलोचनात्मक प्रौढ़ता' शब्दक जखन हम उपयोग करैत छी तँ हमर मुख्य तात्पर्य ई अछि जे एकभगाह ककरो दिस ठाढ़ नहि भ' जाइ ! जँ अहाँ जीवन केँ लक्ष्य क' क' विचार करै छी तँ ओकर सम्पूर्ण क्रम-अतिक्रम केँ अपन समस्त सन्दर्भक संग प्रश्नगत मुद्दा पर उभरिक' सामने आबए दियौ । आ, जँ विचार केँ लक्ष्य क' क' सोचै छी तँ तखनहुँ तर्कसंगत ढंग सँ ओकर आरोह-अवरोह केँ लक्षित होअए दियौ।

पुरान साहित्य मे आ नव साहित्य मे हमरा जनैत प्रमुख अन्तर ई अछि जे पहिने लेखक ककरा पक्ष मे तखन होइत छल, जखन कि ओ (विचार अथवा व्यक्ति) ओकरा 'नीक' लगैत छल आ आब लेखक तखन ओकरा पक्ष मे होइत अछि जखन कि जीवनक संरक्षण लेल ओकरा पसिन्न कएल जाएब आवश्यक अछि । कहब आवश्यक नहि जे लेखक केँ 'नीक' लागब एक व्यक्तिनिष्ठ मामला छल, कवि तँ अपना सृष्टिक ब्रह्मा होइत अछि, ओकरा जे नीक लागि गेल, से सभ नीक । नव सन्दर्भ मे, मामला वस्तुनिष्ठ अछि आ मूल प्रश्न ई नहि छै जे हमरा की पसिन्न अछि आ की नापसिन्न, मामला ई अछि जे हमरा जँ किछु पसिन्न अछि तँ से किएक पसिन्न अछि आ जँ ककरो नापसिन्न कएल जाय तँ से किएक कएल जाय । बात ई बहुत पुरान अछि, कैक सम्प्रदायक शास्त्रवादी लोकनि अलग-अलग शब्दावली मे एहि आशयक बात कहितो रहलाह अछि । मुदा, निट्ठाह वर्त्तमान समयक जे अपन दबाव छै, खतरा छै, समस्या आ संकट छैक से एहि सिद्धान्त केँ जीवनक अनुभवक रूप मे सज्जित क' देलक अछि । ई प्रौढ़ता चिन्तनशील मनुष्यक जीवन-दर्शन-रूप मे प्रकाशित भेल अछि।

प्रदीप बिहारीक कथा 'उग्रास' बहुत आवेगपूर्वक ई बात कहैत अछि जे काल के घात-प्रतिघातवश युवापीढ़ीक खून सँ नवोन्मेष आ प्रगतिशीलता समाप्त भए गेल अछि, आ अद्‌भुत बात थिक जे एहि नवोन्मेषक उत्साह बुजूर्ग पीढ़ी मे एखनो बांकी छै। एही निष्पत्ति कैं व्यापक समाजार्थिक फैलाव दैत शिवशंकर श्रीनिवास अपन कथा 'पुरान घर उठय' मे यैह गप कहैत छथि। ई दुनू गोटे नवचरणक कथाकार छथि। सनातनी आडंबर आ पाखण्ड सँ दुनू गोटे भिड़ंत करैबला जुबक छथि। तखन हिनकर एहन निष्पत्ति किऐक छनि ? 'नवतुरिये आबओ आगाँ' के तांतारटंत रूझान राखनिहार लोक सभ कैं एहि निष्पत्ति सँ निश्चिते असन्तोष हेतनि। मुदा, की ई विचारक विषय नहि थिक जे नवतुरिये कोना आबओ आगां ? आगां एबाक लेल स्वस्थ-सकुशल टांग-गोड़ चाही, सन्तुलित व्यक्तित्व आ पकठोस दिमाग चाही। पछिला बीस बरस मे जाहि तरीका सँ देश आ समाज के विनाशीकरण भेलैए, शिक्षा आ सांस्कृतिक नवाचार प्रदूषित भेलैए, आर्थिक असुरक्षा-भावना बढ़लैक, की आँखि मूनि क' कहल जा सकैए जे हमर नवतुरिया एहि योग्य बनि पाबि रहल अछि जे ओ समाज कैं नेतृत्व द' सकैक। प्रौढ़ता एहि बात मे निहित छैक जे 'क आबओ आगाँ' ई मुद्दा-आधारित अछि आ निर्णय जीवनक आ जीवन्तताक पक्ष मे हेबाक चाही।

भयंकर दिक्कत क बात छियै जे समाजक लोक कैं ई बात देखार पड़ैए मुदा आलोचक लोकनि कैं ई बात देखार नहि पड़ैत छनि। बहुत दृष्टि-दारिद्रय अछि। निश्चत रूप सँ ई शास्त्रमुखी हेबाक कारण अछि।

रमेशक कथा 'कैलास मण्डलक फिलिप्स रेडियो' बहुत हांशपूर्वक ई प्रश्न उठबैत अछि जे शूद्रक विकास मात्र आर्थिक स्वावलम्बन प्राप्त कए लेने नहि भ' जा सकैत अछि (अर्थात् ई बात सत्याभास थिक जे सामाजिक उत्थानक जड़ि आर्थिक स्वाबलंबन थिक) जा-जा शूद्र आर्थिक स्वाबलंबन प्राप्त करए, ताधरि ब्राह्मणवाद सेहो अपन काट, अपन रणनीति, अपन फ्रेश मैकेनिज्म तैयार क' लेत आ शूद्रक स्वतंत्रता एक संभावने बनल रहि जाएत। ओकर समापन शूद्रक आक्रोशे धरि पहुँचि क' भ' जाएत। चाउर-दालिक संग जँ नून-तेल-लकड़ी अहाँक लग हो तँ ई कल्पना क' लेब जे भानस क' क' अहाँ खाइये लेने हएब, मात्र फार्मूला-लेखनें टा मे भ' सकैए। आ जतए मानवीय शान्ति-सौजन्यक विरूद्ध ब्राह्मणवाद सन के लुटेरा चौचक भ' क' सक्रिय हो, ततए तँ एहन आसान निष्पत्ति बहार क' लेब स्वप्न-दर्शने काल टा मे संभव अछि।

'जिन्दाबाद-मुर्दाबाद' बला शैली मे ब्राह्मणवादक विरूद्ध शूद्रवाद कैं जरूर ठाढ़ कएल जा सकैए। हिन्दी मे आ किछु आन भारतीय भाषा-साहित्य मे तँ ई ठाढ़ो

कएल गेलैए। रच्छ अछि जे मैथिली मे ई ठाढ़ नहि भेल। मुदा, जखन बहुत जिम्मेदार तरीका सँ सोचै छी तखन जा क' लगैत अछि जे रच्छ अछि। जबदाह पानि मे ढेला मारिक' कंपन पैदा करब सेहो अपना जगह पर एक विराट घटना भ' सकैए। कतेको बेर हमरा लगैए जे जतबा दिन धरि मैथिली मे जनवाद के धकापेल चलल, तकर आधो समय धरि जँ शूद्रवाद के हिलोर चलल रहितैक तँ आक्रमण कदाचित एत्ते खाली नहि जाइत। मुदा दिक्कत ई अछि जे जनवाद बहुधा हवा मे चलाओल गेल अछि जखन कि शूद्रवादक लेल धरती आवश्यक अछि। मैथिली कथा मे शूद्र तँ आएल मुदा ओकरा हक मे शूद्रवाद (जतए अपन सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग शूद्र अभिव्यंजित हो शूद्रवाद) के बदला शॉर्टकट आ चतुरतापूर्ण रस्ता 'जनवाद' अख्तियार क' लेल गेलै, ई गप जे भेल से मैथिल बुद्धिजीवीक ब्राह्मणवादी मनोरचनाक अनुकूले भेल।

से जे से'। एक जिम्मेदार आदमीक रूप मे सोचै छी तँ ई बात ठीक लागैए जे मैथिली कथा मे शूद्रवाद नहि आएल, कारण जँ ओ आबितए तँ फजीहत ओहिनाक ओहिना हेबाक रहै, जेना मैथिली कथाक भेल।

नवचरणक मैथिली कथा मे शूद्र कोन तरहें, कोन रूप मे आबि रहल छैक, ई बात हम आगाँ करब, मुदा एतए एक प्रासंगिक प्रश्न उठबए चाहै छी।

अशोकक एक प्रसिद्ध कथा छनि-'सीवन रजकक हितचिन्तक'। एहि कथा मे ओ देखौलनि अछि जे ब्राह्मणवादक विरूद्ध शूद्रवाद कैं जँ अनियोजित ढंग सँ स्वीकृति द' देल जाइक तँ सेहो जीवन आ जीवन्तताक पक्ष मे नहि अछि। कुसंस्थाबद्ध शूद्रवादक कारण सीवन रजक अनाकांक्षित रूप सँ असावधानतापूर्वक चपरासीक स्वच्छन्द नौकरी सँ प्रोमोशन पाबि कए किरानी भ' जाइत अछि तखन जे ओकर जीवन्त जिनगी मे परेशानी सभ आबए लागै छै, तकर सुसंगत वर्णन अशोक कएलनि अछि। शास्त्रवादक पैरबीकार लोकनि कैं उक्त दुनू कथा (रमेश आ अशोकक) उत्साहजनक लगतनि, जँ ओ सहज सनातनी भेलाह, आ दुनूक दुनू कथा अप्रिय लगतनि जँ ओ असहज जनवादी भेलाह। मुदा, दू मे सँ किनको सँ की सहमत भेल जा सकैछ ? हारि आ जीत के बीच जे घात-प्रतिघात छैक, आरोह-अवरोह छैक, तकरा कनिञो अनठौने की जीवनक पक्ष मे भेल जा सकैत अछि ?

आस्था जँ होअए तँ सेहो आलोचनात्मक, अनास्था जँ होअए तँ सेहो आलोचनात्मक-यैह आलोचनात्मक प्रौढ़ता थिक। हम बहुत चकित होइत छी जखन एक्के कालखण्ड मे लेखन करैत युवा विनोद बिहारी लाल मे ई चीज हमरा नहि देखार पड़ैत अछि, मुदा बुजूर्ग जीवकान्त मे जगजगार देखाइत अछि। विनोद बिहारी तँ सेहो

आब प्रौढ़ भेलाह, युवतर संजय कुन्दन धरिमे ई चीज निपत्ता अछि। आ सैह टा किऐक? एक सर्जक के रूप मे जे प्रौढ़ता हमरा रमेश मे देखार पड़ैए, सैह रमेश कतेक जड़ देखाइत छथि, जखन ओ विचारकक रूप मे निबन्धादि लिखै छथि ?

एकबेर फेर हम प्रदीप बिहारीक कथा 'उग्रास' केँ कोट करै छी, जखन हमरा ई मोन पड़ैत अछि जे हमर 'ककरा सँ कहती बेटी' कथा केँ खारिज करैत युवा समीक्षक संजय कुन्दन कहए लगलाह जे बेटीक संग होइत बलात्कार सँ पिताकेँ प्रसन्न होइत नहि देखाएल जेबाक चाही, कारण अविश्वसनीय हेबाक संग-संग ई बात भारतीय संस्कृति के विरूद्ध सेहो अछि। ऊपर सँ जुझारू जनवादी नौजवान देखाइत एहि समीक्षक केँ भारतीय संस्कृतिक हित-चिन्ता किऐ होअए लगलै, खासक' क' एहि तथ्यक विरूद्ध जे समाज मे आइ की-की घटित भ' रहल अछि ! ई बात तँ जरूर सोचल जायबला अछि !

अशोकक कथा 'हिस्सक' मे खोज कएल गेल अछि जे चारा घोटाला वगैरह मे जखन नेता अथवा अफसर केँ जेल जाए पड़ैत छनि तँ हुनका किऐ डर होइ छनि? किऐ ओ जेल जाए नहि चाहैत छथि, जखन कि राजसत्ताक बलें जेल जीवन आ सामान्य गृहं-जीवन मे तँ कोनो फर्क नहि भ' जेबाक अछि। सभ किछु तँ एहिनाक एहिना रहत, बरू मूर्ख जनता केँ भावुक बनाक' थोड़े आरो लाभ भेटि जाएत, तैयो जेल जाइ सँ घबराहट किऐ ? ई जे प्रश्न अछि से निज हमरा अहाँक समयक देन थिक, जकर दवाब हमरा अहाँक 'वायुमण्डल' पर पड़ि रहल अछि। लेखक जँ क्षमताशाली अछि तँ ओकरा चाही जे एहि प्रकारक उदीयमान प्रश्न सभक जड़ि मे ओ प्रवेश करए। यैह तँ नवता थिक, जकर अपेक्षा कोनो लेखक सँ कएल जाइत छैक।

मुदा नहि। हमर 'विवेक-वध' कथा अगड़ा-पिछड़ाक विद्वेष आ भिड़ंतक विषय मे लिखल गेल अछि। कथा मे देखाओल गेल अछि जे जातीय-विद्वेषक लड़ाइ मे जँ स्त्रिगण शामिल भ' जाथि तँ एकर जटिलता बहुत-बहुत बढ़ि जाइत अछि। एहि कथा पर टिप्पणी करैत एक समीक्षक ई राय व्यक्त कएलनि जे सौंसे देशक समाज-शास्त्री लिखै छथि जे जातीय-विद्वेष सँ महिला समाज एखनधरि मुक्त अछि, आ जें कि सौंसे देशक समाजशास्त्रीक विरूद्ध जा क' स्त्रिगणकेँ एहि झगड़ा मे पड़ल देखाओल गेल अछि, तें ई ठीक कथा नहि अछि।

प्रसंगवश ई चर्चा कएल। समीक्षक लोकनिक राय मे 'विवेक-वध' टा ठीक कथा नहि अछि, से बात नहि। कोनो कथा ठीक नहि अछि। कारण, जेहन कि संभावना कएल जाइए कथा सँ, ताहि तरहें ओ अपन बात नहि कहैत अछि। जे बात समीक्षक

लोकनि सुनए चाहै छथि, जाहि निष्पत्ति धरि पहुँचय चाहैत छथि, कथा ताहि दिशा मे गमन नहि करैत अछि। समीक्षक असहमत होइत छथि। नामवर सिंह अपन पुस्तक 'वाद विवाद संवाद'क भूमिका मे एक बड़ नीक वचन कहने छथि जे स्वयं सँ असहमतिक जोखिम लइयो क' दोसरक संग सहमतिक तलाश करबाक चाही। मुदा, ई 'मानवीय चेष्टा' मैथिली बुद्धिजीवी मे कहां पाबी ? असल मे होइत छैक ई जे दोसर सँ सहमतिक तलाश लेल बुद्धिक फाटक खुलल रहबाक चाही, आ अहंकार केँ थोड़े नमनीय हेबाक चाही। से नहि भेने असहमति अपना जगह पर बनले रहत। आ, असहमति जें कि अहाँक जड़ता सँ बहराएल अछि (जीवन्तता सँ नहि) तें एहन बेढ़गा कारण अहाँ बताबए लागब जे सनातन धर्मक इतिहास मे दर्ज करैबला कोटिक हएत। सभ क्यो जनैत छी जे कथाकार केँ जीवन सँ आ समाज सँ 'वस्तु' लेबाक चाही समाजशास्त्र सँ नहि; कथाकार केँ जीवन आ समाजक प्रति प्रतिबद्ध हेबाक चाही स्वयं सेवक संघी शैली मे भारतीय संस्कृतिक प्रति नहि; कथाकार केँ स्थितिक घात-प्रतिघात द्वारा जीवनक विरूद्ध ठाढ़ संकट केँ नांगट करबाक चाही, हथियार उठाक' नाराबाजी क' क' नहि-ई बात सभ क्यो जनैत छी, मुदा समीक्षक जखन अपना जड़तामूलक असहमतिक कारण गनाबए लगताह तँ ई सभटा बात ब्रह्मवाक्यक शकल मे पेश होअए लागत। जीवकान्तक कथा 'तेल' एहि चरणक एक अति महत्त्वपूर्ण रचना थिक। ओ कथा बहुत दारूण रूप सँ सामाजिक हैसियत केँ चोर-गिरहकटक हाथ ट्रान्सफर भ' जेबा बात उठबैत अछि। बहुत दारूण रूप सँ। एत्तेक जे जँ अहाँ जीवन्त हृदय राखैत होइ तँ पसीज जाएब। मुदा, समीक्षक लेल धनि सन। हमर अग्रणी समीक्षक लोकनि एहि दुआरे एहि कथा केँ खारिज करबाक प्रस्ताव रखै छथि जे एहिमे जुझारूपन नहि अछि, माने जनता हथियार नहि उठबै अछि, आर तँ आर ढेला उठाक' पानिओ धरि मे मारब जरूरी नहि बुझैत अछि (ततबो आक्रोश नायक मे नहि छैक)

एहिठाम आबिक' जीवकान्तक एक वचन, जे कि 'अन्तरंग' मे छपल अपन इन्टरव्यू मे ओ कहने छथि, हमरा मोन पड़ैत अछि जे आलोचना जखन समकालीन कविता केँ बुझबाक दावा करैत अछि तँ ओ दयनीय आ हास्यास्पद लाग' लगैत अछि। हम जोड़ए चाहब जे ई बात कविते टा पर नहि, कथो पर शतशः लागू होइत छैक।

प्रसंगवश, एतए हम मैथिली कथा समीक्षाक अपंगता पर थोड़ आरो बात जोड़ए चाहब।

(1) अपना ओहिठाम एक सुप्रसिद्ध जुमला अछि-'स्वातन्त्र्योत्तर कथा-साहित्य।' एहि नामकरणक पाछाँ भारतीय स्वतंत्रता केँ प्रस्थान-बिन्दु मानल गेल अछि। किऐक मानल गेल ? की भारत केँ 1947 मे प्राप्त राजनीतिक स्वतंत्रताक संग-संग मैथिली

कथा-साहित्य कैं सेहो स्वतंत्रता प्राप्त भेल ? तँ की भारते जकाँ मैथिली साहित्य सेहो पहिने परतंत्र छल ?

मुदा से नहि । तर्क देल जा सकैए जे 1947 क वर्ष भारतक इतिहास लेल कोनो साधारण वर्ष नहि थिक । भारतक आजादी कोनो साधारण घटना नहि थिक। ई एक प्रस्थान-बिन्दु थिक । नव-निर्माण आ नवीन जनाकांक्षाक उदय केर ई विभाजक वर्ष थिक । आ, अपन साहित्यादिक काल-निर्धारण वर्ष जँ हम एतए सँ शुरू करैत छी, तँ कोनो अनचित नहि करैत छी । जँ यैह तर्क एकर नामकरणक पाछाँ रहैत तँ कदाचित एहि भावना सँ सहमत भेल जा सकैत छल । मुदा दुर्भाग्यवश से बात नहि अछि ।

आधुनिक मैथिली कथाक ई नामकरण स्वतंत्रताक प्रायः बीस-पच्चीस वर्ख बाद कएल गेल । विचारणीय थिक जे नवनिर्माणक इंगित जँ हमर अभिप्रेत छल, तें तखनहि ई बात हमरा मानस-पटल पर किऐक नहि अभरल ?

नामकरणक पाछाँ मुदा, उद्देश्य दोसर छल ।

हम सभ गोटे जनैत छी जे भारतीय गणराज्यक स्थिति दिनादिन पतनोन्मुख होइत गेल अछि । स्वतंत्रता-आन्दोलनक महान लक्ष्य स्वतंत्रता भेटितहि मटियामेट भ' गेल। जनताक दशा बिगड़ैत गेल । शुरू-शुरू मे कंबल ओढ़िक' घीउ पीनिहार नेता लोकनि धीर-धीरे अपन कंबल उघारैत गेलाह आ कालान्तर मे कंबल फेकि क' घीउ पिनाइ तँ के कहए, घीउक खुलेआम पैकारी करए लगलाह ।

एही पतनशीलताक स्थितिकेँ अभिप्रेत करबाक निमित्त 'स्वातंत्र्योत्तर' शब्द समीक्षाशास्त्र मे आएल । एकर अभिप्राय नव-निर्माणक रस्ता ताकब नहि, पतनशीलता कें व्याख्यायित करब मानल गेल ।

'स्वातंत्र्योत्तर' शब्दक अर्थ द्विमुखी अछि । अपन मूल मे भने एहि शब्दक अर्थ द्विमुखी होउक वा नहि, प्रयोक्ता विद्वान लोकनिक मनोविज्ञान मे अवश्यमेव द्विमुखी अछि। एकर एक अर्थ तँ अछि- भारतक राजनीति आ जनताक दशा-दिशाक पतनशीलता (जकरा कि 'मोहभंग' सँ ल' क' 'विद्रोह' धरिक शब्दावली मे अभिव्यक्त कएल गेल अछि) । आ दोसर अर्थ अछि-स्वयं कथा-साहित्यक पतनशीलता । जेना-जेना भारतक राजनीति नीचाँ खसैत गेल, स्वतंत्रताक स्वप्न टुटैत गेल, तहिना-तहिना साहित्यक स्तर आ मानदंड आ स्वर-लय सेहो नीचाँ खसैत गेल ।

कोनो शब्द जखन व्यापक चलन मे अबै छै, तँ ओहि शब्दक अर्थ मात्र शब्दकोष मँ जानब पर्याप्त नहि होइत छैक, प्रयोक्ता समूहक इष्ट, अभिप्राय आ मनोविज्ञान कैं

सेहो देखल जाइ छै । एही तरहक एक शब्द 'उत्तर आधुनिकता' थिक, जकर चलती आइ हिन्दी-अंग्रेजी मे बड़ जोर जागल छै ।

समीक्षक लोकनिक मनोविज्ञान कते भयंकर रूप सँ एहि द्वितीय मुखार्थ सँ प्रभावित अछि, तकर प्रमाण मैथिली कथा पर लिखल लेख सभ अछि । हमरा बुझने मैथिली कथा पर लेख तँ आइधरि लिखले नहि गेल अछि (ईहो लेख नहिये थिक) जे लिखल गेल अछि, से इतिहास थिक । दुइयो-चारि पृष्ठक सामग्री जखन लिखबाक रहैत छनि, तखनहुँ, आश्चर्यक बात थिक जे समीक्षक लोकनि इतिहासे लिखैत छथि । एहि इतिहासक निहितार्थ बस एतबे जे मैथिली कथा कोना गरिमामय ढंग सँ प्रारम्भ भेल छल आ कोना आइ एकर उपवन उजड़ि गेल । स्वाभाविक थिक जे मैथिली कथाक वर्त्तमान बताबक हेतु हुनका लोकनि लग दू-चारि पांती, अथवा बेसी सँ बेसी एक पाराग्राफ जगह नहि बचैत छनि ।

(2) 1950 क दशक मे जे प्रतिभाशाली कथाकार लोकनि कथा-लेखन क' रहल छलाह, हुनका लोकनि कैं दृष्टिक आधार पर दू कोटि मे बाँटल जा सकैत अछि। एहि मे सँ किछु गोटेक जड़ि मिथिलाक जनजीवन मे गहराइ धरि धँसल छल आ ओ लोकनि अपन आधुनिकता-दृष्टिक उपकरण सँ मैथिल जनजीवनक अवस्थिति कैं ओकर आरोह-अवरोह कें सहभोक्ता जकाँ वाणी द' रहल छलाह । एवम् प्रकारें ओ मैथिली कथाक परम्परा के विकास क' रहल छलाह ।

दोसर कोटिक एहनो लेखक लोकनि रहथि, जिनकर जड़ि देश-विदेशक आधुनिक साहित्य मे गहराइ धरि धसल रहनि आ मैथिली साहित्य कैं उन्नत करबाक सदिच्छा सँ ओ मैथिली मे कथादि लिखि रहल छलाह । स्वाभाविक छल जे हिनका लोकनिक लक्ष्य परम्पराक विकास नहि, परम्पराक विरोध करब छल । (ई बात भिन्न जे प्रतिभागुणें कैक गोटेक ई विरोध सेहो विकासे बनिक' सोझाँ आएल ।)

परम्पराक विकास बनाम परम्पराक विरोध ई एहन तुमुल कोलाहल बनिक' मैथिली साहित्य मे प्रकट भेल, जकर अनुगूंज एखनाधरि सुनाइ दैत अछि ।

ई घटना भयानक रूप सँ दुभाग्यपूर्ण अछि जे जखन आधुनिक कथाक समीक्षाशास्त्र गढ़बाक चेष्टा भेल, तँ द्वितीय कोटिक लेखक लोकनि कैं अग्रिम पाँति मे बैसाओल गेल। तात्पर्य ई जे आधुनिकताक अग्रणी ओ लोकनि भेलाह जे अपन धरती सँ नहि, देश-विदेशक साहित्य सँ आधुनिकताक आयात कएने छलाह ।

स्थिति एत्ते धरि विकट भेल जे जे लोकनि मौन आ एकाग्र भ' क' परम्पराक विकासक मार्ग-सन्धान मे लागल छलाह, ओ लोकनि मैथिली कथाक मुख्यधारा सँ बाहर निकालि देल गेलाह ।

आधुनिक कथा-समीक्षाक प्रारम्भ हवा मे टांगल कथा-दृष्टिक प्रशस्ति सँ भेल अछि तें स्वाभाविक थिक जे पारंपरिक जकाँ लागब अपराध सन भ' गेल । मणिपद्म आ गोविन्द झा सन कथाकारक हीनताइ एहि तथ्य सँ निरूपित कएल गेलै जे आधुनिकताक गन्धे टा हिनका मे छनि आ तकर विकासक ई लोकनि कोनो जतन नहि क' सकलाह ।

कथा-समीक्षक प्रारम्भे एहन छल, जकर परिणति फार्मूला-लेखनक 'सहकारी खेती' पर आबिक' हेबाक छलै । से भेल ।

(3) मैथिली मे कथा-समीक्षाक गंभीर प्रयास हेबनि मे आबिक' भेल । कथा-समीक्षा ओहुनो काव्य-समीक्षा जकाँ सुकर आ विधि-व्यवस्थित नहि होइत छैक। एहि दुष्करता आ प्रविधि-दारिद्रय कें समीक्षक अपन प्रतिभाक प्रचुरते टा सँ जीति सकैत छथि । कथा-समीक्षा मे हेबनि मे आबिक' प्रतिभाशाली समीक्षकक अवतरण भेलैक, जे उपर्युक्त दुनू (शास्त्रीय दुष्करता आ प्रविधि-दारिद्रय) चुनौती सँ मुकाबला क' क' 'व्यवस्था' द' सकै छलाह । कम सँ कम दू गोट प्रतिभाशाली समीक्षकक नाम तुरत-तुरत हमरा सोझां एखन आबि रहल अछि--कुलानन्द मिश्र आ मोहन भारद्वाज जे कथा-समीक्षा कें व्यवस्थित करबाक जतन कएलनि, यद्यपि कि हिनका लोकनिक मुख्य कार्यक्षेत्र कथा-समीक्षा किन्नहु नहि रहल, तैयो । (एहिठाम आन कोनो गोटेक चर्चा करब व्यर्थ अछि, कारण प्रश्न कथा-समीक्षा कें 'व्यवस्था' देबाक अछि, उठा-पटक आ दकचा-दुकची करबाक नहि)

एकरा महान दुर्योग कहल जेतै जे उपर्युक्त दुनू समीक्षक एक्के दृष्टिकोण, एक्के दृष्टिक, एक्के चिन्ता-विचारक लोक भेलाह । दुनूक समीक्षा-दृष्टि मार्क्सवादी अछि। कतेको बेर तँ पाठक कें एहन लागि सकैत अछि जे दू मे सँ कोनो एक्के गोटे कें जँ राखि लेल जाय, तँ दोसरक समाहार ओही मे भ' जेतैक, दृष्टिगत तते एकरूपता छैक । (पाठगत विविधताक गप हम एतए नहि कहि रहल छी)

एहि जीव-जगत कें वैज्ञानिक रीति सँ व्याख्यायित करबाक लेल मार्क्सवाद सर्वोत्तम दृष्टि थिक । मुदा एकमात्र दृष्टि नहि थिक । संस्कृति आ कलाकें देखबाक हेतु एकमात्र तँ किन्नहु नहि । मार्क्सवाद जतए अपन परिपूर्ण प्रस्फुटन मे हो, ततहु, बहुतोरास एहन प्रश्न सभ बचि जाइत छैक, जकर उतारा ओकरा लग नहि छैक, जखन

कि ई एक साफ सत्य अछि जे मैथिलीक दुनिञा मे मार्क्सवाद अपन परिपूर्ण प्रस्फुटन कें कहियो प्राप्त नहि कएलक । (तकर बहुतो कारण छैक आ सदसद्विवेचिनी बुद्धि राखिक' एकर आत्मान्वेषण कएल जा सकै छै ।)

स्वयं मार्क्सवाद मानैत अछि जे विकासक लेल द्वन्द्व अपरिहार्य अछि । द्वन्द्व नहि तँ विकास नहि । चालू मोहाबरा मे कहल गेल अछि जे मार्क्सवाद कें लड़बाक लेल एक शत्रु अनिवार्य सँ चाहबे करिऐक । 'महान दुर्योग' हम एहि अर्थ मे कहैत छी जे कथा-समीक्षाक क्षेत्र मे कोनो दोसर दृष्टिये नहि जनम लेलकैक तखन द्वन्द्व ककरा सँ आ विकास कोना ? जे 'व्यवस्था' एकबेर द' देल गेलैक, तकरा टस्स सँ मस्स करबाक प्रस्तावो धरि कतहु सँ नहि आएल ।

एना मे एकांगिता अपरिहार्य अछि आ एहि एकांगिता कें हमरा लोकनि एकमात्र सत्य बुझबाक लेल लाचार छी ।

(4) कथा-समीक्षा मे 'विकल्पक रणनीति' कें निर्णायक कुंजी मानि क' चलल गेल, हमरा बुझनें ईहो एक भयानक दुर्घटना छल । कोन कथा श्रेष्ठ, कोन कथा निकृष्ट, एहि बातक निर्णय एहि आधार पर कएल गेल जे कथाकार यथार्थक समान्तर कोनो विकल्प अपना कथा मे द' पबैत अछि की नहि । ललितक कथा 'रमजानी' कें आधुनिक कालक सर्वश्रेष्ठ कथा हेबाक खिताब एहि डायलॉगक आधार पर देल गेल जे मजूर ने हिन्दू होइत अछि ने मुसलमान, ओ तँ मात्र 'मजूर जाति'क होइत अछि। कृषि-युग सँ मशीनी युग मे प्रवेश करैत भारतीय जनताक स्वर्णिम स्वप्न रमजानीक एहि यदृच्छा पर विकल्पक रणनीति घोषित कएल गेल जे ओ (रमजानी) एक्का बेचिक' रिक्सा कीनत आ ओकर बेटा मोस्ताक स्कूल मे पढ़ए जाएत ।

कथाकारसँ विकल्पक अपेक्षा करब अनुचित नहि । लेखक आ चिन्तक जँ विकल्प नहि देत, तँ के देत ? जहाँ न जाय रवि वहाँ जाय कवि-ई बात जे कहल गेल अछि से एही अर्थमे तँ कहल गेल अछि जे ओ एहि दुनिञा सँ बेहतर दुनिञाक विकल्प-दृष्टि रखैत अछि । मुदा परम विचारणीय प्रश्न ई अछि जे कोनो 'सृजन' कें ग्रहण करबाक शर्त्त की विकल्प-दर्शन मात्र हेबाक चाही ? हम अपन वोट कोन पार्टीकें दी, कोन पार्टी लगमे विकल्पक रणनीति छैक-एक समझदार आदमी जाहि शर्त्त पर अपना लेल राजनीतिक दल चुनैत छैक, की ओही शर्त्त पर कथा समीक्षाकें अपना लेल कथाकार चुनबाक चाही ?

दोसर परम विचारणीय प्रश्न ई अछि जे कथाकार जे विकल्प देत, से ओकरा अपन सम्पूर्ण कृतिक स्तर पर, टोटलिटीमे देबाक चाही आ कि कथाक अन्तिम दृश्यमे

आ कि अन्तिम दृश्यक डायलॉग मे ? मूल बात ई जे विकल्प 'कथ्य' मे रहबाक चाही आ कि 'निष्पत्ति' मे ?

'रमजानी'क हिट कएलाक बाद, थोड़े दिन तँ जरूर लागल, मुदा एहन जोरदार डायलॉग आ धांसू 'सीन' के ढेरी लागि गेल। मैथिली कथा-परिदृश्यक एक अद्‌भुत यथार्थ थिक जे जतेक जं फार्मूलाबाज आ हवाइ कथा लिखल गेल, सं कथ्य-मुखी नहि अछि, निष्पत्तिमुखी अछि। वाहवाहिए एही मे रहै। प्रशस्ति एहीठाम रहै।

स्थिति एते जटिल आ भयावह अछि जे मार्क्सवादी समीक्षाशास्त्र लग एहि प्रश्नक कोनो उतारा नहि अछि जे जीवकान्त आ राजमोहन झा जँ श्रेष्ठ कथाकार छथि तँ कोना छथि ? कोनो उतारा नहि अछि। देल गेल 'व्यवस्था'क हिसाबसँ ई दुनू महाग घटिया लेखक छथि।

एहि परिस्थितिमे जँ क्यो अशोककेँ नीक कथाकारक रूपमे शुमार करैत छथि तँ मानबाक चाही जे अपने देल गेल व्यवस्थाक संग ओ विश्वासघात करै छथि, जकरा आमभाषा मे गद्दारी कहल जाइ छै।

नव चरणक मैथिली कथाक जखन हम बात करै छी तँ हमरा ई बात एकदम फड़िच्छ अछि जे कथाकार लोकनि कथ्यमुखी भ'क' लिखि रहलाह अछि, निष्पत्तिमुखी भ'क' नहि। कथ्यक भीतर सँ जँ विकल्प जनमि रहल हो तो बड़ बेस, जँ नहि तँ विकल्पक जिम्मेवारी पाठक पर छोड़ि देबाक चाही।

साहित्य, जँ ओ एक उत्तरदायी सृजन थिक, तँ विकल्प तँ ओ देबे करत। एक उत्तरदायी साहित्य विकल्प देबाक लेल अभिशप्त होइत अछि। ओकर जन्मे एही उत्प्रेरणा सँ होइत छैक। मुदा, विकल्पक निर्णय के करत ? दूटा संभावना छैक-कि तँ स्वयं लेखक विकल्प चुनत अथवा पाठक ! मैथिली कथाक व्यवस्थित समीक्षाशास्त्र पाठककेँ एहि योग्य नहि मानैत अछि जे ओ विकल्प चुनबाक आजादीकेँ सम्हारि पाओत! फार्मूलाबाज कथालेखन हमेशा पाठककेँ जड़मति बूझिक' कएल जाइत अछि आ ई एक प्रकारें पाठककेँ जड़मति बनौने राखबाक षड्यंत्र थिक।

जाहि 'दृष्टि' सँ देखैत विनोद बिहारी लाल एक 'नीक कथाकार' छथि, ओही दृष्टि सँ अशोक सेहो आखिर कोना एक 'नीक कथाकार' भ' सकैत छथि ? जाहि दुनिञा मे राजमोहन झा आ जीवकान्तक लेल जगह नहि छै, ओहिमे अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवासकेँ कोना जगह भेटि सकै छनि ? हँ, मामला जँ विश्वासघातक हो तँ से तँ व्याकरणक विषये नहि थिक। मुदा, मामला जँ 'दृष्टि परिवर्त्तन'क हो तँ एकर एक सुसंगत, तारतम्यपूर्ण आ प्रवाहानुयायी संबद्धता हेबाक चाही।

हम जखन 'नवचरण'क बात करै छी तँ अपन रही अभीप्साकेँ वाणी द' रहल होइ छी।



आलोचनात्मक प्रौढ़ताक संग कथामे ममत्वपूर्ण अनुरागक हम चर्चा करैत रही। आ ईहो चर्चा करैत रही जे नवचरणक कथा मे जे ई चीज आबि रहल छैक से सीधे जीवन मे उतरिक' आनल जाइ छै। एहि क्रममे ई बात जोड़ि लेल जाय जे नवचरणक जे कथाकार लोकनि छथि से आत्यन्तिक रूपसँ आस्थावादी, आशावादी आ हद दरजा धरि सकारात्मक सोच सँ लैस छथि।

कथा मे जँ एहन परिदृश्य आबि रहलैक अछि जे हमरा जीवनक प्रति आश्वस्तिपूर्ण बनबैए तँ एकर एक अर्थ ईहो थिक जे ई कथाकार लोकनि जीवनकेँ ओतए सँ ताकिक' बहार क' रहल छथि, जतए कि वास्तव मे जीवन अछि। जँ अहाँक कुंजी हेराएल हुअए कोठली मे आ एकरा अहाँ ताकैत होइ सड़क पर तँ ओ किन्नहु भेटबैया नहि अछि। जँ मानि लेल जाय जे दैववश कोनो कुंजी अहाँकेँ भेटियो गेल (कोनो आन व्यक्तिक हेराएल कुंजी) तँ ताहि सँ अहाँक ताला तँ नहिञे खूजत। क्यो भला आदमी ई बात गछताह जे कोनो वस्तुकेँ ताकल ओत्तहि जेबाक चाही, जतए कि ओ अछि अथवा जतए ओकर हेबाक संभावना छैक।

ई कथाकार लोकनि आस्थावादी आ सृजनात्मक छथि तँ स्वत: स्वाभाविक अछि जे ई लोकनि अपन कथाक लेल परिदृश्यकेँ ओतए सँ उठा रहलाह अछि, जतए कि आस्था आ सृजनात्मकता छैक। ई चीज पतनशील सामन्तवादी-ब्राह्मणवादी जीवन-शैली मे नहि छैक आ ने ई चीज नवविकसित धनपशु वर्ग मे छैक। तथाकथित धार्मिकताक वितंडावाद मे ओझराएल कायर भोगी-समूह मे सेहो ई चीज नहि छैक आ ने जीवनक हरेक आयामकेँ राजनीतिक ऐनामे देखनिहार अविकसित मानसबला नाराबाज समूहमे। सारांशत: हरेक ओहि जगह पर ई आस्था आ सृजनात्मकता नहि छैक, जतए परजीवी संस्कारक गछाड़ छैक आ जतए जीवनसँ बाहर सुख ताकबाक हवस छैक। बहुतो एहन समूह अछि जतए ई चीज नहि छैक मुदा जतए कतहु ई चीज-आस्था आ सृजनात्मकता छैक, गौर कएल जाय जे ओ दलित लोकक समूह थिक। 'दलित' सँ एहिठाम हमर तात्पर्य जाति-समूह अथवा वर्ग सँ नहि अछि, दलितक अर्थ थिक-ओ वर्ग, जकरा कि सनातन-व्यवस्था आ आधुनिक व्यवस्था, दुनू पददलित कएलक अछि। आशा आ रचनात्मक ओज एहि वर्गमे अछि तँ स्वाभाविक थिक जे जीवनक स्पन्दन सेहो अछि।

नवचरणक मैथिली कथामे शूद्र, स्त्री आ बच्चा, एहि तीनू दलित-समूहक आबाजाही व्यापक रूप सँ बढ़ि गेल अछि । ई तीनू दलित समूह जे कथामे आबि रहल अछि, से अपन सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग आबि रहल अछि । जें कि लेखकक नीयत साफ-साफ जीवनमे आस्थाक खोज रहैत अछि, अखण्डमानस व्यक्तित्वक कथापात्र एम्हर मैथिली कथामे खूब आबि रहल अछि । हँ एहन किछु यादगार कथापात्र सेहो परिपूर्ण प्रस्फुटनक संग आएल अछि जे जात्या तँ ने शुद्र अछि ने स्त्री, मुदा जकर सामाजिक हैसियत स्त्री-शूद्र सँ बेहतर नहि रहल अछि, ओ हेय आ हास्यास्पद मानल जाइत रहलाह अछि ।

किछु एहनो कथा सभ लिखाएल अछि जे वर्त्तमान समयक संकट आ खतराक कथा थिक, आ स्वाभाविक जे एकर पात्र सभ सृजन-विरोधी आ अनास्थोत्पादक संस्कारक लोक अछि । कथाक सम्पूर्ण परिदृश्य खतरनाक रूपसँ हिंसा आ जुगुप्सा जनक विवरण सँ भरल अछि, मुदा जखन कथाकार खतराक मापन करए लागैत छथि, जेना थर्मामीटर पर मापल जाइछ जे कतेक डिग्री बोखार अछि, तहिना जखन कथाकार मापए लागै छथि जे ई समय कतेक डिग्री खतरनाक अछि तँ कथाकारक मापन-उपकरण एही तीनू दलित समूहमे सँ क्यो एक बनैत अछि । 'कथी ले मोन घुरमल जाय' (रमेश) मे शूद्र, सिनुरहार (शिवशंकर श्रीनिवास) मे स्त्री, मातबर (अशोक) मे बच्चा आ 'तेल' (जीवकान्त) मे इतर हेय-समूह (उदाहरणक लेल कोयला सँ तेल बहार करबाक उपकरणक आविष्कार करबा मे लागल मैथिल वैज्ञानिक रामधारीजी)

एहिठाम सुजन-समाज हमरा क्षमा करथु जे वैज्ञानिककेँ हम हेय-समूहमे राखलहुँ अछि । मुदा यथार्थ यैह थिक । ओहि कथा 'तेल'के सोनमणि बाबू जे कहै छथिन जे 'बौआय दैह सारकेँ । बूझ' दहक जे एहि देशमे पढ़लहाक कते भेलू छै ।' तँ से बात मिथिला-समाजक लेल सवा सोलह आना सत्य छै । पतनशील ब्राह्मणवादक यैह तँ सभसँ पैघ अवशेष बचल छैक मिथिलामे । एहि प्रकारक डॉयलॉग हमरो सभक गाम मे बाजल जाइत अछि । पतनशील सनातन मूल्य आ नव विकसित धनपशु-मूल्य दुनूक ई प्रिय सूक्ति छिऐक । आ, विचारक लोकनि सपरतीब केहन जे जीवकान्ते सँ 'विकल्प' मांगै छथिन । ओ कतए सँ विकल्प देथिन ? हजारक हजार 'मिथिलावासी' छी अहाँ लोकनि (सोनमणि बाबूगण) आ विकल्प देथु जीवकान्त ? हुनका लग जँ रगड़ पसारबनि तँ ओ तँ दूइये मे सँ कोनो एक विकल्प देताह—कि तँ सोनमणि बाबू सँ अपन देह हाथ थकुचबा लेताह अथवा आस्ट्रेलियामे रिसर्च करैत रामधारीजीकेँ कहथिन जे हौ बाबू, कोन लफड़ा मे फँसल छह, छोड़ह आविष्कार-ताविष्कार, आ गाम आबिक'

घूस-पैरबी भिड़ाक' तेलक डीलरी ल' लैह ! जँ जीवकान्त लग कोनो तेसर विकल्प हो (जीवकान्त सन सीधा-भला बौद्धिक लग) तँ से अहीं सभ कहै जाउ !)



एहि बीचक कथा सभकेँ ध्यान सँ देखल जाय तँ एक ईहो बात देखार पड़ैत अछि जे एम्हरूका कथा सँ नायकक लोप होअए लागल अछि । नायकक लोपसँ की अर्थ अछि ? अर्थ अछि नायकत्वक पृष्ठभूमि मे घुसकि जायब । कथाकार जँ कथा लिखताह तँ ओहिमे प्रधान पात्र तँ क्यो ने क्यो हेबे करतै, तखन की प्रधानपात्र जे भेल सैह की नायक नहि भेल ? भारतीय परम्परा मे नायकक सुनिर्दिष्ट लक्षण सभ वर्णित अछि । प्राचीन युगमे ई लक्षण सभ देवता आ राजा लोकनि मे पाओल जाइत रहनि। आधुनिक साहित्य मे हाड़मासुक बनल लोको सभमे-साधारण बहुजनो सभमे-ई लक्षण सभ पाओल गेलै । कहल गेल जे विशिष्टताक आसन पर साधारणकेँ प्रतिष्ठित करब आधुनिकताक एक प्रधान गुण-धर्म थिक ।

सामान्यतः नायकक अर्थ कोनो कथामे एक एहन पात्रक अस्तित्व सँ अछि, जे एक दृष्टान्त बनि सकय, आदर्श रचि सकय आ जकरा सँ चाहे-अनचाहे लोकं मार्गदर्शनक काज ल' सकय । जखन हम कहै छी जे एम्हरूका कथासँ नायकक लोप होअए लागल अछि, तँ हमर अर्थ एहने प्रकारक लोप सभ सँ अछि । राधा आ गौरीकेँ पात्र बनाक' पहिने कथादि लीखल जाइत छल तँ ताहि सभमे आदर्श-दृष्टान्तजन्य नायकत्व सन्निहित रहैत छलैक,-राजकमल चौधरी जखन 'तीरू'केँ पात्र बनाक' 'ललका पाग' लिखलनि तँ ताहूमे आदर्श दृष्टान्तजन्य नायकत्व सन्निहित रहबे करैक, ताहि बातसँ के नासकार जेताह ? मुदा, विभारानी जखन अपन कथा 'रहथु साक्षी छठघाट' मे मुनिजाकेँ पात्र बनबै छथि तँ की ओकरामे आदर्शदृष्टान्तजन्य नायकत्व ताकल जा सकै छै ? ताकने सँ आरो तँ बहुतो-बहुतो रास चीज भेटि सकैत अछि, मुदा नायक-सुलभ भव्य-भाव्यता कतए पाबी ? (कथा सभक सूची राखि विश्लेषण हमर इष्ट नहि अछि। स्थालीपुलाकन्यायं सँ हमर आशयकेँ ग्रहण कएल जाय)

कथासँ नायकत्वक लोपके सामान्य अर्थ छैक जे दीन-दलित आदमीक आबाजाही बढ़ि गेलै अछि तँ एकर एक अर्थ ईहो छैक जे कथाकार लोकनिमे एतबा प्रौढ़ता एलनि जे दीनदलितकेँ ओकर समस्त दीन-दलितत्वक संग, एहि सभ नायन्कत्व विरूद्ध गुण-धर्मक अछैत, साहित्यमे प्रतिष्ठापन ओ लोकनिक' सकै छथि आ एहि लेल अलग सँ नायकत्व-आक्षेपणक बेगरता सेहो हुनका लोकनिकेँ नहि पड़ि रहलनि अछि । एही चीजकेँ हम सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग साहित्यमे दलितक प्रतिष्ठापन कहैत छी।

आब, मजेदार बात ईहो छैक जे लेखक जीवन मे जे चीज ताकि रहल अछि, जाहि लक्ष्यक लेल साहित्य लिखि रहल अछि, से चीज़ ओकरा दलिते टाक जीवन मे भेटब संभाव्य छैक । आ, दोसर पहलू ई जे दलित जे साहित्यमे आबि रहल अछि से अपन परिपूर्ण गरिमाक संग । ई दुनूक परस्पर निर्भरता छिऐक, जकर मूल कारक ई समय थिक, ई कालखण्ड, जकर इंगितकेँ पकड़बाक लेल लेखन कएल जा रहल अछि आ एहने लेखनकेँ बुझबा-समझबाक लेल ई निबंध चेष्टा थिक ।

जीवनकेँ, जीवन्ततताकेँ, सृजनकेँ ताकबाक लेल जखन हम विदा होइत छी, तँ ई सभ चीज हमरा बहुत छोट-छोट वस्तु सभमे, व्यक्ति सभमे भेटैत अछि । तथाकथित महान आ पैघत्वाभिभूत लोकनिमे नहि भेटैत अछि । कबीरदास कहै छलाह जे परमात्मा तँ ने मन्दिर मे अछि, ने मस्जिद मे, ओ तँ अछि 'तेरे पास में' । हौ बूड़ि, करोड़क करोड़ पूजी लगाक' ई मन्दिर-मस्जिद सभ ठाढ़ कएल गेलैए, करोड़ो लोकक रोजी-रोटी-हाबडीब एही पर निर्भर छै, तै ठाम परमात्मा नहि रहताह, आ दू कौड़ीक तूं लोक, से 'तेरे पास में' ओ रहताह ? एहि प्रश्न पर कबीरदास की बाजथि ? ई तँ ताकै-ताकै के बात थिक । वर्त्तमानमे, भारत सरकार मे सत्तासीन भेलाक बाद जे आर. एस. एस. (माने भाजपा) चाहि रहल अछि जे भारतक इतिहास पुनर्लेखित कएल जाय, विद्यार्थी सभक पाठ्यक्रम बदलल जाय, एहि सभकेँ हिन्दू-पद्धति मे पुनर्ग्रथित कएल जाए, ई सभ चीज जे ई लोकनि चाहि रहल छथि, आ खूब जल्दी खूब हड़बड़ी मे ई 'मनचाहा' क' लेबए चाहै छथि, से किऐ ? से एहीटा दुआरे जे एखन जँ ई सभ नहि क' लेल जाय तँ फेर आगाँ कहियो होइबला नै अछि ! कारण ? हिन्दू-पद्धति नायक-केन्द्रित नायकाभिमुख पद्धति थिक, जखन कि ई समय, आ एहि समयक गर्भ सँ जन्म लै बला भविष्य नायक-विरूद्ध अछि । साधारण चीज, साधारण आदमीक गरिमाक भविष्य थिक ।

कखनो-कखनो हमरा एहनो लागैए जे साहित्य सँ 'नायकत्व'क लोप भ' जाएब की एक हादसा, एक दुर्घटना नहि छिऐक ? एहन समय मे हमरा 'राग-विराग' (अशोक) 'हरिजीक कृपासँ' (शिवशंकर श्रीनिवास) 'चित्र' (नारायण जी) आदि कथाक नायक सान्त्वना जकाँ दैए । एहि कथा सभक आ एही प्रकारक अन्यान्य अनेको कथा सभक प्रधान पात्रक जीवन एक एहन मोड़ पर घुमान लैत चित्रित भेलैक अछि जे हमरा समक्ष नायकवत् दृष्टान्त बनिक' अभरैए । मुदा सतत ध्यान राखबाक बात थिक जे दृष्टान्त बनि पाबए योग्य जँ किछु गण्य-श्रेण्य एहि पात्र सभक चरित्रमे आबि पौलैक अछि तँ से कथाकारक निष्पत्ति नहि थिक, जकरा कि विकल्प बनाक', परसल गेल होइक। ई मात्र चयनकेँ सजगता थिक, जतए पात्रक जीवन-संघर्ष सँ 'श्रेण्य'केँ प्रतिष्ठापन होइ छै । ओकरा सभक जीवने मे एहन किछु सुगंधि छैक, जे हमरा लेल प्रेरणा सन चीज बनि सकैए ।

तें, स्थिति ईहो अछि जे नायकक विद्यमानता सेहो अपन गँहीर तलमे नायकत्व-लोपेकेँ प्रस्तुति थिक ।

मुदा नहि । नायकत्व-लोप कोनो दुर्घटना नहि छिऐक । साफ तौर पर ई बोध के विकास छिऐक । सरल भाषा मे कहल जाय तँ लोकतंत्रक प्रति आस्था छियैक आ जँ सत्य भाषा मे कहल जाय तँ प्रकृतिक प्रति सम्मान छियैक । प्रकृतिक प्रति सम्मान एक विशिष्ट सौन्दर्यवादी परम्पराक अन्तर्गत अबैत अछि । ई बात पारंपरिक छैक । मुदा हम थोड़े नव बात दिस संकेत करए चाहैत छी आ से ई जे लेखक जखन प्रकृतिक कोनो उपादानकेँ अपन रचनामे ग्रहण करैत अछि, भने ओ कतबो तुच्छ अस्तित्त्वक वस्तु किऐक ने हो, लेखक जखन ओकरा उठबैए तँ ओकरा एक विशिष्टता, एक असाधारणता प्रदान क' दैत छैक । वोदलेयर एही चीजकेँ 'प्रकृतिक भाषा सँ मानवीय भाषामे अनुवाद' क' संज्ञा देने छलाह । एहि मे लेखकक लेल जे चीज सभसँ बेसी मददगार होइ छै से थिक ओकर अतिरेक-कथन । मुदा, बिना एहि अतिरेक-कथनक, साधारणकेँ बिना विशिष्टमे अनूदित कएने एहि सम्मानकेँ व्यक्त कएल जा सकै छै? तुच्छ सँ तुच्छ अस्तित्वकेँ ओकर अपनहि निज़तामे, ओकर अपनहि स्वगत-संस्कारमे निरूपित कएल जा सकै छै ? जँ एहन कएल जा सकए तँ हमर आकलन अछि जे पारंपरिक सौन्दर्यशास्त्र एहि कर्तृत्वक सम्यक् व्याख्या नहिक' सकत आ एकरा लेल नवीन सौन्दर्यशास्त्रक आवश्यकता पैदा हएत ।

एही प्रकारक साहित्य नवीन शताब्दीक, नवीन मानवक साहित्य हएत । मैथिली साहित्यकेँ कि मैथिली कथाकेँ एहिसँ अलगाक' देखबाक बेगरता हमरा नहि बुझाइत अछि ।

नायकत्वक अवसान आत्यन्तिक रूपसँ मानवीय स्पन्दनक प्रति निष्ठाक परिचायक थिक । एकसँ एक महान नायक, हमरा लोकनिकेँ शास्त्रीय साहित्य (क्लासिकस) मे उपलब्ध अछि, आबैबला युग नायकत्वविहीन मानवीय गरिमाक क्लासिक्स रचि सकत । एहि बातक आहट हमरा नवचरणक मैथिली कथामे सेहो सुनाइ पड़ैत अछि ।



मैथिलीमे, स्वातंत्र्योत्तर कथा-साहित्य जकरा कहल जाइ छै, तकर समीक्षाक

ज़खन चेष्टा भेल रहए तँ दूटा व्यक्तिवाची संज्ञाक बड़ी जोर चलती जागल रहए। ओ दू गोटा छलाह–फ्रायड आ मार्क्स। तत्कालीन समीक्षक लोकनिकेँ मैथिलीक सम्पूर्ण स्वातंत्र्योत्तर कथा एहि दुनू महापुरूषक सिद्धान्त सभक व्याख्या बुझाएल रहनि। जखन क्यो लेखक 'शिव' के आकल्पन अपन लेखनमे करथि तँ समीक्षक लोकनि आँगुर देखा-देखाक' बताबथिन–देखू-देखू, कथामे मार्क्सवादी अभिव्यक्ति एकरे कहल जाइ छै। आ, जखन लेखक 'सुन्दर' कें अभिकल्पना व्यक्त करथि तँ तकरा फ्रायडक वचन-दृष्टान्त क'क' देखाओल जाय। मनुक्खक बाह्य परिवेश रेखांकित होअए तँ मार्क्सक प्रभाव बताओल जाय, आन्तरिक रेखांकन कएने फ्रायडक। ई दुनू नामो मैथिली लेल नव रहैक। सिकुड़ल-सिमटल बौद्धिकताकेँ नव क्षितिज देखार पड़ैक एतए, से हर्पसिक' एकरा स्वीकार कएल गेल।

साहित्य क्षेत्रक अपन सम्मोहन-तंन्त्र होइ छै। सम्मोहन जे हम कहि रहल छी, से शुद्धक' क' 'हिप्नोटिज्म'क अर्थ मे। मार्क्स आ फ्रायडक नाम एक सम्मोहन पैदा कएलक। धारा चलि पड़ल। ओहुनो, मनोवैज्ञानिक लोकनिक राय छनि जे कोनो नवीन उन्मेषक बाद धाराप्रवाहता, निरन्तरता सम्मोहन पैदा करैत छैक। एहि सम्मोहनक प्रक्रिया भने जे रहल होउक, परिणति ई भेल जे जाहि कलाकृतिक उद्योगपूर्वक समालोचना कएने हमरा लोकनि सत्यकेँ उद्‌घाटित क' सकैत छलहुँ आ से क' क' नवीन अन्वेषणक पथ प्रशस्त क' सकैत छलहुँ, से सभ नहि क'क' एहि महापुरूषद्वयक नाम पर खेपि गेलहुँ। जतए कतहु हमरा जटिलता भेटल, जतए कतहु हमरा साहित्य-धारामे मोड़ के अनुमान लागल, सभ ठाम यैह कहि-कहिक' अनठबैत रहलहुँ ई तँ फ्रायड-मार्क्सक अनुकूले छैक। क्यो कहलनि 'मार्क्स-फ्रायड' तँ क्यो कहलनि 'फ्रायड-मार्क्स'। यथा गुण तथा सम्बोधन। ई जुगल-जोड़ी तेना क' बनाओल गेल जेना सनातन मैथिली संस्कृतिमे 'दही-चूरा' आ 'च्चूरा-दही'क जोड़ी छै। जँ दही बेसी चूरा कम तँ तकरा कही 'दही-चूरा' आ जँ चूरे बेसी दही अल्प तँ से भेल 'चूरा-दही'। मोटा-मोटी यैह गति मैथिली समीक्षामे फ्रायड-मार्क्सक भेलनि अछि।

सम्मोहन तत्ते जड़ियाएल छै जे एखनहु, "सृजनात्मक स्तर पर प्रभूत परिवर्त्तन-प्रस्फुटनक बावजूद, वैचारिक स्तर पर 'बाबा नाम केवलम्' कें गछाड़ सँ मुक्ति नहि।

पछिला साल साहित्य अकादेमी 'मैथिली कथाक विकास' पर संगोष्ठी करबौने रहए। एहि संगोष्ठीमे मैथिली कथाक व्यापक आयामकेँ अनेक खण्डमे बांटि क' विद्वान लोकनि सँ व्याख्यान दियाओल गेल रहए। निज आजुक कथा पर प्रकाश देबाक

हेतु डा. शिवशंकर श्रीनिवास आमंत्रित रहथि। 'मैथिली कथाक समकालीन स्वर' नामसँ ग्रथित अपन दीर्घ व्याख्यानक अन्तमे निष्कर्ष बहार करैत डा. श्रीनिवास बाजल रहथि–''समकालीन मैथिली कथा मार्क्स ओ फ्रायडक दर्शनक व्याख्या करैत, मार्क्स-दर्शनक अनुसार सामाजिक संघर्षकेँ स्वर दैत, सामाजिक संरचना चाहैत बढ़ि रहल अछि।'

श्रीनिवास नवचरणक मैथिली कथाक एक महत्त्वपूर्ण कथाकार छथि। बहुतो रास यादगार कथा सभ ओ लिखलनि अछि। मुदा, समकालीन कथाकेँ कुला मिलाक' जे ओ मानि रहल छथि, ताहिसँ की सहमत भेल जा सकैए? की सत्ते समकालीन साहित्य मार्क्स आ फ्रायडक दार्शनिक व्याख्या (फिलोसोफिकल रिव्यू) छिऐक? की साहित्यक अपन कोनो निजता, अपन कोनो मर्यादा नहि रहि गेलै? की ठीके कथाकार लोकनि मार्क्स आ फ्रायडक सिद्धान्त सभकेँ 'बालानां सुखबोधार्थ' कथाक रूपमे (माने कि दृष्टान्तक रूप) समझा रहलाह अछि? आ एहि तरहें, 'कथा' की सृजनात्मक लेखन (क्रिएटिव राइटिंग)क विद्या नहि रहलै, स्वयं अपने मे समीक्षाशास्त्र बनि गेलै? (जे कि मार्क्स-फ्रायडक समीक्षा करैत अछि) आ जँ सैह तँ ई समीक्षक लोकनि (कथाकार लोकनि) मूल पाठ्यक (मार्क्सवाद, फ्रायडवादक) शिक्षा कोन स्कूल मे प्राप्त कएलनि अछि? साधारणत: अर्थशास्त्र आ मनोविज्ञानके जतबा ज्ञान ल' क' मैथिली कथाकार कथालेखनक क्षेत्र मे उतरै छथि, तकरा देखैत की एहि तमाम समीक्षक लोकनिकेँ भुसकौल समीक्षक नहि कहल जेतै? की औकात अछि हमर जे मार्क्स आ फ्रायडक दर्शनक व्याख्या करब! कोन पूजीक बल पर?

अस्तु। हमर धारणा अछि जे मार्क्सवाद आ फ्रायडवाद मानवजीवनक व्याख्या करबाक दूटा भिन्न-भिन्न पद्धति थिक। एहि पद्धतिद्वयक समाहार हमर दृष्टिकोण मे भ' सकैत अछि। आ अन्तत: मार्क्सवाद आ फ्रायडवाद दू गोट दृष्टिकोण थिक। साहित्य, जँ ओ अपन मूल संरचनामे साहित्य अछि, तँ ओ दृष्टिकोणक व्याख्या नहि थिक, सृजनात्मक साहित्य तँ किन्नहु नहि। 'नहि थिक' शब्द जँ पसिन्न नहि हो तँ एतबा नम्यता हम शिरोधार्य करब जे सृजनात्मक साहित्यकेँ दृष्टिकोणक व्याख्या नहि हेबाक चाही। दुनियाँकेँ हम कोन तरहें देखै छियै, एहिबातकेँ बहुत महत्त्वपूर्ण नहि हेबाक चाही। महत्त्व एहि बातक हेबाक चाही जे हम की देखै छियै।

'हम की देखै छियै' एहि बातक व्याख्या करब जटिल अछि। जटिल वस्तुत: अछि नहि, मुदा जें कि हमरा लोकनि हद दरजाक कामहिल आ परजीवी लोकनि छी, ई जटिल भ' गेल अछि। एहि प्रश्न सँ मुठभेड़क हेतु जीवन्तता चाही, जीवन-प्रवाहक संग अन्तरंगता चाही। एक दीप जँ कोनो दोसर दीपकेँ जराब' चाहए तँ सभ क्यो मानब जे ओकरा स्वयं तँ अवश्ये जरैत रहबाक चाही। मिझाएल दीप जकाँ हमरा लोकनि

एहि प्रश्नक संग मुठभेड़ सँ बचैत रहल छी। 'हम की देखै छियै' के बदला 'हम कोना देखै छियै' केँ केन्द्र बिन्दु बनाक' चिन्तन (ई कोन चिन्तन ?) होइत रहल अछि ! 'हम कोना देखै छियै' के उत्तर एक वाक्य मे देल जाय सकैए—मार्क्सवादी-फ्रायडवादी दर्शनक नाम ल' क'। आ जँ चिन्तक चाहथि तँ मोट-सोंट पोथा सेहो एहि विषय पर लिखि सकै छथि ! जैसा ऑर्डर, वैसा माल ! (पोथा तँ मुदा एखनधरि लिखलो नहि गेल अछि)

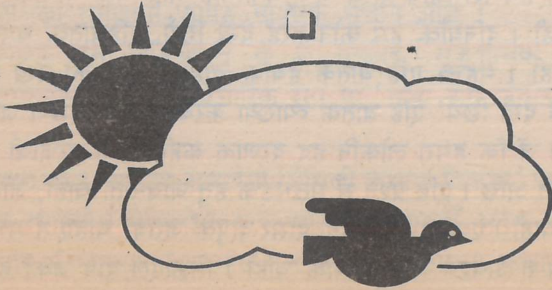
डॉ. श्रीनिवासकेँ स्थापना सृजित करबाक श्रेय (अथवा दोख) हम नहि दैत छियनि। ओ तँ मात्र सम्मोहनक पुष्टिकर्त्ता छथि। 'स्वातंत्र्योत्तर काल' सँ जे धारा चलि आबि रहल अछि तकरा ओ तँ मात्र 'पास' द' देलनि अछि। एक तरहें कही तँ 'स्वातंत्र्योत्तर' विद्युत्धाराक संवहनमे मात्र सुचालकक काज कएलनि अछि।



शिवशंकर श्रीनिवास मुदा वैचारिके रूपटा सँ सम्मोहित छथि। चेतनाक तल पर ओ जाग्रत छथि आ सम्मोहनकेँ तोड़बामे समर्थ भेलाह अछि। सृजनात्मक लेखनमे हुनक चेतनागत जागृति अपन स्पष्ट रूपाकार ग्रहण कएलक अछि। श्रीनिवासक चर्चा मात्र एही टा दुआरे कएलहुँ जे ऊपर हुनका कोट कएने रही। श्रीनिवासक चेतनागत जागृति पर जे हमर मन्तव्य अछि से एहि चरणक अनेक कथाकार पर लागू मानल जाय—प्रतिनिधि कथाकार पर तँ निश्चते। एही जागृतिक एक प्रतिफलन आलोचनात्मक प्रौढ़ता थिक, जकर दर्शन हमरा हिनका लोकनिक कथा-रचनामे होइत अछि, आ जकर विवरण हम पहिनहि द' चुकल छी।

मुदा श्रीनिवासक जे 'वैचारिक सम्मोहन' थिक, जकरा लेल कि हम प्रसंगवश 'परजीविता' आ 'काहिलपना' सनक [illegible] शब्द धरिक प्रयोग कएलहुँ, से की मात्र श्रीनिवासे पर लागू मानल जाय ? ई की सार्वजनिक सत्य नहि थिक। निश्चिते ईहो सार्वजनिक सत्य थिक। (असमाप्त)

❑



कथा

श्याम दरिहरे

बाबूक चिट्ठी

विपिन एम० आर० अछि। एम० आर० माने मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिभ। सभ दिन नौ बजे भिनसर तैयार भ' कए टाइ-सूट पहीरि निकलि जाइए। कम्पनीक बैगक संग। कम्पनी बड़ नामी छैक। तीन सए मासिक त' खाली टाइ भत्ता दैत छैक। यात्राक लेल प्रथम श्रेणी ट्रेन अथवा पूरा टैक्सी स्वीकृत छैक। एहि सभक अतिरिक्त दरमाहा सेहो नीक भेटि जाइत छैक।

विपिन दू बजे धरि डाक्टर आ दबाइ दोकानदारक लग अंग्रेजी आ अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी वाजिक' कम्पनीक काज करै छल। दबाइ माल जकाँ धूर्तता सँ बेच' पड़ै छै। कम्पनी नामी छलैक तेँ जीवन रक्षक दबाइक आपूर्त्ति कम होइत छैक। तेँ ओहेन दबाइक विक्री लेल बेसी मेहनति कर' पड़ैत छैक जाहि मे कम्पनी के भारी नफा होइक। ओहेन दबाइ बेचबा लेल बजार मे बहुत प्रतियोगिता रहैत छलैक। जीवन रक्षक दबाइ के अस्त्र बनाक' आन दबाइ सभ दोकानदारक गरदनि मे बान्हि देल जाइत छलैक।

बोखारक दबाइ पारासेटामाल, भोजन पचएबाक लेल इन्जाइमक शीशी, एन्टासीड, कफसीरप, एण्टीवायटिक, एण्टीडायरल आ टानिक इत्यादि के बेचबाक लेल कम्पनी एक सँ एक स्कीम निकालैत छैक। रिप्रेजेन्टेटिभ सभ भिड़वै अछि एक सँ एक स्कीम। कम्पनी दस पेटी माल मे एक वा दू पेटी माल मुफ्त द' दैत छैक। डाक्टर सभ के गिफ्ट मे कार द' दैत छैक। विदेश भ्रमणक खर्च उठबै छैक। बेटीक वियाहक प्रायोजक भ' जाइत छैक। तकरा बदला मे मरीज के हलाल करैत अछि डाक्टर सभ। सालक साल। बरखक बरख। करोड़ कमा लैत अछि कम्पनी किछु लाख खर्च क' कए।

विपिन त' आर स्टार रिप्रजेन्टेटिभ छल कम्पनीक। ओ नसबन्दी शिविर, आँखिक इलाज शिविरक पता लगा क' डाक्टरक कमीशन बान्हि दैत छलैक। दोकानदार मोटर भान मे दवाइ ल' कए शिविरक लग मे रहैत छलैक। डाक्टर सभ पुरजा मे ओकरा

कम्पनीक टानिक लिखने गेल । पूरा सीजन मे अगर बारहो-पन्द्रहटा शिविर हाथ लागि गेलै त' ओहि टानिकक टारगेट पार । भले ही मरीजक जे नोकसान होइक । मरीजो सभ भारी बुड़िबक बिनु बोतल पीने ताकतिए ने हेतनि । आइ काल्हि कम्पनी सभ बिमारीक दृष्टि सँ नहि बजारक दृष्टि सँ दवाइक उत्पादन करैत अछि । एहि सभ धुरफन्दी सँ विपिन के बरख मे तीस सँ पैंतीस हजारक फराक आमदनी भ' जाइत छैक ।

मुदा सभ कम्पनीक ई हालत नहि छै । किछु कम्पनी सभ रिप्रेजेन्टेटिभ आ बजार दुनूक जबर्दस्त शोषण करैत छै । कतेको कम्पनी मे रिप्रेजेन्टेटिभ सभ एक सँ डेढ़ हजारक वेतन पर काज करैत अछि । वेतनक अतिरिक्त नाम मात्रक भत्ता भेटैत छैक । दोसर दिस ओ कम्पनी सभ घटिया दबाइक उत्पादन क' क' बजार मे पचास प्रतिशत कमीशन द' क' माल बेचैत अछि । ओहि दबाइक सेवनक पश्चात मरीजक रक्षा भगवानेक हाथ ।

जून मास बीत रहल छलै । गर्मी सँ बेहाल छल लोक । नाना तरहक बिमारी सँ ग्रस्त छल जनसमुदाय । खेतिहर सभके बिया-बालिक झंझट भ' गेल छलैक । खेत ओहिना खसल छलैक । थोड़बो दिन आर जँ अहिना रहि जेतैक त' सभटा खेती चौपट्ट। सभ मेघक आस तकैत छल । विपिन के बाबूक चिट्ठी आयल रहैक । मोन पड़ैत छैक चिट्ठी । लिखने छलथिन जे फेर जेना एहिबेर अकाल पड़त । कहियो बाढ़ि आ कहियो अकाल । खेतिहरक डाँड़ तोड़ि देतैक । सभ एक बून्न पानि लेल व्याकुल अछि ।

मुदा दबाइ व्यवसाय सँ जुड़ल लोकक लेल जर्बदस्त सीजन चलि रहल छलैक। छोटको डाक्टर सभक लग मरीजक भीड़ लागल छलै । दबाइ दोकान मे चहल-पहल बढ़ि गेल रहैक । विपिनक टारगेट एहि सीजन मे नीक जकाँ पुरि जेबाक संभावना छलैक । कम्मो काज कएला सँ माल दनादन निकलि रहल छलैक । आंत्रशोध तेहेन जड़िया गेल छलै जे एण्टीडारियल, एन्जाइम, एण्टीबाएटिक, स्लाइनवाटर आ टानिकक छूह उड़िआएल छलै । अइ बेर इन्सेन्टिव चिक्कन होयबाक जोगार ध' लेने रहै ।

विपिन कोनो पार्टी सँ घूरल छल । नीन्न भ' गेल छलैक । पत्नी सूतबाक उपक्रम कइये रहल छलीह कि जोर सँ बिहाड़ि उठि गेलै । पानि सेहो पड़' लगलै । ओ विपिन के झकझोरिक' उठबैत कहलखिन 'हे यौ जल्दी खिड़की बन्न करू, झटक अबैए। ओछाओन भीजत ।' विपिन हड़बड़ाक' उठल । खिड़की बन्न करैत बाजल,

'जा...जा...आहि रे बा...। सभटा चौपट्ट भ' गेलै । एखन त' सीजन जड़िआएले छलैए। ई पानि त' सभटा गोबर क' देलकै । टारगेट सँ दसो परसेंन्ट उपर नहि गेलै ।'

ई सुनितेमातर पत्नी एकदमे लोहछि गेलखिन । 'बाप रे बाप ! सौंसे संसार गर्मी आ बिमारी सँ त्राहि-त्राहि क' रहल अछि । बरखा लेल सभक आँखि असमान मे टांगल रहै छै । तकर अहाँके कोनो चिन्ता नहि । मुदा कन्टाहा जकाँ अपन टारगेटक चिन्ता अछि ।' विपिन के बात पसिन्न नहि पड़लै ।

–'हमर टारगेट सँ अहाँके जेना कौनो मतलबे नहि अछि । एकरे बदौलति ने छहर-महर करै छी ।' पत्नी के किछु बाजल नहि भेलै । मुदा बात एकदम असर्धसन लगलै । ओकरा भेलै जे विपिन बदलि रहल छथि । अपन टारगेटक आगू हुनका कथुक चिन्ता नहि छनि ।

पानियो कने फुहिया क' रहि गेलै । गरमी ओहिना पड़ैत रहलै । डॉक्टर केमिस्ट सभक चानी पिटाइत रहलै । विपिन टारगेट प्राप्त करैत रहल ।

अगहन मास मे विपिनक कम्पनीक बड़का हाकिम आयल छलै । चीफ सेल्स मैनेजर । ओ कहलकै जे ओ किछु देहातक डाक्टर सँ भेट करत । विपिन ओकरा सीतामढ़ी आ पुपरीक डाक्टर सभ सँ भेंट कराब' ल' गेल । कार जखन सीतामढ़ी सँ पुपरी लेल विदा भेल त' बाजपट्टी लग सड़कक दुनू कात धानक सुन्दर फसिल लहरा रहल छलै । विपिनक मोन गद्गद भ' गेलै । मन सम्पय धानक खेत दुनू दिस पसरल छलै । विपिन के मोन पड़लै बाबूक चिट्ठी । एहि बेर धान नीक छैक । गृहस्थ सभ प्रसन्न अछि । इलाका भरि मे चहल-पहल बढ़ि गेल छै । हरियर-कचोर वाध बड़ नीक लगै छै ।

विपिन फेर सँ पसरल खेत दिस तकलक । आरि पर रखबारक खोपड़ी बनल देखलक । कतहु-कतहु गृहस्थ सेहो आरि पर टहलि रहल छलैक ।

विपिन के खेतक फसिल मे डूबल देखि मैनेजर पुछलकै,

–'क्या देख रहे हो मिस्टर विपिन कुमार ?'

–'धान का खेत सर ! इस बार कई वर्षो बाद धान की अच्छी फसल हुई है । किसान प्रसन्न है ।' विपिन कहलक । मैनेजर दोकानी नजरि सँ विपिन के देखैत कहलकै,

–'मिस्टर विपिन कुमार, आप जानते हैं कि कुछ दवाईयाँ केवल नाम की दवाईयाँ हैं । उसे आप 'कास्मेटिक मेडिसिन' कह सकते हैं । वह तभी बिकते हैं जब ग्राहक के पास 'एक्सेस मनी' हो । आप अगर थोड़ा अधिक मेहनत करें तो इस 'बम्पर क्राप'

का लाभ कम्पनी को दिला सकतं हैं । आइ होप यू विल डू दैट ।' विपिन के चेहरा चमकि उठलै । गौरव सँ इतराइत बाजल,

—'आइ विल डू सर ! आइ विल सर्टेनली अचीभ माइ टारगेट ! मैनेजर प्रसन्न भ' गेलै । विपिन फेर सँ खेत दिस देख' लागल ।

बाबूक चिट्ठी आब ओ बिसरि गेल छल । चिट्ठी त' बादो मे अबैत रहलैक। मुदा विपिन के चिट्ठी आब मोन नहि रहैत छैक । चिट्ठी मे लिखल बात किएक मोन रहतै ? किएक मोन रहतै जे अपने खेती नहि कइयो क' बाबू खेती आ लोकक हालचाल किएक लिखैत रहैत छथिन...

लिलीरेक कथा 'चन्द्रमुखी' सँ

सब चन्द्रमुखीकेँ बजयबा पर तुलि गेल । देह झकझोरि क' सोर पाड़' लगलनि।

'एना चुप किएक छी ?'

'होश मे आउ ।'

'भगवतीकेँ इएह मंजूर छलनि ।'

'हे, गीताक श्लोक सुनू...।'

'भगवद्भजन मे लागि जाउ ।'

'की ? बजैत किएक नहि छी ?'

'किछु त' बाजू ।'

'बाजू !'

'बाजू ने ।'

सब आरो जोर सँ झकझोर' लगलनि चन्द्रमुखीकेँ ।

चन्द्रमुखी बजली-'हमरा भूख लागल अछि । घर मे जे भेटय, आनि दिय'। हम खा' क' सूति रहब । आब कथी लेल उपास आ ककरा लेल जगरना ।'

कथा

प्रमोद कुमार झा

अजायबघर

'कुत्तों से सावधान' लोहावाला गेट पर टांगल छलैक । गेट पर ओ कुकुर वला तख्ती खूब नीक [illegible] पतरका तार सँ तेना बान्हल छलैक जेकरा क्यो जल्दी मे उखाड़ि नहि सकय । गेटक भीतर पैसला सँ कुकुरक संभावित खतरा सँ बचबा लेल इम्हर-उम्हर उचकि क' देखलियैक । कुकुर की कोनो पिल्ला सेहो देखबा मे नहि आएल आ 'कुत्तों'क चर्चे नहि । खैर जे से ! भीतर गेट खोलि प्रवेश क' गेल रही आ जेना संघ लोक सेवा आयोगक इंटरव्यू सँ पहिनहुँ नहि घबराएल रही ताहि सँ बेसी करेजा धुकधुका रहल छल । ओना जतबा छी नहि ओहिसँ बेसी बोल्ड देखेबाक प्रयास क' रहल छलहुँ । मकानक बाहरी गोलंबर पर एकटा कॉलबेल देखलियैक आ दबा देलियैक। कनेकालधरि केम्हरो कोनो संचार नहि देखि फेर घंटी दबयबाक इच्छा भेल । दोसर बेर घंटी लग हाथ जाइते छल कि नजरि पड़ल बोर्ड पर 'डॉ. नीलम त्यागी' । एमदम उड़ल, झखड़ल आ [illegible] कोन मे ई बोर्ड किएक ? घंटी दिस फेर ध्यान गेल मुदा घंटी दोसर बेर नहि दबौलियैक मोन पड़ल गोआ मे पणजीक मीरामार बीचक ओ रेस्ट हाउसवाली जे दू बेर घंटी बजौला पर केवाड़ खोलि कहने छल-''तुमको इतना अर्जेट है क्या ? इतना नॉइज काहे को किया ? बिहार का है तुम क्या ? एटीकेट नही है-एमदम मेनर्स तो जानएइच नई । जाओ दूसरा जगह । अपन ऐसा गेस्ट नई मांगता।'' केवाड़ मुंहे पर बन्द क' देने रहय । आइ डा. नीलम त्यागीक दरवाजा पर दोसर बेर घंटी पर हाथ रखितहिं ओ घटनाक्रम मोन पड़ल छल आ तें हाथो रोकने छलहुँ । अपमान आ तिरस्कार जीवनपर्यन्त बिसरैत नहि छैक-प्रसन्नता आ खुशी बिसरियो जाइ भने...।

एक व्यक्ति बहरएलाह केबाड़ खोलिक' आ फेर केबाड़ सटा देने छलथिन। बएस येह बूझू चालीस-बेयालीस, घनगर सुव्यवस्थित सेनाधिकारी सन कड़गर मोंछ,

केस सीटल उनटा फेरल मुदा चानि धरि एक आधे टा बचल, ठेहुन सँ कनिके नीचा धरि उज्जर मुदा गंदा पैजामा, मुंहमे पानक लाली । उघाड़ देह, धोधि तेहन जेना पेट मे पांच मासक बच्चा हो । गौर वर्ण आ हाथमे एकटा खुरपी । निकलि क अपन सघन भौंह के सिकोड़ि देखलनि आ फेर लगले हिन्दी मे (जेना मेरठ बाला सभ बजैए तेहने जेकाँ) पुछलनि–''क्या बात है ?'' अपना अयबाक प्रयोजन हम सीधा-सीधी कहलियनि, 'सुंन' मे आयल अछि जे अहाँक कैम्पस मे कोनो मकान खाली अछि। हमरा कोठरीक प्रयोजन अछि ।' हमरा 'अहाँक कैम्पस' कहला पर हुनकर भौंह कने सोझ भ' गेल छलनि । ओ बरामदा पर अयबाक इशारा क' एकटा कुर्सी दिस हाथ देखौलनि । कुर्सीक हरियर रंग आब झड़ि जेकां गेल छलै आ बेंत भीतर सँ हुलकि रहल छलै । अपने ओ खुरपी नेनहिं बाहर निकलि बामाँ दिस बाड़ीमे घुसि कतहु चल गेलाह । आ एक बेर फेर सँ हम असगरे ''त्यागी कुंज''क बरामदा पर राखल सभ चीज–केबाड़, खिड़की, टेबुल, टांगल कैलेंडर आ बेंच, पुरनका डिजाइनक टांगल फोटो फ्रेम आ फोटो–सभ चीज कोनो पुरातत्ववेत्ता जेकाँ निहारि-निहारि क' देख' लगलहुँ। सभटा चीज एकटा विचित्र पुरातन गंध लेने छल । कैलेंडर 1946 ई. क छलैक । आब ओकर नीचाँ दिसक पतरका तिथिवाला हिस्सा लगभग पीयर भ' क' झड़ि गेल छलैक । टेबुल सेहो पुरनके अंग्रेज जमाना वाला पुरान डिजाइनक मोट-मोट पएरवाला जेनां पुरनका सरकारी ऑफिस सभमे देखबामे अबैछ–मने खूब मोटगर ऊपर वाला तख्ता जेहन आब चौकियो मे नहि रहैत छैक । आ सरकारिये टेबुल जेकाँ कारी रंग सँ रंगल-गाढ़क' के (मुदा सेहो जेना दस साल पहिने रंगल गेल हो) ओहिपर लाल कपड़ा मे लपेटल किछु फाइल सभ राखल छलैक– कपड़ाक रंग उड़ले जेकाँ रहैक। कोन मे सुखाएल मनीप्लांटक गाछक लत्ती सुखाएल आ गमलाक माटि किछु दिन सँ पानि दर्शन नहि केने रहैक किएक त माटि फाटि-फाटि गेल छलैक । एकटा टूटल सन कुकुरक सीकड़ छलैक–जंग लागल । ओतहि छोट सन बरतन छलैक जाहि मे कुकुर अपन भोजन प्राप्त करैत छल होएत ।....पूरा वातावरण मे एकटा पुरनाएल गंध छलैक आ ताहूमे बहुत तरहक गंध मिलल छलैक तैं अहाँ ओकरा पुरान गंध त' कहि सकैत छलियैक मुदा ठीक-ठीक चीन्हि नहि सकैत छलियैक । एहि सभ मे एकटा शब्दहीन शान्त स्थिति व्याप्त छलैक । हालाँकि बीतल हेतैक दसे मिनट मुदा हमरा बूझायल छल जेना बड़ी काल भ' गेल हो...कएक दिन...कएक साल...ओही सामान सभ जेकाँ। ता सामनेक केबाड़ खुजबाक आबाज भेलैक आ हमर ध्यान उम्हरे चल गेल । भीतर सँ एकटा प्रौढ़ा बाहर निकललीह । बेस नीक कशीदा कएल पाइढ़ वाला

असमानी साड़ी हुनका बेस महत्त्वपूर्ण होयबाक आभास करा रहल छल–साफ रंग, पैघ-पैघ चमकैत आँखि, खूब उठल नाक, पैघ-पैघ डाँड़ धरि घनगर केशराशि (जाहि मे पाकल केश सब हुलकी मारि रहल छल) बेस मोटगरि आ देखबा मे बुझाएल जेना भुट होथि चारि फुटक ! बाहर निकलि हमरा दिस देखलनि त' हम हाथ जोड़ि नमस्कार कयलियनि। बिना किछु बजनहिं आ उत्तर देने ओ केबाड़ पूरा खालि भीतर अयबाक इशारा कयलनि। हम आब भीतर प्रवेश करितहुँ कि एकटा तीव्रगंध नाक मे घुसि आयल–उएह पुरनाएल गंध...फिनाएलक गंध, पुरान देवालक गंध पुरान पीयर पड़ि गेल अखबारक गंध...विस्कुट आ आयोडेक्सक गंध आ ...आओर बहुत तरहक गंध जेनां बूढ़ व्यक्तिक पसेनाक कपड़ा वाला गंध...।

हम कोठरी मे प्रवेशक' चारू दिस बेस उत्सुकतावश देखि रहल छलहुँ । बाहर बरामदाक दृश्यक कारणे भीतरक प्रति उत्सुकता कने बेसिए भ' गेल छल ।

कोठरी बेस पैघगर छलैक, आसमानी रंग सँ रंगल आ करीब पूरा-पूरी कोंचल सामान सँ, पुरनका डिजाइन वाला तीन टा लकड़ीक आलमारी ओहिमे ताला लटकल, देवाल पर बड़का घड़ी (जेहन सत्यजीत रायक सिनेमा सभ मे पुरान जमींदार सभहक घर मे देखाओल गेल रहैत छैक ।) एकटा अति वृद्ध महिलाक फोटो जाहि पर ताजा गेनाक फूलक माला आ फूल-अक्षतक संग जेनांकि आइए पूजा कएल गेल हो आ तेकर बगल मे दूटा पैरक छाप छल जे रोशनाइ लगाक' लेल गेल हो, पैरक छाप मे फ्रेम-शीशां लागल छलैक आ ओहू पर माला आ पूजाक चेन्ह...। ओहि पर आबि हमर आंखि ठहरि गेल छल आ हम किछु क्षण तक देखि रहल छलहुँ । ओत' सँ हमर आँखि ओहि प्रौढ़ा दिस गेल जनिकर उपस्थिति एतबाकाल धरि हम बिसरि जेकाँ गेल रही । एहन बुझायल जेनाँ ओ हमर घूमैत आँखिक संग-संग आंखि घुमा रहल छलीह। आ आब सीधा हमरा देखि रहल छलीह । खूब मधुर आ नीक स्वर सुनबामे आएल, 'आपको मकान चाहिए ? 'जी', हमरा क्षणिक विश्वास नहि भेल जे ई सुमधुर स्वर एहि महिलाक छनि ।

आ तंकरबाद वार्त्तालाप कने सहज ढंग सँ होम' लागल हिन्दी मे । हम हुनका कहलियनि जे हम कोना आदिवासी लोक संस्कृति पर अपन शोध कार्य करबाक लेल दक्षिण बिहारक एहि शहर हजारीबाग अएलहुँ आ ई जे हम रहनिहार त' छी उत्तर बिहारक मुदा कुमायूँ विश्वविद्यालय सँ अध्ययनक बाद धारवाड़ विश्वविद्यालय मे ई रिसर्च क' रहल छी । हुनक सोझ प्रश्न छल–''की अहाँक बियाह भेल अछि ? 'नहि, एखन धरि नहि ।' हमर जवाब छल आ हमरा बुझाएल जेना हमर उत्तर सुनि ओ बहुत आश्वस्त भेल छलीह आ एकटा निश्चिंतताक भाव हुनक मुँह पर झलकि आयल छलनि ।

हम सभ आर किछु गप्प करितहुँ ता एकटा आर वृद्धा (वयस पैंसठि-सत्तरिक लगभग) कोठरी मे आबि गेल छलीह। हम हुनका नमस्कार कयने छलियनि आ ओ शुद्ध उच्चारणबला हिन्दी मे 'प्रसन्न रहिए' कहने छलथिं। बृद्ध महिलाक अबितहिं पहिनहिं सँ बैसलि प्रौढ़ा कहलनि-'ये मौसी जी है !' मौसी जी माने सत्तरिक लगभग महिला, सभटा केश उज्जर, मुंहमे पान, ताम्रवर्ण, हैंडलूमक छाउर रंगक साड़ी, चौड़ा ललाट आ चश्माक भीतरक अधिकार बोध वाला दृढ़ आँखि। हम एतेक कालधरि अपन जिज्ञासा दबौने छलहुँ। मुदा मोन भेल पूछिये दिअनि। सएह कयलहुँ। हिन्दी मे पूछलियनि जे ई किनकर पएरक दाग छनि।

''मेरी मां का, मांजी का'' प्रौढ़ा अति अवसाद भरल स्वर मे उत्तर देलनि। वृद्धा सेहो चश्मा खोलिक' नूआ सँ आँखि पोछि रहल छलीह आ प्रौढ़ाक आँखिसँ नोर चूबि रहल छलनि। ओ आगाँ बजलीह आर्द्र स्वरमे, 'परूकाँ कैंसर सँ हिनक देहावसान भ'गेलनि।'' प्रौढ़ा लगभग तेना दुखी भ' आर्द्र स्वरमे बाजि रहल छलीह जेना क्षणभरिक लेल लागल जे कोनो आठ दस बरखक बालिका अपन तीस-पैंतीस बरखक मायक देहावसान पर दुखी भ' रहल हो।...कालांतर मे ई बुझबा मे आएल जे नीलम त्यागीक मानसिक अवस्था प्राय: ओहिसँ बेसी छलैनो नहि।

फेर वातावरण कने हलुक भेलैक आ हमरा संबंध मे आर जिज्ञासा प्रारंभ भेल। नीलम त्यागी (जनिका हम बाद मे दीदी कह' लागल रहियनि) सोझे पूछि बैसलीह जे उत्तर बिहार मे त' कमे बएस मे विवाह भ' जाइछ छैक आ हम एखनधरि कुमारे कोना छी आ कि कोनो अफेयर अछि नैनीताल आ धारवाड़ मे। हम मुस्किया देने रहियनि ई कहि जे-''विवाहक समय सँ पहिनहिं हम अपन घर सँ दूर चल गेल रही। तेकरा अतिरिक्त किछु आन चीज लेल समये नहिं भेटल...।' नीलम जी हरियरका पर्दा हटा भीतर गेल रहथि आ फेर लगले आबि मुस्किआइत बैसि गेल छलीह।. पर्दाक कांन सँ दू टा सुन्दर-सुन्दर बच्चा हुलकि रहल छल। हम हाथ सँ इशारा कयलियैक आबय लेल त' पड़ा गेल। नीलम दीदीक कने कर्कश स्वर छलनि-''राशि ! विवेक! इधर आओ !'' आ दुनू बच्चा डेराइत-डेराइत आबिक ठाढ़ भ' गेल छल हमर समक्ष। हम ओंकरा लग सटएबाक प्रयास करितहुँ ताहिसँ पूर्वे फेर आवाज (कर्कश) आयल छलैक-''नमस्ते किया ? अंकल को ?' हम कने असहज भेल छलहुँ कारण कनखिए नीलम दीदीक तनल भौंह आ क्रोधाएल आँखि कनीकाल पहिलुका दस बारह बरखक बालिका सँ हुनका एक्कावन बरखक मनोविज्ञानक प्राध्यापिका प्रो. नीलम त्यागी बना देने छलनि।

हम आब चलबाक निर्णय कंने रही ...वातावरण कने तनावपूर्ण लाग' लागल छल-कोठरी मे कोनो पुरान मशीनक तेलक गंध पसरि गेल छलैक। एकाएक लगले कंबाड़क परदा हटाक' ओ व्यक्ति प्रवेश कएने छलाह जे हमरा पहिले-पहिल भेटल छलाह। हुनकर हाथ-देह आ पैजामा मे कोनो मशीनक कारी गंदा ग्रीज सभ लागल छलनि। ओ मुस्किया देने छलाह हमरा देखिक आ फेर लगले भीतर चल गेल छलाह। भीतर सँ एकटा हैंडलूमक हरियर साड़ी पहिरने माथ झंपने खूब गौरवर्णक मोट डांट स्त्री ट्रे मे चाहक पौट, कप सभ आ किछु पकौड़ी सन चीज ल' प्रवेश कएने रहथि।

''रख दो !'' नीलम दीदी हुनका आदेशक स्वरमे कहने रखथिन। दुनू बच्चा हुनका संगहि चल गेल रहय। ओ सोझे कंबाड़ दिस चल गेल रहथि मुदा बाहर निकलबा सँ पूर्व धूमिक' हमरा दिस देखने रहथि जेनां हमरा देखि ओ हमरा द' अंदाज लगा रहल होथि जे हम कंहन व्यक्ति भ' सकैत छी। चाह पीलहुँ...गप्प शप्प भेलैक।

आ तेकर बाद हम चलबाक लेल उठय लगलहुँ त' नीलम दीदी कहलनि-जे हम एक तारीख सँ आबि सकैत छी। दू सै रुपया किराया लागत। बिजलीक अलग सँ। जतबा जरायब ततबा आ पानि इनार सँ मगब' पड़त। पीबा लेल एक बाल्टी भोर आ एक बाल्टी सांझ नल (जे बिजली वाला मोटर सँ चलैत छैक) सँ भरि सकैत छी। ओ आगां कहने छली जे साढ़े नौ बजे धरि कैम्पस मे ताला लागि जाइत छैक तैं ताहि सँ पहिने आबि जाय पड़त। हम उठ'वला छलहुँ ता हुनका मोन पड़लनि-''मनीष जी, आप मांसाहारी तो नहीं हैं ना ? क्योंकि इस कैम्पस मे मछली-मांस वगैरह पूरी तरह वर्जित है।' बाजि ओ कने गंभीर ओ चुप भ' गेल रहथि आ 'मौसीजी' दिस एकबेर देखने छलीह। मौसीजी यथासम्भव मधुर आ दुखी स्वर मे बाजि उठलीह-''जीजीके स्वर्गवासी होने के बाद इस प्रांगण मे वह सब बंद हो गया...

फेर एक तारीख अयलैक आ हम अपन डेरा मे प्रवेश क' लेलहुँ। संझुका पहर छलैक आ बेसी सामान छलेहो नहि...ताधरि कुमारे छलहुँ। सामानक संख्या आ आकार त' बिबाहक बादे बढ़ैत छैक ने। एकटा मोड़ुआ खाट लोहावाला, एकटा टेबुल मोड़ुआ आ तेहने एक टा कुर्सी, एकटा प्लास्टिकक बाल्टी आ मग, विछाउन, बेड होल्डर, चादरि, तकिया दूटा बक्सा आ थोड़े अति आवश्यक बरतन बासन इएह त' छल हमर सामान। स्टोव आ तेल सेहो आब खरीदबाक छल। हँ...त' हम अपन सामान ओरिया रहल छलहुँ ता क्यो कोठरीक बाहर ठाढ़ छल से बुझाएल। ओम्हर घूमिक' देखलियैक त' उएह महिला हरियर हैंडलूमक साड़ीवाली रहथि ठाढ़। हाथमे ट्रे आ छोटका चाहक पॉट, एक प्लेट पकौड़ा नेने 'जीजी ने भेजा है चाय आपके लिए !'

ओ कने आत्मीयता सँ मुस्किया क' कहलनि । हुनकर दुनू बच्चा सेहो मुस्किया रहल छल बालसुलभ हंसी मे । हम आग्रहपूर्वक कहने रहियनि-'धन्यवाद ! आइये न !...

''रमा ! रमा है मेरा नाम लेकिन आप भाभी कह सकते है । बादमे आउंगी।'' कहि ओ कने मुस्किया जाय लगली मुदा जेना पहिलबेर कयलनि जाइत-जाइत पलटिक' अपन आमक फांक सन पेंच-पेंच आंखि सँ एकबेर देखलनि ।

...हम बहुत दिन रहलाक बाद बुझलियैकजे हम जत' आयल छी रहय वास्ते ओ जगह सहज तँ छैक मुदा असहज ढंग सँ । आउ, पहिने आदिवासी लोक जीवन पर शोधक अतिरिक्त जे हजारीबाग प्रवासक दू बरस मे एकटा आर शोध केलहुँ तेकर किछु अंश सुनाबी । मानव विज्ञानक छात्र छलहुँ-मुदा जखन ई दोसर ''शोध''क विषयके आगाँ लिखैत गेलियैक त' अपनहिं बुझाएल जेनां कोनो मनोवैज्ञानिक अध्ययन हो !...

''त्यागी कुंज'' मे अखनहुँ स्व. विद्योत्तमा त्यागीक राज चलैत रहनि । हालाँकि हुनक देहावसानक दू बरस बीत गेल रहनि मुदा जेना शरीर छोड़ियेक' ओ पूर्णरूपेण उपस्थित रहथि । रोज भोजन मे हुनकर पसिन्न क' चीज बनाओल जाइत रहैक । आ ई कहब त' बिसरिये गेलहुँ जे भोजन बनौनाइ, धोया-पूताक देखनाइ, घरक साफ-सफाइ केनाइ आ ''केयर-टेकर''क काज केनाइ ओहि महिलाक काज रहनि जे हरियर साड़ी मे पहिल बेर भेटल रहथि । तेकर बाद हुनका हम नील साड़ी मे सेहो देखने छलियनि हालाँकि कपड़ा हैंडलूमेक छलैक । ओ ओहि एक मात्र पूरूखक पत्नी रहथि आ दुनू बच्चाक माय । एहन बुझाइत छलैक जे उपरोक्त काज सभक अलावा बच्चाक जन्म देनाइ हुनकर एकटा दायित्व जेकाँ छलनि । अपन दू बरखक प्रवास मे हुनका कहियो संग बैसिक' हँसैत बजैत नहि देखलियनि । प्रायः हुनका तेकर अनुमति नहि छलनि. एक दिन हम भाभीसँ पुछने छलियनि एकांती मे ''नीलमदीदी ने शादी क्यो नही की ?''

ओ पहिने त' हँसली, फेर गंभीर भेली आ तकर बाद अनेको तरहक भाव ल' क' बजलीह-''आप खुद ही जान जाओगे...।''

हम अपन अन्वेषी दृष्टि आर बेसी बढ़ौलहुँ त' पता लागल जे मौसीजी-अर्थात डा. (सुश्री) सौदामिनी श्रीवास्तव सेहो अविवाहित छथि । ओ स्व. विद्योत्तमा त्यागीक सहकर्मी रहथिन आ संगहि रहि गेलखिन पछिला चालीस वर्ष सँ । विद्योत्तमा जीक 'विवाह त' भेल रहनि मुदा हुनकर पतिदेव हुनका विवाहक छह महीना बाद छोड़िक'

ऑस्ट्रेलिया चल गेल रहथि...ओत' कोनो ओतुक्के महिला सँ विवाह क' कें बसि गेल छलाह। नीलम त्यागी...ओहि संक्षिप्त विवाहक चेन्ह छलथीन ।

प्रायः एही सभ परिस्थितिक कारण ''त्यागी कुंज'' मे पुरूखक उपस्थिति आ औचित्य पूर्वाग्रहपूर्ण बुझाए ।

'भाभी'क पतिदेव किशोर पांडेय ओही क्षेत्रक रहय बला छलाह जतय सँ हम स्नातक आ स्नातकोत्तरक पढ़ाइ कयने छलहुँ । किशोर भैयाक पिता डॉक्टर छलथिन आ अंग्रेज सरकार मे काज करैत-करैत भूटान मे जा क' बसि गेल रहथीन । हुनक माय हुनकर पिताक संग नहि गेलखिन आ ओ एकटा होटल खोलने छलीह । आवासीय, शिमला सँ कने हटिक' सोलन मे । किशोर भैयाकें सेहो पिताक स्नेह नहि भेटलनि हालांकि 'मेयो कॉलेज' मे पढ़बाक खर्चा आ व्यवस्था हुनकर पिता कयन छलथिन। मुदा ओ बहुत बाद मे बुझलखिन जे हुनका एकटा कश्मीरी माय सेहो छथीन आ भूटान मे हुनकर पिता संगे वैह रहैत छलथिन । आब प्रश्न उठैत अछि जे किशोर भैया एत' हजारीबाग मे कोना ? भेलइ ई जे स्व. विद्योत्तमा त्यागी एक बेर अपन पुत्री आ सौदामिनी श्रीवास्तवक संग स्कूलक ट्रिप ल' क' गेल छलीह सोलन । ओतहि ई सभ गोटे किशोर भैयाक मायक होटल मे ठहरल रहथीन । आब ओत' की...भलेक जे किशोर पांडेय (जे अविवाहित रहथि) अपन मायके सभ विनती कें, बात कें, कननाइ के छोड़ि आबि गेल छलाह, सुश्री सौदामिनी श्रीवास्तव, स्व. विद्योत्तमा त्यागी आ सुश्री नीलम त्यागीक संग जनिका ओ 'जीजी' कहैत रहथीन आ जे वयस मे हुनका सँ पन्द्रह बरखक पैघ रहथीन ।

किशोर भैयाक सूत'बला कोठरी बाहर छलनि जेकर सटल रूम छलनि जीजीक। भाभी आ बच्चा सभ पाछां दिस स्टोर रूमक बगल बला कमरा मे रहैत रहथीन । मौसीजी बाहरवाला ओहि रूम मे रहैत छलीह जतय हम पहिल बेर बैसल छलहुँ। मौसीजीक बड़का रूममे एकटा आर बेड लागल छलैक । हालांकि ओहिमे क्यो सूतैत नहि रहैक लेकिन कहियो काल्ह क' बिलासपुर सँ कोनो डाक्टर सिंह अबथीन त' ओ ओही कोठरी मे सूतथि । हमरा लेल ई सब एकटा अनुभव जेकां छल ।

हमरा शोधक सभसँ रोचक प्रमाण तहन भेटल जखन भैया, भाभीके ल'क' अपन सासुर गेल रहथि कोनो विवाहमे भाग लेबाक लेल । सौदामिनी श्रीवास्तव झगड़ा क' के सप्पत खा क' अपन टिनही बक्सा ल'क' ई कहि गेल छलीह जे आब ओ अपन भतीजी संगे लखनऊए मे रहतीह आ डा. नीलम त्यागी कोनो सेमिनार मे भाग लेब' लेल गेल छलीह दिल्ली !

एकटा बैरन चिट्ठी आयल छलैक जाहि पर दू टकाक बदला एक टका क टिकट छलैक । पता छलैक लीखल-डा. नीलम त्यागी, त्यागी कुंज, रांची रोड, हजांरीबाग। पत्र छोड़यलाक बाद हमरा कने उत्सुकता आ लोभ भ' आएल । एहन काज करबा लेल जे मर्यादाक विरूद्ध छैक । जे किछु, अपराध त' भेल । मुदा जे पत्रक आशय छलैक से जानि हमरा विश्वास अछि जे हमर अपराध क्षमा भ' जाएत ।

पत्र शुरू भेल छलैक...'प्रियतम नीलम...'। एतबा पढ़लाक बाद उत्सुकता बढ़ब स्वाभाविक । ई पत्र कोनो प्रो. जीतेन्द्र अग्निहोत्री लिखने छलथिन । पत्रक भाषा सँ बुझना गेल जे हिनक कहियो अति आत्मीय रहल होयथीन । प्रेमी आ प्रेमिका क बएस गेलाक बादो एहन आत्मीय संबध आ भाव रहि सकैत छैक से हम ओहि दिन बुझलियैक। आर बहुतो रास उचिती मिनतीक बाद जे अंतिम पैराग्राफ रहै से हम सोझे उतारि दैत छी-''मुझे तीस वर्ष बाद तुम्हारी याद आई है फिर से-तुम्हें मालूम है यह मेरा दूसरा पत्र है तुम्हें । मैं तो सिर्फ इतना जानना चाहता हूँ अब जबकि वाणप्रस्थ की तेयारी हो रही है कि तुमने शादी की या नहीं । शायद तुम मुझमे इतनी रूचि न रखती हो पर मैं अपनी बात बता दूं-मैंने फिर शादी नहीं की । हाँ, एक इल्तजा है तुमसे-हो सके तो अंतिम इच्छा ही समझना-शादी के दूसरे दिन ही तुम मुझे छोड़ कर क्यों चली गई ?'

हमर अपराध ई जे हम ई पत्र के पुन: साटि के डा. नीलम त्यागी कैं देने छलियनि आ तेकर बाद कतेक दिन हुनकर फुलल आंखि आ चुप चुप देखने छलियनि ।

अपराध हम कएने छी मुदा कहबी छैक पत्रकारिता आ शोध मे सभ उचित छैक-प्रेम आ युद्ध जेकाँ-❑

धौरबी-प्रथा किंवा बहु-विवाहक कारण अवैध सन्तानक जे प्रवाह चलल तकरा असह्य नहि मानि अनठयबाक प्रवृत्ति सँ जे किछु लाभ भेल होअय, किन्तु ताहि सँ कामाचारक विलुप्तिक कोनो संकेत कहियो नहि भेटल । जेना एंठाओल केराक पात दरबज्जाक आगाँ मे फेकि राताराती पति-आगमनक सूचनाक तर मे गुप्त रतिकर्म कैं कहियो नुकयबाक प्रयास होइत छल तहिना मैथिलीक आरंभिक कथाकार लोकनि समाज मे पसरल भ्रष्टाचार कैं नहि चित्रित करबाक तर्क मे आ साहित्यकैं मर्यादित रखबाक आदर्शक घोषणामे अपनाकैं नुकबैत रहलाह ।

—सुधांशु 'शेखर' चौधरी

कथा

पंकज पराशर

सभक नीक लेल

हम एकदम्मे जिद्द रोपि देलियै । माँ कैं हमर बात पसिन्ने नहि होइत छनि। खैर, देखियौ जे मानि जाइ जेता तँ नीके रहतै । नीक तँ हुनके सभकैं हतैन । नीक जकाँ...। हमर बड़ मोन छल जे नीक स्कूल मे पढ़ितहुँ । नीक लोकक संग रहितहुँ। नीक छौंड़ा सभ हमर दोस रहितय। से थोड़ेक अछियो । मुदा हम एत' रह' नहि चाहैत छी । होस्टल जाए चाहैत छी ।

पाँच दिन पहिने सोमक साँझ मे जलखै करैत काल माँ के कहलियनि, 'माँ, हम हॉस्टल मे रहिक' पढ़' चाहैत छी । अपने स्कूलके होस्टल मे।' हम देखलहुँ माँ के मुँह पर उदासी पसरि गेलनि । माँ कनेकाल चुप रहलाक बाद फेर सहज होइत बजलीह, 'नहि...नहि...होस्टल-टोस्टल जएबाक काज नहि छै ।' आ फेर कने काल रूकि क' बजलीह, 'अँए यौ सोनू, अहाँ होस्टल किए जाए चाहैत छी ? होस्टल मे नीक लागत अहाँकैं ? अपना घरक एकटा कारो-कौआ भेटत ओहिठाम ? नहि...नहि. ..ई सभ बात नहि सोचू ।' हम कहने रहियनि, 'माँ, हमरा नीक सँ पढ़बाक अछि । खूब पढ़' चाहैत छी हम । अहाँ सभकैं से नहि नीक लागत की?' माँ फेर चुप भ' गेल छलीह । फेर जेना विचारि क' बाजल छलीह, 'पापा पहिने जाइ लेल कहताह? अहाँक पापाकैं ओतेक पाइयो होइ छनि जे अहाँ होस्टल मे रहब ? जाउ, खाक' पढ़ै लेल बेसू ।' माँ बुझलखिन जे हम किदन-कहाँदन गप्प कहलियनि से ओ तरकारी काट' लागल रहथि । मुदा उदासी पसरल बुझाएल हुनकर मुँह पर । साइत ओ सोच मे लागि गेल रहथि ।



बाबा संगे आइ धरि हम कतेक चीज सभ सीखि गेल रहितहुँ । ओ ना मा सी सँ ल' कए लघु कौमुदी तँ सिखा देने छलाह । बाबा अंग्रेजियो तँ जानै छथि । मुदा

एहिठामक अंग्रेजिया सभ...। ओह, नहि पुछू ? गामक लोक सभ हमरा बड़ तेज विद्यार्थी कहैत छल । स्कूल मे फस्ट करैत रही । मुदा एहिठाम तँ ने होमवर्क क' पबैत छी आ नहि घरे पर कियो पढ़ाब' बला अछि । अपनो सँ जँ पढ़ब तँ एना मे पढ़ि होइ छै ? एना मे कोना क' बेसी नम्बर आओत ? कोना क' नीक बात सभ सीखब ? एहिठाम त' एकटा खांबहारि सन घर छै । ओहिमे सभटा चीज, वस्तु, लोक-वेद, टी. भी. सभ रहैए । पापा तँ दारूओ पीबै छथिन । माँ कहियो मनो नहि करैत छथिन। किनसाइत माँओं केँ पापाक डर होइ छनि । असल मे पापो अजीब लोक छथिन । भोरे सात बजे जे जाइ छथि तँ फेर सात बजे सांझे मे अबै छथिन । खेनाइयो संग मे ल' जाइ छथि । दुपहरिया मे कहियो खाइ लेल नहि अबै छथि । आइ काल्हि हमहूँ खाली सोचैत रहैत छी । एहि सँ पहिने हम अपन बाबा संगे छलहुँ । हरदम हुनके संग रही खेनाइ सँ सुतनाइ धरि । हुनका संग नेना मे खेलाइतो रही । बाबाक सुपारीबला बौंगली छीन क' पड़ाइ त' बाबा एहि कोन सँ ओहि कोन हमरा पकड़बाक लेल दौड़थि। बच्चा किलास मे रही तहिया । एक बेर अमितबाक नाना आयल रहथिन । बाबा हमरा बजाक' कहलखिन, 'ई छथि हमर पोताजी महराज !' झट द' हमहूँ कहने रही, 'ई छथि हमर बाबाजी महराज ! तकरबाद ओ दुनू गोटे खूब हँसल रहथि । फेर बाबा हमरा श्लोक सुनेबाक लेल कहने रहथि मेघदूत बला । हम सुनौने रहियनि,

धूमज्योति: सलिलमरुतां सन्निपात: क्व मेघ: ।
सन्देशार्था: क्व पटुकरणै: प्राणिभि: प्रापणीया: ।।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् गुह्यकस्तं ययाचे ।
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतना चेतनेषु ।।

दुनू गोटे हमर पीठ ठोकने रहथि । हम चल गेल रही फेर खेलाइ लेल । मुदा आब त' हम पापा संगे रहि रहल छी । हुनका त एक्कोरत्ती फुर्सति नहि रहैत छनि। गामो ओ कहियोकाल जाइत छलाह । जहिया जाइत छलाह घूमिते रहैत छलाह आ कि ताश खेलाइत रहैत छलाह सिकरेट पीबैत रहैत छलाह । आँखि सदिखन लाल रहैत छलनि । हम तँ डरें हुनका लग जेबे नहि करी । ओहो कहाँ सोर पाड़थि कखनो। खाली एतबे पूछथि । कोन क्लास मे पढ़ैत छी ?' हमर जबाब देलाक बाद फेर कहियो किछु नहि पूछथि । हमरा मोन मे कतेकरा गप्प रहैत छल । मुदा हम पापा सँ कहियो गप्प नहि क' सकलहुँ ।

पापा अहूठाम हमरा सँ कहाँ करै छथि । ड्यूटी सँ अबै छथि त' मुँह हाथ खाइ छथि आ तकरबाद टी. भी. लग बैसि जाइ छथि । टी. भी. लाउडिस्पीकर

जकाँ बजैत रहैए । नौ बजैत-बजैत सूति रहैत छथि । जबरदस्ती हमरो सभके ओहि दिनचर्या मे जीब' पड़ैए । चारि बजे छुट्टी होइए तँ घरे अबैत-अबैत पाँच बाजि जाइए। तकरबाद जलखइक' कए कनेकाल खेलेनाइ । किताब खोलिक' बैसैत छी त' पापा आबि जाइ छथि । तकरबाद पढ़ि थोड़े होइत छैक ?



एक दिन रातिक' निन्न टूटि गेल । घर अन्हार कुप्प छलैक । किछु नहि सुझाइत छलै । हमरा लागल जेना कुकुर हाँफैए । गरमीमास मे जेना अपन झबरा कुकुर हाँफैत छल । तहिना...। अकान' लगलहुँ त' बुझाएल जे कुकुर जेना घरे मे अछि । घर मे कुकुर कोना पैसि गेलै ? मुदा तखने बुझाएल जे कुकुर नहि...। अनठा क' पड़ि रहलहुँ। कतबो सुतबाक कोशिश कलहुँ मुदा नीन्न किएक होयत ?

जहिया आएल रही तहिये सँ हमरा एक्कोरत्ती एहिठाम नीक नहि लगैए । सातो विद्या नाशक सप्पत खुआ क' जँ पूछी तँ आब तँ औरो मोन नहि लगैए ।

पहिने हरदम घरे मे घुसल रहैत छलहुँ । ओना गाम रही त' बड़ खेलौड़िया छलहुँ । असल मे एत' खेलाइ लेल जाइ त' सभक बाते नहि हम बुझिऐक । सभ हमरा 'मुण्डा' 'मुण्डा' कहय । हमरा हुअए जे ई सभ गुण्डा कहैए । फेर जखन बात बुझलियै आ कने-मने तेरे को मेरे को बला भाखा सिखलियै त' खेलाइ मे मोन लाग' लागल । तकरबाद तँ मोने नहि होइत छल घर जाइके । ई जे कहब कि हमरा हरदम खेलाइ मे मोन लगैत अछि त' से नहि...। असल मे घर जाइतकाल एकटा शंका हरदम मोन मे रहैए...।



ओहिबेर पापा आ बाबा मे की सभ गप्प भेल रहनि से हमरा मोने अछि । हमरा मोन अछि जे पापा बजने छलाह, 'हमरा बूतें नियमित मनिआर्डर पठाएब पार नहि लागत। दुनूठामक खर्च नहि चलैए । सभकेँ एतेक दिक्कत अछि त' हम अपन परिवार केँ संगे ल' कए चलि जायब ।' दादी कतेक बुझौलखिन माँ पापा के । मुदा माँ तुरन्ते तैयार भ' गेल रहथिन पापा संग जाइ लेल । बाबा तामस सँ भरि गेल छलाह । सभ दिन भोरे नहाकए पूजा करैत छलाह तकरबाद जलखइक' कए बाध-बोन, खेत-पथार जाइ छलाह मुदा ओहि दिन दुपहरिया धरि दतमनियो नहि कएने रहथि । कहाँदन बड़ बेसी उत्तेजित भ' गेल रहथि । दादीए बुझौने रहथिन, 'जँ कनियोंक मोन छनि जेबाक तँ अहाँ नहि रोकियौ ।' बस्स...दुपहरिया मे हम सभ चलि देने छलहुँ । हम जाइ लेल नहि चाहैत रही । बाबाकेँ भरि पाँज पकड़ि लेने छलहुँ तँ बाबा कहने रहथि, 'जाउ.

..जाउ...बाउ...। जाउ...अहाँ कोनो हमर बेटा थिकहुँ। हमरो जे बेटा छथि से तँ... तकरबाद पाँज सँ छोड़ाक' ओ आँखि पोछ' लागल रहथि। तखने पापा जोर सँ हमरा रिक्शा पर बैसबाक लेल कहने रहथि।

पापा एहिठाम जाहि स्कूल मे भर्त्ती करबौलनि ताहि मे खाली मैडमे टीचर छथि। हमरा एकगोटे अंग्रेजी मे पुछने छलीह, 'आर यू वेरी नॉटी व्यॉय ? हम कहने रहियनि, ' नो मैडम।' ओ हँस' लगलीह। फेर पुछलनि-'इन व्हिच क्लास डू यू रीड ? हम कहलियनि, 'आइ एम इन नाइन्थ।' तकरबाद ओ मैडम बाजल रहथि, 'ओए हरजिन्दर। तुस्सी जान्देओ ? बेआरी भी अंगेरजी जान्दा सी !...अच्छा ? हाँ, बेआरी मुण्डा भी अंगेरजी जान्दा सी ! तहिया हम पहिलबेर बुझने रही जे हम बास्तव मे बिहारी छी। बिहारी सभके ई सभ बूड़ि बूझैत अछि। एहिठाम हमरा पंजाबी सेहो सीख' पड़ल। हमरा सँ कियो नहि पुछलनि जे हम कत' रह' चाहैत छी। की सीख' चाहैत छी? भरिसक बच्चा सभक इच्छाक कोनो महत्त्व नहि होइ छै।



होस्टल जेबाक जिद्द फेर रोपलियै तँ पापा कनेकाल माँ पर तमसेलखिन आ तकरबाद जा क विछान पर पड़ि रहलखिन। बड़ीकाल धरि माँ आ पापा घर मे किदन-कहाँदन गप्प केलखिन। एक बेर पापा जोर सँ बजलखिन, 'हमरा ओतेक पाइ होइए ? हम कमाउ कि फाटिक' मरि जाउ ?' माँ कहलखिन, 'नहि, जाए दिऔ।' माँ की सभ पापा के बुझेलखिन से तँ कहि नहि, मुदा तकरबाद पापा चुप्प भ' गेलाह आ सूति रहलाह। भोरखन माँ कहलनि, 'अच्छा ठीक छै...अहाँ होस्टल चल जाउ। पापा मानि गेलाह।' हमरा बड़ खुशी भेल। हम लगले बिदा भ' गेलहुँ ई सूचना जसबिन्दर के देब' लेल। ओ कने चिन्तित होइत बाजल, 'तुस्सी न जाओ सोनू...एत्थे तुस्सी चंगा नइं लगदा ?' हम ओकर पीठ पर एक धौल लगबैत कहलियै, ' तूँ चिन्ता जुनि कर। स्कूल मे तँ भेंट हेबे करत। अपना सभ होस्टलेबला लॉन मे खेलाएब। रोज तँ भेंट हेबे करत।' ओ मानि गेल। मानि गेल जसबिन्दर। मानि गेलीह माँ। मानि गेलाह पापा। मानि गेल सभ...। हम उछलि क' चिकड़ने रही, 'या...हू...।

स्कूल मे देखलियै पापा आएल छलाह। मैडम के आफिस मे गेल छलाह। बड़ीकालक बाद निकलल रहथि। बाहर मे गुरप्रीत मैडम सँ गप्प क' कए चल गेलाह। पापा हमरा किछु नहि कहलनि। ओहि दिन शनि रहैक। छुट्टी सबेरे भ' गेल छल। घर अएलहुँ तँ माँ कहलनि, 'सोनू, अहाँक पापा स्कूल गेल छलाह। ओ फीस-तीस जमाक' कए आबि गेल छथि। काल्हि रविके अहाँ चल जायब।' हमरा राति मे बाबा

मोन पड़ैत रहलाह। दादीक छोटकिनमी छिपली मोन पड़ैत रहल...। गामक सभटा बात मोन पड़ैत रहल। बाबाक सिखौल श्लोक सभ मोन पड़ैत रहल। हमरा लगैए होस्टलो मे वैह सभ मोन पड़ैत रहत...। ई खोबहारी तँ नहिएँ मोन पड़त। आब हम ठीक सँ पढ़ि-लीखि सकब।

भिनसर हम होस्टल लेल बिदा भ' रहल छलहुँ। अपना अनुसार बन' मे आब समय नहि लागत। मैट्रिक कर' मे आब कत्ते समय लागत ? आब हम मैट्रिकेक बाद जायब बाबाक लग। ओहि सँ पहिने नहि। हमर बैग...बिछाओन...कपड़ा...किताब... जलखइ सभ चीजक मोटा बन्हा गेल छल। माँ के कहलिययनि, 'माँ, अहाँ उदास नहि होउ। हम नीक सँ रहब। अहूँ सभ नीक सँ रहब एहिठाम। आर नीक सँ...।' हम रिक्शा पर बैसलहुँ त' माँ गेट लग ठाढ़ छलीह। हमरा उनटि क' तकबाक इच्छा भेल। हम पापाके देख' चाहैत रही। मुदा देखि नहि सकलहुँ। तकलो पर ओ नहि भेटलाह।



ललितक कथा 'रमजानी' सँ

—मोस्ताक ? आह्वानमे आदर-सूचक नाम सुनि ओसारा पर बैसल मोस्ताक चौंकल। फेर मूड़ी निहुड़ौने घर आयल।

– तूँ पढ़बे ?

मोस्ताककेँ बड़ आश्चर्य लगलैक...। आँखि निहाड़ि बाप दिस तकिते रहल।

—की पुछलिउक ?

—ऊँ...आ सिलेट-पेलसुन...किताब

—सब भ' जेतउक !

—आ ताङा घोड़ा ?

—रिक्शा कीनब !

—एँ...रिक्शा ? मारि-गारि बिसरि मोस्ताक कूदि उठल आ देहरि लग अबैत मायसँ टकरा गेल।

कथा

अजय कुमार

काँचहि माटिके काया हो रामा

विवाहक चारिम दिन विधि-व्यवहारक दृष्टि सँ बेस महत्वक होइत अछि। एहि दिनकेँ चतुर्थी कहल जाइत छैक। चतुर्थी कें बर कोहबर ओ अंगनाक सीमा सँ बाहरो पैर रखबाक स्वतंत्रता हासिल क' लैत छथि। नहि त' विवाह सँ ल' कए चतुर्थीक पूर्व धरि कतहु जयबा पर पूरा पाबन्दी राखल जाइत छैक। एहि दिन ओ बुजुर्ग और श्रेणी मे पैघ व्यक्ति सभक पैर छूक' आशीर्वाद लैत छथि। एहिठाम श्रेणी सँ तात्पर्य सम्बन्धक उच्चता सँ अछि। लोक सभ आशीर्वचनक संग-संग अपन सामर्थ आ रेबाजक अनुसार टका-पैसा सेहो बरके दैत अछि।

जाहि दिन हमर चतुर्थी छल, हमर सार लोकनि हमरा बनौने चल जा रहल छलाह। एक व्यक्ति जे हमर कनियाँ सँ जेठ मुदा हमरा सँ छोट रहथि, अपन पैर छूवा लेल कहलनि। हम कहलियनि,

—'गोड़ त' हम लागि लेब, मुदा गोड़ लगाइ अछि अहाँ लग?

हमर गप्प पर ओ लोकनि हँस' लगलाह। कियो टिपलक, 'ओ त' अहाँ रुपैयाक लोभ सँ लोक के गोड़ लगैत छियैक।'

—'निस्संदेह' हम कहलियनि।

—'मुदा जिनका पाइ-रुपैया नहि छनि, हुनका नहि गोड़ लागि अहाँ हुनकर अनादर नहि करबनि?' कियो पुछलक। हम कहलियनि,

—'नहि, जे बएस ओ श्रेणी दुनू मे हमरा सँ पैघ छथि ओ तँ हमर प्रणम्य छथि। रुपैयाक शर्त्त तँ हुनका लोकनिक हेतु अछि जे हमरा सँ बएस मे छोट रहितहुँ मात्र श्रेणीक बल पर गोड़ लगाबय चाहैत छथि।'

हमर एहि गप्पक असर ई भेल जे ओ लोकनि चुप्प पड़ि गेलाह। फेर हँसीक फुहारक बीच कान मे पड़ल,

—'तखन चलू बौकू बाबाकेँ गोड़ लागय...।'

मुदा, ई गप्प वातावरण कें गम्भीर बना देलक। उपस्थित समुदाय मे टोका-टोकी एवं विवाद हुअ' लागल। बूढ़-पुरनियाँ कें ई गप्प पसिन्न नहि छलनि जे हम एखनहि सँ घर-घर बौआइ। आखिर बौकू बाबा तँ ओहेन लोक नहि जनिक आशीर्वाद लेबाक हेतु नव-नौतार दुल्हा गामक सीमा नापय। परन्तु नवयुवक लोकनि हमर हँसी उड़ौने जा रहल छलाह;

—'सुनैत छलियैक जे सज्जन पुरूषक बात आ बाप एक होइत अछि। मुदा अहाँ तँ दू नमरी बुझाइत छी यौ...।'

पता नहि ओ लोकनि की कहाँ अण्ट-शण्ट बजने चल जा रहल छलाह। माहौल छलैक उमंग-उल्लासक तें सभकें रस भेटि रहल छलनि। ततबा मे एकटा मखौलिया अंगना मे हड़बड़ायल आयल आ ऐलान कर' लागल,

—'सुनू, सुनू सनू! सभ गोटे ध्यान सँ सुनू! परम सम्मान्य हमर बहिनो साहेबक आदरणीय, बौकू बाबा दलान पर आबि चुकल छथि।' सम्प्रति ओ किनको सँ खैनी याचना मे व्यस्त छथि। यदि हमरा आज्ञा भेटय त' हुनका सादर एतय आनल जाय...।'

एहि बात पर सभ भभाक' हँसि पड़लाह। बूढ़-पुरनियाँकेँ सेहो एहि गप्प पर बेस आनन्द भेटलनि। एम्हर-ओम्हर छितराएल नारी-समाज सेहो घौंदाक' एकत्र भ' गेल। पूरा अंगना भरल छल आ पीह-पाह भ' रहल छलैक। दलान पर एकत्र लोक सभ मे ओहेन लोकक संख्या बेसी छल जे पर्दा-प्रथाक लिहाज सँ बिना खखसने अंगना मे प्रवेश नहि करितथि। ततबा मे सम्बन्धें सारि लागयबाली एकटा युवती हमरा लग अयलीह आ बाजि उठलीह,

—'की यौ दुल्हा बाबू! बजा दिय' अहाँक पितामह कें?' एहि स्वरक अनुमोदन मे कतेक स्वर गनगना उठल,

—'हँ, हँ, किएक नहि! बेचारे त' कखन सँ बौकू बाबाक पैर छूबाक लेल उताहुल छथि...।'

उत्तर-प्रत्युत्तर चलिए रहल छल कि नवयुवक लोकनि छोट खुटीक एकटा बूढ सन व्यक्तिकेँ हमरा सोझाँ मे ठाढ़ क' देलनि। हम देखलहुँ जे खुटिआएल दाढ़ी आ छितरायल खिचड़ी केसक मध्य दू-टा मटमैल आँखि हमरा दिस अपलक ताकि रहल अछि। नवयुवक सभक द्वारा लगभग घिसियाएल जएबाक बादो हुनकर मुँह पर असौकर्यक कोनो चेन्ह नहि छल। हमर नजरि हुनका पर स्थिर भ' गेल छल कि मखौलिया सभ एक स्वर मे बाजि उठल,

–'अहाँ किएक नहि गोड़ लगैत छियनि हिनका ? ई सौंसे गामक बाबा थिकाह।'

हम निश्छल भाव सँ दुनू हाथें हुनकर पैर छूबि अपन हाथ जोड़ि लेल । बौकू बाबाक आँखि डबडबा गेलनि । ज्ञात भेल जे ओ बाजि नहि सकैत छथि । जन्महि सँ बौक छथि । हुनकर ठोर मुदा थरथरांइत रहलनि । दहिना हाथ सँ डाँड़ मे किछु ताकि रहल छलाह । बुझाएल किछु रैजकी हाथ मे अएलनि । ओकरा अपन कँपइत हाथ सँ हमरा दिस बढ़बैत हमरा एना देखलनि जेना ओकरा अस्वीकार क' हम बड़का अनर्थक' बैसब । अपना दुनू हाथें ओकरा स्वीकार करैत हम अपन माथ सँ लगा लेलहुँ। बौकू बाबा हाथ उठा हमरा आशीर्वाद दैत नहुएँ-नहुएँ अंगना सँ बाहर चलि गेलाह। आब त' हम सारि सभ सँ घेरा गेलहुँ । सभ पूछय लागल,

–'कतेक अछि ?' ततबा मे कियो लपकि क' हमर हाथ सँ रैजकी लूझि लेलक। गनय लागल, 'एकटा...अठन्नी...एकटा...चौअन्नी...आ...आ...पाँचटा...दस पैयाही । कुल सबा टका ।' सौंसे गनगना गेल । बौकू बाबा सबा टका देलथिन...बौकू बाबा सबा रुपैया देलथिन...।



बौकू बाबाक विषयमे बूझब हमरा हेतु जरूरी भ' गेल । प्रथमहि परिचय मे हमरा ओ अपना दिस घींचि लेने छलाह । हुनकर थरथराइत ठोर, हमरा दिस रैजकी बढ़बैत कँपइत हाथ आ आँखिक ओ विलक्षण आग्रह । हमरा बुझाएल रहए जेना अस्वीकार करितहिं हुनकर करेज फाटि क' बाहर आबि जयतनि । हुनका सन निरीह आँखि प्राय: हम एहि सँ पूर्व देखनहि नहि छलहुँ । हुनकर काया अजीब छलनि । छोट खुटी, चलबाक काल घिसिआइत सन दूटा पैर, डाँड़ आ ठेहुनक बीच कोनहुना लटपटायल चिक्कट-मैल धोती, देह पर जनउ छोड़ि आर किछु नहि आ दहिना कान मे कनियें टा एकटा कनौसी। सोनाक एहि कनौसीक कारण बेचारें के कतेक ने गारि सुनए पड़ैत छलनि । मुदा, ई गप्प एखन नहि कहब । सासुरक लोक सभसँ हम बौकू बाबाक विषय मे जानए चाहलहुँ । ज्ञात भेल जे हुनका बिबाहक नाम पर केहनो काज करबा लेल विवश कएल जा सकैत अछि । घर-आंगन नीपब-बहारब, धान-कूटब, चूड़ा कूटब, चूल्हा-चेकी बनाएब आदि कोनो तरहक काज ओ क' सकैत छलाह । ओना त' एहन काज सभ स्त्रीगणक जिम्मा रहैछ मुदा बौकू बाबाक बात दोसर रहनि । ओ त' एहि सभ काज मे पूरा सिद्धहस्त रहथि । खाली कियो हुनकर बियाह करा देबाक बात गछि लिअए। ओना कखनहुँ काल कोनो काल्पनिक कनियाँक रूप वर्णन मात्र हुनकर आगू क' देला मैं काज निकालल जा सकैछ । मुदा एहि झपासाक संग शर्त्त ई जे काज खतम भ'

गेलाक बाद हुनका कनियाँ देखा देबाक भरोस दिआबए पड़त । नहि कहि सकैत छी जे अपन काज निकालबाक लेल कतेक लोक बौकू बाबाकेँ कतेक बेर एना ठकने हेतनि। परन्तु बौकू बाबा त' बस बौकू बाबा छलाह । जतेक बेर ठकबाक हो, हुनका ठकि लिअ' । ओ ठकाइत चल जएताह । लोक बूझनि जे बौकू बाबू बिसरभोर छथि। मुदा, हम ई नहि मानैत छी ।

'हम सासुर गेल रही । साँझ मे घुमबा-फिरबाक उद्देश्य सँ बहरएलहुँ त' छोटका सार संग लागि गेलाह । रस्ता मे दूर सँ बौकू बाबा केँ देखलियनि । हमर सार नहुँए सँ बजलाह, 'हे देखू ! हौए बौकू बाबा आबि रहल छथि । हम हुनका सँ कहबनि जे अहाँ हुनकर घटकैती मे आएल छी । हुनके तकबाक लेल निकलल छी । अहाँ मात्र हाँ-हूँ सँ काज चलायब ।'

हुनकर स्मृति केँ जँचबाक उद्देश्य सँ हम तैयार भ' गेलहुँ । बौकू बाबा लग मे अयलाह त' विहुँसैत हमरा दिस तकलनि आ हाथ उठा क' कुशल मंगल पूछबाक संकेत केलनि । हमरा हँसी लागि गेल । हम कुशल सूचक मूड़ी डोलाय देलियनि। हमर सार हुनकर निकट ठाढ़ भ' क' हुनका बूझबए लगलथिन जे हम घटकैती मे लागल छी त' ओ मुँह खोलि निशब्द हँसी मे रंगि गेलाह । फेर इशारा सँ हमरा बूझौलनि जे ई लोकनि सदिखन हुनका सँ हँसी-मजाक करैत रहैत छथिन । बौकू बाबा आगू बढ़ि गेलाह त' हम अपन सार सँ पूछलियनि,

–'अहाँ तँ कहैत छलहुँ बौकू बाबा बिसरभोर छथि । देखलियनि ने, कोना हमरा चीन्हि गेलाह ? ओ अहाँ लोकनि के बूड़ि बुझैत छथि ।'

हमर गप्प सारकेँ नहि सोहयलनि । ओ कहय लगलाह,

–'अहाँ कोना बूझि गेलियैक जे ओ हमरा बूड़ि बूझैत छथि ? ओ त' बाजि नहि सकैत छथि । बूझाइत अछि अहाँक कोनो पुरखा अवस्से बौक रहल हेताह। तैं ने अहाँ बौकक भाषा बूझि लैत छियैक...।

हमरा लागल जे हिनका बूझाएब व्यर्थ थिक । घूमिक' अएलहुँ त' घर पर बौकू बाबाक चर्चा आरम्भ भ' गेल । मामु कहय लगलीह जे बौकू बाबा सामाजिक सम्बन्ध मे हुनकर ससुर लगाथिन मुदा अनेक अवसर पर ओ हुनका सँ काज सुतारने हेतीह। असल मे बौक-बहीर केँ गाम मे कियो मनुक्ख नहि बुझैत अछि । ताहि पर यदि ओ दरिद्र हो त' बिना दामक सौंसे गामक चाकरी करैत ओकर बएस बितैत छैक । बौकू बाबा एहिना बिन कौड़ीक चाकर बनल छथि । पाबनि-तिहारि मे घरक टाट-भीत छछारि देताह । अंगना नीपि देताह । चूड़ा कूटि देताह । बैसाख-जेठक टहटहौआ रौद मे गोइठा

आ चिपरी पाथि देताह । पूस-माघक सितलहरी मे चुलहाक माँटि पोखरि सँ कोरिक' आनि देताह । बस हुनकर बियाह करा देबाक बात गछि लियौन आ एकटा माटिक पैघ बासन देब सेहो गछि लिऔन । नहि जानि माटिक बासन ओ किएक मंगैत छलाह। दुनू हाथकेँ पसारि क' बासन पैघ रहबाक इशारा क' देताह तखनहि काज मे जुटताह। हुनकर एहन विचित्र मांगक प्रति कौतूहल बढ़ब स्वाभाविक छल । ज्ञात भेल, बौकू बाबाक भाउज हुनका सँ बड़ जरैत छलथिन किएक त' दोसराक ओहिठाम त' ओ भरि दिन खटैत छलाह मुदा भाउजक एकोटा गप्प नहि सुनैत छलथिन । एहि कारण अपन घरबलाकेँ भड़का क' ओ बौकूबाबा के अपन आश्रम सँ भिन्न क' देलथिन। बौकू बाबा माँटिक बासन मे अपना लेल भात रान्हय लगलाह। एक बेर कोनो गप्प ल' कए भाउज हुनकर भातक बासन फोड़ि देलथिन । बस, तहिया सँ बौकू बाबा माटिक बासन माँगब शुरू क' देलनि । हुनका लग बहुतरास माटिक छोट-पैघ बासन एकत्र रहय ।

जखन हम पुछलियनि जे काज सम्पन्न कएलाक बाद, बौकू बाबा माटिक बासन त' ल' लैत छथि मुदा वियाहक गप्प किएक नहि पुछैत छथिन तँ हमर सासु कहय लगलीह,

–'हुनका टरकाएब त' बड़ सांझ अछि । बासन लेलाक बाद जखन ओ घोघक संकेत सँ बियाहक गप्प पूछैत छथिन त' लोक हुनकर कनौसी मांगि कहैत छनि जे ई दिय' त' आगू गप्प बढ़ाएब । एहि गप्प पर बौकू बाबा बिगड़िक' औंठा देखा बिदा भ' जाइत छथि । एहि कारण पाछू बेचारे केँ रंग-बिरंगक गारि होइत छनि ।'

बौकू बाबा ठहरला गरीब आ' विकलांग । बेचारे केँ के अपन बेटी देतनि । जवानी सँ बियाहक आशा देखैत-देखैत आइ बुढ़ाढ़ी दिस डेग बढ़ा चुकल छथि । ठकएबाक आ देह-तोड़ि खटबाक लगन ओहिना कायम छनि । हुनकर उम्मीद एखनहुँ नहि मरलनि अछि । बियाहक गप्प पर एखनहुँ हुनकर आँखिक चमक नुकौने नहि नुकाइत अछि। एकटा काल्पनिक आनन्दक निसां मे ओ घंटाक घंटा ढेकी चला सकैत छथि । एकसरे, अथक । किछु भेंटि गेलनि खएबाक त' खा लेलनि । नहि भेटलनि त' कोनो परबाहि नहि । मात्र बियाह करा देबाक करार चाही । एही करार पर जिनगीक बरखक बरख बीति गेलनि ।



बहुत दिन पर सासुर गेल रही । आंत' पहिल गप्प जे कान मे पड़ल ओ छल–बौकू बाबा बड़ जोर दुखित छथि । भरिसक नहि बँचताह । हमर हृदय मे हुनका सँ भेंट

करबाक तीव्र उत्कंठा जागि गेल । सासुर मे ओहिना ककरो ओहिठाम पहुँचि जायब नीक नहि मानल जाइछ । मुदा हम जिद पर उतरि गेल छलहुँ । निश्चय भेल जे सन्ध्याकाल मुखान्ध भेला पर जायब । नव जमाए दिन-देखार कोनो दू कौड़ीक लोकक ओहिठाम पहुँचि जायत त' लोक की कहतैक ! बौकू बाबा हमर नजरि मे दू कौड़ीक लोक नहि छलाह । मुदा सासुरक लोकक अपन मर्यादा छलनि जकरा नांघब हमरा उचित नहि बुझाएल । ओहुना त' दिने भरिक गप्प छलैक । पूस-माघक दिन । चारि बजबा सँ पूर्वहिं ओस खसए लागल । रौद त' दिनहुँ मे नहिएँ जकाँ छलैक । साँझ मे तीन-चारि गोटेक संग बौकू बाबाक घर दिस चललहुँ । गामक दोसर छोर पर छलनि हुनकर घर। गेलहुँ तँ देखलियैक जे एकटा छोट-छीन खोपरी मे पुआरक सेजाउट पर फाटल सन मैल चद्दरि ओछाओल छलैक । ओहि पर पड़ल बौकू बाबा कुहरि रहल छलाह । देह पर सीड़क छलनि जे ठाम-ठीम उघरल छल । एकटा डिबिया कोनहुना जरि रहल छल । लगमे, एकटा छिपली मे थोड़ेक दालि-भात राखल छलैक । भरिसक नजदीकक कोनो घर सँ आएल रहैक । हुनकर दशा देखि हमर संग आएल हमर सार लोकनिक आँखि डबडबा गेल छलनि । सदिखन बौकू बाबाक हँसी उड़ाबए बला लोक सभक एहन कातरता हमरा लेल नव बस्तु छल । हम टोकि देलियनि,

–'अहाँ लोकनि जे बूझियनु जे बौकू बाबा एकदम बिसरभोर आ भारी मूर्ख रहथि। हम त' ई गप्प नहि मानैत छी । हम हिनका जिनगी केँ जीब' योग्य बनाक' राखएबला एकटा बुद्धिमान व्यक्ति मानैत छियनि ।' हमर गप्प पर सभ चुप्प रहलाह। एतबा मे कियो बौकू बाबा केँ टोकलथिन,

–' हे देखियौ ! के अएलाह अहाँ सँ भेंट करए...।'

सीरक सँ कोनहुना अपन मुँह बाहर करैत हमरा दिस नजरि घुमौलनि । चिन्हला पर आँखि सँ बैसबाक संकेत कयलनि । बुझाएल जे हमरा अएला सँ प्रसन्नता भेलनि अछि । हम संकेत करैत पुछलियनि जे किछु खएबाक इच्छा होइत अछि ? उत्तर मे मूड़ी डोलाय लगक छिपली दिस मूड़ी घुमौलनि । बुझाएल, कहि रहल छथि–खैक त' राखल अछि । हुनका संग टुटटा कर'बला हमर सार लोकनि चुप्प छलाह । हम हुनका सभकेँ उकसएबाक उद्देश्य सँ कहलियनि जे वियाहक गप्प चलाउ ने ! किनको हिम्मति नहि भेलनि । अंत मे, हम स्वयं पूछि लेलियनि, 'एम्हर अहाँ दुखित पड़ल छी आ ओम्हर लोक सभ अहाँक वियाहक बात चला रहल छथि...।'

हम एहि मैं पूर्व कहियो हुनका सँ वियाहक गप्प नहि कएने रही । तैं बजबाक काल हमर बोली लटपटा गेल । विश्वास राख, हमर, लक्ष्य हुनका सँ हँसी करब नहि

छल । हम त' ई बूझए चाहैत छलहुँ जे की सरिपहुँ बौकू बाबा बियाहक नाम पर ठकाइत छलाह ? हमर गप्प पर हुनकर मुँह दयनीय हासक मुद्रा मे खुजलनि । कोनो तरहें सीरक सँ अपन दहिना हाथ बहार क' आंकरा घुमाए बूझएबाक चेष्टा केलनि,

-'आब की बियाह ! आब त' जाइए रहल छी ।' हुनकर छलछला गेल आँखि कहि रहल छल-बियाहक बहाना त' जीबाक बहाना छल ।



घुरतीकाल सोचैत रही बौकू बाबाक विषय मे । हुनकर बियाहक विषय मे । हुनकर आसन्न मृत्युक विषय मे । हमरा बूझाएल जे विवाहक उम्मीद बौकू बाबाक जीबाक एकटा ढंग छलनि जाहि मे ओ अपना संग दोसरोकेँ रमौने रहैत छलाह । नहि त' बौक-बताह, लूल्ह-नांगड़ मे रूचि लेबाक पलखतिए ककरा छैक । आइ ओ मरि रहल छथि त' लोक सभके एहि बातक पता छैक जे बौकू बाबा मरि रहल छथि। नहि त' कतेक त' मृत्यु होइत छैक जकरा विषय मे लोक बूझउ नहि चाहैत अछि।



धीरेन्द्रक कथा 'सुगरक बाप' सँ

मनचनमा जेना ककरो गप्प सुनबाक लेल तैयार नहि छल-'हँ ! हँ ! काल्हि बेचि देने छलियै मुदा आइ नहि बेचबै ।'

'...किएक ने बेचब' ?' कतहु तँ बेचबे करब' । ओना रुपैयाक तरपट हुअ' तँ बात दोसर थीक ।'

'दोसर गोटए बाजल ।

काल्हिबला गाहकि पाऊरक पुट्ठाकेँ मोन पाड़ैत बाजल.... हँ ! रुपैयाक लोभ भए गेल रहओ तँ पाँच रुपैया हम आर देबह...।'

मनचनमा चिचिआइत जेंका बाजल-'नइ बेचबै । कतबो देबऽ तैयो ने। कहियो ने बेचबै ।...जखन ओ हमर दुआरि नइ छोड़य चाहैत अछि तँ कहियो ने बेचबै । एतइ बूढ़ भ' मरतै...'-आ गमछी सँ नोर पोछैत ओ खोभारीक फड़की लगा देलकै ।

कथा

मेघन प्रसाद

मौजीलालक किरिया

भेलै एना जे मौजीलालक रिजल्ट निकलल रहनि । भिनसरे मुख्यालयमे योगदान करबाक रहनि । अपन बहिनोइ घुरनक संग रातिए गप्प भ' गेल छलनि । भोरे बिदा भ' जेबाक छै । से भोरे उठि विदा भ' गेलाह दुनू गोटे डेरा सँ । मुदा सड़क पर अबिते दुनू गोटेमे खीचातानी शुरूह भ' गेलनि । सार कहथि ट्रेनसँ जएबाक गप्प आ बहिनोइ कहथि बससँ जएबाक गप्प, ! ट्रेनसँ मुख्यालय पहुँचबाक कोनो ठेकान नहि । बारह बजे पहुँचत की दू बजे । देरीसँ पहुँचबाक लेल कुख्यात लाइनक गाड़ी । काल्हिए सँ योगदान शुरूह रहैक । सीनियरटी मिनट-मिनट मे लूज हेबाक खतरा । तेँ परम चिन्ता आ व्यग्रता संगहि नीक नोकरी पयबाक प्रसन्नता । दुनूक बीचमे फँसल मौजीलाल द्वन्द्व युद्धमे । अन्ततागत्वा बहिनोइक बात रहलनि आ विदा भेलाह बससँ सांझे गयाक लेल । भाया बिहार शरीफ । मुदा फतुहा सँ पहिनहि पाँच किलोमीटरक सघन जाम मे फँसि गेलै बस । ने त' आगाँ जा सकैछ आ ने पाछाँ । पाइ सेहो लैए लेने रहनि कन्डक्टर गया धरिक । जाम होइतहिं घुसुकि क' विदा भ' गेल रहय कन्डक्टर ओहिठामसँ। पैसेन्जर द्वारा पाइ वापस करबाक लेल तंग होयबाक डरसँ । मुदा घूरन रहथि तेहेन चंठ जे ताकि लेलनि कन्डक्टरकेँ आ पाइ घुरा लेलनि । दुनू गोटे फेर बिचारलनि जे घूरिक' ट्रेन पकड़लल जाय । आठ बाजि गेल रहैक । पहिल ट्रेन तँ छुटिए गेलै दोसर साढ़े दस बजे जंक्शन सँ खुजतै । घूरिक' जक्शन जयबा लेल कोनो सबारी नहि । पयरे पाँच किलो मीटर चलि घुरला दुनू गोटे पहाड़ी पर । एकंगरसराय लेल एकटा बस भेटलनि संयोगे सँ भाया-मसौढ़ी-जहानाबाद । से जहानाबाद धरि जयबा लेल ओहि मे चढ़ि गेलाह । बसमे बैसल मौजीलाल अपन उज्जवल भविष्यक मादें बहुतरास बात सोचैत करा खएबामे मगन रहथि । ओम्हर साईकिलो पर नीन्न घींचबाक लेल अभ्यस्त

घुरनकेँ बसक सीट आर आराम दिय' लगलनि । अकस्मात् दुनूक ध्यान भग्न भेल रहनि ।

बगलबला सीट पर बैसल युवककेँ बसक कन्डक्टर कालर पकड़ि अपना दिस खींचि रहल छलैक । युवक सामान्य भेस-भूपाक सज्जन पात्र सन छल । कालर खींचैत कन्डक्टर ओहि युवककेँ धुरझार गारि पढ़ि रहल छलैक ।

—'कहैत ही पाय ला भाड़ा ? भीख मँगैत हियौ रे धीचोदा । स्टाफके बच्चा। तोरा सन स्टाफके बच्चाके रोजे चराब'ही हम । कोन बाप हए तोहर स्टाफ ? दूइए हाथ देबौ कि बम बोली जैबे । स्टाफ ही ? जेना बापेक गाड़ी हए ? गाड़ी मे तेल ना जरे हए, पानी जरे हए । हरामे मे चढ़त । मालिकके देब हम अपन देह बेचक।'

आ ताहिपर दू फाइट जमा देलकइ । बस रोकै लेल आवाज देलकै ड्राइभरकेँ। उतर' लेल कहै ओहि यात्रीकेँ मुदा ओ कहै-'हम स्टाफके आदमी ही । विश्वास न होय त' ड्राइभर से पूछ ल' ।

भरिमोन गरियौलाक बाद कन्डक्टर ओकरा ठेल' लगले चलतिये बस मे । एहि बीचमे यात्री-कन्डक्टरक सभ बात सुनैत रहल ड्राइभर । ड्राइभरकेँ गुम्मी सधने देखि विवश भ' यात्री टाका निकालि कन्डक्टरक हाथ मे द' देलकै । कन्डक्टर पाइ ल' ठेल देलकै ओकरा । यात्री खसैत-खसैत बचल ।

—'पाइ घुरा द' ओकर । स्टाफके आदमी हइ ।' बस रोकि ड्राइभर बाजल । आब पाइ घुरा देलकै कन्डक्टर । यात्री अपन सीट पर बैसि रहल ।

—'हम कहैत छलौं ने अहाँके ट्रेन सँ चल' ।' खिसियाक' मौजीलाल कहलनि घूरनसँ ।

—'से किए ? की भेल पंडीजी ?'

—आन्हर छियै अहाँ ? देखै नहि छियै कि होइ छै ? की भेलइ ?'

—कहाँ किछु भेलै ? घूरन जबाब देलनि ।

मौजीलाल ओहिना खिसिआइले छलाह । कहलथिन,

—एखन एहि छौंड़ाक जगह पर हम रहितियै तँ की होइतइ ? हम तँ खून बोकरा देने रहितियैक कन्डक्टरबाके । ओकर सभ मोंटाइ आ मोंछ फड़कौनाइ बहारक' दितियै पाँचे फाइटमे । ड्राइबरोके ततारि दितियै...।'

—आ ओ सभ मीलिक' अहूँके थकूचि नहि दितए । एहिना होइ छै बस-ट्रक मे सभ दिन । की करबै ? छोड़ एहि बातकेँ ।' घूरन हुनका शान्त करबा चेष्टा केने

रहथि जेना । मुदा शान्त कहाँ भेल रहथि मौजीलाल । हुनकर अशान्तिक जड़ि मे कतेक रास घटना जे लुधकल रहनि ।

तहिया गामेक वित्तरहित कॉलेजमे पढ़बैत रहथि मौजीलाल । समस्तीपुरसँ अबैत रहथि लोकल बससँ । किराया रहै पाँच रुपैया । संयोगसँ हुनका लग खुदरा नहि रहनि। नमरी छलनि । ओ बढ़ा देलथिन कन्डक्टरकेँ । मुदा कन्डक्टर हुज्जति कर' लागल रहय । कहनि खुदरा दै लेल । खुदरा त' रहनि नै । कतबो कहलथिन मानबे नहि करय कन्डक्टर । लागल रहय ऐस-तैस बतिआबए । दू चारिटा उझट कथा सेहो कहि देलकनि । क्रोध भेलनि मौजीलालकेँ । दू फाइट लगा देलथिन । कन्डक्टर हल्ला क' कए बस रोकबौलक । ड्राइभर, खलासी आ कन्डक्टर मीलिक' बससँ उतारि बड़ मारि मारलकनि । कमीज फाड़ि देलकनि । ओहिना नीच्चे मे छोड़ि बस बढ़ाक' चलि देलक । नमरी सेहो लेने चल गेल ।

मौजीलाल कहुना घर अएलाह । भाए देखलथिन । सभटा बात बूझि ओ अगियाबेताल भ' गेल रहथि । इ त' प्रोफेसर भाइक बड़का बेइज्जती भेलइ । ओ तुरन्त योजना बनौलनि । भोरे लंठ भातिज सभकेँ संग मौजीलालकेँ लेने पटपारा घाट पहुँचलाह समधी ओतए । घटनाक विवरण सुना परामर्श लेलनि । समधी रहथिन गुरूघंटाल। कहलथिन,

—पाइ तँ नहिएँ घुरतै आब कोनो तरहेँ । तकरबाद त' उपाय बचै छै राड़-रोड़-पवित्रम् ।'

तखने ओइ बसकेँ अयबाक समय रहइ । चौकसँ थोड़ दूर आगाँ बढ़ि बान्हपर पाँच सात टा छौड़ाक संग समधी नेतृत्व सम्हारने ठाढ़ । बस अएलै । मौजीलाल चीन्हि गेलाह ओइ बसकेँ दूरेसँ । समधीक हाथ देलापर बस रूकलै । ड्राइवरसँ गप्प करय लगला प्रेमसँ । पूर्व संकेतक अनुसार छौंड़ा सभ बसकेँ आगाँ सँ घेरि ड्राइवरकेँ तड़ाक सँ घींच लेलक नीचाँ आ दे धुरमुस । मौजीलाल पहिलबेर हाथ साफ कएने रहथि नीक जकाँ । बेल्ट सँ देह देने रहै फाड़ि कन्डक्टरकेँ । ड्राइबरक हाथक खमल घड़ी दाबि लेने रहए अपना जेबीमे कियो ।

चलाक खलासी बस रूकिते कूदि पड़ाएल पछिला गेट सँ आ पाछूए दिस दौड़ल चौक पर । चौक पर नियुक्त मालिकके बुद्धा पहलवानकेँ ल' क' आएल बस लग। ड्राइबर भ' गेल रहय बेहोस । खूनसँ लथपथ । पहलमान तँ आएल छल रोसाएल मुदा गुरूघंटाल समधीकेँ देखितहिं थमकि गेल । सभ छौंड़ाक संग मौजीलालकेँ ल'क'

ओकर भाइ ससरि गेल रहथि । समधी बुद्धा पहलवानकँ दू दिन पूर्वक घटना सुनबैत कहलथिन,

–'यैह कन्डक्टर आ ड्राइभर ओहि दिन रामगुलाम जनमेजय कॉलेजक प्रोफेसर साहेब मौजीलाल सिंहकेँ बेइज्जति कएने रहइ आ किराया मे नमरी लेने पड़ा गेल रहइ। तकरे परिणाम सोझाँ छै ।' बुद्धा पहलमान कहलथिन समधीकेँ,

–'तकर ई त' इनसाफ नहि होलै जे मारिक' गिरा देलहो ड्रेवरकेँ ? ई त' गाम आ चौकक बड़का बदनामी भेलइ । आइ तक एहन बात कहियो नइ भेल रहइ हियाँ।' समधी बुद्धाकेँ जबाब दैत विदा भेलाह,

–'तूँ त' इहे कहबे करबहो । किएत' बसबलाक पहलमान छहो । तोरा दरमाहा आ कमीशन भेटइ छह । तें तोरा गामक सज्जन प्रोफेसरकेँ बेइज्जती नइ सुझै छह। गाम आ चौकक नइ अपन बदनामी सूझि रहल छह ।'

तहिया ओहिठामक लेल ई घटना महत्त्वपूर्ण जरूर रहै । तुरन्त चतुर्दिक ख़बरि पसरि गेलै आगिक लहरि जकाँ । मौजीलालक सासुरोमे ई घटना चर्चाक विषय बनि गेलै । भाइक समधी साकांक्ष रहथिन जे आगू होइ की छै ? दुपहर धरिक खबरि ल' क' समधी आयल रहथिन मौजीलालक ओहिठाम ।

पहलमान बुद्धा खूनसँ लथपथ बेहोस ड्राइबरकेँ रिक्शा पर लादि ब्लॉकक हास्पीटल पहुँचा देलकै । तुरन्त बसमालिककेँ खबरि कयलकै समस्तीपुर । मालिक घटना स्थल पर आएल । हास्पीटल जा ड्राइवरकेँ देखलक । दुपहर धरि होश नहि आयल रहै । लगले थानामे केस करबाक निर्णय भ' गेलै मालिकक । मालिकक अयला पर पहलबान घटनाक बास्तविक कारणक खोजबीन कयलक । ओकर एकटा चेला दू दिन पहिलुक चौक परक घटनाक पुष्टि कयलकै आ ओ स्वीकार कयलक जे भाड़ा काटि क' प्रोफेसर साहेबकेँ घूरा देबाक लेल टाका देने रहैक । मुदा ओ चेला चिन्हबे नहि करै प्रोफेसरकेँ जे टाका घूरबितए । ओ दारू कीनिक' पीबि गेलै ।

केस करबाक निर्णयक सूचना आ ड्राइवरक होश मे नहि अयबाक सूचना दुनू मीलि मौजीलालक हृदय कँपा देने रहनि । मौजीलालक कैरियर त' बर्बाद भइये जइतैक। घटना मे भाग लेनिहार सभ घर छोड़ि भागि गेल रहय । मुदा जिनकर समधी नेतृत्व केने रहथिन से मुख्य अभियुक्त भ' गेल रहथि एहि घटना मे । से मौजीलालक भाइ रहथिन दरबज्जे पर । ओ कहने रहथिन मौजीलालकेँ बजाक' डा. विष्णुदेव जी सँ भेंट क' बस मालिक ओहिठाम पैरबी करब' लेल । सुलह सफाइ करब' लेल ।

मौजीलाल जनैत रहथि डा. विष्णुदेवजी छथि फेरल लोक । साधु-सन्त, गुण्डा-सरदार, कन्डक्टर-मालिक सभसँ लगीच जान-पहिचान; प्रभाव-प्रतिष्ठा बनौने रहथि । जँ ओ चाहि लेथि तखने कल्याण । अछता-पछताक' पहुँचलाह मौजीलाल डा. विष्णुदेव ओहिठाम । शुरूहसँ अन्तधरि सभटा कथा ठीक-ठीक कहि देलथिन। आसन्न संकटसँ बचयबाक उपाय करबाक आग्रह कयलथिन । कहय लगलथिन डाक्टर साहेब दार्शनिकक मुद्रामे–

–'देखहो मौजीलाल ! तूँ सब छहो एखनी नया खूनबला । नया जोश । नया उमंग । आगू-पाछू किछु सोचै नइ छहो । आब तूँ भेलहो गामक प्रतिष्ठित आदमी। मौजिया से मौजीलाल, मौजीलाल से मौजीलाल महतो आ सत्तहत्तरक पिछड़ा आन्दोलनमे महतो ताड़ाक' सिंह लगा लेलहो । पढ़बो-लिखबो कयलहो । बढ़ियें कयलहो । अब त' प्रोफेसरो बनलहो । अपन जाति-भाएके गौरब छहो तूँ । हे, आइ न कॉलेज प्राइवेट हइ, सरकारी होब्बे करतइ । तहिया एहि गामक महतो अंइठक' कहतइ हमरो गामे, हमरो जातिमे प्रोफेसर हइ । लेकिन आइ जे उमंग मे ई सभ कयलहो, तइसे कत्ते बदनामी होत' । कैरियर बर्बाद होत' से अलगे । आब त' बालो-बच्चेदारबला होबहो । खैर, कोनो बात नइ । जे होलै से होलै । आब की होते से सोचहो । हमरा की करै लेल कहै छहो ?'

बड़ नम्र भावें मौजीलाल कहने रहथि ।

–'आब आगू से एना नइ करबै । एहिबेर केनाहुतो सम्हारि दियौ एहि झंझटिकेँ। केनाहुतो केस होइसे बचि जाय । हम त' बेरबादे भ' जयबै । अहाँ मालिक बालो बाबू से बात करियौ । सोलह-सफाइ करा दियौ केनाहुतो ।

डाक्टर साहेब आश्वस्त कएलथिन । किछु हल्लुक मोने मौजीलाल घर घूरला। किरिया खयलथि मोने मोन । बसबलासँ झगड़ा नइ करबइ । बससँ जयबो नइ करबै कत्तौ । यदि जयबो करबइ त' खुदरा पाइ ल' क' । जे पाइ मंगतइ से द' देबै चुपचाप। मुदा ई सभ चललनि नहि । फेर झगड़ा भैये गेलनि...।

कॉलेज मे नोकरी लगलाक किछुए दिनक बाद फेर मैं मौजीलाल लागि गेल रहथि कमीशनक तैयारीमे । बेर-बेर आब' पड़नि पटना घूरनजी लग । बस यात्रा नहि करथि । किरिया जे खएने रहथि । ट्रेन मे बड़ समय लागनि । उपयुक्त समय पर ट्रेनो नहि भेटनि आ भेटबो करनि त' तीनठाम बदली कर' पड़नि । बीचमे कमसँ कम दू ठाम त' जरूरे गाड़ी बदल' पड़नि ।

संयोग सँ मौजीलालकेँ एकटा विकल्प भेटि गेल रहनि । गामक भैयारी महक गेनमा आ ओकर छोटका भाय सुल्फा ड्राइभर रहय । रामगढ़बाक जगन्नाथ कलबारक ट्रक पर रह' लागल रहय । ओ बड़ आदर करय मौजीलालक । भैया-भैया हरदम करैत रहय । आग्रह कएल करै, 'पटना चलबहो भैया त' चलिह' साथे हमरे गाड़ी पर ।' गेनमा आ सुल्फा दुनू भाइ दूटा ट्रकक ड्राइवर । एक दिन गेनमा दोसर दिन सुल्फा । बेरा-बेरी कहियो गहूँम लादिक' त' कहियो धान लादिक' जाय पटना । ओम्हरसँ सोनक बालू लादिक' घूरि आबय रामगढ़वा । से जखन पटना जयबाक होइन मौजीलालकेँ त' साँझ क' चलि जाथि । फेर दिन भरिक काजक' 'नोइन्ट्री' टूटला पर साढ़े नओ बजे रातिमे भारत टिम्बर लग लगओने रहइ ट्रक गेनमा आ कि सुल्फा । बालुसँ भरल ट्रक । भोरे फेर उतरि जाथि । पाइयो नहि लागनि आ सूतिक' चलि जाथि आ चलि आबथि ।

किछुए दिनमे रामगढ़बाक सभ संगी ड्राइबर चीन्हि गेलनि मौजीलालके । गेनमा आस्तादक भैया मास्टर साहेबकेँ । बूढ़बो ड्राइबर सभ भइये कहनि मौजीलालकेँ आ आग्रहपूर्वक बैसालनि अपना ट्रक पर । ओहने आदर-सत्कारक संग ल' आबै पटना। ई बड़ सुभितगर भेलनि मौजीलालकेँ । ओ बस-यात्रा करब बिसरिये गेल रहथि । मुदा बस कहाँ बिसरल रहनि हुनका ।

एही बीच मुजफ्फरपुरक स्कूलमे प्रतिनियोजन भेलनि आ तकराबाद पटना सिटीक+2 स्तरीय जिला स्कूल मे चलि अयलाह । जोगार बैसि गेल रहनि । स्वजातीय महताजी डाइरेक्टर, यादवजी विधायक आ साहुजी डाइरेक्टरक सचिव । डेरा ल' अयलाह पटना । प्राचीन इतिहासमे इंटरकेँ विद्यार्थी रहबे नइ करै । पढ़ब' पड़नि हिन्दी । संस्कृता सँ आचार्य रहथि मौजीलाल । पढ़बथि हिन्दी आ पढ़थि संस्कृत । कमीशनक तैयारी जोर पर । अध्ययन आ अध्यापन दुनू समतूल । भाग-दौड़क गिनती सँ प्राय: मुक्ति।

मुदा एकटा काज भ' गेल रहनि मोतिहारीक । ओहिठामक इण्टर व्यवसायिकमे अपन कनियाँ आ भौजीक नाम लिखा देने रहथि मौजीलाल । एकटाकेँ एम. एल. टी. मे आ दोसरके कम्प्यूटरमे । ओहि विद्यालयमे क्लास करबाक कोनो बाध्यता नहि । अपन एक लंगोटिया संगी रहथिन ओहि विद्यालयमे । परीक्षा सेन्टर ओहीठाम आ तत्कालीन शिक्षा मंत्रीक ओपेन बुक सिस्टम परीक्षा ताहि परसँ नीक अंवसर द' रहल छलनि। से मौजीलाल मोतिहारी मेँ फार्म भरा देने रहथि । परीक्षाक दिन आबि गेलैक । परीक्षाक त' कोनो चिन्ता-फिकिर नहिए रहैक । परीक्षार्थिनीकेँ पटनासँ ल' जाउ मोतिहारी आ परीक्षा दिया ल' आनू ।

इएह त' मूल समस्या रहनि मौजीलालकेँ । पटना सँ मोतिहारी अयबाक-जयबाक समस्या मादे कहलनि मौजीलाल अपन गामक ड्राइवर गेनमाकेँ । गेनमा अपन अनुभवक आधार पर तर्क पूर्ण सुझाव दैत कहलकनि, 'देखहो भैया ! परिवार ल' क' ट्रक यात्रा भूल्लो सँ नइ करिहे' । गाड़ी रूकइहइ लाइन होटल पर । आ केविनमे जनानीके देखक' लुबुधि जाइ हइ ड्राइवर आ खलासी । दारूक बोतल आ नमरी-पचसंटकियाक संग। पुछइ-तुछइ के कोनो काम नहि, नमरी ठूसय लगइ हइ जनानी सभक झुल्ला मे । एहि डरें ड्राइबरो-खलासी कहियो अपन परिवार अपना ट्रक सँ नइ ल' जाइ हइ।' गेनमाक गप्प जँचि गेलनि मौजी लालके । ओ ट्रेने सँ कनियाँ आ भौजीकेँ ल' गेलाह पटनां सँ मोतिहारी । थ्योरी पेपरक परीक्षा दिया अनलनि कहुना ।

मुदा काल्हिये सँ शुरूह छइ प्रैक्टिकल पेपरक परीक्षा । छूटि जयतइ त' फेर नहि हेतइ । एहन सुअवसर हाथसँ निकलि जयतै । फेर दोसरो त' कियो छइ नइ परीक्षा दिया आन'बला । भैयाके कोनो मतलब छनि नहि पढ़ाइ-लिखाइ, परीक्षा-तरीक्षा सँ। भैयाके त' अपन राजनीति सँ मतलब । राजनीतिये हुनका लेल सभ किछु । ताहीमे मग्न । मग्न किए नहि रहता । आइ-काल्हि राजनीतिए ने एहन वस्तु छै जे शून्य सँ उपर उठा अकास धरि पहुँचा दैत छै ।

से परीक्षाक धौजनि धएने माथ पर मौजीलाल चिन्तित । काल्हिक परीक्षामे सम्मिलित केना होयतैक । रातिमे ट्रेन नहि छै मोतिहारीक । ने भाया बरौनी ने भाया-हाजीपुर-मुजफ्फरपुर । तखन त' एक मात्र विकल्प बस-यात्रा । आ बस-यात्राक स्मरण अबिते अज्ञात भयसँ त्रस्त भ' गेलाह मौजीलाल । बस यात्रा नहि करबाक किरिया मोन पड़लनि । तैयो भोरका पहिल बससँ मोतिहारी जयबाक निर्णय लिय' पड़लनि। पहिल बस रहै 'नाइट सुपर-टू बाइ थ्री कोच' । खुजबाक समय रहै भोरे तीन बजे जे परीक्षाक समय पर मोतिहारी पहुँचा दितैक । रातिभरि एकोरत्ती नीन्न नहि भेलनि मौजीलालकेँ । दूइए बजेसँ उठि आँखि-मुँह धौलनि आ परीक्षार्थिनी दुनूकेँ तैयार करओलनि । भौजीकेँ रहनि दूटा लेध । एकटा कोरामे आ दोसर पाँच-छओ बरखक। तकरा सभक कपड़ा-लत्ता एकटा जाजिम मे बान्हि कन्हामे लटकाब' जोकर बनौलनि। झारा आ अटैची । धोती-कुरता पहिरने मौजीलालक एक कन्हामे लटकल मोटा, एक हाथमे झोड़ा आ दोसर मे अटैची । आगू-आगू अपने । पाछू मे कोरामे नेना लेने भौजी आ तकरा पाछू छओ बरखक छौंड़ीकेँ टेनिऔने मौजीलालक कनियाँ । आबि गेलाह डेरासँ अगमकुआँ ब्रीज पर ।

बस अयलइ तेजीसँ। हाथ देखौलनि मौजीलाल आ चिचिअएलाह 'मोतिहारी'।' ब्रम किछु दूर आगाँ जाक' रूकलइ आ खलासी चिचिआएल-'मुजफ्फरपुर, मोतिहारी-बेतिया-नरकटियागंज-बगहा।' एक्के बेर सभ स्टापेज गना गेल खलासी। दौड़िक' आग् बढ़लाह मौजीलाल मोटा, झोरा आ अटैची लेने। पाछाँ सँ दुनू जनी ननाक संग बस पर चढ़लीह। बसमे मात्र सात-आठ टा अगव पुरूष यात्री। सौंसे बस खालिये। बीच बसक तीन सिट्टापर तीनू गोटे बैसि गेलाह। छओ बरखक छौंड़ीके कोरामे बैसा लेलनि मौजीलाल।

बस तेजीसँ हाजीपुर दिस विदा भेलइ। कन्डक्टर आगूक यत्री सभसँ भाड़ा लैत पहुँचल रहय मौजीलाल लग। भाड़ा मंगलक। ओ त' पहिनहिं सँ पचहत्तरि टाका निकालिक' रखने रहथि। कनियाँ भौजी सहित अपन तीन गोटेक भाड़ा मोतिहारी धरिक। मौजीलाल पचहत्तरियो टाका द' देलनि कन्डक्टरकेँ आ मुँह घूमा लेलनि। कन्डक्टर मौजीलालक देल टाका गनि फेर मंगलक-आरो ?

मौजीलाल पुछलथीन-कत्ते भाड़ा हइ मोतिहारी केँ ?

-'पच्चीस रुपैया'-कन्डक्टर बाजल।

-'त' आब कथी लेबहो ? पच्चीस तिया पचहत्तर। पचहत्तर गो रुपैया नइ छिक' की ?'

-'पचीस रुपैया आरो लाब' चुपचाप। एगो नमरी सीधा।'

-'कथीके पच्चीस रुपैया आरो हओ ?

-आ बच्चा जाइ हओ कथी पर ? तेंबरमे बाजल कन्डक्टर।

-'त' बच्चो के भाड़ा लेबहो ?'

-तब की हराममे-।'-पच्चहतरियो टाका घूराक' मौजीलालक हाथमे थमा देलकनि आ ड्राइवर लग जाक' बैसि गेल कन्डक्टर

मौजीलालक आशंका क्रमशः पुष्ट भेल जा रहल छलनि। तामस शुरूह भ' गेल रहनि। छओ बरखक बच्चोक भाड़ा लेतई। ई त' अकड़हड़ भेलै। की करथि ओ बुझा नहि रहल छलनि। तावत् बस हाजीपुर लग आबि गेल रहैक। ओ किछु सोचलनि। उठिक' गेलाह कन्डक्टर लग। कहलथीन,

-'सुन' हओ कन्डक्टर। हाजीपुरकेँ भाड़ा ल' लैह तों। हमर आर के हाजीपुर मे उतारि देह। गाड़ी सँ चल जयबै वा दोसर बससँ। तोहर बससँ नइ जयब' मोतिहारी।'

कन्डक्टर अपन धराएल तीनटा मुल्हाकें छोड़ितय किये ? ओकरा त' छलै खाली

बस। एकटा नमरी हाथसँ ससरैत देखलक। कन्डक्टर मौजीलालक हाथक ने टाका लेलक आ ने किछु बाजल। हाजीपुर पासक' रहल छलैक। मौजीलाल गेलाह खलासी लग गेट पर। कहलथिन, 'रोक रे खलसिया। उतरबइ हम्मे आर।' मुदा खलासी मौन। अपनेसँ दरबाजा ठोकैत मौजीलाल बजलाह, 'हा होप्प ! धीरे जा...।'

-'ड्राइबर साहब ! रोक' हओ उतरबइ हम्मे आर।' चिकड़िक' कहलथीन।

बसक गति किछु मन्द भेलै। असगर रहितथि त' मौजीलाल उतरियो जइतथि। मुदा संग मे रहनि लेध-गेध आ जनानी। एतबे मे कन्डक्टर आबाज देलकै-'जा... जा...जाप्प ! जा बढ़ैले तेजी से।' आ बस फेर तेज भ' गेलै। मौजीलालकेँ सम्बोधित करैत कहलकनि ड्राइबर,

-'जाइ न रौआ। सीट पर बइठीं। का लागलबा। चलीं मोतिहारी ले। हम बानी नू। काहे घबड़ा तानी ?'

मौजीलाल जाक' बैसि गेलाह सीट पर। मुदा कन्डक्टरक दुर्व्यवहारक प्रति तमसायल रहथि। बस जखन गांरौल पास कर' लागल त' कन्डक्टर फेर आयल हुनका लग। मौजीलाल बुझलनि जे ड्राइबर कहिये देलकै एकरा। मानि गेल साइत। ओ भाड़ा मंगलक फेर। ई पचहत्तरियो टाका द' देलथिन। पुछलकनि कन्डक्टर,

-'कत्ते हओ ?'

-'वैह पचहत्तर रुपैया आर कत्ते ?'

-'लाब' पच्चीस रुपैया आरो मिलाब' अइमे।'

-'से कना देब'। बड़ करबहो त' दस गो रुपैया आरो द' देब' बच्चाके।'

-'एक्को छेदाम कम्म नहि। नमरी पूरा।' कड़कि क' बाजल कन्डक्टर।

-'से रहइ त' हमरा हाजियपुरे किए नइ उतारलहो। हम त' कहनइ रहिह। कन्डक्टर चुप्प। अइ पर कोनो जबाबे नइ। फेर कनीकालक बाद कहलक कड़किक, 'भाड़ा ला। खालिये गड़ी हइ। आइ एक्को रुपैया कम नइ। पूरा नमरी।'

-'खाली गड़ी हइ, एकर की माने भेलइ हओ ? सौंसे गड़ीक भाड़ा हमरे से लेबहो ?' मौजीलालकेँ तामस चढ़' लगालनि।

'बेसी बहस नहि। भाड़ा ला चुपचाप।' तेवर बदले जा रहल छलै कन्डक्टरकेँ। आवाज सेहो तेज। मौजीलालक चुप्पी आ नरमी देखि रांसायल ओ। मौजीलालक कुरताक कालर पकड़ि लेलक। कहलकइ,

–'हे रे, कहइ हियौ भाड़ा ला । सुनइ नइ छही ?'

मौजीलाल झंझटि टारबाक प्रयास करैत रहल छलाह । मुदा कन्डक्टर बुझनि हिनका पंजाब-हरियाणा सँ कमाक' घूरल मजदूर जे दू टा मौगीकेँ बझाक' नेने आबि रहल अछि । तें आर दुर्व्यवहार पर उतड़ि आयल रहय । कालर पकड़ितहिं मातर मौजीलाल ठाढ़ भ' गेलाह तनिक' । तरबाक लहरि मगज पर । ओहा धयलनि बूढ़बा कन्डक्टरक कुर्त्ताक कालर । मुट्ठी कसा रहल छलनि । भीतरक आगि भड़कि चुकल रहनि । मुँहसँ बहरा गेलनि,

'रे बरगाही भाइ । छोड़ पहिने कालर । कहै छियौ छोड़ । छांड़लें कालर । की बूझि लेलही पंजाबमे कमाएवला लेबर ? छोड़लही कालर की नइ ?'

आ कसाएल मुट्ठी उनटिक' बजरि गेलइ कन्डक्टरक नाक पर । एक फाइट-दू फाइट-तीन फाइट....। तरातरि । चट्ट सँ कालर छूटि गेलै । कन्डक्टरक हाथसँ । आ एक फाइट देलथिन मौजीलाल ओकरा पेड़ू मे । थस्स सँ बैसि रहल कन्डक्टर बगलक खाली सीट पर ।

आब जाक' बसक आन यात्री सभक तन्द्रा कने टुटलै । सभक दृष्टि मौजीलाल दिस । गुम्म बैसल कन्डक्टर दिस ध्यान गेलै खलासीके । गेट बन्न क' कए ओ आयल कन्डक्टरक पुछारी करय । कन्डक्टर के त' बकारे नहि बहराइ । किंकर्तव्यविमूढ़। तावत् खलासी देखलक ओकर नाकसँ खून खसैत । खलासीक आँखि लाल भ' गेलै। कनकन बुझेलै त' कन्डक्टर अपन मुँह हँसोथलक । हाथमे लागल खून कान्ह परक गमछा सँ पोछैत फुफकार छोड़लक ।

–'हीरो बनइ हए बड़का साला...मादर....ठीक हइ । हाथ छोड़लकइ हमरा पर। सभ हीरोपना हम बुझबइ छियौ रे साला । चल तूँ मुजफ्फरपुर । बाप से भेंट करबौ। तोरा मतारीकेँ । तोरा नानीकेँ रे ।'

मौजीलालक तेरहो पुरखाके गारिसँ घिनबैत कन्डक्टर जाक' बैसि गेल ड्राइवर लग जाक' । खलासी आ ड्राइबरक संग फुसफुसाक' बतिआइत रहल । बस अपन सम्पूर्ण रफ्तार सँ मुजफ्फरपुर दिस दौड़' लागल ।

एम्हर मौजीलालक कनियाँ लगलीह मौजीलाल पर बरस' । 'हिनका होशे नहि रहै छनि । घर की बाहर सभठाँ एक्के रंग । कुछ भेल की तुरत अगिया बेताल ।अपने हाथे आगि लगाक' तब लगता सोच' । जान आइ जेतै सभहक...।'

–'हे बन्न करू अपन भाषण । बेसी माथ नहि खराब करू । बर्दाइसो करैके कोनो हद होइ छै कि नहि । हम कम बर्दाइस कैलियै तखनीसँ । ओकर नीशां बढ़ले जाइ रहै । त' झारि नहि दियै निसां ।'

कहि त' देलिथिन कनियाँके मुदा मौजीलालोके आब चिन्ता हुअ' लागल रहनि। दू टा जनानी आ बच्चा सभक संग अपन सुरक्षाक चिन्ता । मोन पड़लनि कना बिदुलिया मे शोभना आ खीरबाकेँ बसबला मारि रौड सँ गत्तर-गत्तर गहि देने रहै । गामक नामी क्रिमनलकेँ बस मे बन्न क' हथौड़ीक मारिसँ बेहोस क' देने रहै । आ अपना संग घटल घटना...। बसक गति जतबा तेज भेल जाय आ मुजफ्फरपुर जतबे लग आयल जाइ चित्ता आ भयसँ मौजीलालक हृदयक गति ततबे तेजीसँ बढ़ल जा रहल छलनि।

बस बड़ा तेजीसँ पहुँचि गेलै बेरिया । बाटमे एक्कोटा पसिंजरकेँ नहि उतर' देलकै कोनो चौक पर । स्टैंडमे बस घुमाक' लगा देलकै एकदम गेट पर । जेना ओकरा मोतिहारी जयबाक समय एकदम तुलायल होइ । बस रूकिते ड्राइबर तेजीसँ उतरल। लगले कन्डक्टर आ खलासी । मेंभे एक्के गेट सँ । तुरन्त तीनू छिड़िया गेल । लगले आन बसक खलासी-कन्डक्टर जमि गेलै बसक गेट पर ।

खलासी गेट खोलि लगलै एक-एकटा पसिंजरकेँ उतार' । आगू सँ एक दूटा पसिंजर उतरलइ आ तकरबाद बारी रहनि मौजीलालकेँ । गेट पर खलासी आ चोटायल साँप सदृश बूढ़बा कन्डक्टर भत्तौ । मौजीलालके गेट पर अबिते कन्डक्टर कालर ध' घींचलक नींचा । मोटा झोरा अटैची संग बेलागि खसलाह मुँहेंभरे मौजीलाल । फेर कालर धयनहिं ठाढ़ कयलक मौजीलालकेँ । 'ला मादर चोद...भाड़ा...।' आ लागल थापड़ चलाब' ।

भौजी आ कनियाँ उतरि गेल रहइ बच्चा सभक संग । छौड़ी लागल रहै जोर-जोरसँ चिचिआय । खलासी आ कन्डक्टर थापड़े-मुक्के मारि रहल छलनि मौजीलालके । ओ खसि पड़ला...।

मौजीलालक कनियाँकेँ बुझेलै जे आब ओकर सिंउथक सिनूर मेटा जेतै । आँखि लाल भ' गेलै आ मुट्ठी कसा गेलै । अकस्मात् ओ झपटि पड़ल मौजीलालक पोन पर लातक प्रहार करैत कन्डक्टर पर । आहत बाघिन जकाँ । धयलक दुनू हाथे ओकर फोता । लागल ओकरा दाबय। सम्पूर्ण शक्ति सँ दबैत चल गेल । कन्डक्टरक अंग अंग ढील पड़' लगलइ । आँखि निकल' लगलै । लागल जोर-जोर सँ बपहारि काट'।

'बाप रे बाप ! मारि दंलकौ हमरा ई मौगी । दौड़िहें रे...।' तावत भौजीकें सेहो जेना कत्तौ सँ शक्ति आबि गेल होइ । बामा पैरक चप्पल निकालि लगलीह खलासीकेँ 'तड़ातड़ पीट' । बिजलीक गति सँ पड़ैत चप्पलक प्रहार खलासी बेसीकाल नहि सहनक' सकल । मुँह-कान सँ बून्दा-बून्दी खून बहराय लगलै ।

चारूकात ठाढ़ बसक स्टाफ सभ चुपचाप सभटा देख रहल छल । ककरो किछु अकबक नहि फुड़ा रहल छलै । सभके ठकमूड़ी लागल रहै जेना । मौजीलालकेँ जखन हांश भेलनि तखन कनियाँ कन्डक्टरकेँ छोड़लकै । ओ आ खलासी जमीन पर ओंघरा गेल रहय । दर्दसँ बपहारि काटि रहल छल ।

नहूँ-नहूँ मौजीलाल भौजी, कनियाँ आ बच्चा सभके ल' कए बहरा गेलाह भीड़ सँ । मोटा-चोटा दुनू दियादिनी टांगि लेने रहय । जानि नहि कत' सँ शक्ति आबि गेल रहय दुनूकेँ । चारूकात ठाढ़ लोकमे सँ ककरो हिनका सभकेँ रोकबाक साहस नहि भेलैक । मुजफ्फरपुर सँ ट्रेन पकड़ि मोतिहारी पहुँचल रहथि । मुदा आइ फेर बसक यात्रा बस सभ दिन बिसाइत छनि ।

जहानाबाद पहुँचलाह मौजीलाल आ घूरन । जहानाबाद सँ गया पहुँचि मुख्यालयमे योगदान केलनि । बससँ नहि चलबाक आ झगड़ादान नहि करबाक किरिया त' खाइत रहैत छथि मुदा किछु ने किछु एहन भइये जाइत छनि जे...। की करथि मौजीलाल?



राजकमल चौधरीक कथा 'साँझक गाछ' सँ

भौजी कतबो कहलनि, हम हुनका संगे रघुनाथ पाठकक बासापर नहि जा सकलहुँ। जयबाक साहस नहि भेल । तीनू भातिजक उदास, ग्लानि आ अपमान-लांछनामे डूबल चेहरा देखबाक साहस नहि भेल । दोसरे दिन हम नाटक-कम्पनी सँ छुट्टी लऽ पूर्णियाँ चल गेलहुँ । पूर्णियाँ सँ भागलपुर आ भागलपुर सँ मुंगेर । कतेक दिन धरि एहिना एक शहर सँ दोसर शहर बौआइत रहलहुँ—भौजीकेँ बिसरबाक हेतु अपन गाम, अपन स्वप्न, अपन अतीतक सुख-शान्तिकेँ बिसरि जयबाक लेल । मुदा, से नहि भेल...।

कथा

सुरेन्द्र नाथ

संकल्प

घूरन महतो तहिया नेना रहथि । एक दिन हुनकर बाबू गनौरी महतो पंडित सारंगधर मिश्र कें अपना ओहिठाम पूजा करेबाक भार दंने रहथि। पंडितजी जं बिगड़लाह से चुप्प हंबाक नामे ने लेथि । कारण ई रहैं जे हुनका गनौरी महतो एना बाट चलैत पूजाक भार किए देलनि । हुनकर कोनो मान-प्रतिष्ठा नै ? घर पर जा क' पूजाक भार किए नहि देलथिन । पंडितजी चिकड़ि क' हनहनाइत चल गेल रहथि । ई नहि कहलथिन जे ओ भार नहि गछलथि । गनौरी एहि भ्रम मे रहलाह जे बिगड़ियो-तिगड़ि क' पण्डितजी बेथूत नहि करताह । मुदा गनौरी महतोक सभ ओरिआआन ओहिना रहि गेलनि । पण्डितजी अन्ततः नहिएँ अयलथिन । अपन बाबूक नोर आ आशंका सँ भरल आँखि घूरन महतोक कलेजा छलनी क' देने रहनि । तहिये ओ सप्पत खेने छलाह जे ओ संस्कृत पढ़ताह ।

एहन-एहन कतेको घटना घूरन महतो के मोन छनि । ब्राह्मण लोकनि कैँ लगन-पातीक काज पड़नि त' पण्डितजी भिनसरे सँ भगलपूरिया सिल्कंन दोपटा कान्ह पर रखने, माथ पर त्रिपुण्ड घसने, सिनूरक ठोप लगौने तैयारी मे जुटि जाइत छलाह। मुदा सोल्हकनक नाम पर हुनकर पारा एक्कहि बेर सर्र सँ उपर चढ़ि जाइत रहनि । गरीब-गुरुआक बीच एहि बातक क्रमशः चर्च हुअए लागल छल । ओं सभ साकांक्ष हुअ' लगलाह ।

पण्डित सारंगधर मिश्रक ई पुश्तैनी पेशा रहय । हुनकर पिता नामी पण्डित रहथिन। इलाका भरि मे एहन अजोध पण्डित नहि रहय । दूर-दूर सँ लोक बियाह, उपनयन, गृह-प्रवेश, पोखरिक यज्ञ लेल दिन देखब' आबय । मुदा सारंगधर मिसरक एहन एकवाल नहि रहलनि । ओ आब पूजा-पाठ करेबा पर सेहो उतरि गेल रहथि । मुदा अपन खानदानी पेशाक घमण्ड नहि गेल रहनि । बापक अमलदारी सभ दिन मोन पड़नि । समय बदलि

गेल अछि तकर बोध सारंगधर मिसर के नहि भेलनि । तहिना पेशा मे ऊँच-नीच नहि होइत छैक सेहो ओ स्वीकार नहि क' सकल रहथि । वास्तव मे एकरा ओ पेशे नहि स्वीकार क' सकल रहथि ।

कलरू मोची वला घटना त' आगि मे घीक काज केने छलैक । कलरूक पण्डितजी हाथें बेइज्जती लोक सभ नहि बिसरि पाबि रहल छल । घूरन महतो एहि धार पर आर सान चढ़ा रहल छलाह । ओ जेना-तेना लगन सँ संस्कृत पढ़ि दरभंगा सँ गाम आबि गेल रहथि । गरीब-गुरुआ जे एम्हर-ओम्हर एखनहुँ छहोछित छलाह तिनका ओ समेटि रहल छलाह । बीच-बीच मे पण्डितजी सँ विवाद आ रगड़ा हुअ' लागल रहनि । क्रमशः अपन शब्द सामर्थ सँ घूरन महतो समर्थक बढ़बैत रहलाह । गरीब लोकनि गोलबन्द हुअ' लागल रहथि ।

पण्डित सारंगधर मिश्रक भृकुटि चढ़ि गेल रहनि । आब तो तंत्र-मंत्रक प्रयोग शुरूह क' देने रहथि । 'ऊँ' शब्दक उच्चारण सँ विनाशक डर देखौलनि । अशुद्ध पूजा-पाठ केला सँ अनिष्टक पाठ पढ़ब' लगलाह । मुदा तकर कोनो फायदा नहि भेलनि। आब जँ पण्डितजी संस्कृतक श्लोक झाड़थि । वेद मन्त्र सुनबथि त' ओम्हरो सँ ऋृचाक पाठ हुअ' लागनि । पण्डितजी कैँ अपन पण्डिताइक जतेक दाबी रहनि सभ देखौलनि मुदा सुतरलनि नहि । चौक्का-छक्का लगाबथि मुदा सभक जबाब चौके-छक्के सँ आबनि। पण्डितजीक दाबी घोसड़ि रहल छलनि ।

ओ सोच' लागथि साबिकक दिन । जजमनिकामे जाइत छलाह त' साप झारबाक मंत्र सँ वियाह करा देथिन । कियो किछु नहि बूझय । दक्षिणा ल' कए घूरि अबैत छलाह । कोनो काज मे कोनो मंत्र सँ काज चला लैत छलाह । कूश हड़बड़ी मे जँ बिसरि जाथि त' दभाड़ी सँ काज चला लैत छलाह । आब त' हुनका सभ चीज नियारि क' ठेकान सँ आन' पड़ैत छलनि । ताहू पर कैकटा टंटा आ' रगड़ सँ जान बचायब मुश्किल भ' जाइत रहनि ।

घूरन महतो कोनो कसरि बाँकी नहि छोड़लनि । तखन पण्डित सारंगधर मिसर अपन कंस छाहरि मे नहि पकौने छलाह । एतेक जल्दी कैरिक्का कंसवला सोल्हकन सँ हारि कोना मानि लितथि ? सात घाटक पानि पीबि क' बैसल छलाह । एखनहुँ चुनल-बीछल जजमान सभ हुनका नहि छोड़ने रहनि । ओ ततेक ने सभके आतंकित केने छलाह जे सभ हुनके सँ काज कराब' चाहैत छल । ओ सभहक कान मे ई मंत्र ध' देथि जे घूरन महतो कूँचकूह छथि । अशुद्ध पढ़ैत छथि । ब्राह्मणक पुश्तैनी काज कोना सोल्हकन के एक्के बेर आबि जेतैक । परम्पराक कोनो महत्व छैक की नहि।

अशुद्ध पूजा केला सँ अनिष्ट हेबेटा करत । लोक एहि सभ गप्प मे फँसि जाय । चाहियो क' गरीब-गुरुआ सभ घूरन महतो सँ पूजा करेबा मे डराथि । घूरन महतो अपन लोक कें कतबो बुझबथिन, पूजा-पाठक मामिला मे लोक हुनकर मोजर सहजें नहि द' पाबए। सारंगधर मिश्रकैँ एक दिन विरंची मरड़क ओहिठाम सँ पूजाक भार भेटलनि । पण्डितजी असमंजस मे पड़ि गेलाह । ओहि दिन तीन-तीन ठाम सँ पूजाक भार भेटल छलनि। जजमान के छोड़ियो नहि सकैत छलाह । जनमनिका छुटि जेबाक डर बेसी हुअ' लागल रहनि । घूरन महतो प्रतिद्वन्दी जे भ' गेल रहथिन । निर्णय लेलनि जे एकठाम अपने जेताह । दोसर ठाम बेटा जेतनि । तेसर ठाम पोताके पठब' चाहैत छलाह । पोता आइधरि पूजा नहि करौने रहनि । ओ एखन मध्यमा मे पढ़ि रहल छल । हिनछिन कर' लगलनि । बाप लग नेहोरा केलकनि । माए लग माथ पटकलक । पण्डितजीक नाड़ी डूब' लगलनि । तामस सँ थर-थर काँप' लागल रहथि । भरि घर चिकड़लाह-भोकरलाह। ककरो चिन्ते नहि छैक । आब बूढ़ भ' रहल छथि । कहिया धरि एकसर बोझ उठबैत रहताह । पोताक यैह हाल । बेटाके सेहो एहि मे मोन नहि लगैत छनि । पण्डितजी कैँ खानदानी पेशा डूबैत लगलनि । चिन्ता बढ़' लगलनि ।

कहुना पण्डितजी दू ठाम अपनहि पूजा करेबाक निश्चय केलनि । पहिलठाम हड़बड़ क' निवृत्त भेलाह । कियो कहलकनि जे मर, पण्डितजी, आइ अहाँ पूजा करौलिए कि हड़बड़ी बियाह कनपटी सिनूर क' देलियै ? पण्डितजी सफाई मे तर्क दिअ' लगलाह। देखू ! कम्प्यूटर युगमे पूजो-पाठ कम्प्यूटरी भ' गेल अछि । अहीं सभ पहिने कतेक पेटभरबा परसाद चढ़बै छलियै । तकर एक्को कोन आब चढ़बै छियैक ? सभ चीज मे संक्षेपण भेलैए की नहि ? आब त' भगवानो छूमन्तर मे उपस्थित भ' जाइत छथि। भगवानो के त' कतेक दरबज्जा देखबाक छनि । जखन भगवाने बेसीकाल नहि रहताह त' बेसीकाल पूजा केने कोन फायदा ? सभ चुप्प भ' गेल रहय । की जबाव दितय। ओहिठाम घूरन महतो रहथि नहि । पण्डितजी दरबड़ मारने दोसरठाम विदा भ' गेल रहथि ।

मुदा दोसरठाम घूरन महतो बैसल रहथि । पण्डितजी पूजा शुरूह केलनि त' घूरन महतो बात-बात पर हुनका टोक' लगलाह । ओना त' पण्डितजी साबिकक पण्डित छलाह । कतेक बरखक अनुभव छलनि । पूजाक सभ विधि व्यवहार आ मंत्र रटल छलनि । मुदा बृद्ध भेलाक सन्ता साँस फूलि जाइत छलनि । थोड़ेक दाँत सेहो टूटि गेल छलनि । उच्चारण त' ओ शुद्धे करैत छलाह मुदा सुन'बलाकें ठीक सँ सुनाइ नहि छलनि । लागनि जेना पण्डितजी ठीक सँ मंत्र नहि पढ़ि रहल छथि । तँ घूरन महतोकें

गेल छल । आब तँ ई अपन बिरींचो राखत आ ढढ्ढी खसा ताला लगाओत आ भागत। से सोचि हम ठाढ़ भ' गेलहुँ ।

चाहबलाक ढढ्ढी खसितहिं हम बेसोहं डेरा दिस चलि देलहुँ । बेचारा ताला ओहिनाक ओहिना हमरे दिस टकटकी लगौने ताकि रहल छल । हमरहि जकाँ ओहो फंगी म पड़ि गेल रहय । लटकल-लटकल ओंकरो हाल बेहाल भ' गेल रहैक ।

तखनहि छौंड़ा सभक अनघोल सुनलहुँ तँ संकट टरबाक भरोस भेल । मुदा से नहि भ' सकल । एकंकटा लोक पर नजरि गरौने छलहुँ । लोक पतराय लागल आ हम दुबराय लगलहुँ । सभ सँ पाछाँ शशिबाबू केँ तेना ने टुंघरैत अबैत देखलियनि जे भगमानक परसाद नहि दंगल भोज खाक' आबि रहल होथि । हम लग जाक' पुछलियनि—की शशि बाबू, की हालचाल ? बजारहि सँ अबैत छी ?

निन्नबासल शशिबाबू अकचकाइत बजलाह—नँ-नँ ! बेचन बाबूक ओत' सँ कंठगत बेश निम्मन घोड़आ परसाद खाक' आबि रहल छी । खूब पूजा करैत छथि! थैहर-थैहर क' देलखिन । भरि ठेहुन-छाबा लागि गेलैक । वाह ! एहने लोक होयबाक चाही समाज मे । भगवान एक सँ एक्कैस करैत रहनि । जहिना लोकक काया जुड़ौलखिन अछि तहिना हुनकहुँ काया जुड़ाइत रहतनि । मुदा अपनेकँ नहि देखलहुँ ओत' ? धिया-पुता तँ छल । कतहु बाहर गेल छलहुँ की ?

हम हुनका उतारा नहि द' प्रश्ने क' देलियनि—बेचनबाबूक ई प्रथमहि पूजा रहनि की ?

—हँ, प्रथमहि पूजा रहनि । कनियाँ मरि गेलनि तँ पतिया-पराछित छोड़ा रहल छथि । कहैत रहथि जे पाँचम बरखी धरि अहिना पूर्णिमे-पूर्णिमे पूजा करताह ।

—की ओ पहिने पूजा नहि करैत छलाह ?

—करैत छलाह । मुदा, घरहि मे घंटी डोलाक' । अपनहिं पंडित अपनहिं जजमान आ परसाद नदारत ।

—क्यों कहैत छल जे कनियाँ दबाइ बेगुर मरि गेलनि ?

—लोकक कहब तँ सैह छैक । दबाइ करबितथिन तँ दंगल पूजा-परसादक प्रयोजने नहि होइतनि ।

हम हुनका गप मे ओझरबैत कहलियनि—आर किछु विशेष कहू । की सभ भेलैक ओत' ?

शशि बाबू पहिने तँ थकमकएलाह । मुदा, किछु साँचि कह' लगलाह—पूजा सँ बहुत पहिनहि लोक जूटि गेल रहैक । पंडीजी पूजा मे ओझरायल रहथि आ सटले

जनीजाति नोन तेल आ हरदि मे । बाहर धिया-पूता खेलाइत रहल आ मरद राजनीतिक गोटी भाँजैत रहल । एक दोसरक खिधांसक सङ-सङ चाहो-पान चलैत रहलै । कटमाकटाउंझो होइत रहलै । कएक गोटे तँ बिना परसादे भागि पड़यलाह । कएक गोटे मुँह-फुलोअलिक बादो मुँह बिदकयने बैसल रहलाह । अहूँ बौआक मायकेँ भुस्कौल वाली सँ गारि गराबलि भ' गेलनि । चनौर बालीक चानि परहक सभटा झोंटा ननौरबाली उखाड़ि लेलकनि । पूजा सँ पहिनहि दुनू भागि पड़यलीह ।

ई सभ होयतहि रहैक कि शंख बाजलै । आरती भेलैक आ चरणामृत चल' लगलैक । बिना कोनो हिल-हुज्जति केँ आरती घ्रमि गेलैक आ चरणामृत बँटा गेलैक। मुदा, परसाद उठबिते देरी छौंड़ा सभ रमाकांत पर मांधमाँछी जकाँ टूटि पड़लैक । हुनकहुँ बड़ गुमान रहनि अपन बल पर । मैल छोड़ा देलकनि छौंड़ा सभ । ओम्हर मौगी-मेहर मे से कटमाकटाउंझ होम' लगलैक । धक्कामुक्की मे ककरहुँ पायर पिचयलैक तँ ककरहुँ चूड़ी-लहटी फुटलैक । ककरहुँ साड़ी फटलैक तँ ककरहुँ ओढ़नी हेरयलैक। जेना-तेना परसाद लैत गेलीह आ गरियबितहि पड़ाइत गेलीह । ककरहुँ जुत्ता-चप्पलक कोनो ठेकान नहि रहलैक । जकरा जेह भेटलैक पहिरैत पड़यलीह ।

जेना-तेना अपसियाँत रमाकान्त हँफिसैत आंगन सँ बहरयलाह तँ बेचन बाबू कहलथिन—'परसादक कोनो अभाव नहि छैक रमाकान्त ! खयनिहार केँ दू बेर चारि बेर क' देबनि । जे जतेक खयताह ततेक देबनि, भरि पोख, क्यो नहि कहथि जे नहि अघयलहुँ ।' की कहू ! लोक अघाक' खयलक आ अहूँ सँ बेशी छूतयलक । किचमाकीच भ' गेलैक ओतेक दूर । खैर, अहूँ सँ बेसी बेचन बाबू केँ नाम-जस भेटलनि। आब सभ पाप कटि जयतनि । गद-गद मोन सँ लोक बड्ड आशीर्वाद देलकनि । हँ, एकटा बात बिसरल जाइत रही सेहो कहिये दैत छी । अगिलो पूर्णिमाक हकार सभकेँ आइये द' देल गेलनि अछि । से टा नहि बिसरबै । आब हम नहि रुकि सकब । ठाढ़ नहि भेल जाइत अछि । मोन जेना घूमि रहलए ।

—गोपाल बाबूक हाल-चाल तँ नहि कहलहुँ । ओहो कहिये दितहुँ तँ...।

धौ ! हुनकर नहि पुछू । कंजूस दी ग्रेट छथि । चंगेरा भरि चिक्कस ओहिना रहि गेलनि । भंम पड़ैत रहनि । सोहारी पकाक' अपनहि खयताह । चिक्कस के भकोसत? गाड़ा लागि जाइत छैक । शशि बाबू ग्रील सटबैत कहलाह ।

शशिबाबू केँ अन्दर घर जाइत हम तकैत रहलहुँ आ ओ केवाड़ी बन्न क' लेलनि।

एक बेर फेर सड़क सुन्न-सपट्टा भ' गेल रहैक । ताला पर नजरि गेल तँ हमरा दया आबि गेल । सभक ताला घर चलि गेल रहैक । मुदा, हमरहि ई कपरजड़ुआ एखनहुँ

सिता रहल छल । एकटा पजेबा ल' ओकरहि निच्चा मे ग्रील सँ ओंगठि क' बैसि गेलहुँ ।

छौंड़ा सभहक एक बेर फेर अनघोल भेलैक । हम अकचकाइत उठि पोन झाड़ैत टहल' लहलहुँ जेना एखनहि एत' आयल रही । छौंड़ा सभहक एहि हाँज मे हमरहुँ दुनू बेटा कुदैत-फानैत अबै गेल । तालाक सङ दुनू घर गेल । हमहूँ घर आबि कपड़ा बदलि ओछाओन पर ओंघरा गेलहुँ ।

ता ओहो आबि गेलीह । पयर पटकैत आ मौधमांछी जकाँ भनभनाइत कल पर जा हाथ-पएर धो क' घर आबि छौंड़ा सभ पर बरस' लगलीह । 'एकरा सभकेँ पहिनहि पठौने रहियै जे लाइन नै हेतै तँ लालटेम बारि लिहें आ धूप-अगरबत्ती द' दिहनि । से ई छौंड़ा सभ एक्कोरत्ती सुनलक !' ओहिना अपने मने भनभनाइत रहलीह ।' मथभुकाउन! मरै नै छी से एक लाख ! जरलाहा दैब मरनो नै दैए ! अलच्छी चारिये बजे सँ माथ भुकौने रहल । आब लैत ने रहत मंगजरौनी हमरा सँ । खगिते दौड़ैत छल जेना सांये कमाक' राखि देने होइ । शौक मे आगि लगा देबै धौंछिया केँ आब।'

सभटा सुनैत रहलहुँ मोन भेल किछु कहियनि । मुदा चुप्पे रहलहुँ । मौधमाछीक भनभनी भेमक टंकार मे बदलि जा सकैत छल । आने दिन जकाँ सूति उठि हम टहल' लेल चलि गेलहुँ । बाट मे आगाँ नवल भेटितहि पुछलाह-अपने नै रहियै राति पूजा मे ? खूब पूजा रहै ! धमगज्जड़ भ' गेलै । जेहने नीक परसाद तेहने चिक्कन भीड़ रहै । मिस पड़ैत रहै । ओहीठाम बगलहि मे गोपाल बाबूक ओत' भम पड़ैत रहनि। लाजे-पछे दस-बीस टा लोक गेल हेतनि सैह बहुत । बेचारा भरि चंगेरा गहुमक चिक्कस आगाँ मे रखने मुलुर-मुलुर तकैत रहि गेलाह, मुदा आर क्यो भगमानक भक्त किरपा नहि क' सकलनि ।

हम बिना कोनो उतारा देने आगाँ बढैत रहलहुँ । ढाला पर चुल्हाय आ रमन भेटलाह । हुनकहुँ सभक वैह प्रश्न-'अपने नहि रहियै राति पूजा मे ? पूजा तँ पूजे रहै । आइधरि नै देखने रहियै एहेन पूजा कहियो ! रेकट ब्रेक क' देलखिन । जतबे लोक सरापैत रहनि ततबे काल्हि आशीर्वाद भेटि गेलनि । आब हुनकर सभ पाप कटि जेतनि । मुदा, अपने नै रहियै तें एक्कौरत्ती मेजुरिटी नै जमलै । सभकेँ खटकैत रहलनि अपनेक अभाव ।

हम हुनकहुँ सभकेँ बिना कोनो उतारा देने आगाँ बढ़ैत रहलहुँ । बाट मे जैह भेटथि पूजेक चर्चा करथि । सभक मनः स्थिति एक्के ढंगक देखलियनि ।

डेरा आबितहि बेटा कहलक-शशि ककाक मोन बड़ खराब छनि से बजौलथि अछि । रातिये सँ पेट खराब छनि ।

हम तखनहि बूझि गेलियैक जे आर किछु नहि घोड़ुआ परसादक किरपा छैक। दू टा गोटी लेनहि हुनका ओतय गेलहुँ तँ ओछाओन पर पेटकुनियाँ देने शशि बाबू आहि अलम क' रहल छलाह । पुछलियनि-की भेल शशि बाबू ?

शशि बाबू करोट बदलैत कहलनि-आब नहि बाँचब ! दुइये बजे राति सँ जागले छी । जानलेबा दर्द सँ मोन बेथित अछि । तीन टा पातर दस्तो भ' गेलए । परसाद रहैक की जहर से नहि जानि ! डॉक्टर लग ल' चलू । बड़ उपकार मानब ।

हम दूटा गोटी खुअबैत कहलनियनि-किछु आर गोटी डेरा सँ पठा दैत छी । डाक्टर लग जयबाक कोनो बेगरता नहि होयत । दू बजे धरि किछु खायब नहि । तकरबाद भात-भात भेल फूलल चूड़ा मे अहगर सँ दही द' नीक जकाँ सानि नहूँ-नहूँ खूब चीबा क' खा लेब आ सीड़क ओढ़ि क' सूति रहब । काल भागि जायत । संध्याकाल फेर गप्प हेतैक ।

संध्याकाल फेर डेरा अयलहुँ तँ शशि बाबू बाहर मे बैसि हमर बाट जोहैत छलाह। हमरा देखतहि ठाढ़ भ' आपकताक संपूर्ण भाव उझलैत बजलाह-'मोन अपग्रह मे पड़ि गेल छल । भरोसे नहि छल जे बाँचब । कान पकड़ैत छी-आब नहि जायब कहियो कोनो पूजा-परसाद मे । परसाद मे दूध आ काजू-किशमिस नहि गरीबक आह घोड़ल छल। ककरा पचतैक ओ परसाद यौ ! दसे बरख मे कतेको केँ डीह-डाबर बेचबा क' अपन तिजौड़ी भरि लेने छथि । तें ओहिना जाइयो रहल छनि । जे धन जहिना अबैत छैक तहिना चलियो जाइत छैक । पाप ककरो छोड़लकैए ! देखियौनि ने, कनियाँ मरितहि कोना चालि बिगड़ि गेलनि ! जिनगी भरि हाय भगमान हाय पाइ करैत रहलाह तें बेटा निरक्षर मुर्ख रहि गेलनि आ बौक-बताह जकाँ बौआय रहल छनि । आब कतेक दिन । देखैत ने रहबनि, नोर पोछयबला नहि भेटतनि क्यो ! बड़ सतौलखिन अछि लोक केँ । पाप तँ डिरिअयबे करतनि ।'

हमरा किछु बाजल नहि भेल । की बजितहुँ ? चौबीसे घंटा मे घोड़ुआ परसाद कतेको रंग देखा गेल छल । □



लेखा-जोखा

धीरेन्द्र

नेपालक मैथिली कथा-यात्रा

['नेपालक मैथिली कथामे नेपालक मैथिली भाषी भूखण्डक माटि-पानिक सुगन्धि अबैछ । ई भारतक मैथिली खण्डक कथा सभ सँ मिलैत-जुलैत अछि । जीवनक जे अन्तर छैक ओ तँ अछिये ।

नेपाल मे करीब 24 गोट कथाकार कथा लिखि रहल छथि । हिनका लोकनिक लेखनमे निरन्तरता अछि ।']

डा. धीरेन्द्र नेपाल मे आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रेरक-सम्बर्द्धक रहल छथि। भोरुकवा, कादो आ कोइला, ठुमुकि बहू कमला (उपन्यास), शतरूपा आ मनु, पझाइत घूरक आगि, कुहेस ओ किरण, नव मन्दिर (गल्प-संग्रह), हैंगर मे टांगल कोट क बाद हेबनि मे प्रकाशित काल्हि आ आइ (कविता-संग्रह)क संग अन्य अनेको विधामे पोथी प्रकाशित छनि । धीया-पूता नामक बालोपयोगी पत्रिकाक ख्यातनामा सम्पादक डा. धीरेन्द्र नेपालक मैथिली कथा-यात्राक लेखा-जोखा प्रस्तुत कयलनि अछि ।

नेपालीय मैथिली साहित्यक कथा-यात्रा ओतेक पुरान नहि जतबा पुरान ओकर नाटक आ कविताक यात्रा रहलैक अछि । स्व. वासुदेव ठाकुरक लिखल ''सप्तव्याधा'' केँ प्रथम कथा कहल जा' सकैछ, मुदा सत्य ई छैक जे ओ आख्यायिका छल आधुनिक अर्थमे कथा वा गल्प नहि । एकर पश्चात अबैत छथि पं. जीवनाथ झा जनिक लिखल गल्प 'विमाता' प्रकाशित अछि । ओना ओ 'गल्प-गुच्छ' नाम सँ एकगोट संकलन तैयार कएने रहथि जे हमर देखल छी । ई गल्पो ओ हमरहि आग्रह पर 'मिथिला-मिहिर' मे छपबओने रहथि । एहि तरहें पं. जीवनाथ झाकेँ नेपालक प्रथम कथाकार मानव उचित प्रतीत होइछ । रचनाक दृष्टि सँ ई पाँचम दशकक रचना थिक। यद्यपि जीवनाथ झा सेहो आधुनिक अर्थ मे कथाकार मेँ वेशी गप्पकार छलाह ।

आधुनिक अर्थ मे कथा लिखनिहार प्रथम व्यक्ति छलाह स्व. सुन्दर झा शास्त्री। ई दरिभङ्गा सँ प्रकाशित सुप्रसिद्ध मासिक ''वैदेही'' मे ''एखनू बखाड़ी नइ फुजलैए'' नामक एक गोट कथा प्रकाशित करबओने रहथि 1955 ई. मे । ई पूर्णतया आधुनिक कथा थिक ।

शास्त्रीजी अपन जीवनमे मात्र दू गोट कथा लिखलनि । नेपालक बहुतो लोककेँ हुनक कथा देखलो ने छल । हमरा आग्रह पर बहुत पाछू एकर पुनर्मुद्रण कएलनि अपन पत्रिका ''फूल पात'' मे जाहिमे ओ एकरा लोककथा कहिकेँ छपलनि । पता नहि किएक । मुदा हम धरि एकरा आधुनिक कथा मानैत छी ।

नेपालक आधुनिक साहित्यक समारम्भ भेल एक अगस्त 1961 ई. सँ । हम एही तिथिकेँ नेपाल मे लेक्चररक रूपमे आएल रही आ मैथिलीक संग-संग हिन्दी सेहो पढ़बैत रही । परिणामतः बहुतो छात्र हमरा सम्पर्क मे अएलाह । नगर मे जे प्रतिष्ठित साहित्यकार सभ रहथि यथा पं. जीवनाथ झा, पं. श्रीकृष्ण मिश्र, पं. रमाकान्त झा ओ सभ पुरान ढंगक कविता रचैत छलाह । ओना पं. जीवनाथ झाकेँ अपवाद कहल जा सकैछ । ओ बहुविधावादी छलाह । मुदा रहथि धरि ओ पुरान ढंगक लेखक । जे हो सभ हमरा स्नेह दैत छल । 'मिथिला-मिहिर आ 'आर्यावर्त' दुनू एतए खूब लोकप्रिय छल । हम दुनू मे धुँआधार छपैत रही । साहित्यकारक रूपमे हमर एकटा छबि छल जे शिक्षकक रूप मे हमर छबिकेँ निखारलक । हम कनिये दिन मे अनेको साहित्यिक आयोजन कएलहुँ आ भारत सँ डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण', डॉ. आनन्द मिश्र, प्रवासी साहित्यालंकार, सोमदेव, रेणु आदिकेँ आमन्त्रित कएलियनि । एकर नीक प्रभाव पड़ल।

कनेको साहित्यिक रूचि रखनिहार हमरा सम्पर्क मे आएल । हम गुरुवर 'किरण'जीक देल मन्त्र सभकेँ दियनि अर्थात् मैथिली शरणं गच्छामि । फल ई भेल जे हिन्दी पढ़निहार छात्रो मैथिली लिखए लगलाह । मैथिली मे लिखनिहार तँ मैथिली मे लिखतहि छलाह ।

मुदा वेशी गोटय कविता लिखैत छलाह आ सेहो पुरान ढंगक । कथाक तँ कथे नहि छल । हमर डेरा एकटा साहित्यिक शिविर भए गेल । एतए साहित्यिक रूचि रखनिहार छात्र, शिक्षक, संत-महंथ तथा आन-आन लोक अबैत छलाह । पोथी मांगिकए लए जाइत छलाह आ पढ़ैत छलाह । हमरा सँ प्रेरणा लैत छलाह । हम पुरान ढंगक कविताक स्थान पर नव ढंगकक कविता दिशि हुनका लोकनिककेँ प्रवृत्त कएलहुँ आ क्रमशः कथा लिखबा दिशि हुनका लोकनिक ध्यान आकर्षित कएल ।

हम हुनका लोकनिक लिखल कथाकें ठीक करैत छलहुँ । ओकर रूप बदलैत छलहुँ । सिफारिशी चिट्ठी दए प्रकाशनार्थ वैदेही, मिथिला-मिहिर, मिथिला-दर्शन आदि मे पठबैत छलियैक । एक दू रचना छपंलाक बाद सिफारिशी चिट्ठी नहि लिखए पड़ैत छल ।

हमरा लग एनिहार मे बूढ़-पुरान साहित्यकार सँ लए युवक छात्र, प्रौढ़ शिक्षक सभ होइत छलाह । सभ दिन बैसार होइत छल । नव-नव योजना बनैत छल। जे कथा लिखिकए अनैत छलाह ओ पहिने कथा सुनबैत छलाह । टीका टिप्पणी होइत छल, आ पुन: ओ अपन कथा हमरा लग छोड़ि जाइत छलाह, हम सम्पादनक कार्य करैत छलहुँ । कथा प्रकाशित भेलाक बाद ओकर पुन: पाठ होइत छल ।

सभसँ पहिने ब्रजकिशोर ठाकुरक 'मेघाओन आकाश आ आशाक बिजलोका' 'वैदेही' मे छपल । व्रज किशोर छोट-छोट अनुभवसँ सिक्त कथा सभ लिखैत छलाह। ई बेशी नहि लिखलनि आ कॉलेज मे लेक्चरर भेलाक बाद लिखब बन्द कए देलनि।

एकर बाद रेवतीरमण लाल (आब डॉ. रेवती रमण लाल) अपन ''ममताक डोरी 'कथा' 'वैदेही' मे छपबओलनि । ई वेश चर्चित भेल । एकर अतिरिक्त हिनक कथा सभ अछि कुहेसक बीच, उलहन, दरूपीबा, दराड़ि, माधव नहि अएला मधुपुर सँ, चतुर्थी, अप्पन लोक, धोकराक मारि आदि । ई ''माधव नहि अएला मधुपुर सँ'' नाम सँ एकगोट कथा-संग्रह सेहो प्रकाशित्त करबआने छथि । एकर खूब चर्चा भेल। हिनक कथा पारिवारिक जीवन सँ सम्वद्ध होइछ । ओना ई आनो फाँटक कथा लिखि लैत छलाह ।

एकर बाद राजेन्द्र 'विमल' (आब डॉक्टर) अपन कथा पहिने ''वैदेही'' आ' तत्पश्चात'' मिथिला-मिहिर'' मे छपबओलनि । ई खूब लिखलनि । बालुक घर, फेर वंशीवट फुलयतै, आगि आ धुआँ, एकटा धधकैत भविष्य, मयूरपंखी गीतक रक्त, रामेछापक श्रवणकुमार, प्लास्टर कटतै' आदि हिनक प्रसिद्ध कथा सभ अछि । ई एखन धरि कोनो कथा-संकलन नहि प्रकाशित करबओलनि अछि । ओना हिनक दूगोट कथा-संकलन भए सकैछ ।

एकर पश्चात नाम अबैछ रामभद्रक । एकटा ब्रहमाण्ड आर, सीता माने नेर कथा आदि हिनक प्रकाशित कथा सभ थिक । इहो कोनो कथा संकलन नहि प्रकाशित करबओलनि अछि ।

एकर बाद अबैत छथि रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' । ई पहिने विभिन्न पत्रिकामे अपन कथा सभ छपबओलनि । विरड़ो, अभिशप्त, छाउर, मनस्थितिक दंश, असक्क, तोरा संग जयबै रे कुजबा, जीत अपन-अपन आदि हिनक दर्जनो कथा अछि । ई मैथिली अकादमी सँ ''तोरा संग जयबै रे कुजबा'' नाम सँ एक गोट कथा-संग्रह प्रकाशित करबओलनि । ई वेशी प्रेम-कथा लिखैत छथि । ओना सर्वहाराक जीवन कें उरेहबामे सेहो हिनका दक्षता प्राप्त अछि । ई अर्चना नामक अनियतकालीन पत्र गामघर नामक साप्ताहिक तथा आँजुर नामक मासिक पत्र सेहो निकालनि । एहू सभमे बहुतो कथा सभ प्रकाशित भेल ।

एकर बाद अबैत छथि प्रो. राजेन्द्र किशोर । हिनक ''चोट'' नामक कथा जे ''मिथिला-मिहिर'' मे छपल छल खूब प्रसिद्ध भेल । ई बेशी नहि लिखलनि । ई हमर मित्र छलाह आ हमर आग्रह पर लिखैत छलाह ।

उपाध्याय भूषण (आब स्वर्गीय) वेश प्रतिभाशाली कथाकार छलाह । हिनक आक्रोश, समुद्र आ लहरि आदि कथा प्रसिद्ध भेल । हिनक कोनो कथा-संग्रह नहि अछि ।

एकर बाद अबैत छथि अयोध्यानाथ चौधरी । हिनक राति आ अजन्ताक मूर्ति, एकटा हेरायल सम्बोधन आदि मनोवैज्ञानिक कथा अछि । हिनक लिखल बहुतो कथा अछि । मुदा कोनो संग्रह नहि प्रकाशित अछि ।

स्वर्गीय भुवनेश्वर 'पाथेय' बड्ड नीक कथाकार छलाह । हिनक फूटल चूड़ी कनैत सीथ, खाली क्षितिज, अतीतक टुकड़ा आदि प्रसिद्ध कथा अछि । हिनको कोनो संग्रह नहि अछि ।

एकर बाद कथाकार सभक एकटा समूह अबैछ । विजय (निमन्त्रण पत्र), लोकेश्वर 'व्यथित' (रेगनीक काँट) गंगा प्रसाद 'अकेला' (दू टुक सुपाड़ी), डॉ. अरूण कुमार झा (पुनर्विवाह) योगेन्द्र 'नेपाली' (घुसखोरी)' कुबेर घिमिरे (बिनु हाटक बिक्री) मीनाक्षी (पापा कहाँ छथि) आदि एहिमे अबैत छथि ।

एकर बाद अबैत छथि सुरेन्द्र लाभ । खोभाड़, उदास चुप्पी, एकटा सूर्योदय, पेन्डूलम, उमेर आदि हिनक प्रसिद्ध कथा सभ अछि । हिनको कोनो संग्रह नहि प्रकाशित भेल अछि ।

सुप्रसिद्ध नाटककार महेन्द्र मलंगिया नीक कथाकारो छथि । हिनक 'भूत' कथा एकर प्रमाण थिक । हिनको कोनो संग्रह नहि अछि ।

ओम्हर विराटनगरक दू गोट नीक कथाकार छथि । पहिल छथि रा. ना. सुधाकर । दीयरि, छाहरितरक काँट, चान अशोथकित अछि, खुट्टी पर टाङ्गल ब्रा, चोलियामे चोर बसे गोरी, मुनगैत करेज, छुट्टीक दिन आदि प्रसिद्ध कथा अछि । ई मनौवैज्ञानिक कथा लिखैत छथि । हिनको कोनो संग्रह नहि अछि । दोसर छथि जीतेन्द्र जीत। हिनक प्रश्नचिन्ह, सासुर, कल्पनशील, डोनर, अपराध आदि प्रसिद्ध कथा अछि। हिनको कोनो संग्रह नहि अछि ।

नेपाल सँ दूगोट सम्पादित कथा-संग्रह प्रकाशित भेल अछि । एकटा अछि ''नेपालक प्रतिनिधि मैथिली गल्प'' । एकर सम्पादक छथि 'डा. धीरेन्द्र' । एहिमे 18 गोट गल्पकारक गल्प संकलित अछि । दोसर अछि डॉ. सुरेन्द्र लाभद्वारा सम्पादित ''नेपालीय मैथिलीक उत्कृष्ट गल्प'' । एहिमे 10 गोट गल्पकारक गल्प संकलित अछि। एकर सभक ऐतिहासिक महत्त्व छैक ।

नेपालक मैथिली कथा मे नेपालक मैथिली भाषी भूखण्डक माटि-पानिक सुगंधि अबैछ । ई भारतक मैथिली खण्डक कथा सभसँ मिलैत-जुलैत अछि । जीवनक जे अन्तर छैक ओ तँ अछिये ।

नेपाल मे करीब 24 गोट कथाकार कथा लिखि रहल छथि । हिनका लोकनिक लेखनमे निरन्तरता अछि । ❑

सोमदेवक कथा 'भात' सँ

बुधिया बुझबैत कहलक–'दाइ हमर मुन्नी ! माय नै ने छौ । बाबूकँ आब के देखतौ ?'

–'हम । हम । बाबूकँ हम देखबै ।''

–सैह पहिने बाबूकँ । तखन दादीकँ । बाद जे बचतै से हम तीनू बहिन खा लेब ।'

दुनू छोट बहिनक आँखि मुरझा गेलैक तँ बुधिया बाजलि–'दुनू किलो चाउर लगा देने छिऐ । भात एतेक छै जे काल्हियो खेमें । एक्के बेर रान्हि लेलिऐ । चूल्हि कोना पजरितै काल्हि ।'

बुधिया भातक सागबला लपसी घोंट' लागलि । टुनियाँ आँच दैक । मुनियाँ तकैत । ता किछु गन्ध भेलैक । टुनियाँ बाजलि–'दीदी गय, भात त' चूल्हिमे खसैत छौ । हड़िया फूटि गेलौ ।'

भातक जरैत लपसीक गन्ध आर अधिक पसर' लागल ।

लेखा-जोखा

विभूति आनन्द

शताब्दीक अंतिम तीन दशकक मैथिली कथा

['एहि अवधि मे एक दिस जँ यशोवृद्ध कथाकारक नव-नव कथाक स्वाद पाठककें भेटलै त' दोसर दिस एहि अवधि सँ किछु पहिने स्थापित भेल कथाकार अपनाकें परिमार्जित कयलनि । एहि दुनू सँ फराक नवतुरियाक कैकटा पैघ दलक प्रवेश एहि कालखण्ड मे भेल जे प्रवेशक संगहि मैथिली कथाक स्वर, एकर तेवर, एकर दिशा के नव आयाम देबाक चेष्टा कयलक ।'

मैथिलीक कवि-कथाकार विभूति आनन्दक नाम कोनो परिचयक मोहताज नहि अछि । हेबनि मे हिनक 'नेहाइ पर स्वप्न' कविता-संग्रह आयल अछि जे हिनक कविक सामर्थ्यक संगहि समकालीन मैथिली कविताक शक्ति-सामर्थ्यकें सेहो सशक्त रूपें उपस्थित केलक अछि । एहिठाम विभूति आनन्द अंतिम तीन दशकक मैथिली कथाक लेखा-जोखा प्रस्तुत क' रहल छथि ।]

शताब्दी बिदा भ' रहल अछि ! एहि शताब्दी मे विभिन्न तरहक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक परिवर्त्तन भेल । साहित्यक विभिन्न विधाक माध्यम सँ एहि सभ परिवर्त्तनक सूक्ष्म विवेचन होइत रहल एकर 'नोटिस' लेल जाइत रहल। लोक-मानस लेल सर्ववोधगम्य विधा कथा एहि दिशा मे काफी सक्रिय रहल । सत्तरि इसबीक लग-पासक समय रहल होयत, जखन मैथिली कथा नव तेवर आ आक्रामकताक संग अपन विशेष उपस्थिति दर्ज करैत, जड़ता कें तोड़ैत प्रस्थान कयलक । मुदा किछुऐ वर्षक बाद एना प्रतीत होब' लागल जे ई प्रस्थान एकाएक थमाक सन गेल । एकर मुख्य कारण छल–पत्र-पत्रिकाक नियमितताक सर्वथा अभाव । जहिया सँ साप्ताहिक 'मिथिला मिहिर'क प्रकाशनक क्रम भंग होब' लागल आ जे अंत मे बंद भ' गेल,

साहित्यिक लेखनक गति मे शिथिलता आयब शुरू भ' गेल। 'मिहिर' सँ इतर पत्र-पत्रिका अपन चरित्र बनबैत-बनबैत अकाल काल कवलित होइत रहल । शिखा, लाल धूआँ, फराक, कथा दिशा, आरंभ, माटिपानि, भाखा, बसात, रचना आदि पत्र-पत्रिका किछु नीक रचना छापि सकल, मुदा ओहू मे छपल रचना सभ व्यापक अध्ययन मननक अभाव मे चर्चित नहि भ' सकल ।

हालमे किछु उत्साही लेखकगण कथा विधाकेँ समर्पित 'सगर राति दीप जरय' नामक कथा संगोष्ठीक आयोजन करब शुरू कयलनि । ओहि मे भरि राति अप्रकाशित-अपठित कथा सभ पढ़ल जाइत अछि आ ओहि पर त्वरित टीका-टिप्पणी कयल जाइत अछि। एहि तरहक आयोजन सँ ई लाभ जरूर भेलैक अछि जे कथा-लेखन मे गति अयलैक अछि, मुदा एहि पर टीका-टिप्पणी इमानदार नहि भ' पबैत छै। किछु खासे कथाकारक कथा पर बाजब, नहि बाजब, किछु बजबाक अछि तें बाजब, अपन कथा पढ़ि सूति रहब, अपना कें महान प्रदर्शित करब आदि किछु एहन स्वभाव क्रमश: विकसित होइत गेल अछि जे एहि आयोजनकेँ क्षरित करैत अछि। कहबाक अभिप्राय ई जे जहिना पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित कथा सभक गहन अवलोकन नहि भ' सकल, तहिना एहू आयोजनक माध्यम सँ कथाक मनन-चिंतन नहि भ' रहल अछि। उपर-उपर गप करबाक संस्कृति विकसित भ' रहल अछि । वस्तुत: एहि प्रकारक आयोजनक ई स्वभावगत दोष छैक जे प्रतिक्रिया सुचिंतित, सुविचारित आ गंभीर नहि होब' दैत छै ।

शताब्दीक अंतिम दशक मे सेहो किछु पत्रिका कथा विधाक क्षेत्र मे काज कयलक अछि, क' रहल अछि । यथा- आरंभ, कथादिशा, प्रवासी, कर्णामृत, भारती-मण्डन, संधान संकल्प, अंतिका आदि । मुदा मैथिली मे ई असुविधा छै जे अहाँ चाहब कि सभ पत्रिका भेटि जाय त' नहि भेटत। पत्रिका बहार कयनिहार कहताह जे बिकाइते नहि अछि । एकर एकमात्र कारण छै जे मैथिली मे वितरण-व्यवस्था नामक कोनो वस्तु छैके नहि । 'गाय कानय आप क' कसाइ कानय आपू क' वला स्थिति छै । तहिना कथा-गोष्ठीक मादे सेहो तेहने स्थिति छै । जरूरी नहि छै जे सभ क्यो सभ गोष्ठी मे पहुँचबे करथि । जँ पहुँचबो करथि त' राति भरि गंभीर रहबे करथि !

अस्तु। जरूरी भ' आयल अछि जे शताब्दीक एहि सांध्यवेला मे अपन लेखा-जोखा करी आ ताही बल पर अगिला शताब्दी मे नव उत्साह, नव ऊर्जाक संग प्रवेश करी। बात एहन कथमपि नहि अछि जे पछिला लगभग तीस वर्ष मे मैथिली कथा-लेखनक स्तरीयता मे ह्रास भेल अछि। वर्त्तमान मे त' कथा विधा शीर्ष पर चलि रहल अछि।

असल मे एकरा गंभीरता सँ पढ़ल नहि गेल अछि, एकर गुण-दोषक विवेचना नहि भ' सकल अछि ।

एहि अवधि मे एक दिस जँ यशोवृद्ध कथाकारक नब-नब कथाक स्वाद पाठककेँ भेटलै त' दोसर दिस एहि अवधि सँ किछु पहिने स्थापित भेल कथाकार अपनाकेँ परिमार्जित कयलनि । एहि दुनू सँ फराक, नवतुरियाक कैकटा पैघ दलक प्रवेश एहि कालखण्ड मे भेल जे प्रवेशक संगहि मैथिली कथाक स्वर, एकर तेवर, एकर दिशा कें नब आयाम देबाक चेष्टा कयलक । शिल्प-शैली, कथ्य-तथ्य आदि स्तर पर सेहो ई तूर उल्लेखनीय डेग उठौलक । एहि तूरक बादो कतोक कथाकार साहित्य मे प्रवेश ल' अपन रचनाशीलताकेँ ल' क' एहि विधा कें श्री समृद्ध कयलनि, क' रहल छथि आ अपन उपस्थिति सँ पाठक कें चकित क' रहल छथि ।

एहि कालखण्ड मे पत्र-पत्रिकाक अवदान जहिना महत्त्वपूर्ण, तहिना कथा-संग्रहक सेहो कम योगदान नहि । उक्त तीनू-चारू श्रेणीक कथाकारक संग्रह एहि अवधि मे आयल, जे संख्या मे संतोषप्रद त' नहि कहल जा सकैछ, तथापि कथाक विवेचन हेतु एकर महत्त्वपूर्ण स्थान कें अस्वीकारल नहि जा सकैछ। हमर आलोचक-समालोचकगण 'एत्ता रूइया के धुनिहें' क मानसिकता सँ काज करैत पत्र-पत्रिकाक अध्ययन-मनन सँ बेसी नीक संग्रहक आधार पर गप करब सुविधाजनक मानैत छथि ! अस्तु ! समालोचनाक इहो शैली एक ढंगे सही कहल जा सकैछ। एहि समोचना सँ कथाकारक सोच आ ओकर सीमा एवं शक्तिकेँ ठीक ढंग सँ बेसी व्यापक स्तर पर बूझल जा सकैछ। मुदा संग्रहक अभाव मे कतोक नीक कथाक मूल्यांकन नहि भ' पबैछ, पत्रिका सभक पुरान फाइल मे हकहक करैत रचनाकारक हूबाकेँ तोड़ि दैछ । एहना स्थिति मे समालोचकक दायित्व अधिक भ' जाइछ, मेहनतिक अपेक्षा कने बढ़ि जाइछ। मैथिली प्रकाशनक स्थितिकेँ देखैत से जरूरिये नहि, मजबूरी सेहो ।

एहि कालखण्ड मे वृद्ध-पीढ़ीक जाहि कथाकार लोकनिक योगदान रहलनि ताहि मे प्रमुख छथि काञ्चीनाथ झा 'किरण' हरिमोहन झा, उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास', ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', योगानन्द झा, गोविन्द झा, सुधांशु 'शेखर' चौधरी, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' आदि । एहि मे किछु कथाकारक किछु महत्त्वपूर्ण संग्रह सेहो प्रकाशित भेल, यथा-कथा किरण (काञ्ची नाथ झा 'किरण'), भजना भजले (उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'), उड़ैत बंशी (योगानन्द झा), सामाक पौती, नख दर्पण (गोविन्द झा), आदि । हरिमोहन झाक एहि अवधि मे किछु राजनीतिक व्यंग्य-कथा प्रकाशित भेल, यथा-कालाजारक उपचार, द्वादश निदान, आदि । ई हिनक लेखन-दिशाक परिवर्त्तनक सूचक कहल जा

सकैछ । मुदा परिवर्त्तनक ई दिशा हरिमोहन झाक कोनो नव रूप नहि गढ़ि सकल। विषय राजनीतिक हो वा सामाजिक, हरिमोहन झा अपन कथा मे समयक संग आरम्भे सँ चलैत रहलाह अछि । एकर ठीक विपरीत चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अपन लीक सँ कटि सन गेलाह । मैथिली मे हरिमोहन झाक बाद 'अमर'जी एहन हास्य-व्यंग्यकार भेलाह जे हरिमोहन बाबूक धाराकेँ आर दमगर, सहजोर बनबितथि । मुदा नहि जानि, एहन कोन विसंयोग भेलै जे 'अमर'जीक रचनाकार पंडित भ' गेलनि । ओ एहि विषय केँ बिसरि गेलाह जे हास्य-व्यंग्यक लेखक लेल 'विरोधी बेंच' मे रहब जरूरी होइत छै ।

एहि कालखण्डक अन्य कथाकार सभ अपन-अपन बंगला-कोठी मात्र सजबैत रहलाह । योगानन्द झाक मौन यद्यपि आकाशवाणीक सौजन्य सँ भंग भेल, मुदा हुनक सौन्दर्य-पानक बुढ़ारी-शैली पाठककेँ 'आम खयबाक मुँह'क स्मरण दियबैत रहल।

'आधुनिक पीढ़ी सँ पूर्वक तथा वृद्ध-पीढ़ीक मध्यक जे पीढ़ी छल, ओकर स्वर बदलल-बदलल रहल । ललित अपन 'कविजी आ गुण्डा', 'सारंगिया' आदि कथा द्वारा अपन प्रगतिशील चेतना सँ स्खलित होइत सन बुझयलाह । मुदा मायानन्द मिश्रक मौन भंग हुनक कथाकार-व्यक्तित्वकेँ नब आ सम्मानजनक सहरजमीन प्रदान कयलक। 'भांगक लोटा'क कथा-लेखक अपन हास्यक चोंगा केँ त्यागि समकालीन सोचक संग जुड़ि गेलाह । 'भय प्रकट कृपाल'।, 'दीन दयाला', 'कौशल्या हितकारी', 'झाँकी हिन्दुस्तानके', 'भैरव', 'अभिनन्दन', 'हर्रे लगे न फिटकीरी' आदि राजनीतिक भावभूमिक कथा लिखि माया बाबू एकटा रहस्यमय समाजक चालि-चलन, रहन-सहन, सोच-अपसोच आदिक अर्न्तकथाक उद्घाटन कयलनि । पाठककेँ मैथिली कथाक नब स्वाद भेटलै । चौंकब स्वाभाविक छलै । पश्चात् 'चन्द्रबिन्दु' नाम सँ एकसंग्रह सेहो आयल जे 'भांगक लोटा' सँ त' सहजे, 'आगि मोम पाथर' सँ सेहो सर्वथा फराक बाट पर चलैत लागल ।

एही कालखण्ड मे एक पैघ अन्तरालक बाद 'कल्पनाशरण'क नाम सँ चर्चित लिली रे पुनः उदित भेलीह । किछु उपन्यास आ कथा ल' क' प्रकट भेनिहारि ई अपन लय मे कथा लिखब शुरू कयलनि । अपेक्षाकृत कने पैघ आकारक कथा लिखनिहारि लिली रेक चिंतन-मनन, आवेस-सिनेह सँ परिचित होइत पाठक मैथिली कथाक विस्तृत फलकक दर्शन कयलक। मानवीय करूणाक संवेदनशील कथाकारक रूप मे हिनक छवि निखरैत गेल अछि, आ मे हिनक 'रंगीन परदा'क कथाकारक पुगन

छविकेँ खण्डित करैत अछि । एम्हरूका कथा मे एकरसता मुदा, हिनका मादे चिंतित करैत अछि ।

रामदेव झा, धीरेन्द्र, बलराम, सोमदेव, रमानन्द रेणु आदि कथाकार सेहो समकालीन सोच सँ जुड़ल रहलाह । धीरेन्द्रक लेखन एहि अवधि मे अपेक्षाकृत अधिक करूण होइत गेल । 'दांदी माँ', 'एकाढ़' आदि कथा पाठकक मोन मोंहि लैत अछि । एहि अवधि मे हिनक कथा संग्रह सेहो आयल, यथा-'शतरूपा आ मनु', 'पझाइत घूरक आगि' आदि । सोमदेवक 'निरमूल' चसकल जीहक एक नव स्वाद प्रस्तुत करैत अछि । बलरामक किछुये कथा आयल, मुदा बेस गंभीर, कलात्मक । समकालीन मन-मस्तिष्कक अनुकूल । रमानन्द रेणुक अधिकांश कथा माटिपानि मे सानल, ओकरे सोन्ह-गंध सँ सराबोर । पीड़ित मानवताक पक्ष हिनक अधिकांश कथा मे कण्ठ फोलि क' बजैत अछि आ एही सभ मान्यताकें पुष्ट करैत हिनक कथा-संग्रह आयल-'त्रिकोण'।

एकर चोट्टे बाद जे कथाकारक दल आयल, ओ एहिकाल मे जमिक' लिखलक। एहि दलक क्रमशः प्रमुख नाम अछि-धूमकेतु, राजमोहन झा, गंगेश गुंजन, प्रभास कुमार चौधरी, जीवकान्त तथा शेफालिका वर्मा, उपेन्द्र दोषी, सुभाष चन्द्र यादव, महाप्रकाश ललितेश मिश्र, सुकान्त सोम, पुर्णेन्दु चौधरी आदि ।

'अगुरवान' कथा ल'क' प्रसिद्धि प्राप्त कयनिहार धूमकेतु अपन मान्यता पर दृढ़, शाश्वत विषय-वस्तु कैँ आधार बनबैत किछु नीक कथा लिखलनि । 'अगुरवान एवं अन्य कथा' नामक कथा संग्रह मे संकलित कथाक अतिरिक्त हिनक किछु उत्कृष्ट कथा अछि-'छठि परमेसरी' एकटा मूल्यहीन कथा' 'विघटन' आदि । मानव-मनक अंतर मे पैसि गंभीरता सँ कथा लिखनिहार राजमोहन झाक कतोक कथा एहि अवधि मे आयल । मनोविश्लेषणात्मक शैली मे कथा लिखनिहार राजमोहन झाक ई प्रयोग जे अपन कथ्य कथाक अंतमे एक पंक्ति मे चोट मारैत कहब, बेस सफल तथा प्रभावी रहल । 'एकटा तेसर', 'नेतागिरी', 'भोजन', 'कायर', 'घर', 'खोज', आदि कतोक कथा बेर-बेर पढ़बाक लेल प्रेरित करैत अछि । हिनक किछु महत्वपूर्ण कथा संग्रह सेहो प्रकाशित भेल, यथा-'एकटा तेसर', 'आइ-काल्हि परसू', आ 'अनुलग्न' । गंगेश गुंजनक कथा-लेखन विशेष विस्तार नहि पाबि सकल । माटिपानिक प्रति उखरल-उखरल मन सहानुभूतिक संग-संग भाषा-प्रवाह सेहो कथाक अपेक्षित प्रभाव छोड़बामे बाधित करैत अछि । तथापि किछु विशिष्ट कथा हिनक एहि अवधि मे आयल जे 'उचितवक्ता' नामक कथा पुस्तक मे संगृहीत भ' प्रकाशित भेल ।

एहि अवधिक सर्वाधिक चर्चित कथाकार भेलाह प्रभास कुमार चौधरी । ई एहि अवधि मे अपन जीर्ण हबेली सँ मुखर भ' कथा लिखलनि । अपन सामंती परिवेश केँ धँगलनि । अपन प्रतिबद्धता स्पष्ट कयलनि । असल मे हिनका कथा कह' अबैत छलनि । कोनो कथ्यकेँ बड़ सहज भ'क' सरल शैली मे कहि जाइत छथि । ओ 'मंदाकिनी' हो, कि 'रासलीलाक हुनमान', 'बाबी', हो कि 'मलाहक टोल', कि 'दिदबल', आकि अंतिम कथा 'अष्टाबक्रक शेष कथा'–हिनक अपनत्व समान रूपें अभिव्यक्त होइत अछि । 'कथा प्रभास' तथा 'प्रभासक कथा' नामक कथा-संग्रह एकर स्पष्ट प्रमाण रूप मे उपलब्ध अछि ।

बहु-विधावादी लेखक जीवकान्त त' मूलत: एही अवधि मे जमिक' लिखलनि। मैथिली भाषाक ठेठपना समेटने सहज-सोझ ढंग सँ दर्जनाधिक्य स्मरणीय कथा लिखलनि। गामक कथाकार जीवकान्त गामक विभिन्न ज्वलंत समस्या, ओकर चिंता, ओकर आक्रोश, ओकर विद्रोहकेँ बेस कलात्मकताक संग अपन कथा मे व्यक्त कयलनि। 'सीरक' हो, कि 'इनकिलाब', 'तेल' हो, कि 'वस्तु', आकि 'बबाजीक बेटी'–ई सभ ठाम सहयोगी-सहभागीक रूप मे जेना ठाढ़ रहैत छथि । आ एएह हिनक वैशिष्ट्य छनि जे ई अपन कथ्य सँ निरपेक्ष नहि रहैत छथि । हिनक एहि अवधिक किछु नीक कथा-संग्रह अछि–'सूर्य गलि रहल अछि', 'वस्तु', करमी झील' आदि ।

उपेन्द्र दोषी मुदा अपन 'तिरिया प्रेम' केँ अन्तत: नहि त्यागि सकलाह । शाश्वत विषय-वस्तुक मोहसँ ग्रसित ई अपन कथा मध्य एकर विशेषज्ञ जकाँ लगैत छथि। 'एक जोड़ पड़बा : एक जोड़ आँखि, हो कि 'झीक', दोषीजीक नजरि कतौ आन ठाम नहि ओझराइत छनि । सुभाष चन्द्र यादव 'घरदेखिया' सँ पीड़ित रहलाह आ जे अंतत: हिनक कथाकारकेँ अक्क-सक्क किछु नहि चल' देलक । लीक सँ फराक, सर्वथा नव भाव-भूमिक एक चित्र प्रस्तुत कयलनि ई 'घरदेखिया' नाम सँ । समालोचकगण एकरा मैथिली कथाक ध्वजा मानि लेलनि । कथाकार अप्रत्याशित आदर-स्नेह पाबि किछु दिन खूब लिखलनि । 'फँसरी', 'लिफ्ट', 'झालि', 'काठक बनल लोक' नीक यश प्राप्त कयलक । मुदा हेबनि मे लिखल किछु कथा कतहुँ सँ उक्त कथा सभक समकक्ष नहि ठाढ़ भ' पबैत अछि । सुकान्त सोम किछु नीक कथा लिखलनि । समय-सापेक्ष, आधुनिक भाव-बोध सँ युक्त हिनक कथा सभक संग त्रासदी ई अछि जे ओ विभिन्न पत्र-पत्रिका मे छिड़िआयल अछि । हिनक किछु स्तरीय कथा अछि 'नेपथ्य संवाद', 'धूरी सँ छिटकल लोक', 'त्रिशंकु' 'रक्तबीज' आदि । मुदा हिनक परिचिति प्रमुखत: कवि रूपमे होइत रहल । इएह समस्या महाप्रकाशक संग सेहो छनि।

कवि-रूप हिनक अधिक चर्चित अछि, जखन कि हिनक नीक-नीक कथा, उर्दू-फारसीक छौंक लेने प्रकाशित अछि । यथा-'खाली हौसला', 'निष्क्रमण', 'पिता नव परिवेश मे', 'पाखण्ड पर्व', 'जोड़, घटाव, गुणा भाग आ शेष कथा' आदि । समालोचक क मारल ई श्रेष्ठ दुनू कथाकार अपन-अपन संग्रहक अभाव मे एखन धरि अबडेरल जाइत रहल छथि । ललितेश मिश्र अपन पाटि बदलि लेलनि । मुदा समालोचकक रूप मे सेहो अपन रूप फड़िछ नहि क' सकलाह । पूर्णेन्दु चौधरी 'मिथिला मिहिर'क लेखक रहथि । खूब जमिक' लिखलनि । सभ क्षेत्र मे । किछु नीक व्यंग्य पछाति सेहो लिखलनि । संग्रह नहि छनि । हेब्रनि मे लेखन सँ बेसी नोकरी दिस चाँकि छनि । ओना हिनक किछु नीक कथा सभ अछि–'अपन घर', 'एकटा आर देवदास' 'खोपक पड़बा' आदि ।

एहिकाल मे सर्वाधिक व्यंग्य कथा लिखलनि छत्रानंद । राजनीतिक व्यंग्य हिनकर खूब धरगर होइत छल । 'डोकहरक आँखि' आ 'काँट-कूश' नामक संग्रह सेहो आयल। एहि क्षेत्र मे मन्त्रेश्वर झा सेहो नीक काज कयलनि । हिनको संग्रह आयल–'ओझा लेखें गाम बताह', 'एक बटे दू' आदि । अमर नाथ झा सेहो एहि दिशामे खूब कलम चलौलनि । संग्रह अयलनि–'चाही एकटा द्रौपदी', 'कबकब' आदि । मुदा ऊर्जाक अभाव मे व्यंग्यक ई धार मरनी-धार सिद्ध भेल । हरिमोहन झा स्कूलक एकोटा छात्र तेजगर नहि बहरा सकल ।

आ एहि क्रम मे एक नब पीढ़ी प्रवेश लेब' लागल । गोटेक दर्जन रचनाकारक लगभग एक संग प्रवेश एक हलचल केँ जन्म देलक । ताधरि देशक स्थिति नीक जकाँ बदलि गेल छल । स्वतंत्र भारत मे जनमल लोकक मोहभंग भ' चुकल छलै। अग्रज पीढ़ी, जाहि मे किछु परतंत्र भारत मे जन्म लेने छल आ किछु स्वतंत्र देशक किछु वर्ष आगू-पाछू, विचित्र तरहक मानसिक उहापोहक बीच झूलि रहल छल, अपन लेखन द्वारा एहि औनाहटिकेँ अभिव्यक्त क' रहल छल । ई जे नवीन पीढ़ी आयल, तकर मन्-प्राण एहि सँ फराक छलै । बदलैत अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य, सुरसा जकाँ बढ़ैत बेकारी आ असंतोष, दिशाहीन व्यवस्थाक उच्छृंखलता, आदिकेँ ओ ताहि स्थिति मे देखलक-भोगलक, जखन ओकर सोचक स्तर स्वरूप ग्रहण क' रहल छलै । ओकरा पराधीन भारत पढ़ल-सुनल छलै, भोगल नहि । मुदा ई स्वतंत्र भारत ओकरा ताहू सँ बेसी दूरि आ जियान भेल लगलै । आ असंतोष बढ़' लगलै । पढ़ि-लिखि क' ओ चाकरीक फिराक मे बौआय लागल । सभ ठाम धूमिल भविष्य खिलखिलाइत, व्यंग्य करैत बुझयलै । आ से कतौ नक्सली आन्दोलन भ'क' फुटलै, त' कतौ छात्र आन्दोलनक

रूप लेलकै । अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सेहो विभिन्न तरहक नौटंकी होइत रहलै । विश्वक कतिपय विकसित देश 'अपन एकाधिपत्यक लेल सट्टा-बाजार फोलिक' बैसि गेल। गुप्तचरीय व्यूह-रचना मे सम्पूर्ण विश्व 'सिहर' लागल । सभ दिश सँ टूटल, ऊबल नवतुरिया कोनो युक्तिसंगत मार्गक संधानमे लागि गेल । आ एही संधान मे ओकरा भेटलै बामपंथक बाट । बढ़ैत असंतोषक बीच ई पंथ (मार्ग) तेना ने लोकक मन-प्राण मे रसैत-बसैत गेलै जे एहि बाट पर चलब फैशन भ' गेल । अधिकांश एहि अन्तर्धारा केँ नहि बूझि सकल, आ जे बूझि सकल से ओकर तह मे जाय लागल । एहि पंथक विभिन्न मतवादक खोह मे जाइत ओ झिझिरकोना खेलाइत रहल । किछु कथाकार त' बूझि-गमि क' थाह लैत बामपंथी धाराकेँ साहित्य मे अनलनि, मुदा बेसी ओकरा दिखाउँस मे अपनौलनि । जे-से । एहि सँ एतेक धरि जरूर भेल जे रचनाकार माटिपानि दिस आकृष्ट भेलाह । जे बामपंथी नहि छलाह, सेहो माटिक सोन्हगर गंधकेँ कथा मे अनबाक प्रयोजनीयता केँ बूझ' लगलाह । आ एकर संगहि धीरे-धीर एकहि धाराक दू पाट होइत गेल । लक्ष्य एक रहितो दू बाट ध' कारवाँ चलि पड़ल।

मैथिली कथाकारक जे पीढ़ी सत्तरिक धतपत मे प्रवेश ल' द्विमुखी धारा मे आगू बढ़ैत देखार भेल, तकर एक पैघ सूची बनि गेल, जाहि मे किछु प्रमुख नाम अछि—रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', विनोद बिहारी लाल, गंधराज, विनोद भारती, अशोक, राज, शैलेन्द्र आनन्द, नरेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार, धीरेन्द्र सिंह, विभूति आनन्द, कुणाल, अग्निपुष्प, महेन्द्र मलंगिया, मनमोहन झा, उषा किरण खान, शैवाल, नीरजा रेणु आदि। एहि पीढ़ीक बाद लगले एक दल प्रवेश लेलक । हुनका सभक रचनात्मक ऊर्जा विभिन्न कथा मे अभिव्यक्त भेल, जे वर्त्तमान मे एक ठोस रूप लेने अग्रमुख रचनाशील अछि। हुनक नाम अछि—विभारानी, शिवशंकर श्रीनिवास, केदार कानन, प्रदीप बिहारी, तारानंद वियोगी, नीता झा, रमेश, देवशंकर नवीन, सारंग कुमार, सुस्मिता पाठक, ज्योत्सना चन्द्रम्, चन्द्रेश आदि ।

उक्त दुनू तूरक कथाकार मे दुनू श्रेणीक कथाकारक स्थिति आब एकदम्म साफ अछि । ई कारवाँ जेना अग्निपुँज सदृश आयल, तहिना बिजलौका साबित भेल । बुलंदीक संग प्रवेश आ बिनु कोनो खास प्रभाव छोड़ने प्रस्थान—एहि पीढ़ीक जेना नियति हो। एहि तूरक आरंभिक काल आशाक संचार कयने छल साहित्य जगतकेँ । मुदा विगत लगभग बीस वर्षक साहित्य-साधना ठेकी कुटैत सन प्रतीत भ' रहल अछि । बामपंथी रूझानक कथाकार मे एहि तरहक थकान बेसी देखबा मे आबि रहल अछि । दीक्षित होएब एक बात थीक आ ओहि दीक्षाकेँ आत्मसात् क' आकार देब दोसर बात थीक।

दुनू स्थितिकेँ समाहित करबे सही रचनाकारक साक्षी बनैत अछि । मुदा स्थिति ई उभरिक' आयल जे ओहि वर्गक रचनाशीलता खाली बन्दूकक फायरिंग भ'क' रहिं गेल । विश्वसनीयताक अभाव, कथ्यक पुनरावृत्ति, प्रभावहीन आ रूढ़ बनैत भाषा हिनका लोकनिक नियति बनि गेल ।

अपेक्षाकृत, बिनु दीक्षित भेने, माटिपानि सँ जुड़ल रचनाकार बेसी संतोषप्रद काज क' रहल छथि । हिनका लोकनिक लेखन सायास नहि अछि । कथ्य, शिल्प, भाषा आदिक स्तर पर कतहु सँ उबाउ नहि लगैत अछि । ई लोकनि अपन लय मे चलैत सन लगैत छथि ।

आब हम दुनू कोटिक किछु रचनाकारक सम्बंध मे अति संक्षेप रूपें विचार करब जाहिसँ ओहि आ ओहि पीढ़ीक कथाक रूप फड़िच्छ भ' सकय ।

विनोद बिहारी लाल एहि पीढ़ीक सर्वाधिक चर्चित आ मान्य कथाकार छथि। सय सँ उपर कथा लीखि लेलाक बादो ई लगातार लिखैत जा रहल छथि । सुसंस्कृत भाषा, धरगर शिल्प एवं सुस्पष्ट लेखन हिनक विशिष्टता कहल जा सकैछ । हिनक किछु चर्चित कथा अछि 'हुनकर स्वाधीनता', 'जा धरि', 'सुनू हाल', 'पुतरी नहि', 'खोहक अन्हार', 'जे इतिहास नहि बनत', 'बुच्ची बाबूक गाम मे' आदि । मुदा अधिकांश कथाक कथ्य एक्कहि, कथ्यक निदान एक्कहि । लगैछ, जेना हिनक कथाकार एक खास परिधि मे घेराक' रहि गेल अछि ।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' नेपालीय परिसरक एक चीन्हल जानल नाम अछि। हिनक अधिकांश कथा नारी-देहक प्रति समर्पित रहल अछि । सिनेहक कथा अपन व्याख्या एवं मान्यताक संग प्रस्तुत करबा मे संलग्न 'भ्रमर'क एक संग्रह सेहो प्रकाशित अछि-'तोरा संगे जयबौ रे कुजबा' । एक विशेष बात हिनक कथा पढ़ैत काल लगैत रहैत अछि जे ई प्रायः कथा मे एक प्रमुख पात्र स्वंय छथि । पिछड़ल वर्ग सँ अबितो हिनक कथा मे दलित-चेतनाक सर्वथा अभाव देखल जाइत अछि ।

बामपंथी रूझानक रहितो पंक्ति लेखक (विभूति आनन्द) अपन कथा-लेखन मे अपन कथ्यकेँ स्पष्ट करबा लेल प्रायः घेराकेँ तोड़बाक प्रयास करैत रहैत छथि । जीवनक विभिन्न स्थिति सँ साक्षात्कार करैत हिनक दू गोटं कथा संग्रह प्रकाशित अछि-'प्रवेश' आ 'खापड़ि महक धान' । हिनक किछु संवाद-कथा प्रयोगक दृष्टि सँ काफी चर्चित रहल अछि ।

मनमोहन झा एहि तूरक एकटा एहन कथाकार छथि जनिका कथा-लेखन पारिवारिक गुणक रूप मे भेटल छनि । जर्नादन झा 'जनसीदन' आ हरिमोहन झाक

बाद राजमोहन झाक कथायात्राक विकास मनमोहन झा मे बहुत किछु अनुभव कयल जा सकैत अछि । हिनक अद्यावधि दू गोट कथा-संग्रह प्रकाशित अछि–'घर घुरैत काल' आ 'कोनो एकटा गाम' ।

अशोक एहि पीढ़ीक एकटा ननुआगर कथाकारक नाम अछि, जनिक 'हेयरपिन', 'नचनियाँ' आदि किछु एहन कथा अछि जे अपन कमनीयता, अपन सोझपना आ अपन अपनैती ल'क' पाठककेँ आकृष्ट क' लैछ । मुदा जखन हिनक 'सरिसवक साग' अयलनि त' पाठक समुदाय चौंकि उठल । पछाति त' हिनक यात्रा समाजक विभिन्न बेछुइल स्थान, सभक स्पर्श कर' लागल आ ई फेर घुरिक पाछू नहि तकलनि । 'तानपूरा' 'भोज', 'हिस्सक', 'बूढ़ा जीबैत रहलाह' आदि किछु एहन कथा अछि, जे हिनक कथायात्राक प्रति आश्वस्त करैत अछि । सहयोगी संग्रह 'त्रिकोण'क अतिरिक्त हिनक स्वतंत्र कथा-संग्रह अछि–'ओहि रातिक भोर' ।

ग्रामीण परिवेशक कथाकार शैलेन्द्र आनन्द गामक विभिन्न समस्या पर चौकस रहैत छथि । ई चौकस दृष्टि यथास्थितिक पोषक नहि भ'क' सुधार, विरोध आ विद्रोहक रूप मे समक्ष अबैत अछि । मुदा कथाक फार्मूलाबद्ध होयब हिनक अधिकांश कथाकेँ अस्वाभाविकताक खाधि मे ठेलि दैत अछि । आ एत' आबिक' ई विनोद बिहारी लालक अधिक लगीच भ' जाइत छथि । हिनक किछु नीक कथा अछि–'एकटा आर मर्डर केस', 'चिनगी', 'बासगीत', 'भूख' आदि । सहयोगी कथा संग्रह 'त्रिकोण'क एक फरीक इहो छथि ।

उषाकिरण खानक कथाकार मध्य निम्नवर्गक विभिन्न स्थिति-परिस्थितिकेँ अभिव्यक्त करबा मे प्रयत्नशील अछि । विशेषत: नारीक भिन्न-भिन्न स्थितिक, भिन्न-भिन्न ढंगक उहापोहक चित्रण करबा मे कथाक लेखिका ओझराइत नहि छथि। एक दिस 'सीढ़ी' सन राजनीतिक भाव-भूमिक कथा त' दोसर दिस 'पराजित हम' सनक बदलल नारी-मन:स्थितिक कथा लीखि वैचारिक स्तर पर ई काफी 'बोल्ड' लगैत छथि । हिनक किछु नीक कथा सभ अछि–'दिशाहीन', 'उदासीन', 'सिनेह', 'चिनवारक दीप', 'त्यागपत्र' आदि ।

प्रदीप बिहारी बहुत कम समय मे बहुत अधिक कथा लिखलनि । वाम रूझानक ई कथाकार गाम आ शहरक नाड़ीकेँ परखैत अपन कथा-भूमि दुनू ठाम रखने छथि। मुदा बहुत बेसी लिखब सेहो ककरो-ककरो लेल घातक भ' जाइत छै, स्वस्थ-सुन्दर मनुक्ख रोगी लाग' लगैत अछि । ताहू मे जँ कलम नारी-देह लेल चसकि जाय । तथापि हिनक कथा स्वाभाविकताक संग अपन धुन मे चलैत पाठकक अर्न्ततम धरि स्पर्श

कर' मे सफल रहैत अछि । हिनक किछु नीक कथा सभ अछि–'करोट', 'मोटबाह', 'गंगा', 'पुरैनियावाली', 'लुत्ती' आदि । हिनक एक कथा संग्रह सेहो प्रकाशित अछि–'औतीह कमला, जयतीह कमला' ।

जीवन मे अपन उपस्थितिक लेल एक स्पष्ट आ सही दृष्टि रहब जरूरी होइत छै । सही दृष्टिकोण वला मनुक्ख जँ रचनाकार हो त' ई आर महत्वपूर्ण । मुदा कखनो-कखनो देखल गेल अछि जे एहि प्रकारक सुच्चा लोकक रचनाकार सेहो असमय मरि जाइत छै । राज, धीरेन्द्र कुमार, विनोद भारती, शैवाल–किछु एहन नाम अछि, जनिक रचनाकार किछु नीक कथा द'क' जीविते मृत्युकेँ वरण क' लेलक । प्राय: एहि तूरक ई नियति जकाँ बनि गेल सन लगैत अछि ।

एहि तूरक पीठे पर जे कथाकारक एक वर्ग आयल ताहि मे विभारानी बेस संतोष दैत छथि । हिनक कथा सभ मे दलित चेतना स्वाभाविक ढंग सँ मुखर अछि । हिनक कथाकार मानव-जीवनक गाम सँ ल'क' नगर, महानगर धरिक कतिपय एहन चित्र उकेरैत अछि जे हिनक अप्रतिम साहसकेँ प्रक्षेपित करैत अछि । हिनक एहि साहसिकताक उदाहरण हिनक किछु कथा अछि जे भिन्न-भिन्न शीर्षकक माध्यमे कथाकारकेँ बजबैत देखबैत अछि । हिनक किछु नीक कथा अछि–'कौआहँकनी', 'एक छीप्रा भात', 'पेंच', 'रहथु साक्षी छठ घाट' आदि । हिनक एक कथा-संग्रह सेहो आयल अछि–'खोह स निकसइत' ।

एही क्रमक एक कथाकार छथि शिवशंकर श्रीनिवास । अप्रतिम ऊजाँ सँ युक्त, स्वच्छ आ स्पष्ट दृष्टिकोण रखनिहार । सूर्य जकाँ तप्पत आ चान जकाँ शीतल शिवशंकर श्रीनिवास बहुत अल्प अवधि मे अपन फराक शिल्प आ व्याकरण ल'क' चर्चित भ' चुकल छथि । गामक रेसा-रेसा सँ आत्मीयता रखैत, ओकर कुबुद्धि मे बुद्धिक योग दैत ई किछु एहन विलक्षण कथा लिखलनि अछि जे सहजे आकृष्ट क' लैछ । 'गाछ-पात', 'आदंक', 'सिनुरहार', 'चिन्ता', 'जमुनियाँ धार' आदि । सहयोगी कथा संग्रह 'त्रिकोण'क अतिरिक्त हिनक एक संग्रह अछि–'अदहन' ।

मैथिली भाषाक ठेठपना लेने, रमेशक कथाकार मानव जीवनक संश्लिष्ट, बहुअर्थी आ जटिल स्थितिक अध्ययन करैत आ ताहि पर अपन स्पष्ट मंतव्य दैत विभिन्न कथा मध्य नजरि अबैत अछि । आ सएह पाठक केँ नीक लगैत छै । मानव-मुक्तिक रचनात्मक निदान जँ कोनो रचनाकार ताकि लिअय त' ओकरा लेल बाट साफ भ' जाइत छै। रमेशक कथाकार केँ ताहि बाटक अभिज्ञान छनि । हिनक किछु कथा अछि–'दिनकर

बाबूकेँ भ्रम भेल छलनि', 'कथा : खण्डित आदर्शक', 'गुलबिया', 'प्लास्टिकक खेलौना', 'मुजरा कल्चर', 'ध्रुपद धमार' आदि । हिनक कथा संग्रहक नाम अछि–'समानान्तर' आ 'समाङ' ।

केदार कानन कथा कम कविता बेसी लिखलनि अछि । मुदा दर्जनाधिक्य जे कथा प्रकाशित अछि, से हिनक भीतर अलसायल पड़ल कथाकारकेँ उठबैत सन लगैत अछि । कविते जकाँ कथा सेहो जे किछु कह' चाहैत अछि, बेलागि कहि दैत अछि। 'सुल्फा' हो कि 'आतंक', पौडर हो कि 'तामस'–बड़ अनुराग आ मनोरथ सँ लिखल गेल कथा थीक ।

तहिना कैजुअल कथा लिखनिहार मे एक आर विशिष्ट नाम अछि–सियाराम झा'सरस' । गीत-गजल लिखैत-गबैत 'सरस' जी कथा गोष्ठीक प्रताप सँ किछु विलक्षण कथा लिखलनि अछि । मुदा 'कोबर घर जयबाक मोन सेहो अछि आ पयर सेहो थरथराइत अछि'बला मन:स्थितिक त्याग करब हिनक कथाकारक स्वास्थ्य लेल जरूरी अछि। कमोवेश नारायणजीक संग सेहो सएह स्थिति अछि । किछु नीक कथा लिखलनि अछि, लिखितो छथि । मुदा अपना के कथाकार कहयबा मे लजाइत रहैत छथि ।

तारानन्द वियोगी काफी 'बोल्ड' रचनाकार छथि । आजुक जे समाज अछि, तकर जे सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक आ राजनीतिक स्थिति अछि आ ताहि मे जे त्वरित परिवर्त्तन भ' रहल अछि, ताहि सभ कथुक प्रवक्ता रूप मे ई पाठकक सोझा प्रस्तुत होइत छथि । दलित चेतनाकेँ मैथिली कथा साहित्य मे मुखर रूपे उजागर कयनिहार वियोगी जें कि अपन वैचारिक धरातल पर स्पष्ट छथि तें समाजक नवजागरणकें अपन स्व–विकसित कयल भाषा मे स्वर दैत छथि, तकरा संग ठाढ़ होइत छथि । हिनक स्वर समाजक अंतिम पंक्ति मे ठाढ़ मनुक्खक हित-चिन्ता ल' क' मुखरित होइत अछि। हिनक किछु चर्चित कथा अछि–'उड़ान', 'हीरा जनम तिहारो', 'विवेक बध', 'उद्दीपन', 'हमर सीताराम' आदि । कथा संग्रह अछि–'अतिक्रमण' ।

'फड़िच्छ' आ 'कथा नवनीत' कथा-संग्रहक कथा लेखिका नीता झा नारी मोनसँ नारी- मोनक गह गह मे पैसि ओकर व्यथा-कथा केँ काफी साहसपूर्वक अभिव्यक्ति द' रहल छथि । हिनक नारी पात्र सबला आ अबला दुनू होइत अछि । ई अपना दिस सँ किछु कह' स' बेसी ओकरा जकथक पाठकक सोझा मे आनि ठाढ़ क' दैत छथि । ई हिनकर सीमा आ वैशिष्ट्य दुनू अछि । सुस्मिता पाठक सोझरायल दृष्टि रखैत छथि । हिनक नारी दुर्बल नहि अछि ,आ ने नारी-पुरूषक पार्थक्य केँ

सहजे स्वीकारैत अछि । ई मनुक्खक दू रूप मे एकरा देखैत छथि । दुख-दर्द पुरूषक हो , आकि स्त्रीक ,दुनूक संग ई अपन लेखनक स्तर पर सहजता सँ जीबैत छथि । हरिणायल आँखि मे सपना बुनैत छथि आ तकरा विभिन्न कथाक माध्यमे कागत पर उतारैत छथि । कथा कम कविता अधिक लिखनिहारि हिनक किछु नीक कथा अछि -'कमीज', 'कथावाचक','अपन-अपन धर्म' आदि ।

ज्योत्सना चन्द्रम् मूलत: कथा लिखैत छथि । प्रयोजन पड़ला पर ,तेजी सँ, हड़बड़ी मे । हिनक एम्हर जे किछु कथा आयल अछि ,से अपन सुललित भाषा, मिश्रित शिल्प, ,विश्वसनीय कथ्य ,शहरी परिवेश आदि ल'क' पाठकक घ्यान आकृष्ट कयलक अछि। मानव-जीवनक विभिन्न गति-अगति, कुंठा-संत्रास ,नेह छोह आदिक लगन पूर्वक अध्ययन-मनन आ विवेचन हिनक वैशिष्ट्य कहल जा सकैछ । कथा कहबाक हिनक अपन ढंग छनि, गति सेहो । ' झिझिरकोना ' नाम सँ प्रकाशित हिनक एक कथा संग्रह किछु वर्ष पूर्व आयल छल । छपबा सँ बेसी लिखबाक आवेसी हिनक किछु नीक कथा अछि-'निकष','टुटैत बन्हेज', 'हैलो' ,'पहिली तारीख' आदि ।

एहि क्रमक किछु रचनाकार एहनो छथि जे अपन मूल परिचिति साहित्यक आन-आन विधा मे बनौने छथि । मुदा किछु कथा सेहो नीक लिखने छथि । एहि तरहक किछु नाम अछि देवशंकर नवीन ,सारंग कुमार अदि । देवशंकर नवीन कविता आ समालोचनाक नीक शिल्प विकसित कयलनि अछि । सारंग कुमार कविताक अतिरिक्त किछु नीक लघुकथा लिखलनि अछि । एहि क्रम मे एक नाम अबैत अछि शैलेन्द्र कुमार झाक, जे अपन कथा संग्रह 'आरोह- अवरोह' क संग चर्चा मे अयलाह अछि। हिनक किछु, कथा, यथा-'वाक्'. ''अपराजिता', 'मुक्ति', 'फिल्ली ब्लैक', 'लीभ एप्लीकेशन' आदि समकालीनताक स्तर पर अद्भुत कथा कहल जा सकैत अछि । भाषाक स्तर पर जरूर हिनक कथा गद्यपन लेने रहैत अछि ,मुदा कथ्यक स्तर पर चकित कर' वला होइत अछि । ई बहुत गंभीरताकें संग एहि विधा मे आगू आबि रहल छथि । अस्तु ।

विगत तीन दशक मे अपन ई समाज विभिन्न प्रकारक त्रासदी केँ भोगलक अछि । गामक शक्ति कमैत गेल अछि । लोक रोजी रोटीक तलाश मे पलायन कयलक आ क' रहल अछि । आरक्षणक लॉलीपॉप देखाक' प्रतिभा- पलायन केँ हवा देल गेल आ सामाजिक न्यायक नाम पर समाज केँ फाँक फाँक कयल गेल । लोकक मोनक सपना सिम्मरक तूर जकाँ उड़िआइत रहल । रोजगार क अन्य श्रोतक तलाश गंभीरता सँ नहि भेल आ बेरोजगार क' फौज बढैत गेल । काल्हुक भविष्य अँकुराइत

सुखाय-मौलाय लागल । गरीबी बढ़िते गेल । महगी मुस्कियाइते रहल । दहेज लेबा-देबा मे प्रतिस्पर्धा बढ़ल आ तदनुरूपे दहेज-हत्या सुर्खी मे आयल । काँग्रेस आ गैर काँग्रेसवादक हुज्जति मे देशक अर्थव्यस्था प्रभावित भेल । दाही आ रौदीक प्रसार होइत रहल । कल-कारखाना बन्द भेल । हाट बजारक वैश्वीकारण सँ तथा संचार माघ्यमक आक्रमक तेवर सँ सांस्कृतिक प्रदूषण बढ़ल । विश्वक सभ सँ पैघ साम्यवादी सत्ता सोवियत संघक छिन्न-भिन्न भेने ,अमेरिकाक विश्व स्तर पर एक छत्र राज होइते जेना लागल, सहसा सभ किछु तेजी सँ बदलि रहल अछि । परिचितिक संकट भ' गेल अछि । सभ किछु समाप्त प्राय अछि । मात्र चाकचिक्य पर जीवन शेष अछि । उपर-उपर के गप-सप मे सभ किछु हवा-हवा अछि ।

एहन सन अवाक् आ हताश स्थिति मे शताब्दी समाप्त भ' रहल अछि आ नब सदी दूआरि पर दस्तक द' रहल अछि । मैथिली कथा साहित्य एहि दिस सँ कटल नहि अछि । सभ कथुक प्रैक्टिस ल' रहल अछि । सृजनरत् लेखक वर्गक संगहि एक आर नव वर्ग एहि विधा मे प्रवेश ल' रहल अछि ।, आ जे तमाम प्रदूषण सँ लड़बा लेल सन्नद्ध लागि रहल अछि । एहि मे किछु प्रमुख नाम अछि- कुमार राहुल, अजित कुमार आजाद, अनल कान्त,सच्चिदानंद सच्चू ,प्रेमचन्द्र पंकज , राजाराम प्रसाद, श्याम दरिहरे,पंकज पराशर, दमन कुमार झा, अशोक कुमार मेहता ,सारस्वत, आशा मिश्र आदि ।

ई शताब्दी ढलान पर अछि । नब शताब्दी पाँखि फड़फड़ा रहल अछि। मैथिली कथाक विगत तीन दशक अपन तमाम प्रतिकूलताक अछैत सम-सामायिक घटना-क्रमक साक्षी बनैत, तमाम प्रतिकूलता पर सार्थक टिप्पणी दैत , समकालीन भारतीय कथा साहित्यक संग अपन सहजोर उपस्थिति दर्ज करैत स्वयं के अद्यतन करैत रहल । एहि अवधि मे कथाकार क कतोक पीढ़ी आयल , ताहि मे कतोक कथाकार अपन ऊर्जाक समुचित प्रदर्शन कयलनि ,कतोक डेगाडेगी दैत असोथकित भेलाह त' कतोक यात्रान्त सँ पूर्वे हुकि गेलाह । शताब्दीक अंत मे उभरि रहल ई नव्यतम पीढ़ी मैथिलीक कथा- भविष्य के कोन दिशा प्रदान करत से त' नहि कहल जा सकैछ मुदा मैथिलक जे अम्लान प्रतिभाक एक सुदीर्घ परम्परा रहल अछि ओ जरूर ई आश्वस्त करैत अछि जे मैथिली कथा नब शताब्दी मे नब-नब कथाकारक विश्वजनीन दृष्टि सँ ऊर्जावान होइत बीस सँ एकैस साबित होयत ।



मन मोहन झा

'पाँच पत्र'क पसार

['पाँच-पत्र कालजयी रचना अछि । घटना सभक कुशल संयोजन मात्र कोनो कथाकेँ प्रभावशाली नहि बनबैछ आ ने ओकरा स्थायित्व प्रदान करैत अछि । कथा मे एहि तरहक विशिष्टता आनय मे कथाकारक संवेदनशीलता ओ मानवीय अनुभवकेँ सम्प्रेष्य बनयबाक क्षमता महत्त्वपूर्ण होइछ । तखने लेखकक सामान्यीकरण पाठकक हृदय मे सोझे-सोझ उतरि जाइत छै आ दुनूक 'टयूनिंग' एक भ' जाइत छै। एहन कालजयी रचनाक प्रासंगिकता कहियो समाप्त नहि होइछ, ओकरा बेर-बेर पढ़ला सँ नव-नव स्वाद भेटैछ' ।

प्रो. मनमोहन झाक कथाकार सँ मैथिलीक पाठक सुपरिचित अछि । मुदा एक नव रूप मे एत' मनमोहन झा उपस्थित छथि कालजयी कथा 'पाँच-पत्र' पर अपन विचार ओ पाठ ल' क' । मैथिली कथाक पाठ-प्रक्रिया पर काज होयब जरूरी बूझल जा रहल अछि । ताही क्रम मे एक महत्त्वपूर्ण कथा पर समीक्षक दृष्टिक संग गहींर ओ नव पाठ प्रस्तुत करैत लेखक कथाक व्यापकता के एत' देखौलनि अछि ।]

हमरे जकाँ बहुतो ''पाँच पत्र''. केँ प्रो. हरिमोहन झाक सर्वश्रेष्ठ रचना मानैत छथि । मुदा एकरा विडम्बने कहल जाय जे एक तरहें ई उपेक्षिते रहल । लेखकक एकटा तेहन ''हास्य-व्यंग्य-सम्राट'' बला ''इमेज'' बनि गेलनि जे आन कोनो तरहक रचना कतिआयल अपइते रहि गेल । एहि लेल कते हदधरि समीक्षक दोषी आ कतेक लेखक से भिन्न गप्प ! हर्षक विषय जे एम्हर आबिक' किछु गोटाक ध्यान एहि दिस गेलनि अछि जे ''पाँच पत्रक तीव्र बोध, प्रो. झाक कथाकारक नव आ फराक मूल्यांकन आ विश्लेषणक आवश्यकता केँ रेखांकित करैछ'' (कुलानन्द मिश्र)

राजमोहन झा प्रो. झाक समस्त कथाकेँ चारि कोटि मे बाँटिक' देखलनि अछि। पहिल कोटि मे हास्य-व्यंग्यक चाशनी बला, दोसर मे व्यंग्य-प्रधान कथा-सभ, तेसर

मे विशुद्ध हास्यमूलक आ चारिम कोटि मे करूणाक संवेदना बला कथा सभ रखलनि अछि । हमरा दृष्टि मे प्रो. झा तीन तरहक रचनाक बानगी देलनि अछि आ तीनू ''एक्स्ट्रीम''बला । सामाजिक विसंगति वा चारित्रिक दौर्बल्य पर हँसैत प्रहार करयबला, जाहि मे ओ आशातीत सफलता प्राप्त कैलनि...एतेक धरि जे लोक चोटक अनुभूति बिसरि हँसिते रहल । दोसर तरहक रचना मे लेखकक बौद्धिक विन्यास ''विट'' चरमोत्कर्ष रूप मे भेटैछ । आ ''एंटीइमेज''क रूप मे तेसर कोटिक रचना, जकर सर्वश्रेष्ठ बानगी अछि ''पाँच पत्र'' ।

''पाँच पत्र''क प्रसंगे कुलानन्द मिश्र लिखैत छथि–''मात्र पाँच छोट-छोट पत्रक माध्यम सँ व्यक्त होइत एकटा मध्यवर्गीय मैथिल पत्नीक प्रति, कालक्रम सँ बदलैत मैथिल पतिक मन: स्थितिक फरीछ चित्र एहि मे देखल जा सकैछ । एहि कथा मे तीव्र यथार्थ-बोध छैक, सत्यक करुण स्वीकार छैक आ एहि सभकेँ बन्हैत एकटा आत्मीय संगीत छैक । एहि मे सामाजिक यथार्थक उपस्थिति एकटा फराक सँ पैघ बात अछि ।''...हमरा जनैत फराक सँ बनैत पैघ बाते ''पाँच पत्र'' केँ उपन्यासक विस्तार दैत छैक । सामाजिक यथार्थ न खाली अविच्छिन्न रूप सँ सम्बद्ध रहैछ अपितु कथा साहित्यक ओ मुख्य उपजीव्य सेहो होइछ । प्रो. झा अपन समयक सामाजिक यथार्थकेँ समस्या ओ पात्रक माध्यम सँ चित्रित कैलनि अछि जे कोनो समय मे अप्रासंगिक नहि होयत । जेना जीवन चिरंतन अछि तहिना सामान्यजनक विवशता आ संघर्ष सेहो चिरंतन अछि । निम्न मध्य वर्गक संघर्ष ओकरा आर्थिके पक्ष पर नहि तोड़ैत अछि, संबंध मे सेहो जड़ताक जन्म दैत अछि, जतय व्यक्ति बहुत चाहितो किछु नहि क' पयबा लेल विवश अछि । मानव व्यवहारक जटिलता संबंध केँ एक रूप मे नहि रहय दैत अछि। निरंतर बदलैत सामाजिक-आर्थिक दबावक संग समझौता करबाक क्रम मे व्यक्तिक सोच आ कार्य-प्रणाली मे लगातार परिवर्त्तन अबैत रहैत छैक । ई ओकर व्यवहार केँ सेहो प्रभावित करैछ आ संबंधहु मे चिप्पी लगा ओकरा लेल नव धरातल आ नव संवेदनाक खोज करैत अछि । आत्मसमर्पणक हद धरि पहुँचल विवशता, अपन चिल्हकाउर संतानक अयबाक गप्प सँ हर्षक साँती चिंताक सागर मे डुमा दैत छैक । संबंध फांक भ' जाइत छै, जीवन-रस सुखा जाइत छै...आ चरम बिंदु त भेटैछ जखन चारिम पत्र मे ''कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति'' लिखयबलाकेँ पाँचम पत्र मे लिखय पड़ैत छनि–''कुमाता जायते क्वचिदपि कुपुत्रो न भवति ।'' एहिठाम अबैत-अबैत जीवनक यथार्थ ततेक व्यापक भ' जाइछ जे ओ मानवीय सत्यक सीमा छूमय लगैत अछि आ वेदनाक घनत्व उपस्थित करैछ । यथार्थक एहन आर-पार-दर्शी रचना विरले अछि ।

आब कने ''पाँच पत्र'' क औपन्यासिक पसार पर ''कन्यादान''क संदर्भ मे विचार कैल जाय । शाब्दिक अर्थ मे उपन्यासक अभिप्राय निकट राखब अछि । ''कन्यादान'' सँठबाक बस्तु बनल, आ ''पाँच पत्र'' एक न एक दिन मैथिली साहित्यक धरोहर बनि उपन्यासक अर्थकेँ सार्थक करत से हमर विश्वास अछि ।

''कन्यादान'' मे सामाजिक परिवर्तन क उद्देश्य सँ विशेष बात राखल गेल छै ।'' पाँच पत्र'' मे तेहन कोनो विशेष बात नहि कहल गेल छै...आम बात राखल गेल छै, जकर व्यापक दायरा मे सम्पूर्ण जीवन आबि जाइत छैक । चारू आश्रमक कथा आ समस्त जीवनदर्शन एहि मे समाहित अछि । कालखंड सँ निर्मित जिनगीक ''कोलाज'' पाठककेँ झकझोड़ि दैत छै । गजल जकाँ एकर एक-एक अंश (पत्र) अपना आप मे सेहो पूर्ण अछि, आ सभ मीलिक' एकटा सम्पूर्ण प्रभाव फराक सँ बनबैत अछि । कुलानन्द मिश्रक शब्दमे–''शरीरक भिन्न-भिन्न अंगक क्लोजप आ फेर तखन सम्पूर्ण शरीरक सम्पूर्ण चित्र एक-एक पत्र मे पूर्ण होइत खास-खास बोध, ओहि बोध सभ सँ स्पष्ट होइत एकटा खास जीवन-बोध जे अंतिम परिणति जकाँ वस्तुनिष्ठ थिक।''

''कन्यादान''क लोकप्रियताक प्रसंग राजमोहन झाक कहब छनि–''सभ वर्गक लोकक हेतु समान रूप सँ रोचक होयबाक कारणहि 'कन्यादान' बच्चा सँ ल' क' बूढ़धरि, निरक्षर सँ ल' क' विद्वान धरि आ पुरना विचार बला सँ ल' क' अँग्रेजी पढ़ल-लिखल लोक धरि पसरि सकल ।'' ''कन्यादान'' मे मनोरंजनक आकर्षण, आ तकर जे लाभ भेटल होउक, ''पाँच पत्र''क तिक्ख यथार्थ तिक्ख होइतहु मानसिक रूप सँ उद्वेलित करैत छैक । अपन ''सैडटोन'' सँ ओ ततबे व्यापक प्रभाव छोड़ैत अछि ।

कन्यादाने जकाँ पाँच पत्रोक कथानक छोट अछि मुदा बोधक स्तर पर एकर ऊँचाइ आकाश छूबैत अछि । कुलानन्द मिश्रक अनुसार ''एकर वस्तु कम होइतहुँ, प्रभावात्मकता मे महाकाव्यीय विस्तार, गरिमा आ शालीनता सँ मंडित अछि ।''

''पाँच पत्र'' मे ''कन्यादान'' जकाँ टिपिकल चरित्र सभ त नहि अछि, मुदा जे चरित्र अछि से मिथिला-मैथिल सँ बाइली नहि...तेहन जे पाठक लगले ओकरा सँ ''आइडेन्टीफाइ'' क' लए...अपनाकेँ देवकृष्ण सँ अलगक' नहि बूझय । कोनो विशिष्ट व्यक्ति नहि, सामान्य जन, जे ओहू समय मे, एखनहुँ आ आगूओ ओही स्थिति मे रहबा लेल अभिशप्त अछि ।

राजमोहन झा उचिते कहैत छथि–''पाँच पत्र मे पाँच टा छोट-छोट पत्रक शिल्प मे चालिस वर्षक सम्पूर्ण जीवन जाहि तरहें कलात्मक ढंगे समेटि लेल गेल अछि से

एहि कथाकेँ औपन्यासिक आयाम दैत छैक । दाम्पत्य जीवनक आरंभिक रस कोना समयक प्रभाव सँ क्रमश: पतराइत अन्तत: शुष्कता मे परिवर्त्तित भ' जाइछ आ जीवनक विभिन्न पड़ाव पर यथार्थ सँ संघर्ष करैत लोकक संबंध कोना स्वाभाविक रूपें शनै: शनै: ऊष्मा विहीन भ' सेरा जाइछ, एहि शाश्वत सत्य केँ कथा बड़ प्रभावकारी ढ़ंग सँ प्रस्तुत करैत अछि ।''

प्रो. हरिमोहन झाक बहुतो रचना अतिरिक्त रूप सँ सजाओल लगैत अछि...जेना रचना कैलाक बाद बाद ओहि पर चमत्कारी कौशल सँ चमकाओल गेल हो । किंतु ''पाँच पत्र'' मे लेखकक कोनो कमजोरी नहि आयल अछि । नवीन शिल्प ओ शैली मे लिखल ई कथा हमरा जनतबे दोसर ढंगे लिखले नहि जा सकैत छल, एतेक प्रभावी ढंगे । जाहि तरहें पश्चिमी कथा-साहित्य मे चेखव कथा-शिल्प मे एक नव मोड़ अनलनि तहिना मैथिली मे ''पाँच पत्र'' एकटा अभिनव प्रयोग अछि । कथा ततेक ''कम्पैक्ट'' जे एक-एक शब्द जेना ''फ्रेम'' मे कसल होइक । एक्कहु शब्द हटा देने वा बदलि देने रफ्फू जकाँ लगतैक ।

पहिल पत्रक स्थान अछि दड़िभंगा, जे कि मिथिलांचलक एकमात्र शिक्षण-केन्द्र छल जतय कथा-नायक आचार्यक परीक्षाक तैयारी मे लागल रहथि, मुदा ध्यान नवविवाहित पत्नी पर टाँगल रहनि । दोसर-तेसर आ चारिम पत्र ''हथुआ संस्कृत विद्यालय'' सँ (जतय ओ शिक्षक छलाह आ आर्थिक संकट ओ बूढ़ि मायक परिचर्या दुआरे गृहिणी केँ गाम पर रखबा लेल बाध्य छलाह) पत्नीकेँ लिखल गेल अछि। अपन सुखकेँ कर्त्तव्यक बलिवेदी पर चढ़ायब ओहि समयक माँग रहै...लचारी रहै । अंतिम पत्र काशी सँ गंगा-लाभेच्छु देवकृष्ण अपन पुत्र केँ संबोधित करैत लिखलनि अछि ।

सभ पत्रक बीच एक-एक दशकक अंतराल छै आे काल-परिवर्तन तेना सहज ओ स्वाभाविके ढंगे उकेरल गेल अछि जे पाठक ओहि मे सन्हियाइत जाइत अछि । चालिस वर्षक व्यथा-कथा पाठककेँ अवसाद सँ भरि दैत छै ।

पहिल पत्रक संबोधन ''प्रियतमे'' अछि जे क्षीण भ' दोसर पत्र मे 'प्रिये'' रहि जाइछ । तेसर पत्र ''शुभाशीर्वाद'' सँ शुरू होइछ त चारिम ''आशीर्वाद'' सँ । तहिना पहिल पत्र मे ''अहींक कृष्ण'' सँ अंत होइत छै त दोसर ''अहाँक देवकृष्ण'' सँ । तेसर पत्र मे ''शुभाभिलाषी देवकृष्ण'' लिखल गेल छै । त चारिम मे सोझे ''देवकृष्ण'', आ अंतिम मे ''इति देवकृष्णस्य'' । संबोधन आ अंत मात्र सँ पत्रक मजमून बुझा जाइत छै ।

आब पत्र सभक प्रारंभिक पाँती देखल जाय । पहिल पत्र प्रेम-रस सँ पागल अछि जाहि मे मिलनक आतुरता छै । एहि गदह पचीसी मे प्रेम छोड़ि आर कथू मे मन नहि लगैत छै, आ तैयो तृप्ति नहि होइत छै । एहि मन: स्थितिक अभिव्यक्ति पहिले पाँती सँ होइछ-''अहाँक लिखल चारि पाँती चारि सय बेर पढ़लहुँ ।'' दोसर पत्रक प्रथम पंक्ति अछि-''बहुत दिन पर अहाँक पत्र पाबि आनन्द भेल ।'' दस वर्षक बाद प्रेमक वेग कम भ' गेल अछि आ आब पत्र बेसी दिन पर आबय लगलैक अछि. ..तथापि ओ आनन्द दिअबैत छै । प्रेमोन्माद यथार्थक धरातल पर आबि परिस्थिति-नियंत्रित भ' गेल अछि । दस वर्षक बाद तेसर पत्रक प्रारंभ भेल अछि-''अहाँक चिट्ठी पाबि हम अथाह चिंता मे पड़ि गेलहुँ ।'' रागात्मक संबंध जीवनक समस्या सभक बीच दबा-पिचा दम तोड़य लगैत छैक । चारिम पत्रक आरंभ होइछ-''हम दू मास सँ बड्ड जोर दु:खित छलहुँ । तैं चिट्ठी नहि दय सकलहुँ ।'' ई अपन विलगित संबंधक युक्तिकरण (रेशनलाइजेशन) बुझाइत अछि । आ पाँचम पत्र बूढ़ पिता पारंपरिक ढंगे पुत्र केँ लिखैत छथिन-''स्वस्ति श्री बंगट बाबू केँ हमर शुभाशिष: सन्तु।''

सभ पत्र मे छोट सरल वाक्य छैक जकर संख्या सेहो लगभग समाने अछि । पहिल पत्र सताइस वाक्यक अछि आ तीन वाक्य पुनश्च मे जोड़ल अछि । दोसर पत्रक वाक्य-संख्या छब्बिस अछि त तेसरक चौबिस आ पुनश्च लगाक' सताइस । चारिम पत्र मे सेहो सताइस वाक्य अछि आ पुनश्च मे दूटा वाक्य जोड़ल गेल अछि । पाँचम पत्र तैंतिस वाक्यक अछि आ दूटा पुनश्च मे जोड़ल अछि । पहिल पत्र मे पुनश्च मे जोड़ल छै-''चिट्ठी दोसराकेँ छोड़क हेतु नहि देबैक । अपने हाथ सँ लगायब । रतिगरे आँचर मे नुकौने जाएब और जखन केओ नहि रहैक त लेटरबक्स मे खसा देबैक ।'' उधियाइत प्रेम पर सामाजिकताक बन्हन नहि रहै त ओ सभ बान्ह तोड़ि भासि देतै। तैं नायक-नायिका नुका-चोरा ई खेल खेलाइत अछि आ साकांक्ष रहैछ । तेसर पत्रक पुनश्च अछि-''जारन निघटि गेल अछि त उतरबरिया हत्ताक सीसो पँगबा लेब । हम किछु दिनक हेतु गाम अबितहुँ । किंतु जखन महिसिए बिसुकि गेल अछि तखन आबि क' की करब ?'' गृहस्थीक झंझटि मे प्रेमक पन्हायब एकदम सँ बन्न भ' गेलैक। चारिम पत्रक पुनश्च मे कहल गेल छै-''जौं खर्चक तकलीफ हो त छौ कट्ठा डीह जे अहाँक नाम पर अछि से भरना धऽकऽ काज चलायब । अहाँक चन्द्रहार जे बंधक पड़ल अछि से जहिया भगवानक कृपा हैतैन्ह तहिया छुटबे करत ।'' आर्थिक विवशताक भेंट चढ़ल प्रेमक निशानी केँ भगवान भरोसे छोड़ि डीह तक भरना दय काज चलयबाक गप्प कैल गेल अछि । पाँचम पत्रक पुनश्च त सम्पूर्ण कथे कहैछ-''यदि

कोनो दिन बूढ़ीं कँ किछु भ' जाइन्ह त अहाँ लोकनिक बदौलति सद्‌गति हैबे करतैन्ह। जाहि दिन ई सौभाग्य होइन्ह ताहि दिन एक काठी हमरो दिस सँ धऽ देबैन्ह ।''

कथा-नायकक अयबाक गप्प करीब सभ पत्र मे आयल अछि, अलग भाव-बोध क संग । पहिल पत्र मे दू मास बाद फगुआ तक रूकबाक धैर्य नहि छैक आ सिमरिया मे गुप्त रूप सँ फोटो घिचयबाक गप्प कैल गेल छै । प्रतीक्षा मे आतुर नायक कँ एक-एक क्षण पहाड़ सन बीति रहल छनि । दस वर्षक बाद दोसर पत्र मे फगुआ मे गाम अयबाक यत्न करबाक गप्प आ नहि त मनीऑर्डर पठा देबाक गप्प कैल गेल छै । पहिलुका उष्णता सेरा-बसिया गेलैक अछि । तेसर पत्र मे कहल गेल छै जे ''किछु दिनक हेतु गाम अबितहुँ । किन्तु जखन महिसिए बिसुकि गेल अछि तखन आबि क' की करब?'' माने गामक आकर्षण पत्नी नहि, महीस भ' गेल अछि । प्रेम-रस एकदम्मे बिसुकि गेल । चारिम पत्र मे अयबाक गप्प के कहय, दुःखित रहबाक कारणें चिट्ठियो नहि लीखि सकबाक गप्प कहल गेल अछि । आ पाँचम पत्र मे त बूढ़ीक अस्वस्थतो पर नहि अयबाक लाथ लगाओल गेल अछि-''हम आबि क' देखितिऐन्ह, परंच ऐंबा-जेंबा मे 30-40 टाका व्यर्थ खर्च भ' जायत । दोसर जे आब हमरो यात्रा मे परम क्लेश होइ अछि। अहाँ लिखै छी जे ओहो काशीवास करय चाहैत छथि । परंतु एहिठाम बूढ़ीकें बड्ड तकलीफ हेतैन्ह । अप्पन परिचर्या करबा योग्य त छथिए नहि, हमर सेवा की करतीह ?'' माने बूढ़ी जपाल भ' गेलथिन अछि जिनका संगो राखब हुनका स्वीकार्य नहि छनि। उमेरक एहि पड़ाव पर लोक सहजहि आत्म केन्द्रित ओ स्वार्थी भ' जाइत अछि ।

एतेक ''कन्डेंस्ट'' रूप मे एतेक पैघ बात कहब नावकक तीर जकाँ गंभीर घाव जँ करैत अछि त ई लेखकक अतिरिक्त सजगता ओ परिश्रमक नमूना अछि । प्रो. झा पर अतिरंजनाक आरोप लगाओल जाइत छनि किंतु ई कथा कनेको 'लाउड'' नहि भेल अछि । ''अंडरटोन'' सेहो नहि छैक किएक त कथा खुजि क' बजैत अछि । लेखकीय कौशल सँ सभ दृष्टिएँ चाहे ओ संबोधन हो कि अंत, पत्रक प्रारंभ हो अथवा पुनश्च मे जोड़ल वाक्य-चुनि-चुनिक' तेहन समरूपता ओ समन्वयता राखल गेल अछि जे ओ अयनाक चित्र बनि गेल अछि । एक-एक शब्दक चयनक' सावधानी पूर्वक कुशल ''कम्पोजिंग'' जकाँ कैल गेल अछि । पत्र मे भाषा तक अवस्थानुकूल राखल गेल अछि । पहिल पत्र मे युवा-प्रेमी मन विकल भ' बजैत अछि-''राधारानी ! मन होइत अछि जे अहाँक गाम वृन्दावन बनि जाइत जाहि मे कंवल अहाँ ओ हम राधा-कृष्ण जकाँ अनन्तकाल धरि विहार करैत रहितहुँ ।'' दोसर पत्र मे कर्त्तव्यनिष्ठ

पति बजैत अछि-''हम किछु दिनक हेतु अहाँकें एहीठाम मँगा लितहुँ । परंतु एहिठाम डेराक बड्ड असौकर्य । दोसर जे विद्यालय सँ कुल मिलाक' साठि टाका मात्र भेटैत अछि । ताहिमे एहिठाम पाँच गोटाक निर्वाह हैब कठिन । तेसर ई जे फेर बूढ़ी लगके रहतैन्ह । यैह सभ विचारिक' रहि जाइ छी ।''...तेसर पत्र मे गृहस्थीक नाना जंजाल मे पिसायल लोकक आर्त्रनाद सुना पड़ैछ त चारिम पत्र मे थाकल मनक ठेही व्यक्त होइत छै । पाँचम पत्रक भाषा पारंपरिक संस्कृतनिष्ठ राखल गेल छै जाहिमे अवस्थाजन्य टुटैत स्वरक कम्पन अछि ।

लेखकक सूक्ष्म यथार्थक सजीव चित्रण, जाहि लय प्रो. झा विख्यात छथि, ''पाँच पत्र'' मे सेहो ठाम-ठाम भेटैछ । किंछु उदाहरण द्रष्टव्य अछि-

''साठि वर्षक बूढ़कें की बूझि पड़तैन्ह जे साठि दिनक विरह केहन होइ छैक।''

''हमरा बापकें (चन्द्रहार दिआ) पता लगतैन्ह त खर्चे बंद क' देताह ।''

''बड़की ननकिरबी किछु और छेटगर भ' जाय त ओकरा बूढ़ीक परिचर्या मे राखि किछु दिनक हेतु अहाँ एतय आबि सकैत छी ।''

''किंतु जखन महिसिए बिसुकि गेल अछि तखन आबिक' की करब ?''

''हम त ओही दिन हुनक आस छोड़ल जहिया ओ हमरा जिबिते मोंछ छटाबय लगलाह । सासुक कहब मे पड़ि गोरलग्गीक रुपैया हमरा लोकनिकें देखय नहि देलन्हि।''

''आब हमरा लोकनिक दबाइए की ?'' आदि-आदि ।

प्रो. हरिमोहन झा एहन एकसर आ बेजोड़ उदाहरण छथि जे एक हाथक लेखनी सँ हास्य-व्यंग्यकें चोटी पर ल' जेबाक क्षमता रखैत छथि त दोसर हाथक लेखनी सँ करुण-रसकें तहिना शीर्षत्व प्रदान क' सकैत छथि । ई अद्‌भुत लेखन-सामर्थ्य आ गँहीर पकड़क गप्प छै । 'पाँच पत्र'क कैकटा स्थल एहन लेखकीय बूता आ अवसादक उत्कर्ष देखबैत अछि । पहिल पत्र मे चुपेचाप जाहि चन्द्रहारकें भेंट देबाक गप्प भेल छै, चारिम पत्रमे बंधक पड़ल वयह चन्द्रहारकें नहि छोड़ा पैबाक विवशताक उल्लेख भेल छै ।

दोसर पत्रमे जे ननकिरबी तुसारी पूजैत अछि, जाहि लेल अठहत्थी नूआ पठैबाक उल्लेख भेल छै सैह ननकिरबी दस वर्षक बाद चिल्हकाउर अछि आ दूटा नेना कें ल' सासुर सँ दू मास लेल आबि घर डेबबाक संकट उत्पन्न करैत अछि ।

एक पत्र मे पत्नीकें दुर्बल देखि पति जीरकादि पाक बनाक' सेवन करबाक, पाव भरि दूध नित्य पीबाक सलाह दैत छथिन त अंत मे आबि वैह सहधर्मिणी ततेक दूर भ' जाइत छथिन जे हुनक मृत्युओ विचलित नहिक' सौभाग्यसूचक लगैत छनि।

ई निरपेक्षता वा तटस्थता नहि, बेइमानी अछि...लचार विवशता अछि, बूढ़ बापक करुण पुकार अछि । कुलानन्द मिश्रक अनुसार-''एहि वृद्ध देवकृष्णकेँ अपन शेष जीवनक सामान्य सुविधा आ पत्नीक जेहन-तेहन गतिओक लेल कुपुत्र पुत्र आ कुलच्छनि पुतहुक करुण भाव सँ अभ्यर्थना करब आवश्यक लगैत छनि ।...बेटाकेँ प्रसन्न करबाक ई करुण आ अमोघ मंत्र एहि वर्गक प्राय: सभ बूढ़ पढ़ैत अछि जे वृद्धावस्थाक असहायावस्था मे आर्थिक रूप सँ बेटा पर अवलम्बित होइछ ।'' हमरा जनैत ई एहि सँ आगूओक कथा कहैछ । बेटा सँ प्रतिफलक उमेद त वृद्धक लचारी अछिये, संगहि कर्त्ता-पुत्र सँ पितृऋण चुकयबाक अभ्यर्थना सेहो रहैछ । ई महज च्यवनप्राशक जोगार क स्वार्थ नहि अछि, सद्गति प्राप्त करयबाक करुण प्रार्थना अछि, जाहि लेल ओ अपन पत्नीक संग छोड़ि बेटा-पुतहु दिस भ' जयबा लेल विवश अछि ।

बंगट स्कूल जाय लागल अछि आ पिताक जिज्ञासा छनि जे ओ बदमाशी त नहि करैत अछि (माने पढ़ैत अछि कि नहि) ? दस बर्षक बादक जिज्ञासा छनि-''दू मास मे बंगटक इमतिहान हैतैन्ह । करीब पचासो टाका फीस लगतैन्ह । जौं कदाचित पास क' गेलाह त पुस्तको मे पचास टाका लागिए जैतैन्ह । हम ताही चिंता मे पड़ल छी ।'' ई चिंता हरेक निम्न मध्यवर्गीय पिताक चिंता छै, जे अपन इच्छित स्वप्न बेटा मे देखैत अछि । मुदा दस वर्षक बादे ! ''अहाँ लिखै छी जे बंगट बहु केँ लऽकऽ कलकत्ता गेलाह । से आइ-काल्हिक बेटा-पुतोहु जेहन नालायक होइ छैक से त जनले अछि । हम हुनका खातिर की-की ने कैल ! कोन तरहें बी. ए. पास करौलिऐन्ह से हमहीं जनैत छी । तकर आब प्रतिफल द' रहल छथि ।'' ....ई त्रासदी कोनो नव नहि छैक । हरेक बूढ़ जाइत-जाइत ई पीढ़ीक अंतर भोगैत अछि । 'क्लाइमेक्स' त दसे वर्ष बाद ओही बेटाक नामे पत्र मे अबैत छैक जाहि मे पिता लिखैत छथिन-'अहाँक माय जे हुनका (पुतोहु) सँ झगड़ा करै छथिन्ह से परम अनर्गल करै छथि । परंतु अहाँकेँ त बूढ़ीक स्वभाव जनले अछि । ओ भरि जन्म हमरा दुःखे दैत रहलीह ।'' आ पुनश्च मे जोड़ल पाँती ('यदि कोनो दिन...')क विवश-व्यथाक 'हाइट' प्रो. झा केँ प्रेमचन्द्रक समीप ल' जाइत छनि ।

देवकृष्ण जीवनक ओहि तेराहा पर ठाढ़ छथि जतय सँ ओ मांझा, आगू या पाछू तकैत छथि । एहिमे भूत, वर्तमान आ भविष्य, तीनूक 'फ्यूजन' अछि । पछिला जीवन मे ओहो पिता सँ 'चोराक' चन्द्रहार दैत छथिन तहिना जेना वर्तमान मे बंगट गोरलग्गीक पाइ नुका लैत अछि । जुआनी मे ओहो वैह सभ कैने छथि...पिता सँ तहिना टकराओ होइत छनि...सठिआयल बुद्धिक कारणें समझक अंतर तहिना भोगने छथि, किंतु वैह

काज बेटा करैत छनि त' अखरैत छनि...वैचारिक टकराओ होइत छनि...ओकर दुर्बुद्धि पर तरस अबैत छनि । अवस्थाक संग ई दृष्टिकोण क अंतर देखार होइत छै । भविष्यक गति लेल ओ ओही पुत्र पर आश्रित छथि । इतिहास अपना आपकेँ दोहरबैत अछि आ ई आगूओ एहिना एही रूप मे चलैत रहतै ।

'पाँच पत्र' मे दू स्तर पर विवशता उद्घाटित भेल अछि । एक त उदात्त रूप सँ आर्थिक विवशता जे सामान्यत: सभ पत्र मे आ विशेष क' तेसर पत्र मे भरल भेटैछ। दोसर तरहक विवशता देखार रूप मे नहि अछि मुदा बेसी गंभीर, चिन्त्य आ द्रावक अछि...सहीकेँ सही नहि कहि पयबाक विवशता...नइँ चाहितो गलतक संग भ' जयबाक विवशता । एहि रूपक विवशता समस्त हिंदू पिताक विवशता छै जे कुपुत्रो केँ मोक्षक साधनक रूप मे देखैत अछि आ देखैत रहत । एहि लेल ओ पत्नी सँ विमुखता देखबैत अछि...ओकरा 'डिसओन' करैत अछि । फूसि बजैत अछि जे ''ओ भरि जन्म हमरा दुःखे दैत रहलीह ।'' आ कुपुत्र सँ मोहभंग होइतहुँ ओकरे पक्ष मे भ' जाइत अछि। कथाक अंतिम पाँती त साफे गोहार करैछ कर्त्ता-पुत्रकेँ बूढ़ा-बूढ़ी दुनूकेँ पार घाट लगयबाक ।

प्रेमचन्द्र युग-युगांतरक इतिहासक एकटा विषम विषय एवं मानवीय रूप समक्ष राखि देलनि 'कफन' मे । शोषणक एहन वीभत्स बानगी जाहिमे रैअतकेँ मरय नहि देल जाइत छैक किऐक त ओकर अस्तित्व पैघक पैघत्व कायम रखबा लेल जरूरी छैक । ताहूमे एकटा निफिकिर अलमस्तता छै किऐक त ओ जनैत अछि जे जीवित मे भनहि देह पर वस्त्र नहि भेटैक मुदा मुइला पर कफन भेटबे करतै...जाबे हिन्दुत्व रहतै ताबे बेर-बेर भेटतै । तहिना 'पाँच पत्र'क विषय सेहो सार्वभौम अछि जे कोनो भाषा, देश वा कालक रचना नहि अपितु एहन रचना अछि जाहि मे सम्पूर्ण मानवताकेँ शाब्दिक अभिव्यक्ति देल गेल छैक ।

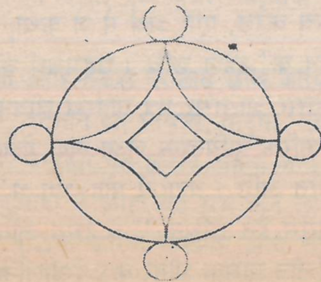
'पाँच पत्र' जीवनक विभिन्न अवस्था...चारू आश्रमक कथा अछि । पहिल पत्र ब्रह्मचर्य अवस्थाक प्रतिनिधित्व करैछ, एहि अर्थ मे जे कथा-नायक नवविवाहित सँ अलग भ' शहर मे विद्याध्ययन क' रहल छथि । ब्रह्मचर्य केँ विद्याध्ययन-प्रारंभक अवस्था मानल गेल अछि । दोसर आ तेसर पत्र गार्हस्थ जीवनक कथा कहैत अछि। जुआनीक जोशोन्माद पर पारिवारिक दायित्वक जुआ लदा गेलैक अछि । चारिम पत्र वाणप्रस्थ अवस्थाकेँ इंगित करैत अछि । बेटा सँ मोह-भंग भ' जाइत छनि । व्यथित मने पत्नीकेँ (अपनहुँ केँ) भरोस दैत छथिन-''जे हमरा लोकनि तीस वर्ष मे नहि कैल से ई लोकनि द्विरागमन सँ तीन मासक भीतर कऽ देखौलन्हि । अस्तु । की करब?

एखन गदह-पचीसी छैन्ह । जखन लोक हैताह तखन अपने सभटा सुझतैन्ह । भगवान सुमति देथुन्ह । विशेष की लिखू ? 'कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति ।'' पाँचम पत्र संन्यासक सूचक अछि । वृद्ध देवकृष्ण घर छोड़ि काशीवास करय लगलाह आ अंतिम गतिक प्रतीक्षा क' रहलाह अछि । जीवन सँ हारल-झमारल ओ स्थितप्रज्ञ भ' गेलाह अछि ।

'पाँच पत्र' कालजयी रचना अछि । घटना सभक कुशल संयोजन मात्र कोनो कथाकेँ प्रभावशाली नहि बनबैछ आ ने ओकरा स्थायित्व प्रदान करैत अछि । कथा मे एहि तरहक विशिष्टता आनय मे कथाकार क संवेदनशीलता ओ मानवीय अनुभव केँ सम्प्रेष्य बनयबाक क्षमता महत्वपूर्ण होइछ । तखने लेखकक सामान्यीकरण (जेनरलाइजेशन) पाठकक हृदयमे सोझे-सांझ उतरि जाइत छै आ दुनूक 'ट्यूनिंग' एक भ' जाइत छै । एहन कालजयी रचनाक प्रासंगिकता कहियो समाप्त नहि होइछ, ओकरा बेर-बेर पढ़ला सँ नव-नव स्वाद भेटैछ ।

रचना-कालकेँ दृष्टि पर रखला सँ एकटा आश्चर्यजनक तथ्य सोझाँ अबैछ जे एकर रचना तखन भेल अछि जखन कि लेखकक आन रचना धूम मचा चुकल छल आ लेखक प्रतिष्ठित भ' गेल छलाह । 'पाँच पत्र' सन विशिष्ट रचनाक बहुत आवश्यकता नहि छलैक । परंतु लगभग तीस वर्षक प्रसिद्धिक बाद श्रेष्ठतम रचना देब असाधारण लेखकीय क्षमताक परिचय दैछ जकर उदाहरण तकले पर भेटि सकैछ । किछु गोटेक मानब छनि जे लेखक जँ खाली 'कन्यादान' लिखने रहितथि, तैयो ओ साहित्य मे अमर भ' जैतथि । यैह बात किछु गोटे 'खट्टर ककाक तरंग'क विषय मे सेहो कहैत छथिन। आ हमर मानब अछि जे मात्र 'पाँच पत्र' हुनका गुलेरीक स्थान दिअयबा लेल पर्याप्त छल । प्रो. झा जाहि विद्या मे रचना कैलनि से 'सुपरलेटिव डिग्री' बला । चारिम डिग्री जँ होइतैक त निस्संदेह ''पाँच पत्र'' केँ ओहिमे राखल जा सकैत छल ।

❑



रचनाकार सम्पर्क

सुभाषचन्द्र यादव	:	प्रोफेसर कॉलोनी, सहरसा
महाप्रकाश	:	नया बाजार (दक्षिण), सहरसा
मनमोहन झा	:	11, टीचर्स क्वाटर्स, शुभंकरपुर, दरभंगा
विनोद बिहारी लाल	:	मुखियाजी चौक, लक्ष्मीसागर, दरभंगा
विभूति आनन्द	:	आर. एन. कॉलेज, पण्डौल, मधुबनी
नीता झा	:	खाजासराय, लहेरियासराय, दरभंगा
शिवशंकर श्रीनिवास	:	लोहना, पो. लोहना, मधुबनी
प्रदीप बिहारी	:	मेनकायन, उलाव, बेगूसराय
रमेश	:	न्यू कॉलोनी, सहरसा
तारानन्द वियोगी	:	रमा पाण्डेय निवास, भवानीपुर जिरात, मोतिहारी
देव शंकर नवीन	:	नेशनल बुक ट्रस्ट, ए-5, ग्रीनपार्क, नई दिल्ली
केदार कानन	:	किसुन कुटीर, सुपौल
विभा रानी	:	504/ बी. लिलाक गार्डेन, चारकोप, कांडीवली (पश्चिम) मुम्बई
शैलेन्द्र कुमार झा	:	राजहाता, कालीबाड़ी, कटिहार
नारायण जी	:	घोघरडीहा, मधुबनी
सुस्मिता पाठक	:	किसुन कुटीर, सुपौल
प्रेमचन्द्र पंकज	:	ग्रा.-माधोपुर, पो.-सनकोर्थु, जि.-मधुबनी
अनलकान्त	:	सम्पादक 'अंतिका', 153 वी/पाकेट-ई, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-95
अजित कुमार आजाद	:	बी. 55, नरेश पार्क, नांगलोई, दिल्ली-41
श्याम दरिहरे	:	जिला समादेष्टा, गृह रक्षा वाहिनी, धनबाद
प्रमोद कुमार झा	:	सहायक केन्द्र निदेशक. दूरदर्शन, पटना
पंकज पराशर	:	द्वारा अशोक कुमार सिंह (सिपाही) नारायण बाबू लेन, ननमुहिया, महेन्द्रू, पटना-6
अजय कुमार	:	सहायक (अनु.), बिहार विधान परिषद्, पटना
मेघन प्रसाद	:	कामर्स कॉलेज, कंकड़बाग, पटना
सुरेन्द्र नाथ	:	जिला सहकारिता भवन, सहरसा

मोहन यादव : पी. एब. ई. डी. कॉलोनी, संतनगर, गंगजला, वार्ड नं.–17, सहरसा

मायानन्द मिश्र : विद्यापतिनगर, सहरसा

रमण कुमार सिंह : द्वाराः पूजा क्लीनिक, 191, भूतोंवाली गली, नांगलोई, दिल्ली–41

मोहन भारद्वाज : 5/25, आर. ब्लॉक, पटना

आशुतोष कुमार झा : द्वारा/गणेश चन्द्र मिश्र, मिथिला कॉलोनी, नासिरीगंज, दीघा, पटना

धूमकेतु : कोइलख, मधुबनी

कुलानन्द मिश्र : श्री रवीन्द्र प्रसाद सिंहक मकान, बालूघाट, पो.–महेन्द्रू, पटना

धीरेन्द्र : ग्राम+पो. लोहना, भाया–सरिसव–पाही, जिला–मधुबनी



मैथिली मे प्रकाशित सहयोगी पत्रिका

पत्रिका कीनिक' पढ़ू

आरम्भ	– त्रैमासिक	– सम्पादक –	*राजमोहन झा, पटना*
अंतिका	– त्रैमासिक	– सम्पादक –	*अनलकान्त, दिल्ली*
भारती मंडन	– अनियतकालीन	– सम्पादक –	*केदार कानन, सुपौल*
आकांक्षा	– मासिक	– सम्पादक –	*डा. धीरेन्द्र नाथ मिश्र, दरभंगा*
वैदेही	– मासिक	– सम्पादक –	*डा. हंसराज, दरभंगा*
आइ-काल्हि	– द्वैमासिक	– सम्पादक –	*शरदिन्दु चौधरी, पटना*
प्रवासी	– अनियतकालीन	– सम्पादक –	*डा. नीरजा रेणु, इलाहाबाद*
कचोट	– त्रैमासिक	– सम्पादक –	*रवीन्द्र कुमार चौधरी, जमशेदपुर*

मोहन यादव

मायानन्द मिश्र
रमण कुमार सिंह

मोहन भारद्वाज
आशुतोष कुमार झ

धूमकेतु
कुलानन्द मिश्र

धीरेन्द्र

मै

आरम्भ
अंतिका
भारती मंडन
आकांक्षा
वैदेही
आइ-काल्हि
प्रवासी
कचोट